Ārch bishop ki Mrityu

Novel

by

kumari Willa Cather

आर्चबिशप की मृत्यु

आर्चबिशप की मृत्यु

लेखिका

कुमारी विला कैथर

जय भारती

९०, नया कटरा, इलाहाबाद–२

१९६१

हिन्दी अनुवाद—प्रथम संस्करण सन् १९६१

●

अनुवादक—विद्या भास्कर
और
हरिप्रताप सिंह

●

मूल्य ४)५०

●

मुद्रक—सरयू प्रसाद पाण्डेय,
नागरी प्रेस,
दारागंज, इलाहाबाद

विषय-सूची

पूर्व कथा : रोम में

सन् १८४८ ई० के ग्रीष्म ऋतु में, एक दिन संध्या समय, रोम नगर के समीपवर्ती पर्वतीय प्रदेश स्थित एक मकान के उद्यान में बैठे हुए, तीन कार्डिनल (धर्माध्यक्ष) तथा अमेरिका से आये हुए एक धर्म-प्रचारक पादरी भोजन कर रहे थे। मकान के बारजे पर खड़े होने से प्राकृतिक छटा का मनोहर दृश्य उपस्थित होता था। जिस उद्यान में बैठे वे चारों व्यक्ति भोजन कर रहे थे, वह उस लम्बे बारजे के दक्षिणी किनारे के लगभग बीस फुट नीचे, पहाड़ी की एक सीधी ढाल के ऊपर स्थित था। ढाल में, नीचे अंगूर का लता-कुंज था। उद्यान से ऊपर बारजे तक पत्थर की सीढ़ियां लगी हुयी थीं। खाने की मेज़ एक वर्गाकार स्थान में लगी हुई थी, जिसके चारों ओर संतरे तथा सदाबहार के वृक्ष लगे हुए थे और जो चट्टानों पर उगे हुये चीड़ के वृक्षों से आच्छादित था। उद्यान के जंगले से आगे बढ़ने पर हवा घाटी में प्रवेश करती थी, और उससे भी नीचे, ऊँचा-नीचा विशाल विस्तुत मैदान रोम नगर की सीमा तक फैला हुआ था; बीच में अन्य कुछ भी नहीं था।

आर्चबिशप की मृत्यु

स्पेनिश कार्डिनल तथा उनके तीनों मेहमान आज बड़ी जल्दी ही भोजन करने बैठ गये थे। सूर्यास्त होने में अभी एक घण्टे की देरी थी। सांध्य रवि की उज्ज्वल किरणों से सारा प्रदेश देदीप्यमान था। दूर, रोम नगर की बाह्य रेखा क्षितिज में धुँधली पड़ गयी थी; केवल सेंट पीटर्स गिरजाघर का वह भूरे रंग का गुंबद ही एक विशाल बेलून के चपटे सिरे के रूप में, संध्या के उस सुनहरे प्रकाश में चमक रहा था। कार्डिनल को इस समय, तीसरे पहर के अंत में, जब इतना पर्याप्त प्रकाश था, कि बाहर अन्य कोई कार्य किया जाय, भोजन आरम्भ करने की अजीब सनक थी। संध्या का प्रकाश बड़ा ही मनोहर था। उसमें सहज ही कार्य करने की प्रेरणा मिलती थी। वह प्रखर भी था और साथ ही सुहाना भी। उसकी प्रखरता कुछ ऐसी थी, मानो असंख्य लाल लौ वाली मोमबत्तियाँ एक साथ जल रही हों। प्रकाश की किरणें चीड़ के वृक्षों पर पड़ती थीं, जिससे उनके लाल, बादामी रंग के तने चमक रहे थे, परन्तु उनकी काली पत्तियाँ अपेक्षाकृत धुँधला दीख रही थीं। संतरे की चमकीली हरी पत्तियाँ तथा सदाबहार के गुलाबी फूल किरणों के प्रकाश में सुनहरे रंग के हो रहे थे। पत्तियों पर किरणों के पड़ने से विभिन्न प्रकार के टेढ़े-मेढ़े, गुलाबी, बेल-बूटेदार तथा स्फटिक आकार के चित्र बन रहे थे। पादरीगण धूप से बचने के लिये अपने सिरों पर चौकोर आकार की टोपियाँ लगाये हुये थे। तीनों कार्डिनल काले रंग के चुस्त चोंगे पहने हुए थे, जिनके किनारे तथा बटन गहरे लाल रंग के थे। पादरी एक बैंगनी रंग के वासकट के ऊपर एक लम्बा काला कोट पहने हुए थे।

वे एक विशेष प्रयोजन की बातें कर रहे थे। बात यह थी, कि उत्तरी अमेरिका के न्यू मेक्सिको नामक राज्य में, जो हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में मिलाया गया था, एक विकारेट (पोप द्वारा नियुक्त सांकेतिक बिशप का पद) की स्थापना के सम्बन्ध में वे विचार विमर्श कर रहे थे।

बाल्टीमोर की प्रांतीय कौंसिल इसकी स्थापना के लिये पोप के यहाँ अपील करने वाली थी। न्यू मेक्सिको के इस नये राज्य-क्षेत्र के सम्बन्ध में उन्हें बहुत थोड़ा ज्ञान था। धर्म-प्रचारक पादरी भी कुछ विशेप नहीं जानते थे। इटालियन तथा फ्रांसीसी कार्डिनल उसे लॉ मेक्सीक कहते थे, और स्पेनिश कार्डिनल बातचीत के दौरान में उसे 'न्यू स्पेन' कहते थे। उनका इस संभावित विकारेट के सम्बन्ध में अल्पमात्र अनुराग था, जिसे पादरी फ़ादर फ़ेरांड रह-रह कर जाग्रत किया करते थे। फ़ादर फ़ेरांड जन्म से आयरिश थे, उनके पूर्वज फ्रांसीसी थे तथा वे विश्व में बहुत दूर-दूर तक घूमे हुए थे और नयी दुनिया (अमेरिकी गोलार्द्ध) में, जो ईसाई धर्म का नया प्रचार-केन्द्र था, पर्याप्त सफलता प्राप्त की थी। चारों व्यक्ति फ्रांसीसी भाषा में बात कर रहे थे—अब वह समय नहीं रह गया था कि कार्डिनल लोग किसी समकालीन विषय पर लेटिन भाषा में बातचीत करते।

फ्रांसीसी तथा इटालियन कार्डिनल अधेड़ अवस्था के हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे—फ्रांसीसी मोटे तगड़े तथा लाल रंग के थे और इटालियन दुबले-पतले, कुछ पीले रंग के तथा टेढ़ी नाक वाले। इनके मेज़बान स्पेनिश कार्डिनल ग्रेशिया मेरिया द अलांदे, अब भी युवावस्था में थे। उनका रंग कुछ गेहुँआ था, परन्तु उनका लम्बा स्पेनिश चेहरा उनके पूर्वजों की भाँति, जिनके अनेक चित्र उनके कमरे में टंगे हुए थे, लम्बा नहीं था, क्योंकि उनकी माँ एक अंग्रेज महिला थीं। उनकी आँखें काले रंग की थीं, उनका अंग्रेज़ी मुखड़ा बड़ा आकर्षक एवं सुहाना तथा उनका व्यवहार निष्कपट एवं स्पष्ट था।

सोलहवें ग्रेगरी के शासन-काल के अंतिम वर्षों में द अलांदे वेटिकन (रोम नगर में पोप का वास-स्थान) के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे, परन्तु दो वर्ष पहले, ग्रेगरी की मृत्यु के पश्चात्, वे वेटिकन छोड़कर अपने ग्रामीण निवास-स्थान में चले आये थे और अब यहीं रहने लगे थे। वे

नये पोप के सुधारों को अव्यावहारिक तथा खतरनाक समझते थे और उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया था। वे अब केवल सोसायटी फॉर दी प्रोपेगेशन ऑफ दी फ़ेथ (ईसाई मत के प्रचार की संस्था) के लिये, जो ग्रेगरी द्वारा स्थापित की गयी थी, कार्य करते थे। अपने अवकाश के समय में कार्डिनल महोदय टेनिस खेलते थे। बालकपन में, जब वे इंगलैंड में थे, वे इस खेल के बड़े ही शौकीन थे। तब टेनिस बाहर लान (मैदान) में नहीं खेला जाता था। कार्डिनल घर के अंदर ही फ़ील्ड आदि बनाकर खेलते थे। स्पेन और फ्रांस के प्रसिद्ध खिलाड़ी उनके मुकाबले में टेनिस खेलने आया करते थे।

पादरी फ़ेरांड अन्य तीनों व्यक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक वृद्ध दीख पड़ते थे। उनका शरीर वृद्ध तथा कठोर था परन्तु उनकी गाढ़ी नीली आँखें अब भी बिलकुल स्पष्ट तथा स्वस्थ दीख पड़ती थीं। उनका धार्मिक अधिकार-क्षेत्र अमेरिका के ग्रेट लेक्स के किनारे का शीत प्रदेश था। वे अपने क्षेत्र में, अपने काम के सिलसिले में, अकेले ही घोड़े पर सवार होकर लम्बी-लम्बी यात्राएं करते थे और उस शीत प्रदेश की ठंडी तथा तेज़ हवा ने उनके शरीर को काफ़ी जर्जरित कर दिया था। चूँकि पादरी महोदय यहाँ एक विशेष प्रयोजन से आये थे, वे अपने मतलब की ही बात पर बार-बार बल दे रहे थे। वे अन्य तीनों व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक शीघ्रता से खा रहे थे, इसलिये उन्हें अपनी बात कहने का अपेक्षाकृत अधिक समय मिलता था। वे भोजन की वस्तुएं इतनी शीघ्रता से समाप्त कर रहे थे कि फ्रांसीसी कार्डिनल ने यह व्यंगोक्ति की कि वे नेपोलियन के साथ भोजन करने के लिये आदर्श साथी सिद्ध हुए होते।

इस पर पादरी हँस पड़े और हाथ फैला कर अशिष्टता के लिये क्षमा माँगने लगे। "सम्भव है कि मैं शिष्टाचार भी सब भूल गया हूँ। बात यह है कि मेरा मस्तिष्क दूसरी उलझन में लगा हुआ है। आप लोग यहाँ

बैठे यह नहीं समझ सकते कि अमेरिका द्वारा उस विशाल राज्य क्षेत्र को, जहाँ से नयी दुनिया में ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ हुआ था, अपने देश में मिला लेने का महत्त्व क्या है। न्यू मेक्सिको का विकारेट कुछ वर्षों में ही तोड़ दिया जायगा और उसके स्थान पर विशिष्ट बिशप के पद की स्थापना होगी, जिसका अधिकार-क्षेत्र उस समूचे विशाल देश पर होगा, जो रूस को छोड़कर मध्य और पश्चिमी यूरोप से क्षेत्रफल में बड़ा है। उस पद पर आसीन बिशप के निर्देशन में महत्त्वपूर्ण कार्यों की शुरुआत होगी।"

"क्या शुरुआत होगी," इटालियन कार्डिनल ने बुदबुदा कर कहा, "कितनी बार, कितने कार्य वहाँ आरम्भ किये गये, परन्तु सब टाँय-टाँय फिस! केवल गड़बड़ी के समाचार तथा पैसों की माँग अवश्य आया करती है।"

पादरी ने उनकी ओर घूमकर बड़ी शांति से कहा, "कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिये। इस प्रदेश में ख्रीष्टीय श्रुति का प्रचार सन् १५०० ई० में फ्रांसिस्कन फ़ादर्स द्वारा आरम्भ किया गया था। पिछले लगभग ३०० वर्षों में यह वहाँ गैर सिलसिलेवार ढंग से चलता आ रहा है और अब तक किसी न किसी प्रकार जीवित है। अब भी वह दुःख के साथ अपने को एक ईसाई धर्म-प्रधान देश कहता है और बिना किसी शिक्षा-दीक्षा के धर्म के स्वरूप को बनाये रखने का प्रयत्न करता है। पुराने प्रचार-गिरजाघर खंडहर हो रहे हैं। जो थोड़े से पुरोहित या पादरी हैं, उनका न तो कोई पथ-प्रदर्शन करने वाला है और न उनमें कोई अनुशासन है। धार्मिक आचार में वे बड़े ढीले हो रहे हैं और उनमें से कितने तो रखेली पत्नियों के साथ रह रहे हैं। यदि यह गंदगी और गड़बड़ी अब दूर नहीं की गयी, तो, चूंकि अब यह राज्य-क्षेत्र एक प्रगतिशील देश द्वारा अपने में मिला लिया गया है, परिणाम

यह होगा कि सारे उत्तरी अमेरिका में ईसाई धर्म के हितों को धक्का पहुँचेगा।''

''परन्तु वहाँ के धर्म प्रचार-केन्द्र अब भी मेक्सिको के अधिकार-क्षेत्र में है, क्यों ?'' फ्रांसीसी कार्डिनल ने पूछा।

''डुरैंगो के बिशप के अधिकार-क्षेत्र में है,'' मेरिया द अलांदे ने कहा।

पादरी ने एक लंबी साँस ली और कहा, ''परन्तु प्रभुवर डुरैंगो के बिशप एक वृद्ध व्यक्ति हैं और उनके प्रधान वास-स्थान से सांता फ़े तक की दूरी लगभग पन्द्रह सौ मील की है। गाड़ी आदि चलने योग्य कोई सड़क नहीं है, नहरें नहीं हैं, नाव आदि चलने योग्य नदियाँ नहीं हैं। माल असबाब ढोने का काम खच्चरों द्वारा, जिन्हें ख़तरनाक पगडंडियों से होकर चलना पड़ता है, होता है। वहाँ के रेगिस्तानों में एक विचित्र ढंग का खतरा बना रहता है; मेरा तात्पर्य पानी की कमी अथवा रेड इण्डियनों द्वारा आक्रमण करके हत्या से, जो बहुधा ही हुआ करता है, नहीं है। वहाँ की भूमि में असंख्य गहरे-गहरे संकरे दर्रे हैं। ज़मीन में कुछ गड्ढे तो केवल दस ही फुट गहरे होंगे, और साथ ही कुछ ऐसे भी होंगे जिनकी गहराई एक हज़ार फुट तक होगी। यात्री को अपने खच्चर सहित इन पथरीली दरारों में से होकर गुज़रना पड़ता है। किसी भी ओर चलिये, थोड़ी-थोड़ी दूर पर इन दरारों को पार करना आवश्यक हो जाता है, अन्यथा आप आगे नहीं बढ़ सकते। यदि डुरैंगो के बिशप किसी अवज्ञा करने वाले पुरोहित को पत्र द्वारा अपने पास तलब करना चाहें, तो पुरोहित को उनके पास पहुँचायेगा कौन ? यह सिद्ध भी कैसे किया जा सकता है, कि पत्र पुरोहित को मिला ही ? डाक ले जाने का काम शिकारियों, सोना ढूंढ़नेवालों तथा किसी भी ऐसे व्यक्ति से लिया जाता है, जो संयोग से घूमता-घामता उन पगडंडियों पर दिखायी पड़ जाय।''

फ्रांसीसी कार्डिनल ने अपना गिलास खाली करके मुँह पोंछा।

"और, फ़ादर फ़ेरांड, वहाँ के निवासी लोग कौन हैं ? यदि सभी लोग बनजारे ही हैं, तो घर पर कौन रहता है ?"

"रेड इण्डियनों की लगभग तीस विभिन्न जातियाँ, जिनमें प्रत्येक के अलग-अलग रीति-रिवाज़, अलग-अलग भाषाएँ हैं। उनमें से बहुत से तो एक दूसरे के भयानक शत्रु हैं। इनके अतिरिक्त मेक्सिकन लोग रहते हैं, जो स्वभावतः बड़े ही धर्मिष्ठ होते हैं। चूंकि वे अशिक्षित हैं तथा उन्हें कोई पथ-प्रदर्शन करनेवाला नहीं है, वे अपने पूर्वजों के धर्मों से चिपके हुए हैं।"

"मेरे पास डुरैंगो के बिशप का एक पत्र आया है, जिसमें उन्होंने इस नये पद के लिये अपने ही किसी पुरोहित की सिफ़ारिश की है," मेरिया द अलांदे ने कहा।

"प्रभुवर, यदि कोई वहीं का पुरोहित इस पद पर नियुक्त किया गया, तो यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी। इस क्षेत्र में वहाँ के लोगों ने कभी ठीक काम नहीं किया है। इसके अतिरिक्त यह पुरोहित वृद्ध व्यक्ति है। नया विकार अर्थात् इस नये पद पर नियुक्त किया जाने वाला पुरोहित कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिये, जो नौजवान हो, स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट हो, उत्साही और बुद्धिमान् हो। उसे जंगलीपन से, मूढ़ता से, चरित्रभ्रष्ट पादरियों से तथा राजनीतिक दाव-पेंच से निपटना होगा। उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिये, जो सुव्यवस्था को प्राथमिकता दे, उसे वह इतनी ही प्रिय हो, जितनी उसकी ज़िन्दगी।"

स्पेनिश कार्डिनल की गाढ़ी भूरी आंखों में एक चमक सी दिखाई दी और उन्होंने अपने मेहमान पर तिरछी दृष्टि डालते हुए कहा, "आपकी इस भूमिका से तो मुझे यह संदेह हो रहा है कि आपका अपना कोई उम्मेदवार है, और वह कदाचित् कोई फ्रांसीसी पुरोहित है। है न ठीक ?"

"आपका अनुमान ठीक है महोदय ! मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि फ्रांसीसी मिशनरियों के संबंध में हम एकमत हैं।"

"हाँ," कार्डिनल ने धीरे से कहा, "वे सर्वश्रेष्ठ धर्म-प्रचारक होते हैं। हमारे स्पेनिश फादर लोगों में अनेक शहीद हुए हैं, परन्तु फ्रांसीसी कैथोलिक सम्प्रदाय वाले उनसे भी आगे हैं। वे कुशल संगठन-कर्ता होते हैं।"

"क्या वे जर्मनों से भी अच्छे होते हैं?" इटालियन कार्डिनल ने पूछा, जिसकी सहानुभूति आस्ट्रियनों के प्रति अधिक थी।

"जर्मनों की विशेषता यह है कि किसी वस्तु का वर्गीकरण अच्छा करते हैं, परन्तु फ्रांसीसी लोग उसे सुव्यवस्थित करने में बड़े कुशल होते हैं। फ्रांसीसी मिशनरी लोगों में संतुलन की भावना होती है तथा उनके सभी कार्य युक्तिपूर्ण होते हैं। वे सदा ही वस्तुओं के तार्किक संबंध का पता लगाने में लगे रहते हैं। यह उनका व्यसन है।" स्पेनिश कार्डिनल वृद्ध पादरी की ओर फिर घूमे और बोले, "परन्तु फादर, आप इस बर्गंडी शराब की ओर उदासीन क्यों हैं? मैंने यह शराब अपनी आलमारी में से विशेषकर आप ही के लिये निकाली है, जिससे कनाडा में वितायी हुई बीस शीत ऋतुओं की ठंड आपकी देह से निकल जाय। ग्रेट लेक हर्टन के आस-पास के प्रदेश में आपको ऐसी अंगूरी शराब तो मिलती न होगी?"

अपने गिलास को उठाते हुये, जिसे पादरी महोदय ने अब तक नहीं छुआ था, वे मुस्करा पड़े। "यह अत्यन्त श्रेष्ठ शराब है, प्रभुवर। परन्तु अब मुझे इन अंगूरी शराबों में कोई स्वाद ही नहीं मिलता। वहाँ तो कभी-कभी थोड़ी ह्विस्की और कभी-कभी थोड़ा रम, यही हमारे लिये अधिक लाभप्रद होता है। हाँ, पेरिस में पिये हुए शैम्पेन को मैंने बहुत पसंद किया। हमने चालीस दिन तक समुद्र की यात्रा की थी और समुद्री यात्रा मेरे अनुकूल नहीं पड़ती।"

"तो फिर हम आपके लिये ऐसी ही शराब मंगाते हैं।" स्पेनिश कार्डिनल ने अपने गुमाश्ते को संकेत किया। "क्या आप उसे बहुत ठंडी करके

पीते हैं ? और आपके नये विकार उस जंगली भैंसों, सांप, बिच्छू आदि वाले देश में क्या पियेंगे ? वहाँ वे खायेंगे क्या ?"

"वे भैंसे का मांस तथा लाल मिर्च खायेंगे और पियेंगे पानी। यह भी वहाँ उन्हें बड़ी कठिनाई से मिलेगा। उनका जीवन कोई आराम का जीवन नहीं होगा, प्रभुवर। वह देश उनके यौवन तथा शक्ति को ठीक उसी प्रकार सुखा देगा, जिस प्रकार वह वर्षा के पानी को सुखा देता है। उन्हें प्रत्येक त्याग के लिये तैयार रहना पड़ेगा, संभव है कि उन्हें शहीद भी होना पड़े। अभी पिछले ही वर्ष सन फरनैंडिज़ द ताओ के रेड इण्डियनों ने अमेरिकन गवर्नर तथा अन्य लगभग एक दर्जन श्वेत व्यक्तियों की हत्या कर डाली तथा उनकी खोपड़ी का चमड़ा उतार लिया। उन्होंने अपने पादरी की हत्या नहीं की, क्योंकि वह विद्रोह का नेता था और उसने स्वयं ही इस हत्याकांड की योजना बनायी थी। यह है न्यू मेक्सिको की वर्त्तमान दशा !"

"आपका उम्मेदवार इस समय कहाँ है, फ़ादर ?"

"वह मेरे ही अधिकार-क्षेत्र में लेक ओंटेरियो के किनारे एक पादरी है। मैंने नौ वर्षों तक उसके काम को भली प्रकार देखा है। उसकी अवस्था इस समय केवल पैंतीस वर्ष की है। धार्मिक शिक्षालय से निकलकर वह सीधे हमारे ही यहाँ आया।"

"और उसका नाम क्या है ?"

"जीन मेरी लातूर।"

मेरिया द अलांदे अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर टिक गये और अपने दोनों हाथों की अँगुलियों के छोरों को आपस में मिला कर उन्हीं की ओर ग़ौर से देखने लगे।

"यह निश्चित है, फ़ादर फ़ेरांड, कि रोम की धार्मिक समिति इस नये पद पर उसी व्यक्ति को नियुक्त करेगी, जिसकी सिफ़ारिश बाल्टीमोर की कौंसिल करेगी।"

"वह तो है ही प्रभुवर, परन्तु यदि आप 'बाल्टीमोर की प्रांतीय कौंसिल को दो शब्द लिख दें, अपना कोई सुझाव दे दें तो—"

"इसका प्रभाव पड़ेगा, इसे मैं मानता हूँ", कार्डिनल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। "और आपके कथनानुसार यह पादरी बुद्धिमान्, ज्ञानवान् व्यक्ति है ? तो फिर आप ऐसे व्यक्ति को कौन से अच्छे जीवन में डालना चाहते है ! लेकिन मेरा ख्याल है, कि हूरों के बीच जीवन बिताने से तो यह बुरा नहीं है। आपके देश के विषय में मेरा ज्ञान फ़ेनीमोर कूपर द्वारा अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों पर ही आधारित है, जिन्हें मैंने बड़े चाव से पढ़ा है। परन्तु क्या आप के पादरी को बहुत से विषयों का ज्ञान है ? उदाहरण के लिये, क्या उन्हें कला आदि में भी रुचि है ?"

"लेकिन महोदय, उसे इसकी क्या आवश्यकता पड़ेगी ? इसके अतिरिक्त वह ऑवर्ग्ने का रहने वाला है।"

इस पर तीनों कार्डिनल ठहाका मार कर हँस पड़े और अपने गिलास फिर से भरने लगे। पादरी द्वारा बार-बार अपनी ही बात पर बल देने के कारण वे ऊब से रहे थे।

"सुनिये", स्पेनिश कार्डिनल ने कहा, "जब तक पादरी महोदय मेरे शैम्पेन को पीकर मुझे अनुगृहीत करते हैं, मैं एक कहानी सुनाता हूँ। आपसे यह प्रश्न पूछने का, जिसे आपने इतनी आसानी से समाप्त कर दिया, एक विशेष कारण है। वेलेंशिया के अपने पुश्तैनी घर में मेरे पास महान् स्पेनिश चित्रकारों के द्वारा रंजित अनेक चित्र हैं। ये चित्र मेरे परदादा द्वारा एकत्र किये गये थे, जिन्हें इस क्षेत्र का बड़ा अच्छा ज्ञान था तथा जो उस समय के अनुसार काफ़ी धनवान् व्यक्ति थे। अल ग्रीको के चित्रों का उनका संग्रह, मेरे अनुमान से, सारे स्पेन में सर्वश्रेष्ठ है। मेरे परदादा की वृद्धावस्था में एक बार न्यू स्पेन से एक धर्म-प्रचारक पादरी भीख

मांगता हुआ आया। अमेरिका के सभी धर्म-प्रचारक पादरी आज की तरह तब भी पक्के भिखमंगे होते थे, फ़ादर फ़ेरांड। इस फ्रांसिस्कन पादरी ने पुण्यात्मा रेड इण्डियनों के धर्म-परिवर्तन तथा प्रचार-केन्द्रों के घोर परिश्रम की बात सुना-सुनाकर पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली थी। वह मेरे परदादा के घर आया और स्थानीय पादरी की अनुपस्थिति में उपासना आदि का नेतृत्व करने लगा। उसने मेरे बूढ़े परदादा से बहुत धन ऐंठ लिया। इसके अतिरिक्त उसने पहनने के कपड़े, प्याले इत्यादि भी मांग लिये। वह कोई भी वस्तु लेने को तैयार हो जाता था। उसने मेरे परदादा से चित्रों के विशाल संग्रह से एक चित्र की भी याचना की, जिसे वह रेड इण्डियनों के बीच बने मिशनरी गिरजाघर में लगाना चाहता था। मेरे परदादा ने उससे संग्रह में से कोई भी चित्र चुन लेने को कहा। उन्हें यह आशा थी कि वह पादरी कदाचित् वही चित्र चुनेगा, जिसे वे आसानी से दे सकते हों। परन्तु नहीं; उस बड़े-बड़े बाल वाले फ्रांसिस्कन ने संग्रह के एक अत्यन्त श्रेष्ठ चित्र को ही चुना। उसने अल ग्रीको द्वारा चित्रित युवक सन्त फ्रांसिस की ध्यान-मुद्रा में एक चित्र को ही चुना और उस चित्र में सन्त के माडल के लिये अलबुकर्क के एक सुन्दर ड्यूक को चुना गया था। मेरे परदादा ने उसके इस चुनाव पर आपत्ति की तथा उसे यह समझाने का प्रयत्न किया कि रेड इण्डियनों को महात्मा ईसा के क्रास पर लटकाये जाने या अन्य किसी के शहीद होने का चित्र अधिक पसन्द आयेगा। संत फ्रांसिस का चित्र, जिनका सौंदर्य स्त्रियों जैसा था, उन हत्यारों के लिए किस काम का होगा ?

"परन्तु परदादाजी का सब समझाना व्यर्थ सिद्ध हुआ। मिशनरी ने उन्हें जो उत्तर दिया, वह मेरे परिवार में एक कहावत बन गयी है। उसने कहा था—'आप मुझे यह चित्र नहीं देना चाहते, क्योंकि यह एक अच्छा चित्र है। यह ईश्वर के लिये आवश्यकता से अधिक अच्छा

हो सकता है, परन्तु यह आपके लिए आवश्यकता से अधिक अच्छा नहीं है।

"वह चित्र को अन्त में ले ही गया। मेरे परदादा की सूची में संत फ्रांसिस के क्रमांक एवं नाम के नीचे लिखा हुआ है—ईश्वर के नाम पर फ्रे ह्यू डेशियो को दे दिया गया, जिससे न्यू स्पेन के जंगलियों के बीच बने प्यूब्लो दे सिया के मिशनरी गिरजाघर की शोभा बढ़ सके।

"इसी चित्र के सम्बन्ध में, फ़ादर फ़ेरांड, मैंने व्यक्तिगत रूप में डुरैंगो के बिशप से पत्र-व्यवहार किया था। एक बार मैंने उन्हें सारा तथ्य लिख कर भेज दिया था। उन्होंने मुझे उत्तर दिया कि सिया का मिशन (प्रचार केन्द्र) बहुत पहले ही नष्ट हो चुका है और उसमें का सारा सामान इधर-उधर हो गया है। वह चित्र भी किसी लूट-पाट या हत्याकांड के सिलसिले में संभवत: नष्ट हो गया। यह भी संभव है कि वह अब भी उस गिरजाघर के किसी कोठरी आदि में या किसी रेड इण्डियन की अंधेरी झोपड़ी में कहीं पड़ा हो। यदि आप का यह पादरी सूक्ष्म दृष्टि वाला हो, तो इस विकारेट पर भेजे जाने पर वह मेरे इस चित्र पर विशेष ध्यान रखे।"

बिशप ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, "नहीं, मैं आप से वादा नहीं कर सकता, मैं कुछ भी नहीं कह सकता। यह मैंने अवश्य देखा है कि यह पादरी बड़ी असाधारण एवं उच्च रुचि का व्यक्ति है, परन्तु वह बहुत ही गंभीर रहता है। और, प्रभुवर, वहाँ रेड इण्डियन लोग अब अंधेरी झोपड़ियों में नहीं रहते।"

"इसकी कोई चिंता नहीं, फ़ादर। मैंने फ़ेनीमोर कूपर की पुस्तकों द्वारा आपके रेड इण्डियनों के विषय में जो कुछ जाना है, उससे मैं उन्हें पसंद करता हूँ। अच्छा, अब चलिये ऊपर बारजे पर चल कर कॉफ़ी पी जाय और वहीं से संध्या आगमन का आनंद लिया जाय।"

पूर्व कथा

कार्डिनल तथा उनके मेहमान तंग सीढ़ियों से होकर ऊपर पहुँचे। वह लम्बा बारजा तथा उसकी झंझरीदार चहारदीवारी उसकी गोधूलि वेला में किसी झील के सदृश नीले दीख रहे थे। सूर्यास्त हो चुका था। भूरा मैदान अब बैगनी रंग का दीख रहा था। बैसिलिका के गुंबद के पीछे से गुलाब तथा गुलमुहर की सुगंध से वायुमण्डल आच्छादित हो रहा था।

'बारजे पर चहलकदमी करते हुए तथा ऊपर आकाश में निकलते हुए तारों का आनंद लेते हुए, पादरी तथा तीनों कार्डिनल विभिन्न विषयों पर बातें करने लगे, परन्तु उन्होंने राजनीति को दूर ही रखा, हालांकि ख़तरनाक समय में लोग राजनीति की बात अधिक करते हैं। उन्होंने लोम्बार्ड युद्ध की, जिसमें पोप की स्थिति नियम से बहुत विरुद्ध हो गयी थी, तनिक भी चर्चा नहीं की। इसके बजाय उन्होंने नवयुवक वर्डी के एक नये संगीत-नाटक की चर्चा की, जो वेनिस में खेला जा रहा था, उन्होंने एक स्पेनिश नर्तकी की चर्चा की, जो हाल ही में बड़ी धार्मिक हो गयी थी और अब अंडालूशिया में चमत्कार दिखला रही थी। इस वार्ता में फ़ादर फ़ेरांड ने भाग नहीं लिया और न तो उन्होंने उसमें कोई अनुराग ही दिखाया। उन्होंने सोचा कि बहुत दिनों तक समाज से दूर, देश की सीमावर्ती प्रदेश में रहने के कारण कदाचित् उन्हें चालाक मनुष्यों की वार्ता में कोई अनुराग ही नहीं रह गया है। परन्तु सोने जाने के पहले मेरिया द अलांदे ने पादरी के कान में, अंग्रेज़ी भाषा में एक बात कही।

"आप कुछ खोये-खोये से हैं, फ़ादर फ़ेरांड। क्या आप यह सोचने लगे हैं कि आप अपने नये विशप को इस पद पर न नियुक्त करें? परन्तु अब तो फ़ैसला हो चुका है। जीन मेरी लातूर! यही न है उसका नाम?"

अध्याय १

प्रतिनिधि-पादरी

१

क्रूश वृत्त

सन् १८५१ ई० की शरद् ऋतु में एक दिन तीसरे पहर न्यू मेक्सिको के मध्यवर्ती भाग के किसी निर्जन एवं सूखे प्रदेश में एक घुड़सवार अकेला ही भटक रहा था। उसके पीछे उसका सामान लादे हुये एक खच्चर भी था। वह रास्ता भूल गया था और अपने कुतुबनुमा तथा दिशा ज्ञान की सहायता से सही रास्ते पर पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। उसके साथ कठिनाई यह थी कि जिस प्रदेश में वह पहुँच गया था, वहाँ ऐसी कोई वस्तु नहीं दीख रही थी, जो अन्य सभी वस्तुओं से स्पष्टतया भिन्न हो; सारा प्रदेश लगभग एक जैसा ही था। जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती थी, चारों ओर लाल-लाल, वनस्पति-हीन पहाड़ के टीले ही टीले दिखलाई पड़ते थे, जो सूखी घास के ढेर की तरह बहुत बड़े नहीं थे परन्तु उनका आकार वही था। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि जिधर ही आप देखिये, चारों ओर एक ही आकार के लाल-लाल टीले खड़े दीख पड़ रहे थे। घुड़सवार इन टीलों के बीच उस प्रदेश में सुबह से ही भटक रहा था और चारों ओर देखने पर उसे ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वह तनिक भी

आगे नहीं बढ़ा है और एक ही स्थान पर अचल रह गया है। वह इन त्रिभुजाकार नुकीले टीलों के बीच से होकर लगभग तीस मील तो अवश्य चला होगा और अब भी उनका अन्त न देखकर वह सोचने लग गया था कि कदाचित् अब वह अन्य कोई वस्तु देखेगा ही नहीं। उन टीलों में इतना अधिक सादृश्य था कि उसे लगता था कि जैसे वह किसी गोरख-धन्धे में घूम रहा हो। चपटे सिरे वाले इन त्रिभुजाकार टीलों का आकार घास के टीलों की अपेक्षा मेक्सिकन चूल्हे से अधिक मिलता जुलता था। या यों कहना अधिक ठीक होगा कि वे मेक्सिकन चूल्हे के आकार के थे, उनका रंग ईंट के चूरे जैसा लाल था तथा उन पर एक सदाबहार की झाड़ी के अतिरिक्त अन्य कोई वनस्पति नहीं थी। इन झाड़ियों का आकार भी मेक्सिकन चूल्हे ही जैसा था। प्रत्येक नुकीले टीले पर ये छोटी-छोटी नुकीली झाड़ियाँ थीं। जैसे उन सभी टीलों का रंग लाल था, वैसे ही इन सभी झाड़ियों का रंग भी कुछ पीली आभा वाला हरा था। इन टीले अथवा छोटी पहाड़ियों की संख्या इतनी अधिक थी, वे एक दूसरे से इतनी सटी हुई थीं कि लगता था कि जैसे वे एक दूसरे को अगल-बगल धक्का दे रही हों।

इन चपटे सिरे वाले पिरामिडों को बार-बार देखकर, सैकड़ों बार उन्हीं की आकृति दृष्टि से उतारते-उतारते, यात्री उस धूप और गर्मी में घबरा गया था; वह वस्तुओं की आकृति के प्रति कुछ विशेष संवेदनशील भी था।

"यह तो भयानक है।" अपनी आँखों को इन सर्वव्यापी त्रिभुजों से बचाने तथा विश्राम देने के लिये बन्द करते हुए उसने कहा।

जब उसने पुनः अपनी आँखें खोलीं, तो सद्यः उसकी दृष्टि एक ऐसी झाड़ी पर पड़ी, जो आकृति में अन्य झाड़ियों से भिन्न थी। वह नुकीले आकार की पत्तेदार झाड़ी नहीं थी, वरन् एक ऐंठनदार तना सा खड़ा था, जिसकी ऊँचाई लगभग दस फुट थी और जिसका ऊपरी सिरा दो

शाखाओं में विभक्त होता था। ये शाखाएँ दो ग्रामने-सामने की दिशा में तने से समकोण बनाती हुई गयी थीं। शाखाओं के सन्धि-स्थल पर कलंगी के ग्राकार की थोड़ी हरियाली थी। क्रूश के ग्राकार से इतना ग्रधिक मिलने-जुलने वाला ग्रन्य कोई प्राकृतिक वृक्ष या पौधा नहीं हो सकता था।

यात्री ग्रपनी घोड़ी से उतर गया, उसने ग्रपनी जेब से एक फटी-पुरानी पुस्तक निकाली ग्रौर ग्रपना सिर नंगा करते हुए, उसे उस क्रूश-वृक्ष के ग्रागे झुका दिया।

घुड़सवारोंवाले चमड़े के कोट के नीचे वह एक काला वास्कट तथा पादरियों का गुलूबन्द ग्रौर कालर पहने हुए था। वह उपासना में रत एक नवयुवक पादरी था। उसे देखने से ही यह स्पष्ट हो जाता था कि वह हजारों में एक पादरी था। उसका झुका हुग्रा सिर किसी साधारण मनुष्य का सिर नहीं था—वह एक तीव्र बुद्धि वाले व्यक्ति का सिर था। उसका माथा चौड़ा था; उसे देखने से ही लगता था कि वह एक दयालु तथा विचारवान पुरुष था। उसका चेहरा सुन्दर तथा कुछ गम्भीर था। चमड़े के कोट की ग्रास्तीन से बाहर निकले हुए उसके हाथों में एक विशेष प्रकार का ग्राकर्षण था। उसकी प्रत्येक बात से लगता था कि वह एक ग्रच्छे कुल का व्यक्ति है। वह बहादुर, संवेदनशील तथा बड़ा ही शिष्ट था। इस निर्जन मरुस्थल में भी उसके ग्राचरण ग्रसाधारण ढंग के थे। वह स्वयं के प्रति शिष्ट था, ग्रपने जानवरों के प्रति शिष्ट था, उस क्रूश-वृक्ष के प्रति शिष्ट था, जिसके सामने वह झुका हुग्रा था तथा वह ईश्वर के प्रति शिष्ट था, जिसकी उस समय वह ग्राराधना कर रहा था।

वह लगभग ग्राधे घण्टे तक पूजा करता रहा ग्रौर जब वह उठा, तब

उसकी थकावट दूर हुई लगती थी। वह अपनी घोड़ी से स्पेनिश भाषा में बात करने लगा और पूछा कि यद्यपि तुम थकी हुई हो, फिर भी रास्ता पा जाने की आशा में क्या आगे बढ़ना ही श्रेयस्कर नहीं है ? उसकी सुराही में अब पानी नहीं रह गया था और घोड़े कल सुबह से ही पानी नहीं पिये थे। कल रात वे इन्हीं पहाड़ियों के अञ्चल में ही कहीं डेरा डाले थे और बिना पानी पिये ही सो गये थे। दोनों ही जानवरों की शक्ति समाप्त-प्राय थी, और बिना पानी पिये उनमें फिर से ताज़गी नहीं आ सकती थी। अतः इस परिस्थिति में यही श्रेयस्कर प्रतीत होता था कि उनकी बची हुई शक्ति पानी की खोज में ही लगायी जाय।

टेक्साज राज्य को एक काफ़िले के साथ पार करते समय इस लम्बी यात्रा में इस व्यक्ति को प्यासा रहने का कुछ अनुभव हुआ था, क्योंकि वह जिस यात्री-दल के साथ था, उसे कई बार, कई दिनों तक सीमित मात्रा में ही पानी पर रहना पड़ा था। परन्तु उसे उस समय इतना कष्ट नहीं सहना पड़ा था, जितना इस समय। सुबह से ही वह कुछ बीमार सा अनुभव कर रहा था। उसके मुंह में उस फीकेपन का स्वाद था, जो ज्वर आने पर रहता है तथा उसे बार-बार भयानक चक्कर आ रहा था। इन भयानक नुकीली पहाड़ियों की छाया उसके मस्तिष्क पर अधिकाधिक घनी होती जाती थी और वह विचार करने लगा कि क्या आवर्ने पहाड़ की उसकी लम्बी यात्रा का अन्त यहीं हो जायगा। उसने महात्मा ईसा की उस पुकार का स्मरण किया, जो उन्होंने क्रूश पर चढ़े हुए की थी, "मैं प्यासा हूं।" महात्मा की सारी शारीरिक यातनाओं में से केवल यही कि "मैं प्यासा हूँ" उसके होठों पर आयी। दीर्घकालीन शिक्षा से उसे जो शक्ति मिली थी, उसका सहारा लेकर नवयुवक पादरी ने अपनी सत्ता को भुला दिया और महात्मा ईसा की ही यंत्रणा पर विचार करने लगा। उनकी मृत्यु-कालिक यंत्रणा के सम्बन्ध में लिखा हुआ नाटक ही उसके

लिये एकमात्र वास्तविकता रह गयी; उसके शरीर की आवश्यकता भी उस कल्पना का ही एक अंग के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।

उसकी घोड़ी लड़खड़ायी और उसकी विचारधारा टूटी। उसे स्वयं की अपेक्षा अपने जानवरों के लिए अधिक दुःख हो रहा था। इन तीन जीवों के दल के नेता के रूप में उसने ही इन बेचारे जानवरों को इस अनन्त तथा भयानक मरुस्थल में ला पटका था। उसे लगा कि उसने अपनी लापरवाही से ही रास्ता भुला दिया था, क्योंकि वह रास्ते पर ध्यान देने के बजाय अपनी समस्या के उधेड़बुन में लगा हुआ था। उसकी समस्या यह थी कि वह बिशप का पद क्योंकर पाये। वह एक प्रतिनिधि-पादरी (विकार) तो था, परन्तु उसके पास कोई विकार का घर या इलाका नहीं रह गया था। वह अपने इलाके से बाहर कर दिया गया था; और अब उसके अनुयायी, उसके इलाके के लोग, उसे वापस नहीं लेंगे।

यात्री जीन मेरी लातूर था, जो एक वर्ष पहले सिनसिनाटी में, न्यू मेक्सिको के प्रतिनिधि-पादरी (विकार अपास्लिक) तथा अगाथोनिका के पद पर अभिषिक्त हुआ था, और तब से ही वह अपने इलाके में पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। सिनसिनाटी में उसे कोई यह नहीं बतला सका, कि न्यू मेक्सिको कैसे पहुँचा जाय, क्योंकि वहाँ कोई गया ही नहीं था। अमेरिका में नवयुवक फ़ादर लातूर के आने के बाद से न्यूयार्क से सिनसिनाटी तक एक नई रेलवे लाइन निकाली गई थी। परन्तु सिनसिनाटी में ही उसका अंत हो जाता था। न्यू मेक्सिको एक अंध महाद्वीप के मध्य में स्थित था। ओहियो के सौदागर केवल दो रास्ते जानते थे। एक रास्ता सेंट लूई से सांता फ़े का रास्ता था; परन्तु उस समय वह कमांचे दल के रेड इण्डियनों के आक्रमणों के कारण बड़ा खतरनाक हो रहा था। फ़ादर लातूर के मित्रों ने उन्हें सलाह दी थी, कि वे नदी के किनारे-किनारे न्यू आर्लियंस पहुँचें; वहाँ से नाव द्वारा गैलवेस्टन जांय और वहाँ से टेक्साज

राज्य पार करके सैन एंटोनिश्रो पहुँचे; श्रौर फिर रायो ग्रैंड घाटी में से होकर न्यू मेक्सिको में प्रवेश करें। उन्होंने यही किया था, परन्तु ऐसा करने में उन्हें अनेक भयानक आपत्तियों का सामना करना पड़ा।

उनका स्टीमर गैलवेस्टन बन्दरगाह ही में क्षतिग्रस्त होकर डूब गया श्रौर उसके साथ ही उनकी पुस्तकों के अतिरिक्त, जिन्हें उन्होंने अपने जान की बाज़ी लगाकर बचा ली थी, उनका सारा सामान भी डूब गया था। उन्होंने सौदागरों के एक क़ाफ़िले के साथ टेक्साज़ राज्य पार किया श्रौर सैन एंटोनिश्रो पहुँचते-पहुँचते उनकी घोड़ागाड़ी उलट गई, जिससे कूदने में वे घायल हो गए। इसके फलस्वरूप उन्हें एक ग़रीब आयरिश परिवार में जिसमें बहुत से प्राणी थे, तीन मास तक बिस्तर पर पड़े रहना पड़ा। तब जाकर कहीं उनका चोटग्रस्त पैर ठीक हो सका।

मिसीसिपी नदी में अपनी यात्रा आरम्भ करने के लगभग एक वर्ष पश्चात् इस नवयुवक बिशप ने अंततोगत्वा एक ग्रीष्मकालीन संध्या को सूर्यास्त के समय उस बस्ती को देखा, जिसके लिये उन्होंने अब तक की यह लम्बी यात्रा की थी। उनकी गाड़ी सारा दिन एक विशाल मैदान में से होकर चलती रही श्रौर संध्या से कुछ पहले उनकी गाड़ी के ड्राइवरों ने चिल्लाना आरम्भ किया कि बस्ती अब आगे दिखलाई पड़ रही है। मैदान समाप्त होते-होते फ़ादर लातूर को कुछ छोटे-छोटे बादामी रङ्ग के आकार, जो मिट्टी के बने हुये धुस्स जैसे थे, हरी-हरी पहाड़ियों की तलहटी में बने दिखलाई पड़े। इन पहाड़ियों की चोटियों पर वनस्पतियाँ आदि नहीं थीं। उनके आकार उन बड़ी-बड़ी लहरों जैसे थे, जो सागर में भयानक तूफ़ान आने पर उठती हैं; श्रौर उनकी हरियाली दो रङ्ग की थी—मंजनू के वृक्षों की तथा सदाबहार के वृक्षों की; परन्तु ये दोनों रङ्ग एक दूसरे से मिले हुए नहीं थे, वरन् स्पष्ट रूप में कुछ दूर तक एक रङ्ग श्रौर फिर कुछ दूर तक दूसरा रंग।

गाड़ी के आगे बढ़ने पर सूर्यास्त होते-होते पहाड़ों की तलहटी में छोटी-छोटी लाल रंग की पहाड़ियों की एक श्रेणी दृष्टिगत हुई। उस घाटी के दो तरफ़ ये पहाड़ियाँ थीं, जिनके बीच सांता फ़े नगर अंततोगत्वा दिखलाई पड़ा। नगर में ईंटों के बने हुए मकान थे और बीच-बीच में हरियाली थी उसके एक किनारे पर एक बड़ा गिरजाघर था, जिसमें दो ऊँची-ऊँची मीनारें थीं। नगर की मुख्य सड़क इसी गिरजाघर से ही आरम्भ होती थी; ऐसा लगता था कि सारे नगर का उद्गम यही गिरजाघर था, जैसे किसी सोते से कोई नाला निकलता हो। संध्या के उस प्रकाश में गिरजाघर की चिमनी तथा सभी ईंटों के मकान गुलाबी रङ्ग के दीख रहे थे। उनका रङ्ग उन लाल पहाड़ियों के रङ्ग से कुछ गाढ़ा दीख रहा था और तेज़ हवा के कारण मंजनू के वृक्ष कभी-कभी झुक कर अंग्रेजी भाषा के उच्चारण चिह्न की भाँति तिरछे हो जाते थे और झोंका हट जाने पर वे पुनः सीधे हो जाते थे।

सांता फ़े पहुँचने की उस प्रसन्नता की घड़ी में नवयुवक बिशप लातूर अकेले ही नहीं थे; उनके साथ उनके बचपन के मित्र फ़ादर जोसेफ़ वेलेंट भी थे, जिन्होंने उनके साथ ही यह लम्बी यात्रा की थी तथा उनके कष्टों में हाथ बँटाया था। ईश्वरीय महिमा को धन्यवाद देते हुए दोनों व्यक्तियों ने साथ ही सांता फ़े में प्रवेश किया था।

तो फिर फ़ादर लातूर अपने कार्यालय-निवासस्थान से सैकड़ों मील दूर; इस बीहड़ निर्जन प्रदेश में, अकेले, रास्ते से भटकते हुए कैसे पहुँच गये थे ?

सांता फ़े पहुँचने पर हुआ यह था कि मेक्सिकन पादरियों ने उनके अधिकार को मान्यता प्रदान करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा कि उन्हें किसी प्रतिनिधि-पादरी अथवा अगायोनिका के बिशप आदि का कोई ज्ञान नहीं है। वे तो डूरेंगो के बिशप के अधिकार-क्षेत्र के अधीन के हैं

ग्रौर उन्हें उसके विपरीत कोई ग्रादेश नहीं मिला है। यदि फ़ादर लातूर को उनका बिशप नियुक्त किया गया है, तो उनके सम्बन्धित ग्रधिकार-पत्र ग्रादि कहाँ हैं? फ़ादर लातूर को मालूम था कि डूरँगो के बिशप के पास इस ग्राशय के पत्रादि भेजे गये थे; परन्तु मालूम होता है कि ये उनके पास पहुँचे नहीं। इस प्रदेश में डाक सेवा नहीं थी, ग्रतः डूरँगो के बिशप के साथ सम्पर्क स्थापित करने का सब से शीघ्र एवं निश्चित तरीक़ा उनके पास स्वयं जाना ही था। इस प्रकार, लगभग एक वर्ष की यात्रा करने के पश्चात् सांता फ़े पहुँच कर भी फ़ादर लातूर को उसे कुछ सप्ताहों के पश्चात् ही छोड़ना पड़ा। वे एक दिन ग्रकेले ही घोड़े पर सवार होकर ग्रोल्ड मेक्सिको के लिये रवाना हो गए। वहाँ पहुँचने तथा वापस ग्राने में उन्हें पूरे तीन हज़ार मील की यात्रा करनी पड़ी थी।

उन्हें चेतावनी दी गयी थी कि रायो ग्रांड सड़क से ग्रनेक रास्ते इधर-उधर को निकलते हैं ग्रौर कोई ग्रनजवी सहज ही ग्रपना रास्ता भूल सकता है। ग्रारम्भ में कुछ दिनों तक तो वे सतर्क रहे। फिर बाद में ऐसा लगता है कि वे लापरवाह हो गये ग्रौर कोई स्थानीय पगडंडी पकड़ ली। जब उन्हें यह ज्ञात हुग्रा कि वे भटक गये हैं, तो उनका पानी का बर्तन खाली हो चुका था ग्रौर घोड़े इतने थक गये थे कि पुनः ग्रपने रास्ते पर ग्राना कठिन हो रहा था। वे इस रेतीले रास्ते पर जो बराबर ग्रस्पष्ट होता जा रहा था, यह सोचकर ग्रागे बढ़ते जा रहे थे कि कहीं न कहीं तो वह पहुँचायेगा ही।

अचानक ही फ़ादर लातूर को लगा कि उनकी घोड़ी की शारीरिक स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ। उसने इतनी देर के बाद पहली बार अपना सिर उठाया और ऐसा लगा कि वह एक बार फिर अपनी शक्ति अपने पावों में लगाकर आगे बढ़ना चाहती है। खच्चर ने भी ऐसा ही किया और दोनों ने अपनी-अपनी चाल बढ़ायी। क्या उन्हें कहीं पास ही में पानी का आभास मिला था ?

लगभग एक घण्टा बीत गया, और फिर दो पहाड़ियों के बीच से (ये पहाड़ियाँ भी उन सैकड़ों पहाड़ियों की ही भाँति थीं जो उन्हें रास्ते में मिली थीं) गुज़रते हुए दोनों जानवर एक साथ ही हिनहिनाये। जहाँ वे पहुँचे थे, वहाँ से नीचे उस रेत के सागर के बीच, हरियाली की एक रेखा तथा एक बहता हुआ नाला दिखलायी पड़ा। मरुस्थल की वह हरियाली चौड़ी नहीं थी। उसकी चौड़ाई इतनी थी कि उसके आर-पार आसानी से ढेला फेंका जा सकता था। परन्तु इतनी गाढ़ी हरियाली लातूर ने पहले कभी देखी नहीं थी, यहाँ तक कि उन्हें ऐसी हरियाली अपनी दुनिया के सर्वाधिक हरे प्रदेश में भी देखने को नहीं मिली थी। उनकी घोड़ी प्रसन्नता से अपनी गरदन तथा कंधों के चमड़े को बारबार हिला रही थी। इसे देखकर ही फ़ादर लातूर को विश्वास हुआ कि वास्तव में वहाँ पानी है, अन्यथा इसे वे स्वप्न अथवा मृगतृष्णा ही समझते।

नवयुवक पादरी ने वहाँ बहता हुआ पानी देखा, पशुओं के चारे के खेत देखे, हरे-हरे सदाबहार तथा बबूल के वृक्ष देखे, कच्ची ईंटों के बने

हुए छोटे-छोटे मकान देखे, उन्होंने एक लड़के को सफ़ेद बकरियों के एक झुण्ड को नाले की ओर हांकते हुए भी देखा।

थोड़ी देर पश्चात्, जब वे अपने घोड़ों को बहुत अधिक पानी पीने से रोकने का प्रयत्न कर रहे थे, एक नौजवान लड़की सिर पर काली शाल ओढ़े उनके पास दौड़ती हुई आई। उन्हें ऐसा लगा कि इतना मनमोहक चेहरा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। उसने एक पक्के ईसाई की भाँति उनका अभिवादन किया।

"आपको नमस्कार है महाशय, आप कहां से आ रहे हैं?"

"भाग्यवान् लड़की," उन्होंने स्पेनिश भाषा में उत्तर देते हुए कहा, "मैं एक पादरी हूँ और रास्ता भूल गया हूँ; मैं प्यास से मर रहा हूँ।"

"आप पादरी हैं?" उसने अविश्वास दिखलाते हुए कहा, "नहीं, नहीं, यह सम्भव नहीं है। परन्तु आपको देखने से तो आपका कहना सच जान पड़ता है। हमारे साथ पहले ऐसी घटना कभी नहीं घटी। पिता जी की प्रार्थना के फल-स्वरूप ही ऐसा हुआ है। दौड़ो, पेड्रो और पिताजी तथा साल्वाटोर से यह बताओ कि आप आये हैं।"

२
ओझल जल

एक घण्टे के पश्चात् जब उपत्यका में अँधेरा हो चुका था, नवयुवक बिशप इस मेक्सिकन गाँव के, जिसका नाम उसकी विशेषता के अनुरूप 'ओझल जल' था, सबसे पुराने मकान में बैठे भोजन कर रहे थे। उनके साथ घर का मालिक एक वृद्ध पुरुष, जिसका नाम बेनिटो था, उसका सबसे बड़ा लड़का तथा दो पोते भी भोजन करने बैठे हुए थे। वृद्ध विधुर था और उसकी पुत्री जोसेफ़ा, वही लड़की, जो बिशप को नाले पर मिली थी, घर की मालकिन थी। उनके भोजन में मांस की कोई कढ़ी, रोटी, बकरी का दूध, ताज़ा पनीर तथा पके हुए सेव थे।

इस कमरे में, जिसकी कच्ची इंटों की मोटी दीवारें चूने से पुती हुई थीं, प्रवेश करते ही फ़ादर लातूर को एक विशेष प्रकार की शान्ति का अनुभव हुआ था। इसकी सादगी में भी एक मनोहरता थी, एक आकर्षण था, जैसा कि उस लड़की में था, जो इस समय मेज़ पर भोजन लगा देने के पश्चात्, अँधेरे में दीवार के सहारे खड़ी हुई थी। उसकी आँखें फ़ादर लातूर के चेहरे पर गड़ी हुई थीं। बिशप काले बालों वाले उन चारों व्यक्तियों के साथ मोमबत्तियों के उस प्रकाश में बड़े इतमीनान से बैठे हुए थे। उनके व्यवहार बड़े ही सरल तथा उनके बोलने की आवाज़ बड़ी धीमी एवं मधुर थी। भोजन आरम्भ करने के पहले जब फ़ादर ने प्रार्थना की, तो चारों

व्यक्ति कुर्सियों से उठकर भगवान् के प्रति फ़र्श पर सिर टेक दिए थे। बूढ़े दादा ने तो यहाँ तक कहा कि देवी मेरी ने ही फ़ादर लातूर को उनका रास्ता भुला दिया था और यहाँ आने का संयोग उत्पन्न किया था, जिससे वे बच्चों को दीक्षा दे सकें और विवाहों को धार्मिक रूप दे सकें। बूढ़े ने बताया कि उनके गाँव को बहुत कम लोग जानते हैं। उनके पास उनकी भूमि के अधिकार सम्बन्धी काग़ज़ात नहीं है और उन्हें भय है कि अमेरिकन उनसे उनकी ज़मीन छीन न लें। उनके गाँव में ऐसा कोई नहीं था, जो लिख-पढ़ सकता हो। उसका बड़ा बेटा साल्वाटोर पत्नी की खोज में अलबुक़र्क तक गया था और वहीं उसने विवाह कर लिया था। परन्तु वहाँ के पुरोहित ने इस कार्य के लिये उससे बीस पेसो (दक्षिणी अमेरिका का एक सिक्का) ऐंठ लिया था। इस प्रकार उसने अपनी रक़म का, जो उसने अपने मकान के लिये कुर्सी-मेज़ आदि तथा शीशे की खिड़कियाँ खरीदने के लिये बचायी थी, आधा पुरोहित ही को दे दिया। उसके साथ घटी इस घटना से डर कर उसके भाइयों ने बिना विवाह संस्कार के ही पत्नियाँ रख ली थीं।

बिशप के पूछने पर उन्होंने अपनी जीवन-कथा सुनायी। उन्होंने बताया कि यहाँ उनके पास सभी सुख-साधन विद्यमान हैं। वे अपनी भेड़ों के ऊन धुनकर, कात कर उससे कम्बल आदि बनाते हैं, वे खेती करके अनाज, गेहूँ तथा तंबाकू के पत्ते पैदा करते हैं, जाड़ों के लिये खूबानी तथा बेर के फलों को सुखाकर रख लेते हैं। बच्चे वर्ष भर की आवश्यकता का गल्ला अलबुक़र्क जाकर पिसा ले आते हैं, वहीं से चीनी और काफ़ी जैसी मूल्यवान् वस्तुएँ खरीद लाते हैं। वे मधु-मक्खियाँ भी पालते हैं और जब चीनी महँगी हो जाती है, तो शहद से उसका काम लेते हैं। बेनिटो को यह नहीं ज्ञात था कि उसके दादा किस वर्ष में चिहुआहुआ से अपना सारा सामान बैलगाड़ियों पर लाद कर यहाँ लाकर बसे थे। "लेकिन यह उस समय की

बात है, जब फ्रांसीसियों ने अपने सम्राट की हत्या की थी। दादा घर छोड़ने के पहले उसकी चर्चा सुन चुके थे और बूढ़े हो जाने पर हम बच्चों को उसकी कहानियाँ सुनाते थे।"

"कदाचित् आपने यह अनुमान लगा लिया है कि मैं फ्रांसीसी हूं," फ़ादर लातूर ने कहा।

लेकिन नहीं, उन्हें यह अनुमान नहीं हुआ था। हाँ, इसमें उन्हें कोई संदेह नहीं था कि वे अमेरिकन नहीं थे। बड़ा पोता, जिसका नाम जोस था, अतिथि को कुछ संदिग्ध दृष्टि से देख रहा था। वह एक सुंदर लड़का था। उसके काले बाल उसकी कुछ उदास आँखों के ऊपर भौंहों पर लटक रहे थे। वह अब पहली बार बोला।

"अलबुक़र्क में लोग कहते हैं, कि अब हम सभी अमेरिकन हैं, लेकिन यह सच नहीं है, फ़ादर। मैं अमेरिकन कभी भी नहीं बन सकता, क्योंकि वे सभी नास्तिक होते हैं।

"सभी ऐसे नहीं होते, मेरे बच्चे ! मैं उत्तर में अमेरिकनों के साथ दस वर्ष तक रह चुका हूँ और मैंने वहाँ बहुत से पक्के कैथोलिक देखे।"

लड़के ने अविश्वास-सूचक सिर हिलाया। "हम लोगों के साथ युद्ध करते समय उन्होंने हमारे गिरजाघरों को नष्ट करके उन्हें घोड़ों के अस्तबल बना दिये। और अब वे हमसे हमारा धर्म भी छीन लेंगे। हमें तो अपना ही धर्म, अपनी ही परम्पराएं चाहिये।"

फ़ादर लातूर उन्हें ओहिओ के प्रोटेस्टेंटों से अपने मैत्री-पूर्ण सम्बन्ध की बातें बताने लगे; परन्तु उनके मस्तिष्क में अन्य कोई बात बैठ ही नहीं सकती थी। उनके लिये तो केवल एक ही धर्म—कैथोलिक था और उसमें विश्वास न करने वाले सभी नास्तिक थे। हाँ, यह बात उनकी समझ में अवश्य आई कि यहाँ फ़ादर लातूर के झोले में इनके पादरियों के कपड़े थे, गिरजाघर की वेदी थी, जिस पर सभी संस्कार किये जाते थे, ईसाईयों

के विशेष पूजा-समारोह 'मास' के आयोजन की सभी सामग्रियां थी; और यह कि कल प्रातःकाल पूजा समारोह के पश्चात्, वे लोगों के धार्मिक विश्वास की बात सुनेंगे, दीक्षा देंगे और विवाहों को धार्मिक स्वरूप प्रदान करेंगे।

भोजन के पश्चात् फ़ादर लातूर एक मोमबत्ती लेकर ताक़ में रक्खी मूर्तियों को देखने लगे। संतों की काठ की बनी मूर्तियों को, जो मेक्सिको के ग़रीब से ग़रीब घर में भी रहती थीं, वे बहुत पसंद करते थे। उन्हें आज तक ऐसी दो मूर्तियाँ नहीं मिली थीं, जो ठीक एक दूसरे जैसी हों। बेनिटो के घर में रखी ये मूर्तियां लगभग साठ वर्ष पहले चिहुआहुआ से बैलगाड़ियों में लदकर आई थीं। उन्हें किसी धर्मात्मा ने गढ़ कर बनाया था तथा उन पर चमकदार पालिश की हुई थी, यद्यपि समय के साथ उनके रङ्ग कुछ धुंधले पड़ गए थे; और उन्हें गुड़ियों की भांति कपड़े पहना दिये गए थे। उन्हें ये मूर्तियां ओहिओ के गिरजाघरों में रखी कारखानों में बनी मिट्टी की मूर्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक पसंद आयी। वे आवर्न के पुराने गिरजाघरों के फाटकों पर बनी पत्थर की मूर्तियों से अधिक मिलती-जुलती थीं। देवी मेरी की लकड़ी की मूर्ति बड़ी ही उदास मुद्रा की मूर्ति थी,— लम्बी, सीधी तथा बड़ी गम्भीर, गरदन से लेकर कमर तक का भाग बहुत ही लम्बा, कमर से लेकर पैरों तक तो उससे भी लम्बा जैसा कि एशियायी देशों में रङ्गीन पत्थरों के बड़े-बड़े चित्र बने होते हैं। उन्हें काला कपड़ा पहनाया गया था, ऊपर से एक सफ़ेद चोंगा था, सिर पर एक काली ओढ़नी, जैसा ग़रीब मेक्सिकन महिलाएं ओढ़ती हैं। उनके दाहिनी ओर संत जोसेफ़ की मूर्ति थी और उनकी बाईं ओर क्रुद्ध मुद्रा में, घोड़े पर सवार एक छोटी-सी मूर्ति थी, यह मूर्ति भी किसी संत की थी, जो मेक्सिकन कृषक के कपड़े पहने हुए थे, मखमली पतलून, जिसमें बेल-बूटे कढ़े हुए थे और जो नीचे की ओर चौड़ा था, मखमल का जेकेट तथा रेशम की कमीज़ तथा

ऊँची, चौड़े किनारे की फ़ेल्ट की टोपी। वे अपने मोटे घोड़े पर एक लकड़ी की कील द्वारा जो ज़ीन में ठोंकी हुई थी, जड़े हुए थे।

छोटे पोते ने इस मूर्ति में फ़ादर के विशेष अनुराग को देखा। "वे मेरे नामधारी संत सैंटियागो हैं," उसने कहा।

"ओह! संत सैंटियागो! वे तो मेरी ही भाँति धर्म-प्रचारक थे। हम अपने देश में उन्हें संत जेम्स कहते हैं और उन्हें एक डंडा तथा झोला लिए हुए दिखाया जाता है—लेकिन यहाँ तो उनके लिये घोड़ा अनिवार्य ही होता।"

लड़के ने उनकी ओर आश्चर्य से देखा और कहा, "परन्तु वे तो घोड़ों के ही देवता माने जाते हैं। क्या आपके देश में उन्हें ऐसा नहीं माना जाता?"

बिशप ने नकारात्मक ढंग से अपना सिर हिलाया। "नहीं, मैं इसके विषय में कुछ भी नहीं जानता। वे घोड़ों के देवता कैसे हुए?"

"वे घोड़ियों को आशीर्वाद देते हैं, जिसके फल-स्वरूप वे बच्चे देने लग जाती हैं। रेड इण्डियन भी ऐसा विश्वास करते हैं। वे जानते हैं कि यदि वे कुछ वर्षों के लिये संत सैंटियागो की प्रार्थना करना छोड़ दें तो घोड़ियों के बच्चे ठीक तरह से पैदा नहीं होंगे।"

थोड़ी देर पश्चात्, पूजा आदि समाप्त करके नवयुवक बिशप बेनिटो के बिस्तर पर लेटे हुए सोच रहे थे कि यह रात उनकी कल्पना से कितनी भिन्न थी। उन्होंने तो सोचा था कि उन्हें यह रात जंगल में ही कहीं, किसी वृक्ष के नीचे, पैग़म्बर जोसेफ़ स्मिथ की भाँति, प्यास से तड़पते हुए बितानी पड़ेगी। परन्तु वे यहाँ बड़े आराम से स्वजनों के प्रति हृदय में प्रेम की भावना लिये हुए लेटे थे। यदि फ़ादर वेलेंट यहाँ होते, तो वे अवश्य कहते, 'यह तो चमत्कार है।" उन्हें ऐसा लगा कि क्रूश-वृक्ष के सामने देवी मेरी की जो उन्होंने प्रार्थना की थी, उसी के फल-स्वरूप वे यहाँ आ

पहुँचे थे। और फ़ादर लातूर इसे जानते थे कि वास्तव में यह एक चमत्कार ही था। परन्तु उनके प्रिय संत जोसफ़ को बड़े ही प्रत्यक्ष एवं दर्शनीय चमत्कारों का अनुभव हुआ होगा। ये चमत्कार प्रकृति के सम्बन्ध में नहीं हुए होंगे, अपितु उसके विपरीत। वे कदाचित् यह बता सकते कि देवी मेरी उस समय किस रंग का चोंगा पहने हुए थीं, जिस समय वे उनकी घोड़ी की लगाम पकड़कर जंगल और पहाड़ों के बीच से यहाँ ले आ रही थीं, ठीक उसी तरह जिस तरह ईश्वर के दूत ने गधे को मिस्र की यात्रा में रास्ता दिखाया था।

दूसरे दिन, तीसरे पहर विशप उनकी जान बचाने वाले नाले के किनारे अकेले टहलते हुए प्रातःकाल की घटनाओं पर विचार कर रहे थे। बेनिटो तथा उसकी कन्या ने देवी मेरी की काठ की मूर्ति के समक्ष एक वेदी बनाई थी और उस पर मोमबत्तियाँ लगा कर फूल चढ़ाए थे। साल्वाटोर की बीमार पत्नी के अतिरिक्त गाँव के सभी प्राणी सार्वजनिक पूजा में सम्मिलित होने आए थे। उन्होंने दोपहर तक विवाह-संस्कार पूरे कराये थे, लोगों को दीक्षा दी थी, उनके धार्मिक विश्वास की बात सुनी थी तथा उन्हें गिरजे का पूर्ण अधिकार प्रदान किया था। इसके बाद दीक्षा-भोज हुआ था। जोस ने पिछली रात एक बकरी का बच्चा मारा था और जोसेफ़ा अपनी दीक्षा के ठीक बाद ही चुपके से खिसक कर अपनी भाभी को मांस पकाने में सहायता करने चली गई थी। जब फ़ादर लातूर ने उससे कहा कि उनके भाग में लालमिर्च न मिलाई जाय तो लड़की ने उनसे पूछा था, कि क्या इस प्रकार खाना, अधिक पवित्र समझा जाता हैं। उन्होंने उसे शीघ्रता से यह समझा दिया था कि सभी फ्रांसीसी आमतौर पर ज्यादा मिर्च-मसाला नहीं पसंद करते, ताकि वह स्वयं न मिर्च-मसाले वाला भोजन, जो उसे बहुत पसन्द है, खाना छोड़ दे।

भोज के पश्चात् निद्रित बच्चों को घर पहुँचा दिया गया था और

सभी पुरुष चौपाल में पेड़ों के नीचे एकत्र होकर सिगरेट आदि पीने लगे। बिशप को इस समय कुछ देर तक अकेला रहने की इच्छा हुई और वे एक ओर टहलने के लिये अकेले ही चल पड़े। किसी को साथ ले चलने से उन्होंने स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। रास्ते में उन्हें मिट्टी का बना वह स्थान मिला, जहां अनाज सूखे डंठलों से पीट कर अलग किया जाता था। यहां गांव वाले अनाज को पीट कर हवा में ओसाई करते थे, जैसे हेब्रू लोग इज़रायल में करते थे। उन्होंने अपने पीछे बकरियों का बड़ा तेज़ मेमियाना सुना और तुरन्त ही देखा, कि पैड्रो बकरियों के झुंड साथ लिये हुए उनके सामने से निकल गया। वे दिन भर बाड़े में बन्द रहने से घबरा रही थीं और इस समय पहाड़ की तलहटी के चरागाह में पहुँचने के लिये अत्यन्त अधीर हो रही थीं। उन्होंने नाले को फांद कर इस प्रकार पार किया जैसे धनुष से बाण छूटता है और बिशप के सामने पहुँचने पर वे उन्हें अपनी मनुष्यों जैसी अर्थभरी मुस्कराहट से चिढ़ाते हुए आगे निकल गयीं। बकरी के बच्चे बड़े ही हलके तथा सुन्दर थे। उनकी नुकीली ठुड्ढी तथा चमकती हुई तिरछी सींगें और भी सुन्दर लग रही थीं। उनमें से प्रत्येक के चेहरे की बनावट एक दूसरे से भिन्न थी, परन्तु लगभग सभी में उद्दण्डता एवं कटुता दीख पड़ती थी। उनकी दुम के रेशमी बाल बड़े लम्बे तथा अत्यन्त धवल थे। सूर्य के प्रकाश में उन्हें उछलते हुए देखकर उनके श्वेत रङ्ग के सम्बन्ध में बिशप को बाइबिल के दूसरे भाग के अन्तिम परिच्छेद का स्मरण हो आया, जिसमें संत जॉन को ईश्वरीय सत्ता का रहस्योद्घाटन हुआ था, तथा जिसमें यह वर्णन है कि वे महात्मा ईसा के रक्त से नहलायी गयीं थीं। नवयुवक बिशप अपने धर्म की इस परस्पर विरोधी बात पर स्वयं ही मुस्करा पड़े। परन्तु; यद्यपि ईसाई धर्म में बकरे को सदा से ही हेय एवं अपवित्र माना जाता रहा है, बिशप ने अपने मन में सोचा कि इनके ऊन से हज़ारों-लाखों ईसाई अपने शरीर गरम रखते हैं तथा उनके पौष्टिक दूध से अस्वस्थ बच्चे स्वास्थ्य लाभ करते हैं।

गाँव से लगभग एक मील दूर आने पर बिशप पानी के सोते के समीप पहुँचे, जो नुकीली पत्तियों वाले वृक्षों से आच्छादित था। उसके चारों ओर वही तंदूर के आकार की पहाड़ियाँ थीं, जिससे वहाँ पानी होने का रञ्चमात्र भी संकेत नहीं मिलता था। पानी का यह स्रोत चमत्कार की भाँति अचानक ही उस रेत के सागर में एक स्थान पर प्रकट होता था। ऐसा लगता था कि कोई भूमि के नीचे का नाला, अंधेरे से बाहर होकर यहाँ ऊपर फूट निकला था। इसका परिणाम यह हुआ था कि वहाँ घास, पौधे, वृक्ष, फूल आदि उग आये थे और कुछ थोड़े से मनुष्य भी रहने लगे थे। वहाँ घर-गृहस्थी जम गयी थी, चूल्हे-चौके बन गए थे, जिनमें से लकड़ी के धुएँ का आकाश में उठना ऐसा लगता था; मानो ईश्वर के प्रति हवन आदि किया जा रहा हो।

बिशप बहुत देर तक सोते के किनारे बैठे रहे। अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य की सुन्दर किरणें उन छोटे-छोटे घरों तथा शोभापूर्ण उद्यानों पर पड़ रही थीं। बूढ़े दादा ने उन्हें तीरों के अग्र भाग, कुछ घिसे हुए पदक तथा एक तलवार की मूँठ, जो स्पष्टतः स्पेनिश थी, दिखलाई थी। इन वस्तुओं को उसने इस सोते के समीप जमीन में गड़ा पाया था। मेक्सिकनों द्वारा इस स्थान की खोज के बहुत पहले से ही लोग यहाँ मन-बहलाव आदि के लिये आया करते थे। यह प्रागैतिहासिक स्थान था, जिस प्रकार बिशप के अपने देश में वे सोते थे, जहाँ रोमन आदिमवासियों ने किसी जल-देवी की मूर्ति स्थापित की थी और बाद को ईसाईयों ने आकर वहाँ एक क्रास लगा दिया था। यह गाँव उनके अधिकार-क्षेत्र का ही एक सूक्ष्म रूप था; सैंकड़ों वर्ग मील तक फैला हुआ निर्जल मरुस्थल, फिर एक सोता, एक गाँव जहाँ बूढ़े लोग अपने नाती-पोतों को पढ़ाने के लिए अपने पुराने पाठों को याद करने का प्रयत्न करते थे। स्पेनिश संतों ने ईसाई धर्म के जिस पौधे को वहाँ लगाया और उसे अपने खून से सींचा, वह अब तक

सूखा नहीं था; उसे तो और भी पनपने तथा बढ़ने के लिये अब किसी कृषक-श्रमिक जैसे परिश्रम तथा देख-भाल की आवश्यकता थी। उन्हें सान्ता फ़े के विद्रोह की चिन्ता नहीं थी और न तो ताम्रोस के मार्टिनेज़ नामक उस बूढ़े स्थानीय पादरी की ही चिन्ता थी, जो इस विद्रोह का नेता था तथा जो नये विकार से रास्ते में ही मिलने तथा उन्हें भगा देने के लिये ही अपने हलके से घोड़े पर चढ़ कर आया था। वह बूढ़ा पादरी बड़ा ही भयानक था, उसका सिर बड़ा था, उसका स्पेनिश चेहरा बड़ा ही उग्र था और उसके कंधे भैंसों के कंधे जैसे थे। परन्तु उसके अत्याचार के दिन अब लद चुके थे।

३
बिशप अपने घर में

क्रिसमस के दिन संध्या का समय था। बिशप अपनी डेस्क पर झुके हुए पत्र लिख रहे थे। सांता फ़े वापस आने के दिन से ही उन्हें अपने पद से सम्बन्धित अनेक पत्र लिखने पड़े थे। परन्तु इस समय वे जो लम्बा पत्र लिख रहे थे तथा जिसे लिखते-लिखते वे मुस्कराते भी जा रहे थे, वह प्रेलेटों, आर्चबिशपों (ईसाई धर्म के उच्चधर्माधिकारी आदि) या धार्मिक संस्थानों के प्रधानों के लिये नहीं था, अपितु वह पत्र फ्रांस, आवर्ने उनके अपने छोटे नगर, एक टेढ़ी-मेढ़ी कँकरीली पतली सी गली के लिये था, जो दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे अख़रोट के वृक्षों से आच्छादित थी। इन वृक्षों में कदाचित् आज भी थोड़ी सी पत्तियाँ होंगी, या एक-एक करके सब गिर कर दीवारों पर चढ़ी हुई बेल-लता में फँसी हुई होंगी।

बिशप केवल नौ दिन पहले घोड़े पर अपनी लम्बी यात्रा करके मेक्सिको वापस आये थे। डुरंगो में, वहाँ के बूढ़े मेक्सिकन पादरी ने उन्हें वे सब कागज़-पत्र दिये थे, जिनमें उनके विकार पद पर नियुक्त होने तथा उनके

अधिकारों आदि का विवरण था। इन कागज़-पत्रों को लेकर फ़ादर लातूर शीत ऋतु के प्रारम्भ में धूप के दिनों में पन्द्रह सौ मील की यात्रा करके सांता फ़े वापस आये थे। वापस आने पर उन्होंने यहाँ देखा कि लोग उनसे विरुद्ध होने के बजाय, मैत्री-भावना से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। फ़ादर वेलेंट लोगों को प्रिय हो चुके थे। मेक्सिकन पादरी, जो वहाँ के मुख्य गिरजाघर का कर्ता-धर्ता था, सीधे से ही हट गया था और वह अपना सब सामान इत्यादि लेकर मेक्सिको स्थित अपने घर चला गया था। फ़ादर वेलेंट ने पादरी के घर पर अधिकार कर लिया था तथा बढ़इयों एवं 'पैरिश' (पादरी का इलाक़ा) की मेक्सिकन स्त्रियों की सहायता से उसे साफ करके ठीक कर लिया था। उत्तरी संयुक्त-राज्य अमेरिका के सौदागरों तथा फोर्ट मार्सी के सैनिक कमांडेंट ने बिस्तर, कम्बल, कुर्सी, मेज़ आदि से प्रचुर मात्रा में सहायता की थी।

बिशप का निवासस्थान कच्चे ईंटों का बना हुआ एक पुराना मकान था, जिसकी बहुत दिनों से मरम्मत नहीं हुई थी, परन्तु वह ऐसा था, कि उसे आरामदेह बनाया जा सकता था। फ़ादर लातूर ने अपने पढ़ने-लिखने के लिए एक किनारे का कमरा चुना था। इसी कमरे में इस समय क्रिसमस के दिन बैठे हुए वे पत्र लिख रहे थे। अब धीरे-धीरे संध्या हो गयी। कमरा लम्बा तथा सुडौल आकार का था। उसकी मिट्टी की मोटी दीवारों के भीतरी भाग की पुताई, उन पर मिट्टी आदि लगाने का कार्य रेड इण्डियन स्त्रियों द्वारा हुआ था और केवल हस्तकौशल से बनाई गई वस्तुओं में जो एक अनियमितता मूल रूप से होती है, वह उनमें भी थी। उसकी दीवारें दुर्भेद्य एवं मोटी थीं, वे दरवाज़ों तथा खिड़कियों के चौखटों के पास तथा कोने में बने आग जलाने स्थान पर भी कोरदार नहीं थीं, अपितु इन स्थानों पर उन्हें बेलनाकार बना दिया गया था। अन्दर के भाग में, अभी हाल ही में बिशप की अनुपस्थिति में सफ़ेदी हुई थी और कोने में

जलती हुई आग की लपट से ऊबड़-खाभड़ दीवारों पर गुलाबी रङ्ग की चमक उत्पन्न हो रही थी। दीवार किसी स्थान पर भी पूर्णतः समतल नहीं थी और वह सफ़ेदी होने पर भी कहीं भी पूर्णतः श्वेत नहीं थी, क्योंकि दीवार की मिट्टी का रक्ताभ रंग चूने की सफ़ेदी के साथ मिलकर उसे कुछ कुछ पीली आभा का बना रहा था। कमरे की छत में देवदारु की मोटी-मोटी बल्लियाँ लगी थी तथा उसकी पटाई मंजनू वृक्ष की छोटी-छोटी डालियों से हुई थी, जो एक ही नाप की थीं तथा सटा-सटा कर बिछाई हुई थीं, जैसे मोटे मूती कपड़े की उठी हुई धारियाँ होती हैं। फ़र्श मोटे-मोटे इण्डियन कम्बलों से ढंकी हुई थी और दो बहुत पुराने कम्बल, जिनकी डिज़ाइन और रंग बहुत ही सुंदर थे, पर्दे की भाँति दीवारों पर टंगे हुए थे।

आग के स्थान के दोनों ओर दीवार में पलस्तर की हुई आलमारियाँ बनी हुई थीं। एक आलमारी में, जो पतली तथा मेहराबदार थी, क्रूशबद्ध महात्मा ईसा की प्रतिमा रखी हुई थी। दूसरी आलमारी चौकोर थी, जिसमें झंझरी की तरह काम किये हुए लकड़ी के किवाड़ लगे हुए थे और उसमें कुछ दुर्लभ तथा बहुत ही अच्छी पुस्तकें रखी हुई थीं। बिशप की अन्य पुस्तकें कमरे के एक कोने में बनी हुई खुली आलमारियों में रखी हुई थीं।

मकान के कुर्सी-मेज़ तथा अन्य साज-सामान फ़ादर वेलेंट ने पुराने मेक्सिकन पादरी से ख़रीद लिये थे। ये सामान वज़न में भारी और कुछ भद्दे से थे, परन्तु देखने में बहुत बदसूरत नहीं थे। मेज़, कुर्सी तथा पलंगों आदि की सभी लकड़ी पेड़ों के तनों से कुल्हाड़ी आदि जैसे भद्दे हथियारों से ही काट कर निकाली गई थी। वह मोटा तख़्ता भी, जिस पर बिशप की धार्मिक पुस्तकें रखी हुई थीं, कुल्हाड़ी से ही काट कर बनाया गया था। उस समय समूचे उत्तरी न्यू मेक्सिको में न तो कोई लकड़ी चीरने का कारख़ाना था और न कोई लकड़ी खरादने की मशीन थी। वहाँ के देशी

उसी से एक प्रकार का पकाया हुआ सलाद तैयार कर रहे हैं। यहाँ शीत के मौसम में हरी तरकारियाँ नहीं मिलतीं और यहाँ तो किसी ने उस अद्भुत पौधे 'सलाद' का नाम ही नहीं सुना है। जोसेफ़ का काम सलाद के तेल के बिना नहीं चलता। ओहिओ में वे इसे अवश्य रखते थे यद्यपि यह वहाँ बड़ा मँहगा था तथा उसका खाना फजूलखर्ची समझा जाता था। वे तीसरे पहर से ही रसोई घर में घुसे हुए हैं। भोजन पकाने का एक ही खुला हुआ चूल्हा है और एक मिट्टी का चूल्हा आंगन में बना हुआ है। परन्तु इससे क्या ? वे अब तक किसी मामले में चूके नहीं हैं; और मैं यह दावे से कह सकता हूँ कि आज रात दो फ्रांसिसी व्यक्ति सुन्दर एवं सुस्वादु भोजन करने बैठेंगे और तुम्हारे स्वास्थ्य की शुभकामना करते हुए शराब पियेंगे।"

बिशप ने लेखनी रख दी और आग से दो मोमबत्तियाँ जलायीं। फिर वे अपना हाथ साफ करते हुए खिड़की के पास आ खड़े हुए और बाहर गोधूलि वेला की पीली आभा से चमकते हुए नीले आकाश की ओर देखने लगे। इस पीली-केसरिया आभा के ऊपर आकाश में शुक्र का उदय हो चुका था। वह इतना सुहावना एवं कांति-युक्त लग रहा, मानों वह स्वयं अपने श्वेत प्रकाश में धुलकर निखर आया हो। उनके धार्मिक शिक्षालय में उनके एक मित्र जिस गाने को बड़े ही सुन्दर ढंग से गाते थे, उसी गाने को गुनगुनाते हुए बिशप अपनी डेस्क के पास वापस आये और दावात में लेखनी डुबोने ही जा रहे थे कि दरवाजा खुला और किसी ने कहा,

"महाशय, भोजन तैयार है। अभी आपने पत्र नहीं समाप्त किया ?"

बिशप बत्तियाँ लेकर भोजन करने के कमरे में गये, जहाँ मेज़ पर भोजन लगा हुआ था और फ़ादर वेलेंट रसोइया के कपड़े बदल कर अपना तंग चोंगा पहन रहे थे। आग के सामने खड़े रहने के कारण उनका चेहरा लाल हो रहा था और साधारणतया वह जितना सादा लगता था,

इस समय उससे भी अधिक सादा लग रहा था—यद्यपि प्रथम मिलन में फ़ादर जोसेफ़ को देखकर यही लगता था कि ईश्वर ने कदाचित् ही किसी को इतना कुरूप बनाया हो। वे ठिगने कद के दुबले-पतले व्यक्ति थे। घुड़सवारी करने के कारण उनके पैर धनुष की भाँति टेढ़े हो गये थे तथा उनके चेहरे में दया एवं सजीवता के अतिरिक्त अन्य कोई आकर्षण नहीं था। यद्यपि इस समय उनकी अवस्था केवल चालीस वर्ष की थी, वे वृद्ध लगते थे। अत्यधिक शीत ऋतु वाले प्रदेश में हमेशा खुले रहने के कारण उनके शरीर का चमड़ा कड़ा तथा झुर्रीदार हो गया था, उनकी गरदन बूढ़ों की भाँति पतली तथा शिकनदार हो गयी थी। उनकी नाक बड़ी तथा चपटी, ठुड्ढी, उभरी हुई, चौड़ा मुँह, होठ मोटे तथा आर्द्र, परन्तु ढीले या लटकते हुए कभी नहीं, इसके विपरीत हमेशा ही उत्साह से काम करने या प्रयास द्वारा अन्दर की ओर खिचे हुए। उनके बाल धूप में खुले रहने के कारण सूखी घास के रंग के हो रहे थे; पहले उनका रंग सन की तरह सफ़ेद था; उन्हें धार्मिक शिक्षालय में लोग 'ब्लांचेट' (जिसका अर्थ 'श्वेतांग' होता है) कहा करते थे। उनकी आँखें भी कमज़ोर हो रही थीं तथा उनका रंग पीला और हलका नीला मिला हुआ था, जिससे वे प्रभावशाली नहीं मालूम होती थीं। उनके बाह्य रूप को देखकर यह बिल्कुल नहीं पता चल सकता था कि यह व्यक्ति इतना उग्र, साहसी एवं उत्साही होगा; फिर भी कुंद बुद्धि वाले तथा मिश्रित जातियों से उत्पन्न मेक्सिकन भी उनके गुणों को तुरन्त ताड़ जाते थे। बिशप के सांता फ़े वापस आने पर उन्हें लोगों से जो सौहार्द्र पूर्ण व्यवहार मिला था, उसका कारण यह था कि लोग फ़ादर वेलेंट का विश्वास करते थे, जो बड़े ही सादे, सच्चे तथा धुन के पक्के थे और उनके दुबले-पतले शरीर में एक दर्जन व्यक्तियों की कार्य-शक्ति थी।

भोजन के कमरे में आकर बिशप लातूर ने मोमबत्तियों को आग जलाने के स्थान के ऊपर रखा, क्योंकि मेज़ पर पहले ही से छः रखी हुई

थीं जिनके प्रकाश में भूरे रङ्ग का 'सूप' का वर्त्तन चमक रहा था। दोनों व्यक्तियों ने खड़े रहकर एक क्षण तक मौन प्रार्थना की। इसके पश्चात् फ़ादर जोसेफ़ ने सूप के वर्त्तन का ढक्कन हटाया और गाढ़े रंग के प्याज़ के सूप को, जिसमें सेंकी हुई डबल रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े भी थे, प्लेटों में ढाला। फ़ादर लातूर ने उसको चखा और अपने साथी की ओर देखकर मुस्कराने लगे। कई चम्मच सूप पी लेने के बाद उन्होंने चम्मच नीचे रख दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर टेकते हुये बोले,

"ब्लांचेट, जरा सोचो, मिसीसिपी नदी तथा प्रशांत महासागर के बीच स्थित इस विशाल प्रदेश में कदाचित् ऐसा कोई अन्य व्यक्ति नहीं है; जो इस प्रकार का सूप बना सके।"

"यदि वह फ्रांसीसी व्यक्ति नहीं है तो," फ़ादर जोसेफ़ ने कहा। वे अपने चोंगे के सामने के भाग पर एक तौलिया (नेपकिन) डाले हुए थे और उत्तर देने में उन्होंने तनिक भी देर नहीं की।

"जोसेफ़, यह मत सोचना कि मैं तुम्हारी वैयक्तिक योग्यता या निपुणता को कम बताने के उद्देश्य से कह रहा हूँ," विशप ने आगे कहा, "लेकिन मैं सोचता हूँ कि इस प्रकार का सूप बनाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है। यह तो एक लगातार अधिकाधिक सुसंस्कृत परम्परा का परिणाम है। इस सूप में लगभग एक हजार वर्षों का इतिहास छिपा हुआ है।"

फ़ादर जोसेफ़ भृकुटी चढ़ाकर मेज़ के मध्य में रखे हुए उस मिट्टी के बर्तन को देख रहे थे। उनकी पीली, कमजोर दृष्टि वाली आँखों को देखने से प्रतीत होता था कि जैसे वे हमारे ही किसी वस्तु को बड़े ग़ौर से देखते हों। "वह तो ठीक है, वह तो सच है" वे बुदबुदाये। विशप की प्लेट को पुनः भरते हुए उन्होंने कहा, "परन्तु तरकारियों के राजा 'लीक' (प्याज ही की किस्म की एक तरकारी, परन्तु जो आकार में प्याज से भिन्न होती है)

के बिना अच्छा सूप बनाना कैसे संभव हो सकता है ? आखिरकार हम लोग सदा प्याज ही नहीं खाते रहेंगे ।"

सूप की प्लेट हटा देने के पश्चात् वे भुना हुआ मुर्गा तथा आलू की कढ़ी ले आये । "और सलाद, जीन" मुर्गे की बोटी काटते हुए वे बोले । "क्या हमें अब सारे जीवन सेम का सुखाया हुआ बीज तथा ये जड़वाली तरकारियाँ ही खानी पड़ेंगी । हमें समय निकाल कर एक बगीचा तैयार करना चाहिये । आह, सैंडस्की में मेरा क्या ही अच्छा बगीचा था । और तुम मुझे उससे दूर हटा कर यहाँ घसीट लाये ? यह तो तुम मानोगे कि फ्रांस में तुमने उससे अच्छा सलाद अन्यत्र कहीं नहीं खाया था । और मेरी अंगूर-वाटिका । अंगूर के प्रति तो मेरी स्वाभाविक रुचि है । मैं तुमसे बता देता हूँ कि एक दिन आयेगा कि ईरी झील के किनारे चारों ओर अंगूर की ही लताएं दीख पड़ेंगी । मुझे उस व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या है, जो मेरे उन अंगूरों की शराब पी रहा होगा । लेकिन आह, धर्म-प्रचारक का जीवन ही यही है कि बोओ तुम और काटे कोई और ।"

चूँकि आज क्रिसमस का दिन था, दोनों मित्र अपनी मातृ-भाषा में बातें कर रहे थे । वर्षों से उन्होंने अपना यह नियम बना लिया था कि वे अत्यन्त विशेष अवसरों के अतिरिक्त आपस में अंग्रेजी भाषा ही में बात करते थे और पिछले कुछ दिनों से वे स्पेनिश भाषा में, जिसमें वे दोनों ही अभी पारंगत नहीं हुए थे, बात करने लगे थे ।

"फिर भी तुम सैंडस्की तथा वहाँ के आरामों के प्रति कभी-कभी खीझ उठते थे," बिशप ने उन्हें याद दिलाते हुए कहा, "और कहते थे कि कदाचित् तुम जीवन भर घर में रहने वाले ही पादरी बने रहोगे ।"

"मैं ठीक कहता था, लेकिन यह भी तो है कि लोग ओहिओ में प्रचलित कहावत के अनुसार, अपनी केक खाना भी चाहते हैं और उसे रखना भी चाहते हैं, अर्थात् मानव कभी-कभी दो परस्पर विरोधी कार्य भी

करना चाहता है। परन्तु नहीं, फ़ादर जीन, अब बहुत हो गया। अब मुझे आगे मत घसीटो।" फ़ादर जोसेफ़ एक लाल शराब की बोतल के काग को धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से खोलने लगे। "यह मैंने तुम्हारे लिये फ़ारम से माँग ली थी, जहाँ मैं सेंट टामस के दिन एक बच्चे का नामकरण कराने गया था। इन पैसे वाले मेक्सिकनों को उनकी फ्रांसीसी शराब से अलग करना आसान नहीं है। वे इसके मूल्य को जानते हैं।" उन्होंने उसे थोड़ी सी निकाल कर चखी। "इसमें तो इस काग का भी कुछ स्वाद आ गया है; वे इसे अच्छी तरह रखना जानते ही नहीं। खैर, हम जैसे मिशनरियों के लिये तो फिर भी अच्छी ही है।"

"जोसेफ़, तुम कहते हो कि मैं अब आगे तुम्हें न घसीटूं। मैं जानना चाहूँगा," कहते हुए फ़ादर लातूर कुर्सी पर पीछे झुक गये तथा अपने दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में जकड़ते हुये ठुड्डी के नीचे ले आये, "मैं जानना चाहूँगा कि इस 'आगे' से तुम्हारा तात्पर्य क्या है। यह 'आगे' अभी कितनी दूर तक है? क्या कोई इस इलाक़े या क्षेत्र के विस्तार को जानता है? फोर्ट का कमांडेंट तो उतना ही कम जानता है, जितना मैं। उसने बताया कि मैं किट कार्सन से, जो ताओस में रहता है, कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता हूँ।"

"इलाक़े के विषय में चिन्ता न करो, जीन। इस समय यही समझो कि सांता फ़े ही इलाक़ा है। कल मुझे गिरजे के उन संतरियों से निबटना है जिन्होंने नशे में चूर चरवाहों के उस दल को मध्य रात्रि की विशेष आराधना में आने दिया तथा उन्हें पूजा के पवित्र जलपात्र को अपवित्र करने दिया। यहाँ ही अभी बहुत काम है। हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना है। मैंने एक वर्ष के लिये यह निश्चय कर लिया है कि सांता फ़े से तीन दिन की यात्रा से अधिक लम्बी यात्रा नहीं करूँगा।"

बिशप मुस्कराये और उन्होंने अपना सिर हिला दिया। "और जब तुम

शिक्षालय में थे तो तुमने यह निश्चय किया था कि तुम चिन्तन का ही जीवन व्यतीत करोगे।"

फ़ादर जोसेफ़ का सादा चेहरा अचानक उद्दीप्त हो उठा। "मैंने यह विचार अभी छोड़ा नहीं है। एक दिन तुम मुक्त करोगे ही, और तब मैं फ्रांस के किसी धार्मिक संस्थान में वापस चला जाऊँगा और 'होली मदर' की पूजा में ही जीवन के शेष दिन बिता दूँगा। फिलहाल, मेरे भाग्य में यही लिखा है कि मैं कार्यरत रह कर उनकी सेवा करूँ। परन्तु इससे आगे नहीं, जीन।"

बिशप ने पुनः अपना सिर हिलाया और वे धीरे से अब बोले, "कौन जानता है कि कितना आगे जाना है?"

इस दुबले-पतले पादरी ने, जिसके जीवन में आगे पर्वत श्रेणियाँ, बीहड़ मरु प्रदेश, मुँह बाये हुए पहाड़ी दर्रे तथा बढ़ी हुई नदियाँ ही आने वाली थीं, जो क्रूश को अज्ञात एवं अनामधारी प्रदेशों में ढोने को था, जो खच्चरों, घोड़ों, पथ-प्रदर्शकों एवं गाड़ीवानों को अपनी लम्बी-लम्बी यात्राओं द्वारा थका देने को था, आज रात अपने वरिष्ठ अधिकारी की ओर आशंका भरी दृष्टि से देखा और फिर वही कहा, "अब नहीं, जीन। अब बहुत हो गया।" फिर शीघ्रता से विषय बदलते हुए उन्होंने कहा, "सेम के बीज से अच्छा सलाद मैं तुमको नहीं दे सकता था, लेकिन प्याज तथा सुअर के थोड़े से नमकीन मांस के साथ, यह बहुत बुरा भी नहीं लगता।"

बेर का मुरब्बा खाते हुए वे उन बड़े-बड़े बेरों की चर्चा करने लगे, जो लातूर के घर में उनके बगीचे में पैदा होते थे। वे उस टेढ़ी-मेढ़ी कंकरीली सड़क की याद करने लगे, जो पहाड़ी के ढाल से नीचे उतरती थी, जिसके दोनों ओर बगीचे की ऊबड़-खाबड़ दीवारें तथा अखरोट के बड़े-बड़े वृक्ष थे तथा जो रात होते ही वीरान हो जाती थी और जिसकी

बत्तियाँ अँधेरे वाले मोड़ों पर लालटेन की भाँति टिमटिमाती रहती थीं। उसके अंत में गिरजाघर था, जहाँ बिशप ने अपना पहला धार्मिक समारोह किया था। उसके सामने ही बड़ी-बड़ी पत्तियों वाले कटे-छँटे वृक्षों का बगीचा था और इन्हीं वृक्षों की छाया में प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार को बाजार लगता था ?

इस प्रकार जब वे पुरानी स्मृतियों में लीन थे, यद्यपि ऐसा वे कदाचित् ही कभी करते रहे हों, दोनों पादरी बन्दूक की गोलियों की आवाज़ तथा बाहर लोगों की भयानक चीख़ और दौड़ते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ से चौंक उठे। बिशप उठने लगे, परन्तु फ़ादर जोसेफ़ ने उन्हें आश्वस्त करते हुए पुनः बैठा दिया।

"अशांत मत हो। यही घटना 'ऑल सोल्स' के दिन से पहले वाली संध्या को भी घटी थी। शराब में मस्त चरवाहों का एक दल, जैसा कि कल रात गिरजाघर में आया था, रेड इण्डियनों की बस्ती में जाता है और उनके लड़कों को भी शराब पिलाता है, फिर सब लोग घोड़ों पर सवार होकर फ़ोर्ट जाते हैं और वहाँ सैनिकों के समक्ष गाते-बजाते हैं, गोलियाँ चलती हैं, लोग चीख़ते-चिल्लाते हैं।"

४
घण्टा और चमत्कार

डुरैंगो से साँता फ़े वापस आने पर, अपने निवास-स्थान में प्रथम रात्रि बिताने के पश्चात्, बिशप का प्रातःकाल निद्रा से जगना बड़ा सुहावना था। वे दिन भर, घोड़े पर साठ मील की यात्रा करके (रास्ते में उन्होंने एक स्थान पर घोड़ा भी बदला था) रात होते-होते अपने घर के अहाते में; बिलकुल थके हुए पहुँचे थे ! अतः दूसरे दिन वे देर तक सोते रहे और उन्हें लगा जैसे वे रोमन गिरजाघर के घण्टे की आवाज सुनकर ही छः

बजे उठे थे। उन्होंने पूर्ण जाग्रत् अवस्था बड़े धीरे-धीरे प्राप्त की, क्योंकि वे इस जाग्रत-स्वप्न को नहीं छोड़ना चाहते थे कि वे इस समय रोम में हैं। अब उन्हें यह कुछ-कुछ चेतना होने लगी थी कि वे तो इस समय सेंट जॉन लेटरन के पास कहीं रहते हैं; फिर भी उन्होंने रोम में देवी मेरी की आराधना के समय बजने वाले घण्टे की प्रत्येक चोट स्पष्ट सुनी और उन्हें आश्चर्य हुआ कि यहाँ वह घण्टा इतने सही ढंग से कैसे बजाया जा रहा है (कुल नौ चोटें, जिनमें से प्रत्येक तीन चोट के बाद कुछ क्षणों का अन्तर); उन्हें इस पर भी आश्चर्य हुआ, कि यहाँ वह घण्टा कहाँ से आया, जिससे इतनी सुरीली ध्वनि निकल रही है। मधुर, मनोहर तथा स्पष्ट, प्रत्येक ध्वनि चाँदी के गोले की भाँति हवा में तैर रही थी। नवीं चोट के समाप्त होते-होते रोम अदृश्य हो गया और उन्हें ऐसा आभास हुआ, जैसे वे किसी प्राच्य देश में पहुँच गये हों, जहाँ ताड़ और खजूर के वृक्ष हैं—कदाचित् यरुशलम में, यद्यपि वे वहाँ कभी गये नहीं थे। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और वे इस प्राच्यदेशीय तथा साथ ही मन पर व्याप्त हो जाने वाली भावना को एक क्षण के लिये अपने हृदय में संजोकर रख लेना चाहते थे। एक बार और भी पहले वे इस प्रकार अपने स्थूल शरीर से निकल कर किसी अत्यन्त दूरस्थ प्रदेश में पहुँच गये थे। वह घटना न्यू आर्लियंस की किसी सड़क पर घटी थी। वे सड़क की एक मोड़ पर घूमे ही थे कि उन्हें एक वृद्ध स्त्री पीले फूलों से भरी एक टोकरी लिये हुए मिली थी। इन फूलों की शहद की भाँति मीठी सुगंध हवा में व्याप्त हो रही थी। ये फूल कदाचित् छुईमुई के थे; परन्तु उसके पहले कि वे फूल का नाम सोच सकें, उन्हें स्थानांतर की एक भावना ने जकड़ लिया था। वे अचानक दक्षिणी फ्रांस की एक पुष्प वाटिका में, जहाँ वे बचपन में किसी बीमारी के पश्चात् स्वास्थ्य-लाभ के लिए शीत-ऋतु में भेजे गये थे, उसी वेष में पहुँच गये थे। और आज, घण्टे की इस मधुर आवाज ने

ध्वनि की गति से भी तीव्र गति से, उन्हें उससे भी दूर, किसी स्थान पर पहुँचा दिया था।

जब कॉफ़ी पीते समय फ़ादर वेलेंट से उनकी भेंट हुई, तो उस उतावले व्यक्ति ने, जो कभी कोई भेद छिपाकर रख ही नहीं सकता था, उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कोई आवाज़ सुनी थी।

"मुझे ऐसा लगा कि मैंने रोम के गिरजाघर के घण्टे की आवाज़ सुनी, फ़ादर जोसेफ़, परन्तु मेरा विवेक यह कहता है कि लम्बी समुद्री यात्रा ही मुझे ऐसी आवाज़ के समीप पहुँचा सकती है।"

"बिल्कुल नहीं," फ़ादर जोसेफ़ ने शीघ्रता से उत्तर दिया। "मैंने इस अद्भुत घण्टे को यहाँ सैन मिगुयेल के पुराने गिरजाघर के तहखाने में पाया। लोग बतलाते हैं, कि यहाँ वह सौ या उससे भी अधिक वर्षों से है। यहाँ किसी गिरजे का घण्टाघर इतना मज़बूत नहीं है, कि उसमें यह लटकाया जा सके, क्योंकि वह बहुत ही भारी है—लगभग आठ सौ पौंड तो वज़न में होगा ही। फिर मैंने यह किया कि गिरजे के अहाते में एक मचान खड़ा कराया और बैलों की सहायता से उसे ऊपर उठा कर मज़बूत खम्भों में जड़े हुए हुक से लटका दिया। मैंने एक मेक्सिकन लड़के को उसे तुम्हारे आने तक ठीक तरह से बजाना भी सिखा दिया।"

"परन्तु वह यहाँ आया कैसे होगा ? मेरा ख्याल है कि वह स्पेनिश है।"

"हाँ, उसमें जो लिखावट है, वह स्पेनिश भाषा में है और सेंट जोसेफ़ के प्रति है तथा उसमें तारीख सन् १३५६ ई० खुदी हुई है। वह किसी बैलगाड़ी में लादकर मेक्सिको नगर से यहाँ ले आया गया होगा। निस्संदेह यह बड़ी बहादुरी का काम था। यह कोई नहीं जानता कि वह बना कहाँ। हाँ, इतना लोग अवश्य बताते हैं, कि मुअरों के साथ युद्ध के समय लोगों ने

सेंट जोसेफ़ को एक घण्टा अर्पित करने की प्रतिज्ञा की थी और किसी घिरे हुए नगर के निवासियों ने अपने चांदी, सोने तथा अन्य मूल्यवान् धातुओं के सभी गहने साधारण धातुओं में मिला कर इस घंटे को तैयार किया। यह तो निश्चित है कि घंटे में चांदी की मात्रा काफ़ी है, अन्यथा उसकी आवाज़ इतनी अच्छी कैसे होती ?"

फ़ादर लातूर ने विचारते हुये कहा, "और स्पेनिश लोगों के गहने वास्तव में मुअरों के ढंग के गहने थे। यदि वे मुअरों द्वारा बनाये नहीं गये थे, तो कम-से-कम उन्हीं की डिज़ाइनों की नकल तो अवश्य थे। स्पेनिश लोग चांदी का गहना आदि बनाना तो बिल्कुल ही नहीं जानते थे। उन्होंने जो कुछ सीखा, वह मुअरों से ही सीखा।"

"यह तुम क्या कह रहे हो जीन ? मेरे घंटे को अपवित्र सिद्ध करना चाहते हो ?" फ़ादर जोसेफ़ ने अधीरता से पूछा।

बिशप मुस्करा पड़े। "मैं अपनी उस भावना का समुचित कारण ढूंढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ, कि आज प्रातःकाल जब मैंने इस घण्टे की आवाज़ सुनी, तो उसमें मुझे फ़ौरन ही कुछ प्राच्यदेशीय ध्वनि का आभास मिला। स्काटलैंड के एक विद्वान् जेसुइट कैथोलिक ने मुझे मांट्रियल में बतलाया था कि गिरजाघर के हमारे घण्टे, तथा सारे यूरोप में, गिरजाघरों में आराधना के समय घण्टों का चालू किया जाना मूलतः प्राच्यदेशीय प्रथा की देन है। उन्होंने बतलाया कि फिलिस्तीन को तुर्कों से वापस छीनने के लिए जो ईसाइयों का युद्ध हुआ था, उसी युद्ध से ईसाई धर्म-सैनिक 'एंजेलस' (रोम के गिरजाघर का घण्टा) वापस लाये तथा यह एक मुस्लिम रिवाज़ का बदला हुआ स्वरूप है।"

फ़ादर वेलेंट ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "मैं तो जानता हूँ, कि विद्वान् लोग हमेशा ही ऐसी बात अवश्य खोजकर निकालते हैं, जिससे किसी वस्तु की महत्ता कम होती हो।"

"महत्ता कम करना ? मैं तो कहता हूं कि बात ठीक इसके विपरीत है। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि तुम्हारे इस घण्टे में मुअरिश चाँदी है। सांता फ़े आने पर, यदि हमें यहाँ कोई अच्छा कारीगर मिला, तो वह एक रौप्यकार ही था। स्पेनिश लोगों ने अपनी कला मेक्सिकनों को दी और मेक्सिकनों ने 'नवाजों' को चाँदी के गहने बनाने की कला सिखायी; लेकिन प्रारम्भ में यह मुअरों से ही यहां आयी।"

"तुम तो जानते हो कि मैं कोई विद्वान् या पण्डित व्यक्ति नहीं हूँ," फ़ादर वेलेंट ने उठते हुये कहा। "और आज तो हमें बहुत से काम करने हैं। सांता क्लारा स्थित रेड इण्डियनों के धर्म-सम्प्रदाय के एक भले बूढ़े स्थानीय पादरी को, जो मेक्सिको से वापस आ रहा है, मैंने यह वादा कर दिया है कि वह तुमसे मिल सकेगा। उसने हाल ही में ग्वाडालुपे स्थित देवी मेरी की समाधि की तीर्थ-यात्रा की है और उसका धार्मिक विश्वास बहुत ही पक्का हो गया है। वह अपने अनुभवों को तुमसे बतलाना चाहता है। ऐसा लगता है कि जब वह पादरी बना, तभी से उसे इस समाधि के दर्शन की बड़ी इच्छा थी। तुम्हारी अनुपस्थिति में मैंने यह जान लिया कि वह समाधि न्यू मेक्सिको के सभी कैथोलिकों के लिये कितना अधिक मूल्यवान् है। वे उसे देवी मेरी का नयी दुनिया में पूर्णतः प्रामाणिक रूप में प्रकट होना तथा इस महाद्वीप पर अपने धर्म के लिये उनके प्यार का सच्चा सबूत मानते हैं।"

बिशप अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में चले गये और फ़ादर वेलेंट एस्कोलैस्टिको हेरेरा नामक पादरी को, जिसकी अवस्था लगभग सत्तर वर्ष की थी तथा जो इस पादरी के पेशे में गत चालीस वर्षों से था और हाल ही में अपने जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी की थी, ले आये। उसके हाल के ताज़े अनुभव की सुखद भावना से उसका मन अब भी ओत-प्रोत था। वह उसी में इतना लीन था कि अन्य कोई वस्तु उसे

आकर्षित ही नहीं करती थी। उसने बड़ी जिज्ञासा से पूछा कि यदि इस समय जल्दी हो, तो क्या बिशप कुछ देर पश्चात्, इतमीनान से, उसकी बात सुनने के लिये अधिक समय दे सकेंगे। इस पर फ़ादर लातूर ने उसके बैठने के लिये एक कुर्सी आगे खिसका दी और कहा कि आप अपनी कहानी कहिये।

वृद्ध व्यक्ति ने बैठने का सम्मान पाने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। आगे झुकते हुई तथा अपने दोनों हाथों को अपने पावों के घुटनों के बीच सटा कर रखे हुए, उसने देवी मेरी के चमत्कारयुक्त ढंग से प्रकट होने की सारी कथा कह सुनायी। कथा उसने इसलिये सुनायी कि प्रथम तो वह उसे बहुत ही प्रिय थी और दूसरे इसलिये कि उसे पूर्ण विश्वास था कि किसी 'अमेरिकन' बिशप ने घटना को सच्चे रूप में न सुनी होगी, यद्यपि रोम में लोगों को पूरा विवरण मालूम था और दो पोपों ने समाधि के लिये भेंट भी भेजी थी।

सन् १५३१ ई० के ९ दिसम्बर को, शनिवार के दिन, सेंट जेम्स मठ का एक ग़रीब नवदीक्षित भिक्षु मेक्सिको नगर में होने वाले 'मास' (विशेष पूजा, आराधना) में सम्मिलित होने के लिये टापेअक पहाड़ी की ढाल पर तेज़ी से चला जा रहा था। उसका नाम जुआन डीगो था तथा उसकी अवस्था पचपन वर्ष की थी। जब वह पहाड़ी की आधी ढाल उतर चुका था, तो उसके मार्ग में एक ज्योति चमकी और ईश्वर की माँ (देवी मेरी) उसके समक्ष एक अत्यन्त सुन्दर नवयुवती के रूप में, नीले तथा सुनहरे वस्त्र पहने हुए, प्रकट हुईं। उन्होंने जुआन को उसका नाम लेकर पुकारा और कहा—

"जुआन, जाओ अपने बिशप को खोजो और उनसे कहो कि वे मेरे सम्मान में जिस स्थान पर मैं खड़ी हूँ, वहाँ एक गिरजाघर बनवायें।

जाओ, मैं तुम्हारे वापस आने तक यहीं खड़ी हुई तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी।"

भिक्षु जुग्रान नगर तक दौड़ता हुआ गया और सीधे बिशप के महल में पहुँचा और उनसे सारी बात कह सुनायी। बिशप जुमरंगा नामक एक स्पेनियार्ड थे। बिशप ने भिक्षु से तरह-तरह के प्रश्न किये और उससे कहा कि उसे देवी मेरी से कोई निशानी ले लेनी चाहिये थी, जिससे यह विश्वास हो सके कि वे वास्तव में देवी मेरी ही थी; न कि कोई प्रेतनी। उन्होंने बेचारे भिक्षु को डाँट कर बाहर निकाल दिया और एक नौकर को उसकी गति-विधि पर दृष्टि रखने के लिये लगा दिया।

जुग्रान बहुत उदास तथा खिन्नावस्था में अपने चाचा बर्नाडिनो के घर पहुँचा। वे ज्वर से पीड़ित बिस्तर पर पड़े थे। दो दिन तो उसने अपने बूढ़े चाचा की, जो मृत्यु के बिल्कुल समीप लगते थे, सेवा-शुश्रूषा करने में बिता दिये। बिशप की डाँट के कारण उसके मन में भी सन्देह उत्पन्न हो गया था और वह उस स्थान पर वापस नहीं गया, जहाँ देवी मेरी ने कहा था कि वे उसकी प्रतीक्षा करेंगी। मंगलवार को वह बर्नाडिनो के लिये दवा लाने अपने मठ वापस जाने के लिये नगर से रवाना हुआ, परन्तु उसने उस स्थान को बचाकर, जहाँ उसे देवी का दर्शन हुआ था, दूसरा मार्ग पकड़ा।

फिर उसने अपने मार्ग में एक ज्योति देखी और देवी मेरी पुनः पहले की भाँति प्रकट हुईं। उन्होंने उससे कहा, "जुग्रान, तुम इस मार्ग से क्यों जा रहे हो?"

उसने रोते-रोते उन्हें बताया कि बिशप ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया और वह अपने चाचा की, जो मरणासन्न हैं, सेवा-शुश्रूषा में लग गया था। देवी ने उसे बड़ी सांत्वना दी और कहा कि उसका चाचा एक घण्टे के अन्दर ही अच्छा हो जायगा और वह बिशप जुमरंगा के पास

वापस जाय और उनसे उसी स्थान पर गिरजाघर बनवाने को कहे, जहां वे पहली बार प्रकट हुई थीं। उसका नाम ग्वाडालुपे की देवी मेरी की समाधि पड़े, जैसा कि स्पेन में उनकी प्रिय समाधि का नाम था। जब भिक्षु जुग्रान ने उनसे विनय की कि बिशप कोई निशानी चाहते हैं, तो उन्होंने कहा, "उधर उन चट्टानों पर जाओ और गुलाब के फूल तोड़ लो।"

यद्यपि दिसम्बर का महीना था, और वह गुलाबों का मौसम नहीं था, परन्तु जब वह दौड़कर चट्टानों पर पहुँचा तो उसने वहाँ ऐसे गुलाब के फूल देखे, जैसे उसने पहले कभी नहीं देखे थे। उसने अपना 'तिल्मा' भर कर गुलाब के फूल तोड़े। 'तिल्मा' एक ढीला लबादा होता है जिसे अत्यन्त ग़रीब लोग पहनते हैं। उसका तिल्मा अत्यन्त भद्दा और किसी पौधे के रेशों के सूत का मोटे ढंग से बुना हुआ और ऊपर से नीचे तक बीच में सिला हुआ था। जब वह देवी के पास वापस आया, तो उन्होंने फूलों को देखकर उन्हें उसके चोंगे में ठीक तरह से रखकर 'तिल्मा' के किनारों को बटोर कर गाँठ लगा दी और उससे कहा—

"अब जाओ अपने चोंगे को बिशप के समक्ष ही खोलना, उससे पहले नहीं।"

जुग्रान दौड़ता हुआ नगर में पहुँचा और बिशप के पास गया, जो अपने 'विकार' से बातें कर रहे थे।

"प्रभुवर", उसने कहा, "जिन देवी ने मुझे दर्शन दिये है, उन्होंने ही ये गुलाब के फूल निशानी के रूप में आप के पास भेजा है।"

इतना कहकर उसने अपने 'तिल्मा' की गाँठ खोल दी और फूलों को भरभराकर फ़र्श पर गिरा दिये। तुरन्त ही यह देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया कि बिशप जुमरंगा और उनके विकार उसी क्षण अपने घुटनों के बल फूलों के बीच दण्डवत् की मुद्रा में पड़ गये। भिक्षु के फटे पुराने चोंगे

के अन्दर वाले सतह पर ही देवी मेरी का एक चित्र बना था और वे नीले, गुलाबी और सुनहरे वस्त्र पहने हुए ठीक उसी रूप में थीं, जिस रूप में वे उसके समक्ष पहाड़ी के पास प्रकट हुई थीं।

इस चमत्कारिक चित्र को प्रतिष्ठापित करने के लिये एक समाधि की स्थापना की गई, जो तभी से असंख्य तीर्थयात्रियों के लिये दर्शनीय स्थान बना हुआ है और उसने अनेक चमत्कार किये हैं।

इस प्रतिमा के सम्बन्ध में पादरी एस्कोलेस्टिको ने बहुत कुछ बतलाया। उसने बतलाया कि उसकी सुन्दरता असाधारण थी; उसके सुनहरे तथा अन्य रङ्ग इतने रुचिर एवं कमनीय थे, जैसे उषा की मृदु लाली। समाधि का दर्शन करने अनेक चित्रकार भी आये थे और उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि इतने मोटे तथा कमज़ोर वस्त्र पर जैसा कि भिक्षु के चोंगे का वस्त्र था, चित्रकारी हो कैसे सकी। साधारणतया ऐसे वस्त्र की तो सैकड़ों वर्ष पहले ही धज्जियाँ उड़ गई होगीं। पादरी ने विनम्रता से बिशप लातूर तथा फ़ादर जोसेफ़ को छोटे-छोटे पदक भेंट किये, जिन्हें वह समाधि से ले आया था तथा जिनके एक ओर उसी चमत्कारिक चित्र की नकल खुदी हुई थी और दूसरी ओर ये शब्द खुदे थे—**उसने (देवी ने) किसी अन्य राष्ट्र पर ऐसी अनुकम्पा नहीं की है।**

फ़ादर वेलेंट पादरी की कहानी सुनकर अत्यधिक प्रभावित हुए और बूढ़े पादरी के चले जाने के पश्चात् उन्होंने बिशप से कहा कि मैं स्वयं ही शीघ्रातिशीघ्र इस समाधि का दर्शन करना चाहता हूँ।

"इस जंगली देश के नव-धर्मान्तरित व्यक्तियों के लिये यह क्या ही अमूल्य वस्तु है।" उन्होंने अपने चश्मे के शीशों को पोंछते हुए, जो उनके उद्वेग में आने के कारण धुँधले पड़ गये थे, कहा! "यहाँ के इन ग़रीब

कैथोलिकों के लिये, जिन्हें अब तक किसी प्रकार की शिक्षा नहीं मिली है, यह बहुत बड़ी सांत्वना की बात है कि देवी यहां इस प्रकार प्रकट हुईं। उनके घर-घर में चर्चा होती रहती है कि उनकी माँ देवी मेरी उनके ही देश में एक ग़रीब भिक्षु के समक्ष प्रकट हुईं। विद्वानों के लिये धर्म-ज्ञान ही पर्याप्त हो सकता है, जीन; परन्तु चमत्कार तो ऐसी वस्तु है, जिसे हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं और उसी से प्रेरणा लेते रह सकते हैं।"

फ़ादर वेलेंट बोलते-बोलते उठ खड़े हुए और उद्विग्नता से टहलने लगे; बिशप विचार में निमग्न उन्हीं को देख रहे थे। अपने मित्र की यही बात उन्हें बहुत प्रिय थी। "जहां प्रेम की पराकाष्ठा होती है, वहीं चमत्कार होते हैं", उन्होंने अन्त में कहा। "यह कहना अत्युक्ति नहीं कि देवी-देवताओं का छाया-पुरुष के रूप में दिखलाई पड़ना दैवी कृपा द्वारा विशुद्ध एवं परिष्कृत की हुई मानव दृष्टि ही है। मैं तुम्हें तुम्हारे वास्तविक स्थूल रूप में नहीं देखता, जोसेफ़, मैं तो तुम्हें तुम्हारे प्रति अपने स्नेह के माध्यम से, जो तुम्हारे प्रति मेरी दृष्टि को ही बदल देता है, देखता हूं। अदृष्ट से हमारे समीप आकर कोई दैवी शक्ति पार्थिव रूप में प्रकट हुई, हमने उसकी वाणी की आवाज़ सुनी अथवा रोगादि से मुक्त करने की उसकी शक्ति का प्रदर्शन हुआ, केवल इसे ही चमत्कार कह देना मेरे विचार से ठीक नहीं। चमत्कार तो हमारे चारों ओर सर्वदा ही होते रहते हैं, और यदि हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों को विशुद्ध करके अति सूक्ष्म बना लें, तो हम इन सर्व-व्याप्त चमत्कारों को देख, सुन तथा समझ सकते हैं।"

अध्याय २

प्रचार-यात्राएँ

१

सफेद खच्चर

मार्च मास के मध्य में, एक दिन फ़ादर वेलेंट अलबुक़र्क की प्रचार-यात्रा करने के पश्चात् सड़क की राह वापस हो रहे थे। वे एक मैनुएल लुजों नामक धनवान् मेक्सिकन के मकान पर उसके नोकर तथा नौकरानियों का, जो बिना विवाह के ही पति-पत्नी की तरह रह रहे थे, विवाह कराने तथा बच्चों को दीक्षित करने के लिये रुकने वाले थे। वहीं वे रात बिताने वाले थे। कल या परसों वे सांता फ़े पहुँचेंगे। रास्ते में उन्हें रेड इण्डियनों की सैंटो डोमिंगो नामक बस्ती में सार्वजनिक उपासना के लिये रुकना था। सैंटो डोमिंगो में धर्म-प्रचारकों का एक बहुत पुराना सुन्दर गिरजाघर था; परन्तु रेड इण्डियन बड़े उद्धत तथा शक्की मिजाज के थे। एक सप्ताह पहले, अलबुक़र्क जाते समय फ़ादर वेलेंट ने इस बस्ती में विशेष पूजा-समारोह ('मास') आयोजित किया था। घर-घर में जाकर समझाने-बुझाने तथा गिरजाघर में आने वाले लोगों को पदक एवं धार्मिक रंगीन चित्रों का लालच देकर उन्होंने एक बड़ा धार्मिक समूह एकत्र कर लिया था। यह एक बड़ी एवं खुशहाल बस्ती थी, जो रायो ग्रांडे की घाटी में छोटी-छोटी

पहाड़ियों के बीच बसी थी। पहाड़ियों की तलहटी में ही उनके पानी से सुसिंचित खेत थे। उनका धार्मिक समूह शान्त, सौम्य एवं एकाग्र चित्त वाला था। लोग अपने अच्छे-से-अच्छे कम्बल ओढ़े हुए ज़मीन पर ही बड़े आराम से बैठे हुए थे। फ़ादर वेलेंट ने उनके समक्ष बड़ी बुलंद आवाज़ में स्पेनिश भाषा में भाषण दिया था और लोगों ने बड़े सम्मान से उसे सुना था। परन्तु वे अपने बच्चों को दीक्षा के लिये नहीं ले आये। बहुत पहले स्पेनिश लोगों ने उनके साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया था और कई पीढ़ियों से वे अपनी अप्रसन्नता अपने मन में रखे हुए चले आ रहे थे। फ़ादर वेलेंट उस दिन एक बच्चे को भी दीक्षित करने में समर्थ नहीं हुए थे, परन्तु उनका विचार कल वहाँ रुकने तथा पुनः प्रयत्न करने का था। फिर वे कल ही अपने बिशप के पास पहुँच जाने को थे, बशर्ते उनका घोड़ा ला बाजडा की पहाड़ी पार कर सके।

उन्होंने अपना घोड़ा एक अमेरिकन सौदागर से ख़रीदा था, जिसमें उन्हें बुरी तरह धोखा हुआ था। बीस से तीस मील प्रति दिन की गति से एक सप्ताह की यात्रा ने ही उसे बिलकुल चकनाचूर कर दिया था। बर्नालिलो से आगे बढ़ने पर मैनुएल लुजों के घर पहुँचते-पहुँचते फ़ादर वेलेंट के मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिन्ताएं थीं। लुजों का फ़ार्म एक प्रकार का छोटा-सा नगर था। उसमें अस्तबल बने हुए थे, बाड़े थे तथा लकड़ी के छड़ों से बने हुए मवेशियों के घेरे थे। फ़ार्म में बना बड़ा निवास-स्थान एक लम्बा तथा नीचा मकान था, जिसमें शीशे की खिड़कियाँ तथा चमकदार नीले रंग के दरवाज़े थे। मकान के सामने की दीवार के एक छोर से दूसरे छोर तक एक ऊँचा मेहराबदार फ़ाटक बना हुआ था। कच्चे ईंटों की बनी हुई दीवार पर लगाम, काठी, बड़े-बड़े बूट, घोड़े की रकाबें, बन्दूकें, ज़ीनपोश, लाल मिर्च की रस्सी में गुंथी हुई मालाएँ, लोमड़ी की खालें तथा दो विशाल सर्पों की खालें लटकी हुई थीं।

फ़ादर वेलेंट के फाटक में प्रवेश करते ही चारों ओर से बच्चे उनकी ओर दौड़ पड़े। इनमें से कुछ तो केवल एक कमीज़ पहने हुए थे और औरतें अपने काले बालों वाले सिरों पर बिना कोई कपड़ा डाले ही बच्चों के पीछे दौड़ती हुई आयीं। मैनुएल लूजों के घर के अंदर से बाहर निकलते ही वे सबके सब चंपत हो गये। लूजों हाथ में टोपी लिये मुस्कराते हुए स्वागत के लिये आगे आये। उनकी अवस्था पैंतीस वर्ष की थी, गँठा हुआ शरीर तथा गर्दन मोटी। उन्होंने ईश्वर के नाम पर पादरी का स्वागत किया और उन्हें घोड़े से उतारने के लिये हाथ बढ़ाया, परन्तु फ़ादर वेलेंट शीघ्रता से ज़मीन पर कूद पड़े।

"मैनुएल, ईश्वर तुम्हारा तथा तुम्हारे परिवार का कल्याण करे! जिनका विवाह होने को है, वे सब कहाँ हैं?"

"सब लोग खेतों में काम कर रहे हैं, पादरी साहब। कोई जल्दी नहीं है। थोड़ी सी शराब पीजिये, नाश्ता कीजिये और थोड़ा विश्राम कीजिये। इसके बाद फिर ब्याह आदि होगा।"

"शराब और नाश्ता सब होगा, लेकिन बाद को। मैंने तो सोचा था कि भोजन के समय मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा, लेकिन मैं दो घण्टे पिछड़ गया, क्योंकि मेरा घोड़ा बड़ा खराब है। घोड़े पर से मेरा झोला उतरवा लो, उसमें से निकाल कर मैं अपने पादरी के कपड़े पहन लूँ। अपने आदमियों को खेतों पर से बुलवा लो, लुजों। ब्याह के लिये लोग अन्य काम बंद कर सकते हैं।"

साँवले रंग का उनका मेज़बान, उनकी इस जल्दीबाज़ी से हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा; "पादरी साहब, ज़रा ठहरिये। बच्चों को दीक्षित भी तो करना है। यदि आप मुँह-हाथ धोने तथा थोड़ा विश्राम करने के लिये नहीं तैयार हैं, तो क्यों नहीं तब तक बच्चों की दीक्षा ही आरम्भ की जाय।"

"मुझे मुँह-हाथ धोने तथा कपड़े बदलने का कोई स्थान बतला दो। जब तक तुम उन लोगों को यहाँ बुलाकर एकत्र करते हो, तब तक मैं तैयार होकर आ जाऊँगा। नहीं लुजों, मैं कहता हूँ कि विवाह का कार्य पहले होगा, दीक्षा पीछे। ईसाई धर्म में यही व्यवस्था दी हुई है। मैं बच्चों को दीक्षा कल प्रातःकाल दूँगा, तब तक कम से कम उनके माताओं-पिताओं का धर्म विहित ब्याह तो हो गया रहेगा।"

फ़ादर जोसेफ़ को उनके लिये निर्दिष्ट कमरे में पहुँचाया गया तथा कुछ सयाने लड़के पुरुषों को बुलाने के लिये खेतों पर दौड़ाये गये। लुजों तथा उसकी दो कन्याएँ मिलकर बड़े कमरे के एक किनारे वेदी तैयार करने लगीं। दो बूढ़ी स्त्रियाँ कमरे की सफाई करने लगीं तथा एक औरत कुर्सी, स्टूल, मेज़ इत्यादि लाने लगी।

"बाप रे बाप, यह पादरी कितना कुरूप है!" उनमें से एक स्त्री ने अन्य दोनों से कहा। "लेकिन वह बड़ा धार्मिक एवं ईश्वर-भक्त होगा। और उसकी ठुड्डी पर कितना बड़ा मसा है। मेरी दादी यदि आज जीवित होतीं, तो वे बेचारे के इस मसे को मंत्र से अच्छा कर देतीं! उसे तो चिमायो की उस चमत्कारिक मिट्टी के बारे में बता देना चाहिये। उस मिट्टी के लगाने से सम्भव है कि यह मसा सूख जाय। अब तो ऐसा कोई रह ही नहीं गया, जो मसों को मंत्र आदि से अच्छा कर देता।"

"नहीं, अब पहले वाली बातें और अच्छाइयाँ कहाँ रह गयीं," दूसरी ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा। "और मुझे सन्देह है कि इन विवाहों आदि से समय फिर सुधर जाय। लोगों के बाल-बच्चे हो जाने के बाद उनका व्याह करने से क्या लाभ? और यह भी तो हो सकता है कि जिस पुरुष का ब्याह होने को हो, वह पैब्लो की भाँति किसी दूसरी स्त्री की बात सोच रहा हो। मैंने पैब्लो को पिछले रविवार की रात को त्रिनिदाद की सबसे बड़ी वाली लड़की के साथ झाड़ी में से निकलते हुए देखा था।"

उसी समय फ़ादर जोसेफ़ वहाँ आ गये और उनकी बेहूदा वार्ता बंद हो गई। वे वेदी के समक्ष झुककर बैठ गये और अपनी पूजा आदि करने लग गये। औरतें धीरे से बाहर निकल गयीं। सीन्योर लुजों स्वयं नौकरों की कोठरियों की ओर 'विवाह-संस्कार के लिये उम्मेदवारों को जल्दी तैयार करने चले गये। औरतें हँस रही थीं और अपने सर्वश्रेष्ठ कपड़े पहन रही थीं। उनमें से कुछ ने अपने हाथ भी धो लिये थे। घर के सभी लोग बड़े कमरे (हॉल) में एकत्र हो गये और फादर वेलेंट बड़ी शीघ्रता से लोगों का विवाह संस्कार पूर्ण करा रहे थे।

"कल प्रातःकाल दीक्षा-कार्य होगा," उन्होंने घोषित किया। "और माताएँ इस पर ध्यान रखें कि बच्चे साफ़ सुथरे रहें और उनमें से प्रत्येक के लिये धर्म-पिता भी रहें।"

पुनः यात्रा के अपने कपड़े पहनने के पश्चात् फ़ादर जोसेफ़ ने लुजों से पूछा—आप भोजन कितने बजे करते हैं? सुबह नाश्ते के बाद से मैंने कुछ खाया नहीं है और मुझे भूख लगी है।

"जब भी भोजन तैयार हो जाता है, तभी हम खा लेते हैं—साधारणतया सूर्यास्त से थोड़ी देर बाद। मैंने आपके लिये भेंड़ का एक बच्चा कटवा रखा है।"

फ़ादर जोसेफ़ ने यह सुनते ही बड़ी दिलचस्पी दिखलाई। "आहा, और वह पकाया कैसे जायगा?"

सीन्योर लुजों ने कुछ विस्मित होते हुए कहा, "यह भी कोई पूछने की बात है? अरे उसे थोड़ी लाल मिर्चों तथा प्याज के साथ पर चढ़ा देते हैं, बस!"

"यही तो बात है। इधर मैंने काफ़ी रसेदार गोश्त खाया है। यदि आप मुझे रसोईघर में जाने की अनुमति दे देते, तो अपने हिस्से का गोश्त मैं स्वयं पका लेता।"

लुजों ने श्रपना हाथ फैलाते हुए कहा, "मेरा घर श्रापका घर है, पादरी साहब। मैं तो स्वयं रसोईघर में कभी नहीं जाता, क्योंकि वहाँ बहुत सी श्रौरतें रहती हैं। परन्तु श्राप चले जाइये, इस समय वहाँ की इंचार्ज रोज़ा नामक एक स्त्री है।"

फ़ादर ने रसोईघर में प्रवेश किया, तो देखा कि वहाँ श्रौरतों की एक खासी भीड़ एकत्र है, जो विवाहों के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रही हैं। उन्हें देखते ही वे सब चली गयीं श्रौर श्रँगीठी के पास श्रकेली रोज़ा रह गयी। श्रँगीठी पर एक देग़ची चढ़ी हुई है, जिसमें से मांस पकने की सुगंध निकल रही थी, जिससे फ़ादर जोसेफ़ सुपरिचित थे। उन्होंने भेंड़ के बच्चे का श्राधा भाग दरवाज़े के पास टंगा हुश्रा देखा, जो खून से लथपथ खाल से ढंका हुश्रा था। फ़ादर ने रोज़ा से चूल्हा गरम करने को कहा श्रौर उससे बतलाया कि वे श्रपने लिये पिछली टांग पकाना चाहते हैं।

"लेकिन पादरी साहब, चूल्हे पर तो मैंने विवाह की रस्म के पहले ही कुछ पकाया था। वह तो श्रब बिलकुल ठंडा हो गया है। उसे श्रब गरम करने में एक घण्टा लगेगा, श्रौर भोजन करने के समय में श्रब केवल दो घण्टे की देर है।"

"ठीक है। मैं श्रपना गोश्त एक घण्टे ही में पका लूंगा।"

"गोश्त एक घण्टे में पका लेंगे?" श्राश्चर्य प्रकट करते हुए बुड्ढी ने कहा "देवी भला करें, पादरी साहब, इतनी देर में तो उसका खून भी नहीं सूखेगा।"

"वह सब ठीक है।" फ़ादर जोसेफ़ ने कड़ाई से संक्षिप्त उत्तर दिया। "श्रब तुम श्राग जलाने में थोड़ी शीघ्रता कर दो।"

जब पादरी साहब भोजन करने बैठे श्रौर छुरी से श्रपने पकाये हुए। गोश्त की बोटियाँ काटने लगे, तो उससे जो लाल रंग का रसा टपका,

उसे देखकर उनकी कुर्सी के पीछे खड़ी हुई भोजन परसने वाली लड़कियां घृणा से मुँह बिचकाने लगीं, मैनुएल लुजों ने शिष्टता के नाते उसमें से एक टुकड़ा ले तो लिया, परन्तु खाया नहीं। फ़ादर वेलेंट ने ही वह सब खाया।

सभी पुरुष और लड़के लुजों के साथ ही भोजन करने बैठे। औरतें और छोटे बच्चे बाद को खाने को थे। फ़ादर जोसेफ़ और लुजों मेज़ के एक किनारे बैठे। उन दोनों के बीच में मेज़ पर बोर्डो नामक एक सफ़ेद शराब की बोतल रखी हुई थी। लुजों ने बताया कि वह मेक्सिको नगर से खच्चर पर लादकर लाई गई थी। वे सांता फ़े जाने वाली सड़क के सम्बन्ध में बातें करने लगे और जब पादरी महोदय ने यह कहा कि वे सैंटो डोमिंगो में रुकेंगे, तो लुजों ने उनसे कहा कि वे वहीं एक घोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते। "मुझे तो संदेह है कि आप अपने घोड़े पर सांता फ़े पहुँच भी सकेंगे। सैंटो डोमिंगो अच्छे घोड़ों के लिये प्रसिद्ध है। आ वहीं सौदा कर लीजिये।"

"नहीं", फ़ादर वेलेंट ने कहा। "वहाँ के रेड इण्डियन बड़े ही क्रोधी मिजाज़ के हैं। यदि मैं उनसे किसी सौदे आदि की बात करूँगा, तो वे मेरे अभिप्राय पर संदेह करने लगेंगे। यदि हमें उनकी आत्माओं को शुद्ध करना है, तो हमें यह स्पष्ट कर देना होगा कि हम अपने लिये कोई लाभ नहीं चाहते जैसा कि मैंने फ़ादर गैलेगोस से अलबुक़र्क में कहा था।"

यह सुनकर मैनुएल लुजों हंस पड़ा और उसने अपने आदमियों की ओर देखा, जो सभी दांत निपोड़े हुए हँस रहे थे। "आपने अलबुक़र्क के पादरी से भी यही बात कही थी ? फिर तो आप साहसी व्यक्ति हैं। फ़ादर गैलेगोस तो एक धनवान् व्यक्ति हैं। फिर भी मैं उनका सम्मान करता हूँ। मैंने उनके साथ पोकर (ताश का खेल, जिसमें कुछ बाज़ी भी लगती है) खेला है। वे तो पक्के जुआड़ी हैं और अपनी हार को मर्द की तरह बर्दाश्त

करते हैं। वे निरुत्साहित तो होते ही नहीं और अमेरिकन की तरह खेलते हैं।''

''और मैं,'' फ़ादर जोसेफ़ ने तपाक से उत्तर दिया, ''मैं ऐसे पादरी का तनिक भी सम्मान नहीं कर सकता, जो ताश खेलता है और धन एकत्र करता है।''

''तो आप नहीं खेलते क्या?'' लुजों ने पूछा। ''मैं तो बड़ा हताश हो गया। मैंने सोचा था कि भोजन के पश्चात् हम लोग थोड़ी देर खेलेंगे। रात को यहाँ मन बहलाव का कोई साधन ही नहीं है। आप 'डोमिनोज़ (एक अन्य खेल) भी नहीं खेलते?''

''डोमिनोज़ खेलना दूसरी बात है।'' फ़ादर जोसेफ़ ने कहा। ''आग के पास बैठकर, काफ़ी या वह अद्‌भुत अंगूरी ब्रांडी, जो आपने मुझे पिलायी थी, पीते हुए डोमिनोज़ खेलना मन को प्रसन्न कर देने वाली बात है। मैनुएल, तुम मुझे यह तो बताओ कि वह ब्रांडी तुम लाते कहाँ से हो? वह तो फ्रेंच शराब जैसी है।''

''वह बड़े परिश्रम एवं यत्न से तैयार की जाती है। मेरे दादा के समय में बर्नेलिलो में वह तैयार की जाती थी। अब भी लोग वहाँ बनाते हैं, परन्तु अब उतनी अच्छी नहीं होती।''

दूसरे दिन प्रातःकाल, काफ़ी आदि पीने के बाद, जब बच्चे दीक्षा के लिये तैयार किये जा रहे थे, मैनुएल फ़ादर वेलेंट को, अपने मवेशियों को दिखाने के लिये, बाड़ों तथा अस्तबलों में लिवा गया। उसने बड़े गर्व से सफेद रंग के दो खच्चर दिखाये, जो अगल-बगल बँधे हुए थे। उसने स्वयं अपने हाथ से उन्हें अस्तबल से बाहर निकाला, जिससे बाहर प्रकाश में वह उनकी सुन्दर जिल्द भली प्रकार दिखा सके, जो सफ़ेद घोड़ों की जिल्द की तरह कुछ नीला लिये सफेद रंग की नहीं थीं, अपितु वह हाथी के दांत की

तरह बिलकुल सफ़ेद थी, लेकिन अस्तबल के अंधेरे में भूरे रंग की लग रही थी। उनकी पूँछें छोर पर घण्टों के आकार में कटी हुई थीं।

लुजों ने बतलाया कि उनके नाम कंटेटो और ऐंजेलिका हैं और जैसे अच्छे उनके नाम हैं, वैसे ही वे अच्छे भी हैं। ऐसा लगता है कि ईश्वर ने उन्हें बुद्धि भी दी है। जब मैं उनसे बोलता हूँ, तो वे सच्चे क्रिश्चियनों की भाँति मेरी ओर देखते हैं; वे बड़े मेली हैं। उन पर सदा ही साथ-साथ सवारी की जाती है और वे एक दूसरे को बहुत चाहते हैं।"

फ़ादर जोसेफ़ ने एक की अगाड़ी पकड़ कर इधर-उधर घुमाया। "वाह, ये तो अद्भुत जानवर हैं। मैंने कोई खच्चर या घोड़ा इनकी तरह मृग-शावक के रंग का पहले कभी नहीं देखा था।" लुजों यह देख कर चकित रह गया कि वह दुबला-पतला पादरी अचानक टिड्डे की तरह उछल कर कैसे कंटेंटो की पीठ पर सवार हो गया। खच्चर भी चकित रह गया। वह उछला और खलिहान के फ़ाटक की ओर सरपट भागा। फाटक पर पहुँच कर वह अचानक रुक गया। चूँकि उसकी इस अप्रत्याशित क्रिया से उसका सवार पीठ पर से नीचे गिरा नहीं, वह संतुष्ट सा हो गया, धीरे-धीरे वापस चला आया और ऐंजेलिका के पास शांति से खड़ा हो गया।

"आप तो पक्के घुड़सवार हैं, फ़ादर वेलेंट," लुजों ने कहा। "फ़ादर गैलेगोस शायद ही पीठ पर अड़े रहते, यद्यपि वे शिकारी बनते हैं।"

"तुम्हारे इस देश में मुझे तो रात-दिन घोड़े की ही पीठ पर बिताना है, लुजों। इस खच्चर की चाल कितनी अच्छी हैं, और उसकी पीठ कितनी कम चौड़ी है। यही उसकी विशेषता है। मेरी तरह छोटे पाँववाले व्यक्ति के लिये चौड़ी पीठ वाले घोड़े पर प्रतिदिन आठ घण्टे सवारी करना, एक प्रकार का दण्ड ही समझो। और मुझे तो दिन प्रतिदिन यही करना है। यहाँ से मैं सांता फ़े जा रहा हूँ, और एक दिन तक बिशप के साथ कुछ बातों पर विचार-विमर्श के पश्चात्, मैं मोरा के लिये रवाना हो जाऊँगा।"

"मोरा के लिये ?" लुजों ने आश्चर्य से पूछा। "वह तो बहुत दूर है और सड़कें बहुत खराब हैं। आप अपनी घोड़ी पर वहाँ तक नहीं पहुँच सकते। वह तो रास्ते ही में कहीं मर जायगी।" वह बात कर रहा था और फ़ादर घोड़े की पीठ पर बैठे उसे धीरे-धीरे अपने हाथों से सहला रहे थे।

"परन्तु मेरे पास दूसरा घोड़ा तो है नहीं। ईश्वर यह न करे कि वह ऐसी जगह मरे, जहाँ भोजन और पानी भी न मिले। मैं अपने साथ अपने लबादे तथा पवित्र बर्तनों के अतिरिक्त बहुत थोड़ा सामान ढो सकता हूँ।"

मेक्सिकन कृषक अधिकाधिक विचार मग्न होता जा रहा था, जैसे वह किसी तुच्छ बात पर नहीं, अपितु गम्भीर बात पर विचार कर रहा हो। अचानक उसकी भौं के बल अदृश्य हो गये और वह बच्चों जैसी भोली मुस्कान के साथ पादरी की ओर घूम गया "फ़ादर वेलेंट" भाषण देने जैसी ध्वनि में उसने कहा, "आपने मेरे परिवार को धर्म की दीक्षा दी है, और इसके लिये मुझसे बहुत कम ले रहे हैं। अतः मैं आपके लिये एक बड़ी अच्छी बात करने जा रहा हूँ; मैं आपको कंटेटो भेंट स्वरूप दे रहा हूँ, और मैं यह आशा करूँगा कि आप आराधना एवं प्रार्थना के समय मेरा विशेष रूप से स्मरण करेंगे।"

ज़मीन पर कूदते हुए फ़ादर वेलेंट ने अपने मेज़बान को छाती से लगा लिया। "मैनुएल !" उन्होंने आवेश में कहा, "इस सुन्दर खच्चर के बदले मैं तुम्हारे लिये इतनी प्रार्थना करूँगा कि तुम स्वर्ग में पहुँच जाओगे।"

लुजों भी हँस पड़ा और उसने भी फ़ादर को छाती से लगा लिया। एक दूसरे का हाथ पकड़े वे दीक्षा-संस्कार आरम्भ करने अंदर चले गये।

× × × ×

दूसरे दिन प्रातःकाल जब लुजों फ़ादर वेलेंट को नाश्ते के लिये बुलाने गया, तो उसने उन्हें खलिहान में दोनों खच्चरों को टहलाते तथा उनके पुट्ठे को सहलाते हुए पाया; परन्तु आज उनका चेहरा कल की तरह प्रसन्न नहीं था।

"मेनुएल," उन्होंने उसे देखते ही कहा, "मैं तुम्हारी भेंट नहीं स्वीकार कर सकता। मैंने रात भर इस पर सोचा है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि मैं नहीं स्वीकार कर सकता। बिशप भी उतना ही परिश्रम करते हैं, जितना मैं, और उनका घोड़ा मेरे से तनिक भी अच्छा नहीं है। तुम जानते हो कि यहाँ आते समय गैल्वेस्टन में जहाज डूबने के कारण उनका सब कुछ चला गया था। अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त उनकी एक सुन्दर सी गाड़ी भी पानी में डूब गई, जिसे उन्होंने यहाँ के मैदानों वाले प्रदेश में यात्रा करने के लिये बनवाया था। मैं इतने अच्छे खच्चर पर घूमता फिरूँ और मेरा बिशप एक सड़ियल से घोड़े पर चढ़े, यह कैसे हो सकता है? यह अनुचित है। अतः मैं अपनी पुरानी घोड़ी पर ही सवार होकर जाऊँगा।"

"हाँ, पादरी साहब!" मेनुएल कुछ दुखी तथा खिन्न हुआ। वह सोचने लगा कि पादरी साहब सब बनी बनायी बातें क्यों नष्ट कर रहे हैं? कल की सभी बातें कितनी मोहक और सुहानी थीं और वह अपने को कितना बड़ा दानी समझ रहा था। "परन्तु मुझे संदेह है कि वह ला बजाडा की पहाड़ी चढ़ लेगी," उसने अपना सिर हिलाते हुए धीरे से कहा। "अच्छा, पादरी साहब, आप मेरे घोड़ों को देख लीजिये और उनमें से जो आपके काम का हो, उसे ले लीजिये। उनमें से प्रत्येक आपकी घोड़ी से तो अच्छा ही है।"

"नहीं, नहीं," फ़ादर वेलेंट ने दृढ़ता से कहा। "इन खच्चरों को देखने के पश्चात्, मैं अन्य कोई जानवर नहीं ले सकता। मोतियों जैसा उनका

रंग है। मैं विवाहों की दक्षिणा बढ़ा दूँगा, जिससे मैं यह जोड़ा तुमसे खरीद सकूं। धर्म-प्रचारक पादरी के अकेलेपन के जीवन में साथी के रूप में ऐसा घोड़ा चाहिये, जिस पर वह भरोसा कर सके। मैं ऐसा समझदार खच्चर चाहता हूं, जो मेरी ओर, जैसा कि तुमने कहा, एक सच्चे क्रिश्चियन की तरह देख सके।"

सीन्योर लुजों ने एक ठंडी सांस ली और वह अपने खलिहान की ओर देखने लगा, मानो वह इस स्थिति से बच निकलने का कोई उपाय ढूंढ़ रहा हो।

फ़ादर जोसेफ़ आवेग से उसकी ओर घूम गये और बोले, "मैनुएल, यदि मैं तुम्हारी तरह सम्पत्तिशाली कृषक होता, तो मैं जानते हो क्या कमाल का काम करता? मैं इन दोनों खच्चरों को, जो इस नास्तिक प्रदेश में ईश्वर का संदेश घर-घर पहुँचायेंगे, प्रचारकों को दे देता और फिर स्वयं से गर्व के साथ कहता—वह देखो मेरे बिशप और मेरे विकार मेरे सुन्दर खच्चरों पर बैठे चले जा रहे हैं।"

"तो ऐसा ही हो, पादरी साहब," लुजों ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा। "परन्तु मेरे कल्याण के लिये काफ़ी प्रार्थना की जानी चाहिये। अपनी सारी सम्पत्ति में मैं इन दो खच्चरों के समान अन्य किसी वस्तु को नहीं प्यार करता। यह सच है कि यदि इन दोनों को कुछ समय के लिये एक-दूसरे से अलग कर दिया जाय, तो वे खिन्न हो जायँगे और पुनः मिलने के लिये लालायित हो उठेंगे। अब तक वे अलग नहीं किये गये और वे एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। आप तो जानते हैं कि खच्चर जब किसी को प्यार करते हैं तो बहुत प्यार करते हैं। उन्हें दे देना मेरे लिये बड़ा कठिन हो रहा है।"

"इससे तुम्हें सुख ही मिलेगा, मैनुएल," फ़ादर जोसेफ़ ने प्रसन्नता से

कहा "जब जब तुम इन खच्चरों का स्मरण करोगे, तब तब तुम यह सोच कर गर्वान्वित हो उठोगे कि तुमने कितना अच्छा काम किया है।"

नाश्ते के बाद ही फ़ादर वेलेंट कंटेंटो पर सवार होकर रवाना हो गये। ऐंजेलिका चुपचाप पीछे-पीछे दौड़ा जा रहा था और सीन्योर लुजों अपने फाटक पर खड़ा बड़े उदास चित्त से उन्हें देख रहा था। धीरे-धीरे वे अदृश्य हो गये। उसे ऐसा लगा, जैसे वह अपने खच्चरों को दे देने के लिये बाध्य कर दिया गया था, फिर भी उसे कोई ग्लानि नहीं थी। उसे फ़ादर जोसेफ़ की प्रचंड अनुरक्ति एवं लगन पर संदेह नहीं था। कुछ भी हो, बिशप आखिरकार बिशप है और उसी प्रकार विकार भी विकार है और यह तो उनके लिये श्रेय की बात है कि दोनों एक ही गिरजाघर में पादरियों के जोड़े के रूप में काम कर रहे हैं। उसे यह सोचकर बड़ा गर्व हो रहा था कि वे कंटेंटो और ऐंजेलिका पर सवारी करेंगे। फ़ादर वेलेंट ने उसे विवश कर दिया था, परन्तु उसे इस पर एक प्रकार की प्रसन्नता ही थी।

२

मोरा की निर्जन सड़क

बिशप और विकार खच्चरों पर सवार टूकास पर्वत के एक भाग में से होकर चले जा रहे थे। वर्षा हो रही थी। पर्वत शिखर से आती हुई तेज ठंडी हवा वर्षा की तीखी एवं सीसे के रंग की धार को तिरछी कर रही थी। फ़ादर लातूर सोच रहे थे कि वर्षा की ये बूंदें मेंढक के डिंभ के आकार की थीं और वे उनकी नाक और गाल पर पड़कर छींटे उछालती हुई फूट जाती थीं, मानों वे खोखली थीं और उनमें हवा भरी हुई थी। पादरी लोग ऊंचे पहाड़ के चरागाहों में से होकर जा रहे थे, जो कुछ सप्ताहों पश्चात् बिलकुल हरे हो जायंगे, यद्यपि इस समय वे स्लेटी रंग के थे।

उनके चारों ओर पर्वत-श्रेणियाँ थीं, जिन पर नीली आभा से युक्त हरे-हरे देवदारु के वृक्ष थे; उनके भी ऊपर सींग के आकार की मुख्य पर्वत-श्रेणियाँ थीं। आकाश में घने बादल छाये हुए थे; कुछ बैगनी आभा लिये हुए भूरे रंग के बादलों से जनित, चीड़ के वृक्षों से आच्छादित पर्वत श्रेणियों की उपत्यका में, धुंध छायी हुई थी। धुँध की इस अँधेरी में प्रकाश की एक झलक भी नहीं थी। इसके विपरीत सदाबहार वृक्षों की हरियाली का ही रंग उद्दीप्त था। यहाँ तक कि श्वेत रंग के खच्चर भी भीग जाने के कारण स्लेटी रंग के दीख रहे थे और दोनों पादरियों के चेहरे भी इस अजीब प्रकाश में बैगनी तथा चितकबरे रंग के हो रहे थे।

फ़ादर लातूर आगे-आगे जा रहे थे। वे अपने खच्चर पर सीधे बैठे थे। आँख को पानी की धार से बचाने के लिये उन्होंने अपनी ठुड्डी अन्दर की ओर खींचकर गर्दन से लगभग सटा दी थी। फ़ादर वेलेंट उनके पीछे चल रहे थे। उन्हें देखने में कठिनाई हो रही थी, क्योंकि इस प्रकार के मौसम में उनका चश्मा बेकार था और उन्होंने उसे उतार दिया था। वे काठी में खच्चर की पीठ से सटे आगे झुके हुए बैठे थे, उनके कन्धे खच्चर की गर्दन पर पहुँच गये थे। फ़ादर जोसेफ़ की बहन फिलोमीन, जो अपने पैदायशी नगर पाय दे दोम के एक कनवेंट स्कूल में मदर सुपीरियर (प्रधान अध्यापिका) थीं, बहुधा ही अपने भाई तथा बिशप लातूर की इन लम्बी प्रचार-यात्राओं के, जिनके सम्बन्ध में फ़ादर जोसेफ़ उन्हें पत्र लिखा करते थे, चित्र अपने मस्तिष्क में अंकित करने का प्रयत्न करती थीं। वे सोचती थीं कि दोनों पादरी अपने लबादे पहने, नंगे सिर जैसे सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर चित्रों में, जिनसे वे परिचित थीं, दिखाये गये थे, चले जा रहे होंगे। वास्तविकता इतनी सजीव नहीं थी। फिर भी कोई भी व्यक्ति इन दोनों व्यक्तियों को शिकारी या सौदागर समझने की ग़लती नहीं कर सकता था। वे अपने गलों में गुलूबंद के बजाय क्लर्कों द्वारा पहने जाने वाले कालर

पहने हुए थे और बिशप के मृगछाले वाले जेकेट के सामने के भाग पर उनका चाँदी का क्रूश चाँदी की जंजीर से लटक रहा था।

वे मोरा जा रहे थे। आज उनकी यात्रा का तीसरा दिन था और उन्हें यह नहीं ज्ञात था कि अभी उन्हें कितनी दूर जाना है। प्रातःकाल से अब तक उन्हें रास्ते में कोई यात्री नहीं मिला था और न तो उन्होंने कोई मनुष्यों की बस्ती देखी थी। वे सोचते थे कि वे सही रास्ते पर हैं, क्योंकि उन्होंने अन्य कोई रास्ता देखा ही नहीं था। यात्रा की पहली रात उन्होंने सांता क्रुज़ में, जो रायो ग्रांडे की विशाल एवं गरम उपत्यका में पड़ता था, बितायी थी। घाटी के खेतों, बगीचों आदि में वसंत का आगमन हो चुका था। परन्तु एस्पानोल प्रदेश से आगे बढ़ने के पश्चात् पहले उन्हें आँधी और तूफ़ान का सामना करना पड़ा था और अब ठंडक से मुक़ाबला था। बिशप मोरा इसलिये जा रहे थे कि वे वहाँ के पादरी की उसके मकान से शरणार्थियों की एकत्र एक भीड़ को निकालने तथा उसे व्यवस्थित करने में सहायता कर सकें। कोनेजोस घाटी की एक नयी बस्ती में कुछ दिन पहले रेड इण्डियनों ने आक्रमण कर दिया था; बहुत से लोग मार डाले गये थे और बचे हुए लोग, जो पहले मोरा ही के रहने वाले थे, बिलकुल अकिंचन के रूप में मोरा वापस चले गये थे।

यात्रियों ने अभी पर्वतीय चरागाह पार नहीं किया था कि वर्षा के साथ-साथ बर्फ़ और ओले भी पड़ने लगे। उनके मृगछाले के कोट फ़ौरन जम गये और इतने कड़े हो गये कि ओले के टुकड़े उन पर टकरा कर उछल पड़ते थे। इस मौसम में खुले में रात बिताने की संभावना बड़ी दुःखदायी हो रही थी। ऐसे में आग जलाना संभव नहीं था, उनके कम्बल जमीन पर भीग जायेंगे। अब वे मोरा की ओर वाली पहाड़ की ढाल से नीचे उतर रहे थे और प्रकाश भी मंद पड़ने लगा था, यद्यपि अभी तीसरे

पहर के चार ही बजे थे। फ़ादर लातूर खच्चर पर बैठे ही बैठे पीछे की ओर गरदन घुमा कर बोले—

"खच्चर निश्चय ही बहुत थक गये हैं, जोसेफ़। उन्हें कुछ खिलाना चाहिये।"

"बढ़ चलो", फ़ादर वेलेंट ने कहा। "रात होने के पहले हमें कोई न कोई आश्रय-स्थल मिलेगा ही।" पर्वतारोहण के समय से ही विकार बड़ी ही तन्मयता से प्रार्थना कर रहे थे और उन्हे विश्वास था कि सेंट जोसेफ़ उनकी पुकार को अनसुनी नहीं करेंगे। एक घण्टा बीतने के पहले ही सचमुच उन्हें एक टूटा-फूटा कच्चा मकान दिखायी पड़ा, जो इतना छोटा और साधारण था कि यदि वह रास्ते के बिलकुल समीप (एक दर्रे के किनारे पर) न रहा होता, तो कदाचित् वे उसे देख भी न पाते। मकान का अस्तबल स्वयं मकान की अपेक्षा अधिक रहने योग्य जान पड़ा और पादरियों ने सोचा कि वे उसी में रात बिता लेंगे।

जैसे ही वे दरवाजे तक पहुंचे, एक व्यक्ति नंगे सिर बाहर निकला और उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह कोई मेक्सिकन नहीं था, अपितु एक अनाकर्षक ढंग का अमेरिकन था। उसने उनसे एक अजीब बोली में, जिसे वे बड़ी कठिनाई से समझ पा रहे थे, बात की और पूछा कि क्या आप रात भर वहाँ ठहरना चाहते हैं। उससे कुछ क्षणों तक ही बात करने में फ़ादर लातूर को ऐसा लगा कि वे इस कुरूप तथा दुष्ट जान पड़ने वाले व्यक्ति के मकान में कुछ घण्टे भी रहना कदाचित गवारा नहीं कर सकेंगे। वह लम्बा, दुबला तथा अजीब डील-डौल वाला व्यक्ति था; उसकी गरदन सर्प के आकार की थी, सिर छोटा तथा मांस-शून्य। उसके बाल छोटे-छोटे थे, सिर जगह-जगह पिचका हुआ, जगह-जगह उभड़ा हुआ, मानों हड्डियों की बहुतायत के कारण वह समतल नहीं रह गया है। उसके कान बहुत छोटे-छोटे थे। इन कुरूप कानों के साथ उसका

सिर निश्चय ही भयानक लगता था। सम्यक् रूप से देखने पर वह अर्द्ध-मानव से अधिक कुछ नहीं लगता था, परन्तु मोरा की निर्जन सड़क पर रहने वाला अकेला वही एक गृही था।

पादरी खच्चरों से उतर गये और उससे पूछा कि क्या वह खच्चरों को कहीं साये में बाँध कर उन्हें खाने के लिए कुछ दाना दे सकता है।

"कोट पहन कर में आता हूँ, तो इन्हें अन्दर ले जाऊँगा। आप लोग अन्दर चले आइये।"

वे लोग उसके पीछे-पीछे एक कमरे में गये, जहाँ एक कोने में आग जल रही थी। आग के पास जाकर वे अपने ठिठुरे हुए हाथ सेंकने लग गये। उनके मेज़बान ने रुष्ट वाणी में दूसरे कमरे की ओर किसी को पुकारा, जिसके उत्तर में उस कमरे से एक औरत निकली वह मेक्सिकन थी।

फ़ादर लातूर तथा फ़ादर वेलेंट ने उससे स्पेनिश भाषा में शिष्टता के साथ, प्रथा के अनुसार देवी मेरी के नाम पर अभिवादन किया। उसने अपना मुँह नहीं खोला और एक क्षण तक उनकी ओर एक टक देखती रह गयी। फिर उसने अपनी आँखें नीची कर लीं, सिकुड़ कर एक ओर हट गयी, जैसे वह बहुत डर गयी हो। दोनों पादरी एक-दूसरे को देखने लग गये; उन्हें यह याद आया कि उस व्यक्ति ने इस औरत को कोई गाली आदि दी थी। अचानक वह औरत की ओर घूम पड़ा।

"अजनबियों के लिये कुर्सियाँ खाली करो। डरती क्यों हो? ये तुम्हें खा नहीं जायेंगे, ये लोग पादरी हैं।"

अन्यमनस्क भाव से वह कुर्सियों पर से चीथड़ों, भीगे मोजों तथा गन्दे कपड़ों को हटाने लगी। उसके हाथ काँप रहे थे, जिसके कारण उसके हाथ से चीजें गिरी जा रही थीं। वह बुड्ढी नहीं थी, उलटे वह बहुत थोड़ी अवस्था की रही होगी; परन्तु कदाचित् वह जड़बुद्धि थी। उसके चेहरे पर शून्यता एवं भय के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था।

उसका पति कोट और बूट पहन कर दरवाजे तक गया और सिटकिनी पर हाथ रखते-रखते अचानक रुक गया और घबरायी हुई उस औरत की ओर घूमकर एक अर्थ भरी घृणापूर्ण दृष्टि डाली।

"हे सुनती हो ! चलो इधर, मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।"

उसने खूंटी पर से अपनी काली शाल ली और अपने पति के पीछे चली। दरवाज़े के पास पहुँच कर उसने गरदन घुमायी और देखा कि उसके अतिथि उसकी ओर दया एवं हैरानी से देख रहे थे। उसी क्षण वह मूर्ख चेहरा बड़ा गम्भीर, भविष्य-सूचक एवं अत्यन्त अर्थभरा बन गया। अपनी उँगलियों से उसने उन्हें भाग जाने का, फौरन भाग जाने का, इशारा किया। उसने अपना हाथ दो बार हवा में झटका और फिर एक अत्यन्त भय-भरी दृष्टि से, जिसका वर्णन शब्दों द्वारा नहीं किया जा सकता, उसने अपनी हथेली का किनारा अपने गले पर दो बार फेरा और गायब हो गयी। चौखट का स्थान अब रिक्त था और दोनों पादरी उसी की ओर देखते हुये निर्वाक खड़े रह गये। उसके सहसा आवेग की यह क्रिया कि इतनी तीव्र थी, उसने उसके द्वारा जो चेतावनी दी, वह इतनी स्पष्ट एवं निश्चयात्मक थी कि वे चित्रवत् खड़े रह गये।

फ़ादर जोसेफ ने निस्तब्धता भंग की। "उसके तात्पर्य के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं है। तुम्हारा पिस्तौल भरा हुआ है, जीन ?"

"हाँ, लेकिन मैंने उसे भीगने से बचाने में लापरवाही की। खैर, कोई बात नहीं।"

वे फौरन मकान से बाहर निकले। इतना अब भी प्रकाश था कि वे वर्षा में भी अस्तबल देख सकें और वे उसी ओर बढ़े।

"सीन्योर अमेरिकन," बिशप ने पुकार कर कहा, "कृपया हमारे खच्चर बाहर निकाल लाइये।"

वह व्यक्ति अस्तबल से बाहर आ गया। "तुम लोग क्या चाहते हो ?" उसने पूछा।

"अपने खच्चर। हमने इरादा बदल दिया है। हम लोग येन केन प्रकारेण आज ही मोरा पहुँचेंगे। आप के कष्ट के लिये यह रहा एक डालर।"

अमेरिकन का रुख हिंसापूर्ण हो गया। वह एक बार फ़ादर जोसेफ़ को देखता था और गरदन घुमा कर फिर बिशप को। गरदन घुमाने की उसकी यह क्रिया सर्प द्वारा गरदन घुमाने की क्रिया से ठीक मिलती-जुलती थी। "बात क्या है ? मेरा मकान आपके रहने लायक नहीं है क्या ?" उसने पूछा।

"इसका उत्तर देना आवश्यक नहीं है। फ़ादर जोसेफ, अस्तबल में जाओ और खच्चर निकाल लाओ।"

"तुम्हारी मेरे अस्तबल में जाने की हिम्मत, पादरी कहीं के !"

बिशप ने पिस्तौल निकाल कर तान दी। "अपशब्द बकने का कोई काम नहीं, महाशय। हम आप से इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं चाहते कि आपकी इस अशिष्ट भाषा से दूर हो जाँय। आप अपने स्थान पर ही खड़े रहिये।"

मेक्सिकन निःशस्त्र था। फ़ादर जोसेफ़ खच्चरों को, जो अब तक खोले नहीं गये थे, लेकर बाहर आये। बेचारे कुछ खाने लग गये थे, परन्तु उन्हें पुनः रवाना हो जाने के लिये अधिक कोसने आदि की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि वे स्वयं इस स्थान को नहीं पसन्द कर रहे थे। जैसे ही उन पर पादरी लोग सवार हुए; वे सड़क पर, जो वहीं से एक दर्रे की ढाल से नीचे उतरती थी, भाग निकले। नीचे उतरते समय फ़ादर जोसेफ़ ने कहा कि उस आदमी के पास मकान में बन्दूक अवश्य होगी और हम नहीं चाहते कि पीछे से हमें गोली लगे।

"न तो मैं ही चाहता हूँ। लेकिन गोली चलाने के लिये अब प्रकाश नहीं रह गया है। हाँ, वह घोड़े पर हमारा पीछा करे तो दूसरी बात है," बिशप ने कहा। "अस्तबल में घोड़े भी थे ?"

"केवल एक गधा था।" फ़ादर वेलेंट सेंट जोसेफ़ की अनुकम्पा पर भरोसा कर रहे थे, जिसकी आराधना प्रातःकाल उन्होंने बड़े ध्यान से की थी। तनिक सा अवसर पाते ही उस बेचारी औरत ने उन्हें चेतावनी दे दी थी, यह इस बात का प्रमाण था कि कोई दैवी शक्ति उनकी रक्षा कर रही थी।

दर्रे की दूसरी ओर की चढ़ाई समाप्त करते-करते रात हो गयी और अब वर्षा और भी तेज़ हो रही थी।

"अब तो मुझे तनिक भी विश्वास नहीं रह गया है कि हम सड़क से भटकेंगे नहीं," बिशप ने कहा। "परन्तु इतना तो मुझे अवश्य विश्वास है कि हमारा कोई पीछा नहीं कर रहा है। हमें इन समझदार जानवरों पर विश्वास करना चाहिये। मुझे उस बेचारी औरत की याद आ रही है। मुझे तो डर है कि वह उस पर सन्देह करेगा और उसे डाटे फटकारेगा।" उन्हें इस अंधेरे में भी उसका वही चेहरा स्पष्ट दीख पड़ता था, जब वह आग के सामने चित्रवत् खड़ी थी।

वे आधी रात के कुछ देर बाद मोरा पहुँचे। वहाँ, पादरी का घर शरणार्थियों से भरा हुआ था। उनमें से दो शरणार्थी एक खाट पर से उठाये गये जिससे बिशप और उनके विकार उस पर सो सकें।

प्रातःकाल एक लड़का अस्तबल से दौड़ा हुआ आया और बताया कि उसने एक पागल औरत को पुआल पर पड़े देखा, जो सफेद खच्चरों वाले पादरियों से मिलना चाहती है। वह अन्दर बुलायी गयी। वह चीथड़े पहने हुए थी; और उसके पाँव, चेहरा और यहाँ तक कि बाल भी मिट्टी

से इस प्रकार लथपथ थे कि पादरी लोग बड़ी कठिनाई से पहचान सके, कि यह तो वही औरत है, जिसने पिछली रात उनकी जान बचायी थी।

उसने बताया कि रात वह अपने मकान में फिर वापस नहीं गयी। जब दोनों पादरी वहाँ से चल दिये, तो उसका पति बन्दूक लेने दौड़ कर घर के अन्दर गया, और वह स्वयं अस्तबल के पीछे पानी के कटाव से बने एक खन्दक में कूद कर पहाड़ के दर्रे में पहुँच गयी थी और सारी रात सड़क पर चलती हुई मोरा पहुँची थी। उसे यह डर था कि उसका पति उसे रास्ते में ही अवश्य पकड़ लेगा और मार डालेगा, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। वह पौ फटने के पहले ही मोरा पहुँच गयी और सर्दी से ठिठुरे हुए शरीर को गरम करने के अभिप्राय से जानवरों के बीच अस्तबल में चली गयी तथा लोगों के जागने की बाट जोहती रही। बिशप के समक्ष घुटने टेकती हुई वह ऐसी दर्दनाक बातें बताने लगी कि उन्होंने उसे रोक दिया और स्थानीय पादरी से बोले—

"इस मामले को तो अधिकारियों के समक्ष पेश करना चाहिये। यहाँ कोई मजिस्ट्रेट है क्या?"

वहाँ कोई मजिस्ट्रेट नहीं रहता था, परन्तु वहाँ रोयेंदार जानवरों को पकड़ने वाला एक भूतपूर्व व्यापारी रहता था, जो लेख्य-प्रमाणक का भी काम करता था और उसे गवाही सुनने आदि का अधिकार प्राप्त था। उसे बुला भेजा गया, और इस बीच फ़ादर लातूर ने कोनेजोस से आयी हुई शरणार्थी औरतों को आदेश दिया कि वे उस बेचारी औरत को नहला दें, उसे ठीक से कपड़े पहना दें तथा उसके पाँव के घावों आदि पर मरहम-पट्टी कर दें।

एक घण्टे के बाद वह औरत, जिसका नाम मैगडलेना था, भोजन आदि पा जाने के बाद स्वस्थ हुई और अपनी कहानी सुनाने के योग्य हुई। लेख्य-प्रमाणक सेंट व्रेन नामक अपने मित्र को भी अपने साथ लाया था।

उसका मित्र रोयेंदार जानवरों को पकड़ने वाला एक कनेडियन व्यापारी था, जो स्पेनिश भाषा को उसकी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझता था। सेंट व्रेन उस औरत को बचपन से जानता था। उसने उसके इस बयान की पुष्टि की कि वह लोस रैंचोस दि ताओस में पैदा हुई थी, उसका नाम मैगडलेना बाल्देज़ था और इस समय उसकी अवस्था चौबीस वर्ष की थी। उसका पति, जिसका नाम बक स्केलस था अमेरिका के व्योमिंग राज्य के किसी स्थान से आये हुए शिकारियों के एक दल के साथ घूमता-घामता ताओस पहुँच गया था। सभी श्वेत लोग उसे एक नराधम एवं महापतित व्यक्ति समझते थे, परन्तु मेक्सिकन औरतों के लिये किसी अमेरिकन के साथ ब्याह कर लेने का अर्थ समाज में ऊपर उठ जाना होता था और वे इसे अपना गौरव समझती थीं। छः वर्ष पहले उसने उस नराधम के साथ ब्याह किया था और तब से ही वह उसके साथ मोरा की सड़क वाले उस टूटे-फूटे मकान में रहती थी। इस छः वर्ष में उसने चार यात्रियों को, जो वहाँ रात भर शरण के लिए ठहरे थे, लूटा था तथा उनकी हत्या की थी। वे सभी अजनबी थे और उस प्रदेश में कोई उन्हें जानता नहीं था। वह उनके नाम भूल गयी थी, परन्तु उनमें से एक जर्मन लड़का था, जो स्पेनिश भाषा तो बहुत थोड़ी बोल पाता था और अंग्रेज़ी भी कम बोलता था। वह एक अच्छा लड़का था, उसकी आँखें नीली थीं और उसे (मैगडलेना को) उसके मरने का सबसे अधिक दुःख था। वे सभी अस्तबल के पीछे बलुई ज़मीन में गाड़ दिये गये थे। उसे यह डर सदा ही बना रहता था, किसी दिन वर्षा-तूफ़ान में उनकी लाशें मिट्टी कटने से बाहर न निकल आयें। बक उनके घोड़ों को रात ही में ले जाकर उत्तर में कहीं रेड इण्डियनों को बेच आया था। अब तक मैगडलेना को तीन बच्चे पैदा हुए थे और उसके पति ने तीनों को उनके जन्म के कुछ ही दिन पश्चात् इतनी निर्दयता से मार डाला था कि वह उसका वर्णन नहीं कर सकती। जब उसने पहले बच्चे

को मारा था, तो वह उससे भाग कर रैंचोस में अपने माता-पिता के घर चली गयी थी। वह उसका पीछा करता हुआ वहां पहुँचा और उसके माता-पिता को डरा-धमका कर उसे फिर अपने घर ले आया। वह सहायता के लिये कहीं भी जाने में बहुत डरती थी, परन्तु दो बार पहले भी उसने यात्रियों को, जब उसका पति किसी काम से घर से बाहर गया था, चेतावनी देकर भगा दिया था। इस बार उसे भाग जाने का साहस इसलिये हुआ कि इन दोनों पादरियों को देखते ही वह समझ गयी कि ये लोग अच्छे आदमी हैं और यदि वह इनके पीछे-पीछे भागेगी, तो वे लोग उसे बचा लेंगे। अब वह और हत्या नहीं बर्दाश्त कर सकती थी। वह अब इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं चाहती कि कुछ देर के लिये किसी गिरजाघर और पादरी के पास पहुँच जाय, जिससे उसकी आत्मा ईश्वर में विभोर होकर पवित्र हो जाय और फिर वह शांति से स्वयं ही मर जाय।

सेंट व्रेन और उसके साथी ने तुरन्त कुछ आदमी एकत्र करके एक दल तैयार किया। वे घोड़ों पर सवार होकर बक स्केल्स के घर पहुँचे और उस औरत के कथनानुसार, उन्होंने अस्तबल के पीछे, बाड़े के पास ज़मीन खोदकर चारों मरे व्यक्तियों की लाशें निकालीं। उन्होंने स्केल्स को ताओस जाने वाली सड़क पर पकड़ा। वह अपनी पत्नी की तलाश में ताओस गया था और वहीं से लौट रहा था। वे उसे मोरा ले आये, लेकिन स्वयं व्रेन कोई मजिस्ट्रेट लिवा आने ताओस चला गया।

मोरा में कोई हवालात नहीं थी। इसलिये स्केल्स को एक खाली अस्तबल में पहरे के अन्दर रखा गया। शीघ्र ही अस्तबल के पास एक भीड़ एकत्र हो गयी। लोग वहां क़ैदी की रोमांचकारी धमकियां सुनने आते थे, जो वह अपने पत्नी के प्रति चिल्ला-चिल्लाकर कहता था। मैगडलेना पादरी के घर में रखी गयी, जहां वह एक कोने में चटाई पर पड़ी थी और फ़ादर लातूर से प्रार्थना कर रही थी कि वे उसे सांता फ़े ले चलें,

जिससे उसका पति उसे न पा सके। यद्यपि स्केल्स बाँध कर रखा गया था, बिशप उसकी पत्नी की सुरक्षा के सम्बन्ध में बहुत चिन्तित थे। वे तथा अमेरिकन लेख्य-प्रमाणक, जिसके पास एक रिवाल्वर के ढंग का पिस्तोल था, रात भर हॉल में बैठे रहे और उस पर पहरा देते रहे। प्रातःकाल मजिस्ट्रेट अपने दल के साथ ताग्रोस से आ गये। लेख्य-प्रमाणक ने उन्हें मामले के सभी तथ्यों को चौपाल में बैठकर सुनाया, जिससे सभी लोग सुन सकें। बिशप ने पूछा कि क्या मैगडलेना के रहने के लिए ताग्रोस में कोई स्थान मिल सकता है, क्योंकि यहाँ इस भयभीत दशा में वह नहीं रह सकती।

मृग-चर्म के बने शिकारी कपड़े पहने हुए एक आदमी भीड़ में से बाहर निकला और उसने मैगडलेना को देखने की इच्छा प्रकट की। फ़ादर लातूर उसे कमरे में ले गये, जहाँ वह चटाई पर लेटी हुई थी। अजनबी अपना हैट उतारते हुए उसके पास तक गया। झुककर उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। यद्यपि यह स्पष्ट था कि वह अमेरिकन था, उसने स्थानीय स्पेनिश भाषा में बात आरम्भ की।

"मैगडलेना, तुम मुझे पहचान रही हो ?"

उसने दृष्टि उठाकर अजनबी की ओर इस प्रकार देखा, जैसे कोई अंधेरे कुयें में से देखता हो; उसकी भयभीत एवं मलीन दृष्टि में ज्योति की चमक आयी। उसने दोनों हाथों से उसके शिकारी कपड़े के छोर पकड़ लिये।

"क्रिस्टोबाल !" उसने रोते हुए कहा। "अरे, क्रिस्टोबाल तुम हो ?"

"मैं तुम्हें अपने घर ले चलूँगा, मैगडलेना; और तुम मेरी पत्नी के साथ रहोगी। तुम मेरे घर में तो नहीं डरोगी ?"

"नहीं, नहीं क्रिस्टोबाल, मैं तुम्हारे साथ नहीं डर सकती। मैं कोई बुरी औरत नहीं हूँ।"

वह उसका सिर सहलाने लगा । "मैगडलेना, तुम बड़ी अच्छी लड़की हो; तुम सदा से ही अच्छी लड़की थीं । अब सब ठीक हो जायगा । तुम सारी बातें मेरे ऊपर छोड़ दो ।"

फिर उसने बिशप से कहा, "बिशप महोदय, इसे मेरे साथ जाने दीजिये । मैं ताओस के पास ही रहता हूं । मेरी पत्नी एक स्थानीय औरत है, और वह इसके साथ अच्छा व्यवहार करेगी । वह नराधम यदि जेल भी तोड़ दे, तो भी मेरे घर के नज़दीक नहीं आयेगा । वह मुझे जानता है । मेरा नाम कार्सन है ।"

फ़ादर लातूर इस स्काउट से बहुत दिनों से मिलने के इच्छुक थे । उनका अनुमान था कि वह बड़ा लम्बा-चौड़ा, तगड़ा तथा रोबीला व्यक्ति होगा । लेकिन कार्सन उतना भी लम्बा नहीं था, जितना बिशप; स्वयं वह दुबले-पतले शरीर का था, व्यवहार में बड़ा नम्र तथा उसके अंग्रेजी भाषा बोलने का ढंग दक्षिणी अमेरिकनों जैसा कुछ हकला कर बोलने का था । उसका चेहरा चिन्ताशील होने के साथ-ही-साथ फुर्तीला भी था । चिन्ता के कारण उसकी नीली आँखों के बीच माथे पर स्थायी बल पड़ गया था । उसकी मूँछों से ढँके हुए उसके मुँह में एक विशेष प्रकार की कोमलता थी । होठ उभड़े हुए तथा पतले थे । उसके चेहरे में, जो मननशील एवं कुछ उदास सा था, एक विचित्र आत्म-विस्मृति थी, बेखुदी थी, जो उसकी कोमलता एवं दयालुता को परिचायक थी । उसे देखते ही बिशप के मन में आनन्द का संचार हुआ । उसे इस प्रकार मृगचर्म के कपड़े पहने हुए खड़े देखकर उसमें ऐसे आदर्शों, विश्वासों एवं सिद्धांतों के होने की अनुभूति होती थी, जिन्हें शब्दों द्वारा व्यक्त करना कठिन है, परन्तु जिनका अनुभव उस समय सद्यः ही हो जाता है, जब दो ऐसे व्यक्ति अकस्मात् ही मिल जाते हैं, जो लोग भी उन्हीं आदर्शों एवं सिद्धांतों के होते हैं । बिशप ने स्काउट का हाथ पकड़ लिया । "मैं बहुत दिनों से किट कार्सन से मिलने का

इच्छुक रहा हूँ," उन्होंने कहा, "यहाँ तक कि न्यू मेक्सिको आने के पहले से ही। मैं यह आशा लगाये था कि तुम मुझसे मिलने सांता फ़े आओगे।"

किट कार्सन मुस्करा पड़ा। "मैं लज्जित हूँ, महाशय, परन्तु मुझे इस बात का डर हमेशा बना रहता है कि मैं निराश न हो जाऊँ। लेकिन मेरे विचार से अब सब ठीक हो जायगा।"

यहीं से दोनों के बीच एक लम्बी मित्रता का श्रीगणेश हुआ।

कार्सन के घर की वापसी यात्रा में मैगडलेना फ़ादर वेलेंट के संरक्षण में चली तथा बिशप और स्काउट एक साथ घोड़े पर बैठे। कार्सन ने बताया कि वह केवल औपचारिकता के नाते कैथोलिक बन गया था, जैसा कि सभी अमेरिकन किसी मेक्सिकन लड़की से विवाह करने पर साधारणतया करते हैं। उसकी पत्नी एक बड़ी अच्छी तथा धार्मिक औरत थी; परन्तु कैलिफ़ोर्निया की विगत यात्रा के पहले तक उसका यह ख्याल था कि धर्म-कर्म केवल औरतों के लिये ही है। कैलिफ़ोर्निया में वह बीमार पड़ गया और वहाँ के एक मिशन में पादरियों ने उसकी बड़ी सेवा-शुश्रूषा की। "तब से मेरी धारणा बदलने लगी और मैंने सोचा कि किसी दिन मैं सच्चे रूप में कैथोलिक बन जाऊँगा। बचपन में मैं ऐसे वातावरण में पला, कि मेरी यह धारणा बन गयी कि पादरी लोग बड़े बदमाश होते हैं और गिरजाघर की भिक्षुणियाँ बुरी औरतें होती हैं। ऐसी ही बात लोग मिसूरी में करते हैं। यहाँ के बहुत से पादरी अपने कर्मों द्वारा इन बातों की सत्यता को प्रमाणित भी करते हैं। ताओस का हमारा बूढ़ा पादरी मार्टिनेज़ एक दुष्ट व्यक्ति है। यदि पादरियों में भी कोई दुष्ट हो सकता है, तो वह अवश्य दुष्ट है। यहाँ के आस-पास के लगभग प्रत्येक गाँव में उसके बच्चे, नाती-पोते हैं। और अरोयो होंडो का पादरी लुसेरो पक्का कंजूस है, वह

किसी ग़रीब आदमी को क्रिश्चियन ढंग की अन्त्येष्टि के शुल्क में उससे उसका सब कुछ छीन लेता है।"

बिशप ने वहाँ की जनता की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में किट कार्सन से विस्तार में बातें कीं। उन्हें उसके निर्णय एवं मत पर बड़ा विश्वास था। दोनों व्यक्तियों की लगभग एक ही अवस्था थी, यही चालीस से कुछ ऊपर; लम्बे अनुभव ने दोनों को स्थिर एवं सूक्ष्म बुद्धिवाला बना दिया था। कार्सन ने विश्व-विख्यात अनुसंधानकर्ताओं के पथ-प्रदर्शक का काम किया था, परन्तु आज भी वह लगभग उतना ही गरीब था, जितना उन दिनों, जब वह ऊदबिलाव फँसाने का काम करता था। वह अपनी पत्नी के साथ एक कच्चे मकान में रहता था। सांता फ़े तथा प्रशांत महासागर के तट के बीच के इस विशाल रेगिस्तानी एवं पर्वतीय प्रदेश का न तो कोई मानचित्र बना था और न उसमें गमनागमन के रास्ते आदि निर्दिष्ट हुए थे; उसका सबसे अधिक विश्वस्त मानचित्र किट कार्सन के मस्तिष्क में था। मिसूरी का यह निवासी जिसकी दृष्टि किसी खुले प्रदेश के चित्र तथा मानव चेहरे को पढ़ने एवं समझने में अत्यन्त तीव्र थी, लिख-पढ़ नहीं सकता था। उस समय मुश्किल से वह अपना नाम लिख सकता था। फिर भी उसे देखने से स्पष्ट हो जाता था कि उसमें एक तीव्र एवं सूक्ष्म बुद्धि है। यह तो संयोग की बात थी, कि वह निरक्षर रह गया, अन्यथा उसका ज्ञान किताबी ज्ञान से आगे बढ़ गया था, वह ऐसी जगह पहुँच गया था, जहाँ छपाई का प्रेस नहीं पहुँच सकता था। बचपन की कठिनाइयों के बावजूद, जब उसने चौदह वर्ष की अवस्था से लेकर बीस वर्ष की अवस्था तक बावर्ची या साईस का काम करके तथा नृशंस एवं भयानक डाकुओं की नौकरी करके एन-केन-प्रकारेण अपना जीवन-निर्वाह किया था, उसने आत्म-सम्मान की एक विशुद्ध भावना तथा कृपालु हृदय बनाये रखा। बेचारी मैगडलेना के सम्बन्ध में बिशप से बात करते समय उसने दुःखी

होकर कहा—"मैं ताओस में उससे बहुधा ही मिलता था; तब वह बड़ी सुन्दर लड़की थी। कितने दुःख की बात है कि अब वह ऐसी हो गयी है ?"

पतित हत्यारे बक स्केल्स पर मुक़दमा चला और थोड़े दिन की सुनवाई के पश्चात् उसे फांसी दे दी गयी। अप्रैल के आरम्भ में बिशप सांता फ़े से घोड़े पर सवार होकर सेंट लूई पहुँच गये। वहाँ से उन्हें प्राविंशियल कौंसिल की सभा में सम्मिलित होने बाल्टीमोर जाना था। जब वे सितम्बर मास में बाल्टीमोर से लौटे, तो वे अपने साथ पाँच साहसी भिक्षुणियाँ, जो लोरेटो में 'सिस्टर' थीं, लाये, जिनकी सहायता से वे अपढ़ नगर सांता फ़े में लड़कियों के लिये एक विद्यालय स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने तुरन्त मैगडलेना को बुलवाया और उसे 'सिस्टरों' की सेवा में लगा दिया। वह सिस्टरों के घर तथा रसोईघर की प्रबंधक बन गयी। वह भिक्षुणियों के प्रति बड़ी श्रद्धालु थी तथा 'चर्च' की इस नौकरी में वह इतनी सुखी थी कि जब बिशप स्कूल जाते थे, तो वे पीछे से, तरकारी वाले बाग के रास्ते से प्रवेश करते थे, जिससे वे उसके शान्त एवं सुन्दर चेहरे को देख सकें। वह अब पुनः वैसी ही सुन्दर हो गयी थी, जैसी कार्सन के कथनानुसार वह बचपन में थी। उसके अत्यन्त भयंकर एवं कष्टपूर्ण यौवन का प्रभाव जब समाप्त हो गया, तो अब वह पुनः ईश्वर के घर में रहकर, कली की तरह खिलने लगी थी।

अध्याय ३

अकोमा में सार्वजनिक पूजा (मास)

१

लकड़ी का तोता

सांता फ़े-निवास के प्रथम वर्ष में बिशप वास्तव में केवल चार महीने ही अपने इलाक़े में रहे। छः महीने तो बाल्टीमोर में हुई कौंसिल की मीटिङ्ग में ही, जिसमें उपस्थित रहने के लिये उन्हें बुलाया गया था, बीत गये। वे सांता फ़े की सड़क से, घोड़े पर लगभग एक हजार मील की यात्रा करके, सेंट लूई पहुंचे; वहां से स्टीम-बोट द्वारा पिट्सबर्ग, जहां से पर्वतों को पार करके कम्बरलैण्ड पहुंचे और वहां से नयी रेल लाइन द्वारा वाशिङ्गटन पहुंचे। वापसी यात्रा में और भी समय लगा, क्योंकि उनके साथ पांच भिक्षुणियां भी थीं, जो संत मेरी नामक विद्यालय की स्थापना के लिए आयी थीं। सितम्बर मास के अन्त में वे सांता फ़े पहुंचे।

अब तक बिशप लातूर मुख्यतः ऐसे ही कामों में लगे थे, जिनके कारण उन्हें अपने विकारेट से दूर ही रहना पड़ा था। उनका विशाल इलाक़ा अब भी उनके लिये कल्पना से परे एक रहस्य ही था। वे उसमें घूमने के लिये, अपनी जनता को जानने के लिये उत्सुक थे। वे कुछ दिनों के लिये

निर्माण एवं स्थापना आदि कार्यों की चिन्ता से मुक्त होकर पश्चिम की ओर दूरस्थ एवं सबसे पृथक् रेड इण्डियन मिशनों में जाना चाहते थे, जिनमें सैंटो डोमिंगो, जो घोड़ों की नस्लों के लिये विख्यात था, इज़लेटा, जिसमें खड़िया मिट्टी की बहुतायत थी, विशाल चारागाहों वाला प्रदेश लगूना, और अन्त में बादलों से सदा ही आच्छादित अकोमा मुख्य थे।

अक्टूबर मास के सुहाने मौसम में विशप अपने कम्बल तथा काफ़ी पीने के बर्तन आदि साथ लेकर जैसिंटो नामक एक नवयुवक रेड इण्डियन के साथ पश्चिम प्रदेश स्थित रेड इण्डियन मिशनों के लिये रवाना हो गये। जैसिंटो पेकोस नामक रेड इण्डियनों की बस्ती का रहने वाला था और विशप ने उसे पथ-प्रदर्शन के लिये नौकर रखा था। उन्होंने अलबुकर्क में हँसमुख तथा लोकप्रिय पादरी गैलेगोस के साथ एक रात तथा एक दिन बिताया। सांता फ़े के बाद, अलबुकर्क का पादरी-युक्त गिरजाघर उनके इलाक़े का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण गिरजाघर था। पादरी एक प्रभावपूर्ण मेक्सिकन परिवार का था, और वह तथा वहाँ के सम्पन्न कृषक से मिलकर गिरजाघर को अपनी रुचि के अनुसार परिहासपूर्ण ढंग से चलते थे। यद्यपि फ़ादर गैलेगोस विशप से अवस्था में दस वर्ष बड़ा था, वह लगातार पाँच-पाँच रात तक 'फ़ैंडैंगो' (एक प्रकार का स्पेनिश नृत्य) नामक नृत्य में भाग लेता था और ऐसा लगता था, जैसे नाचने से उसका मन ही नहीं भरता। अमेरिकन बस्ती में उसके बहुत से मित्र थे, और जब वह मेक्सिकनों के साथ नाचने से खाली होता था, तो इन अमेरिकन मित्रों के साथ 'पोकर' खेलता था, उनके साथ शिकार खेलने जाता था। उसकी आलमारी अल पासो द नोर्ते की अंगूरी शराबों, ताओस की ह्विस्की तथा बर्नालिलो की अंगूरी ब्रांडी से भरी रहती थी। वह सच्चे अर्थ में सत्कारी व्यक्ति था, और हारे हुए जुआड़ियों तथा नशे के इच्छुक सिपाहियों का वह सदा ही स्वागत करता था। पादरी को एक धनवान् मेक्सिकन विधवा स्त्री बहुत चाहती

थी, जो उसके द्वारा दी जाने वाली दावतों में गृहिणी का काम करती थी, उसके लिये नौकर नियुक्त करती थी, पूजावेदी के लिये गोटे तथा पादरी की मेज़ के लिये मेज़पोश तैयार करती थी। प्रत्येक रविवार को उसकी गाड़ी (अलबुक़र्क में यही एक बन्द गाड़ी थी) गिरजाघर के अहाते में, आराधना के बाद पादरी की प्रतीक्षा करती खड़ी रहती थी, और पादरी साहब अपने पादरियों के कपड़े बदलकर, गाड़ी में सवार होकर रात्रि के भोजन के लिये उस महिला के घर रवाना हो जाते थे।

बिशप तथा फ़ादर वेलेंट ने फ़ादर गैलेगोस के मामले की पूरी तरह से जाँच की थी और उन्होंने क्रिसमस से पहले ही यहाँ की बदनामी की सभी बातों का अन्त कर देने का निश्चय कर लिया था। परन्तु फ़ादर लातूर ने यहाँ आने पर किसी बात पर कोई आश्चर्य या अप्रसन्नता नहीं प्रकट की, और पादरी गैलेगोस बड़ा ही सहृदय, शिष्ट एवं नम्र बना रहा। जब बिशप ने अंततोगत्वा इस बात पर थोड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि उनके आने पर ऐसा कोई समारोह नहीं आयोजित किया गया है, जिसमें वे लोगों को पूर्ण रूपेण ईसाई बनने का प्रमाण प्रदान करते (इस प्रथा को ईसाई धर्म में 'कन्फर्मेशन' कहते हैं), तो पादरी ने उन्हें यह कहकर समझा दिया कि उसका नियम बच्चों की बपतिस्मा (दीक्षा) के समय ही 'कन्फर्म' कर देने (पूर्ण रूपेण ईसाई बना देने) का रहा है।

"हमारे क्रिश्चियन सम्प्रदाय में इस प्रकार की बात करने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। यह तो हम जानते ही हैं कि बढ़ने पर उन्हें धार्मिक शिक्षा मिलेगी ही; इसलिये हम उन्हें आरम्भ में ही अच्छे कैथोलिक बना देते हैं। इसमें बुराई क्या है?"

पादरी यह सोच कर चिन्तित हो रहा था कि कहीं बिशप अपनी मिशन-यात्रा पर उसे भी साथ चलने को न कह दें। उसे अल्प भोजन पर रहने तथा चट्टानों पर सोने में कष्ट होता था। अतः यद्यपि वह कुछ दिन

पहले ही रोज़ रात को नाचता था, फिर भी जब बिशप आये, तो उसने अपने एक पाँव को रेड इण्डियनों द्वारा पहने जाने वाले एक विशेष प्रकार के चमड़े के जूते में कस कर बाँधे हुए उनका स्वागत किया और यह बहाना किया कि उस पर गठिया रोग का भयानक आक्रमण हुआ है। यह पूछने पर कि उसने अकोमा में पिछली बार 'मास' (विशेष आराधना) का आयोजन कब किया था, उसने कोई सीधा उत्तर नहीं दिया। उसने यह बतलाया कि उसका नियम वहाँ 'पैशन वीक' (ईस्टर त्यौहार से पूर्व पड़ने वाले सप्ताह) में जाने का था; परन्तु अकोमा के रेड इण्डियनों का सुधार नहीं हुआ था और वे हृदय से अधार्मिक एवं नास्तिक ही रह गये थे, और वे नहीं चाहते थे कि उन्हें 'मास' आदि का बखेड़ा उठाना पड़े। पिछली बार जब वह वहाँ गया था, तो वह गिरजाघर में प्रवेश ही नहीं कर सका। रेड इण्डियनों ने यह बहाना किया कि उनके पास उसकी चाबी ही नहीं है, वह तो गवर्नर के पास है और वह सेबोलेटा पर्वतों के अंचल में कहीं 'रेड इण्डियनों के किसी काम से' गया हुआ है।

बिशप नहीं चाहते थे कि पादरी गैलेगोस भी उनकी यात्रा में उनके साथ रहें; अतः इस बात से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि उन्हें उसे अपने साथ ले चलने से इनकार करने का अप्रिय कार्य नहीं करना पड़ा और वे अलबुक़र्क से औपचारिक बिदाई के बाद रवाना हो गये। फिर भी वे सोच रहे थे कि गैलेगोस भले ही अच्छा पादरी न हो, उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार का आकर्षण अवश्य है। उसे पादरी के पद पर बनाये रखना तो असम्भव था; वह इतना आत्म-तुष्ट एवं लोकप्रिय था कि उसके लिए अपनी आदतें बदलना असम्भव था और निश्चय ही वह अपना चेहरा तो नहीं बदल सकता। वह बिलकुल पेशेवर जुआड़ियों जैसा तो नहीं लगता था, फिर भी उसके चेहरे में एक ऐसी अबाधता एवं चपलता थी, जिससे इस बात का संकेत मिलता था कि उसकी रहन-सहन कुछ रहस्यमय अवश्य है।

इस परिस्थिति में केवल एक ही रास्ता था कि उस व्यक्ति को पादरी का कोई भी कार्य करने से सद्यः रोक दिया जाय और स्थानीय छोटे-छोटे पादरियों को आदेश दे दिया जाय कि वे सचेत हो जांय।

फ़ादर वेलेंट ने विशप से कहा था कि वे किसी न किसी प्रकार एक रात के लिये इज़्लेता में अवश्य ठहरें; क्योंकि वे वहाँ के पादरी जेसस द बाका को, जो श्वेत बालों वाला वृद्ध एवं लगभग अंधा व्यक्ति है तथा जो इज़्लेता में बहुत वर्षों से रह रहा है, और वहाँ के रेड इण्डियनों के विश्वास एवं श्रद्धा का पात्र बन गया है, अवश्य पसन्द करेंगे।

फ़ादर लातूर जब इज़्लेता की इस बस्ती के समीप पहुँचे, तो उसे श्वेत मिट्टी वाले एक निचले मैदान के उस पार चमकता हुआ देख कर उनका मन प्रसन्न हो गया। वह एक छोटा-सा सुन्दर नगर ही था, जिसमें सफ़ेद रंग के छोटे-छोटे सटे हुए मकान बने थे तथा एक श्वेत ही रंग का गिरजाघर भी था। उसकी सड़कों एवं मार्गों पर बबूल जाति के एक कंटीले वृक्ष लगे हुए थे, जिनकी पत्तियां गाढ़ी नीली आभा लिये हुए हरी थीं। पत्तियों का रंग बहुत कुछ वैसा था, जैसा खिड़कियों पर लगाये जाने वाले काग़ज़ के पर्दे का पुराने होने पर हो जाता है। यह वृक्ष उनके मन में सदा ही सुखद स्मृतियां जगा देता था; इससे उन्हें दक्षिणी फ्रांस के उस बगीचे का स्मरण हो आता था, जहाँ वे अपने छोटे चचेरे भाइयों एवं बहिनों से मिलने जाया करते थे। ज्योंही वे गिरजाघर के समीप पहुँचे, वहाँ का बुड्ढा पादरी उनसे मिलने बाहर निकल आया और अभिवादन के पश्चात् वह अपने एक हाथ से अपनी कमजोर आँखों को सूर्य की किरणों से बचाते हुए, फ़ादर लातूर को देखता ही रह गया।

"तो क्या यही मेरे विशप हैं? इतनी कम अवस्था के?" उसने आश्चर्य से कहा।

वे गिरजा के पीछे अहाते में लगे बगीचे के रास्ते से अन्दर गये। अहाता नागफनी के पौधों से भरा हुआ था, उनमें सभी प्रकार के और विशाल पौधे थे मालूम होता है कि पादरी को वे बहुत पसंद थे, इन्हीं के बीच किसी वृक्ष की लचीली टहनियों से बने हुए पिजड़े टंगे थे, जिनमें तोते फुदक रहे थे। नीचे, पगडंडियों पर भी तोते फुदक रहे थे। इनके एक पर काट दिये गये थे, जिससे वे उड़ न सकें। फ़ादर जेसस ने बताया कि वहाँ के रेड इण्डियन लोग विशेष अवसरों पर पहने जाने वाली अपनी पोशकों को सजाने के लिये इन परों को बड़ी मूल्यवान् वस्तु समझते थे, और उसने बहुत पहले ही यह समझ लिया था कि वह ये चिड़ियाँ पाल कर यहाँ के निवासियों को प्रसन्न कर सकता था।

पादरी का मकान भी इज़लेता के अन्य मकानों की भाँति भीतर और बाहर दोनों ही सफ़ेद पुता हुआ था और वह लगभग उतना ही खुला हुआ था, जितना किसी रेड इण्डियन का मकान। बूढ़ा पादरी गरीब था और वह इतना सीधा था कि बस्ती के लोगों से किसी कर आदि की माँग नहीं कर सकता था। एक रेड इण्डियन लड़की उसके लिये सोयाबीन, दलिया आदि पका देती थी; इससे अधिक वह कुछ खाता भी नहीं था। उसने बतलाया कि लड़की बड़ी चतुर थी तथा उसका भोजन बड़ी सफ़ाई से पकाती थी। बिशप के यह कहने पर कि बस्ती की सभी वस्तुयें, यहाँ तक कि सड़कें भी, बड़ी साफ़ दीखती थीं, पादरी ने उन्हें बताया, कि इज़लेता के समीप किसी सफ़ेद खनिज पदार्थ की कोई पहाड़ी थी। रेड इण्डियन इसी पदार्थ को खोद ले आते थे और उसे मकानों की सफ़ेदी के काम में लाते थे। वे ऐसा अनादि काल से करते आ रहे हैं और गाँव अपनी सफ़ेदी के लिये सदा से ही प्रसिद्ध है। फ़ादर जेसस से थोड़ी बात करने पर ही बिशप को ज्ञात हो गया कि वे बच्चों की तरह भोले थे तथा बहुत ही अंध-विश्वासी। पर सज्जनता उनमें कूट-कूट कर भरी थी। उनकी दाहिनी आँख में फूली

पड़ गई थी और वे अपनी गरदन एक ओर थोड़ा घुमाये रहते थे, मानो वे उस ओर कुछ देखने का प्रयास कर रहे हों। उनकी सभी गति-विधि बायीं ओर को होती थी, मानो वे अपनी राह की किसी रुकावट से बचकर चलने का प्रयास कर रहे हों।

तोतों से भरे बाग की राह मकान में प्रवेश करने पर फ़ादर लातूर को यह देखकर बड़ी हँसी आ गयी कि उनके साधारण एवं छोटे से हॉल की सजावट की वस्तु मात्र एक लकड़ी का तोता था, जो छत की बल्ली से लटके हुये एक छल्लेदार अड्डे पर बैठाया हुआ था। उधर फ़ादर जेसस अपनी रेड इण्डियन नौकरानी को रसोईघर में कुछ आदेश दे रहे थे और इधर बिशप इस तोते को अड्डे पर से उतार कर बड़े ध्यान से देखने लगे। वह लकड़ी के एक ही टुकड़े से बना हुआ था; वह आकार में ठीक उतना ही बड़ा था, जितना कोई जीवित तोता, उसका शरीर और पूँछ बिलकुल सीधी और सिर का भाग एक ओर तनिक झुका हुआ। उसके डैने, पूँछ तथा गर्दन के पर लकड़ी पर खुदाई करके केवल सांकेतिक रूप में ही दिखाये गये थे और उन पर हलका रंग चढ़ाया हुआ था। यह देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह बड़ा हलका है। उसकी मखमली चिकनाहट तथा रंग बहुत पुरानी लकड़ी की तरह था। यद्यपि उसमें नक्क़ाशी नाम मात्र को ही थी और वह केवल गढ़ कर ही तोते के आकार का बना दिया गया था, तथापि वह बड़ा ही सजीव था, मानों वह किसी सच्चे तोते की अनुकृति ही हो।

पादरी बिशप को हाथ में चिड़िया लिये देखकर मुस्करा पड़ा।

"तो आपने मेरी बहुमूल्य वस्तु पा ही ली। प्रभुवर, गाँव की वह कदाचित् सबसे पुरानी वस्तु है—वह इस गाँव से भी पुरानी है।"

फ़ादर जेसस ने बताया कि बस्ती के रेड इण्डियनों के लिये तोता सदा से ही एक अद्भुत एवं आकर्षण की वस्तु रही है। पुरातन काल में

उसके पर रत्नों एवं मणियों से भी अधिक मूल्यवान् समझे जाते थे। स्पेनिश लोगों के यहाँ आकर बसने से भी पहले उत्तरी न्यू मेक्सिको के ग्रामीण लोग अन्वेषकों को भयानक एवं कठिन व्यापारी मार्गों से उष्णकटिबंधीय मेक्सिको में भेजते थे, जो वहाँ से तोते के पर अपने शरीरों पर ढोकर ले आते थे। इनको खरीदने के लिये, व्यापारी लोग सांता फ़े के समीप वाली सेरिल्लोस पहाड़ी से एकत्र मणियों को थैलों में भर कर ले जाते थे। यदि कभी कोई व्यापारी वहाँ से कोई जीता तोता ले आने में सफल होता (ऐसा कदाचित ही कभी होता था), तो उसकी (तोते की) देवता की तरह पूजा होती थी और उसकी मृत्यु से सारा गाँव शोक-सागर में डूब जाता था। यहाँ तक कि उसकी हड्डियों को पवित्र वस्तु मानकर सुरक्षित रखा जाता था। इज़लेता में तोते की एक बहुत पुरानी खोपड़ी रखी हुई थी।

पादरी ने अपना लकड़ी का तोता एक बूढ़े व्यक्ति से खरीदा था, जो उसका कर्ज़दार था तथा उसके कोई संतान नहीं थी और वह उस समय मृत्युशय्या पर था। पादरी की दृष्टि इस चिड़िया पर बहुत वर्षों से थी। उस बूढ़े रेड इण्डियन ने उससे बताया था कि उसके पूर्वज पीढ़ियों के लोग पहले इसे अपने साथ मातृभूमि मेक्सिको से यहाँ ले आये थे। पादरी ने उसके इस कथन को विश्वास कर लिया था कि वह एक ऐसे वास्तविक एवं दुर्लभ तोते की अनुकृति थी, जो पुरातन काल में उष्णकटिबन्धीय प्रदेश से लम्बी यात्रा के बाद जीवित ही लाये जाते थे।

फ़ादर जेसस ने लगूना एवं अकोमा के रेड इण्डियनों के विषय में अच्छी रिपोर्ट दी। उसने बताया कि वह कुछ वर्ष पहले तक सार्वजनिक उपासना कराने इन बस्तियों में जाया करता था और वहाँ के रेड इण्डियन उसके बड़े अनुकूल रहते थे।

"अकोमा में" उसने बताया, "आप एक बड़ी ही पवित्र वस्तु देख

सकते हैं। वहाँ संत जोसेफ़ का एक चित्र है, जो बहुत काल पहिले स्पेन के किसी सम्राट द्वारा वहाँ के रेड इण्डियनों के पास भेजा गया था और उसने अनेक चमत्कार किये हैं। यदि कभी सूखा पड़ जाता है, तो अकोमा के लोग उस चित्र को अकोमिता स्थित अपने फार्मों पर ले जाते हैं और फिर अनिवार्यतः वर्षा होती है। सारे देश में सूखा भले ही पड़ जाय, परन्तु उनके यहाँ वर्षा अवश्य होती है, और उनके यहाँ फ़सल अवश्य अच्छी होती है, चाहे लगूना के रेड इण्डियनों की फ़सलें नष्ट ही हो जायें।"

२

जैसिंटो

फ़ादर लातूर अपने पथ-प्रदर्शक जैसिंटो के साथ प्रातःकाल बड़े तड़के ही इज़लेता तथा उसके पादरी से विदा हो गये और दिन भर अलबुक़र्क के पश्चिम, सूखे एवं रेतीले मैदान में घोड़ों पर चलते रहे। यह मैदान सूखे वृक्षों वाला मैदान था, जिसमें न तो कोई सदाबहार वाली झाड़ी और न अन्य कोई झाड़ी थी; कुछ सूखे तथा मृतप्राय नागफनी-पौधों की झुरमुट तथा कहीं-कहीं जंगली लौकी की लता थी। इनके अतिरिक्त वहाँ अन्य कुछ नहीं दिखलाई पड़ता था। उसमें भी यह लौकी ही ऐसी बनस्पति थी, जिसमें कुछ जान दीख पड़ती थी। यह एक ऐसी लता होती है, जो चारों ओर फैलती नहीं, अपितु उसकी सारी शाखाएं एकत्र होकर ऊपर चढ़ती हैं। उसकी लम्बी, नुकीली तथा तीर के आकार की पत्तियाँ, जिन पर सफ़ेद रङ्ग के चुभने वाले रोएं होते हैं, एक दूसरे से उलझी हुई ऊपर को ही जाती हैं। पत्तियों का यह कसा एवं उलझा हुआ ऊपर को जाने वाला गुच्छा देखने में ऐसा लगता है, जैसे भूरी-हरी छिपकलियों का एक विशाल दल एक साथ ही ऊपर बढ़ता जा रहा हो और डर कर अचानक रुक गया हो।

दोपहर होते-होते उन्हें एक आँधी का सामना करना पड़ा, जिसकी धूलि से सूर्य बिलकुल आच्छादित हो गया। जैसिंटो इस प्रदेश से भलीभाँति परिचित था, क्योंकि वह बहुधा ही लगूना में होने वाले धार्मिक नृत्यों को देखने के लिये इसी प्रदेश से होकर जाया करता था। इस समय वह अपना सिर नीचे किये हुए तथा मुँह पर एक बैगनी रङ्ग की रूमाल बाँधे घोड़े पर बैठा हुआ था। चूँकि वह एक ऐसे गाँव का रहने वाला था, जहाँ वृक्षों, बनस्पतियों एवं पानी आदि की कमी नहीं थी, वह इस मैदान को बहुत बुरा समझता था। ठीक दोपहर के समय वह घोड़े से उतर गया और कुछ लकड़ी के तिनके आदि चुनकर उसने बिशप की क़ाफ़ी बनाने के लिये आग जलायी। वे आग के दोनों ओर बैठ गये और धूल के झोंक उन पर अब भी आ रहे थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि जब वे पावरोटी खाने लगे, तो वह दाँत के नीचे किरकिरी लगने लगी।

गर्द से भरे आकाश में भगवान भुवन भास्कर अपना मुंह लाल किये क्षितिज के उस पार गये। यात्रियों ने मैदान में ही कहीं डेरा डाला और रात को अपने कम्बल ओढ़ कर सो गये। सारी रात ठंडी हवा बहती रही और वे सर्दी से काँपते रहे। फ़ादर लातूर इतनी ठंड खा गये कि सूर्योदय के बहुत पहले ही वे उठ गये। येन-केन-प्रकारेण प्रभात का आगमन हुआ; सुहावना एवं निरभ्र प्रभात, और वे तड़के ही वहाँ से रवाना हो गये।

उसी दिन लगभग तीसरे पहर दूर से ही जैसिंटो ने चमकते हुए पीत रङ्ग के विशाल बालुका-स्तूपों के बीच बसे हुए लगूना की बस्ती की ओर संकेत किया। समीप पहुँचने पर फ़ादर लातूर ने देखा कि ये बालुका-स्तूप बृहत् पाषाण-खंडों के रूप में परिवर्तित हो गये थे और वहाँ चिकने, कँकरीले पीत रङ्ग के चमकते हुए पहाड़ी टीलों की एक पंक्ति तैयार हो गयी थी। ये टीले लगभग वनस्पति-विहीन थे; कहीं-कहीं गाढ़े हरे रंग की छोटी-छोटी सदाबहार की कुछ झाड़ियाँ थी, जो चट्टान की दरारों से

उगी हुई थीं और बहुत ही पुरानी लगती थीं। टीलों की हरी पंक्ति के नीचे एक झील थी, जिसे नीले पानी से भरा हुआ एक पत्थर का बर्तन कहना अधिक उपयुक्त होगा। इसी झील या तालाब के नाम पर गाँव का नाम लगूना पड़ा था। (लगूना का अर्थ अंग्रेजी में तालाब होता है।)

इज़लेता के सज्जन पादरी ने लगूना के निवासियों को यह चेतावनी देने के लिये अपनी नौकरानी के भाई को पहले ही पैदल रवाना कर दिया था कि नये बड़े पादरी साहब वहाँ जा रहे हैं और वे बड़े भद्रपुरुष हैं तथा वे पैसा आदि नहीं लेते। अतः वे लोग उसी के अनुसार तैयार थे; गिरजाघर साफ़ किया हुआ था, उसके दरवाज़े, खिड़कियाँ आदि खुली हुई थीं। वह एक छोटा-सा श्वेत रङ्ग में पुता गिरजाघर था, जिसके ऊपरी भाग तथा वेदी के पास वायु, जल एवं विद्युत् के देवता तथा सूर्य एवं चन्द्रमा के चित्र बने हुए थे। ये चित्र गहरे लाल, नीले तथा गाढ़े हरे रङ्ग में रेखागणित के किसी चित्र की डिज़ाइन में एक दूसरे से सम्बद्ध थे, जिसे देखकर ऐसा लगता था कि गिरजा के ऊपरी भाग पर चित्रयुक्त पर्दा टंगा हुआ है। उसे देखकर फ़ादर लातूर को किसी ईरानी सरदार के तम्बू के अंदरूनी भाग की याद आ गयी, जिसे उन्होंने फ्रान्सीसी नगर में हुई किसी टेक्सटाइल (सूती वस्त्र) प्रदर्शनी में देखा था। वे यह नहीं जान सके कि यह चित्रकारी स्पेनिश मिशनरियों द्वारा की गयी थी या धर्म-परिवर्तित रेड-इण्डियनों द्वारा।

वहाँ के गवर्नर ने उन्हें बतलाया कि लोग प्रातःकाल 'मास' के लिये आवेंगे और बहुत से बच्चे दीक्षित होने को हैं। उन्होंने बिशप से कहा कि वे रात को गिरजा के कमरे में, जहाँ संस्कार आदि से सम्बन्धित कपड़े, बर्तन आदि रखे जाते हैं, विश्राम करें, परन्तु कमरे में सीलन थी और उसमें से एक प्रकार की गन्ध निकल रही थी, और फ़ादर लातूर ने

पहले ही यह सोच लिया था कि वे पहाड़ी टीले पर झाड़ी की छाँह में सोयेंगे।

जैसिंटो ने गाँव से कुछ जलाने की लकड़ी तथा कहीं से स्वच्छ जल प्राप्त किया और उन्होंने गाँव से उत्तर एक टीले पर एक सुरम्य स्थान में अपना डेरा डाला। सांध्य रवि जब अस्ताचल की ओर पहुँचे, तो उनकी तिरछी किरणों के प्रकाश में श्वेत गिरजाघर तथा गाँव के पीले रंग के कच्चे मकान समतल टीलों से ऊपर स्पष्ट उभर आये। उनके डेरे के पीछे, थोड़ी ही दूर, अनेक बड़े-बड़े समतल चट्टानी टीले थे। बिशप ने जैसिंटो से पूछा—क्या तुम इस समीपस्थ टीले का नाम जानते हो ?

"मैं किसी का नाम नहीं जानता," उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "हाँ, मैं रेड इण्डियनों द्वारा पुकारा जाने वाला नाम अवश्य जानता हूँ," उसने आगे बुदबुदाते हुए कहा, जैसे उसका सोचना वाणीमय हो गया हो।

"अच्छा, तो रेड इण्डियन नाम क्या है ?"

"लगूना के रेड इण्डियन इसे हिम-पक्षी पर्वत कहते हैं।" वह उसने कुछ अनिच्छा से कहा।

"यह तो बड़ा अच्छा है," बिशप ने विचारमग्न होकर कहा। "यह तो वास्तव में बड़ा अच्छा नाम है।"

"ओह, हम रेड इण्डियनों के भी तो अच्छे नाम होते हैं !" जैसिंटो ने होठ सिकोड़ते हुए शीघ्रता से उत्तर दिया और फिर जैसे उसने यह अनुभव किया कि उसे ऐसा नहीं कहना चाहिये था, इसलिये एक क्षण रुक कर बोला "लगूना के लोग इसे बड़ी अद्भुत बात समझते हैं कि इतना बड़ा पादरी, इतनी कम अवस्था का व्यक्ति हो। गवर्नर कहते हैं कि मैं उन्हें 'पादरी' कैसे पुकारूँ, जब वे मेरे बेटों से भी कम उम्र के हैं ?"

जेसिंटो की आवाज़ में एक गर्व की ध्वनि निकल रही थी, जिसे सुन कर बिशप बहुत प्रमुदित हुए। उन्होंने यह देखा, कि यदि कभी रेड इण्डियन लोग मधुर वाणी बोलते हैं, तो वह फिर कितनी मीठी हो सकती है। तनिक स्वर-परिवर्तन से ही व्यक्ति को अनुभव होने लगता कि उसे कितना बड़ा सम्मान-प्रदान किया गया।

"हृदय से मैं उतना युवा नहीं हूँ, जेसिंटो। तुम्हारी क्या अवस्था है ?"

"छब्बीस वर्ष।"

"तुम्हारे कोई लड़का है ?"

"एक। अभी वह शिशु है, थोड़े ही दिन पहले पैदा हुआ है।"

दोनों चुप हो गये। कदाचित् उनके विचारों के आदान-प्रदान का यही सामान्य तरीका था। बिशप टीन के प्याले में काफ़ी पीते हुए बैठे थे। काफ़ी का बर्तन आग के पास था। सूर्यास्त हो चुका था, पीले रंग के टीले अब भूरे लग रहे थे; गाँव में, रसोई घरों में जलती आग लाल प्रकाश फैला रही थी, जो खुली हुई खिड़कियों से दिखलाई पड़ रहा था, तथा देवदारु की लकड़ी के धुएं की गंध मन्द बयार में तैरती हुई आ रही थी। सारा पश्चिमी आकाश सुनहरे रंग का हो रहा था; कहीं-कहीं किसी बादल के छोर पर लाल रंग दीख रहा था। क्षितिज से बहुत ऊपर शुक्र तारा तुरन्त की जलायी हुई बत्ती की भाँति झिलमिला रहा था, और उसके पास ही एक और तारा था, जो स्थिर रूप से चमक रहा था और आकार में शुक्र से बहुत छोटा था।

जेसिंटो ने मक्के की भूसी की बनी अपनी सिगरेट के टुकड़े को फेंक दिया और फिर स्वयं ही कहने लगा।

"शुक्र तारा," उसने धीरे तथा अर्थपूर्ण ढंग से अंग्रेज़ी भाषा में कहा

और फिर स्पेनिश भाषा में बोलने लगा। "उसकी बगल में छोटे से तारे को देख रहे हैं न, पादरी साहब ? रेड इण्डियन उसे पथ प्रदर्शक कहते हैं।"

दोनों साथी अपने ही विचारों में डूबे बैठे रहे, रात बढ़ती जा रही, अँधेरी तारों भरी रात, जिसमें ऊँचे समतल चट्टानी मैदान आकाश की ओर अतिक्रमण करते हुए दीखते थे। बिशप ने जैसिंटो से उसके विचारों एवं विश्वासों के सम्बन्ध में कोई भी प्रश्न नहीं किया। वे ऐसा करना अनुचित समझते थे और जानते थे कि वह व्यर्थ भी है। ऐसा कोई तरीका नहीं था कि वे यूरोपीय सभ्यता सम्बन्धी अपने स्मृतियों तथा विचारों को इस रेड इण्डियन के मस्तिष्क में भर सकते, और वे यह मानने को बिलकुल तैयार थे कि जैसिंटो के पीछे एक लम्बी परम्परा, अनुभवों की एक कहानी थी, जिसे कोई भी भाषा उसे समझा नहीं सकती। बढ़ती रात के साथ ठंडक भी बढ़ने लगी। फ़ादर लातूर ने अपना जीर्ण ऊनी चोंगा पहन लिया और जैसिंटो ने कमर में बँधे अपने कम्बल को खोल कर सिर से ओढ़ लिया।

"असंख्य तारे," उसने निस्तब्धता भंग करते हुए कहा।

"तारों के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है, पादरी साहब ?"

"विद्वानों का मत है कि हमारे इस संसार की भाँति वे भी अलग अलग संसार हैं, जैसिंटो।"

बोलने के पहले रेड इण्डियन की सिगरेट का छोर एक बार चमका और फिर धुंधला पड़ गया। "मैं ऐसा नहीं सोचता," उसने उस व्यक्ति के ढंग से कहा, जिसने किसी प्रस्ताव पर पर्याप्त विचार करने के पश्चात् उसे अस्वीकार कर दिया हो। "मेरे विचार से वे हमारे नायक हैं—महान् आत्माएं।"

"कदाचित् वे यही हैं," बिशप ने ठंडी साँस लेते हुए कहा। "वे जो कुछ भी हों, परन्तु वे महान् अवश्य हैं। आओ, अब हम प्रभु का नाम लें और सो जाँय!"

जलती हुई आग के पास आमने-सामने घुटने टेकते हुए उन्होंने एक स्वर में प्रार्थना की और फिर अपने-अपने कम्बल ओढ़ कर लेट गये। सोने के पहले बिशप को यह सोच कर सन्तोष था कि वे अपने इस रेड इण्डियन युवक के साथ साहचर्य की भावना का अनुभव करने लगे थे। लोग इन रेड इण्डियन युवकों को 'लड़के' कदाचित् इसलिये कहते थे कि उनके शरीरों में स्फूर्ति एवं तारुण्य रहता ही था। हाँ, उनके व्यवहारों में, न तो अमेरिकन अर्थ में और न यूरोपियन अर्थ में ही, किसी प्रकार का लड़कपन था। जैसिटो को किसी भी प्रकार सरल, भोला या बुद्धू नहीं कहा जा सकता था; वह कभी घबराता तो था ही नहीं। ऐसा लगता था कि उसकी शिक्षा ने, वह चाहे जैसी भी रही हो, उसे किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिये तैयार कर दिया था। उसे बिशप के कमरे में भी उतना ही अच्छा लगता था, जितना अपने गाँव में—किसी एक स्थान से तो उसे कोई अपनत्व था ही नहीं। फ़ादर लातूर ने अनुभव किया कि उन्होंने काफ़ी हद तक अपने पथ-प्रदर्शक की मित्रता प्राप्त कर ली है परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि किस हद तक।

वास्तविकता यह थी कि जैसिटो को बिशप का लोगों से मिलने का ढंग पसन्द था। उसने देखा कि वे फ़ादर गैलेगोस से भलमनसाहत से मिले थे, फ़ादर जेसस से भी भलमनसाहत से मिले थे तथा रेड इण्डियनों के प्रति भी उनका अच्छा व्यवहार था। उसका अब तक का अनुभव यह था कि श्वेत लोग रेड इण्डियनों से बात करते समय हमेशा ही मुँह बना कर बात करते हैं। बनावटी चेहरे भी कई ढङ्ग के होते थे; उदाहरण के लिये फ़ादर वेलेंट का चेहरा बड़ा दयालु था; परन्तु वह बहुत प्रचण्ड हो जाता था।

बिशप के चेहरे में कोई भी परिवर्तन नहीं होता था। लगूना में वे सीधे खड़े हो गये और गवर्नर की ओर घूम कर बात करने लग गये और उनके चेहरे में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। जैसिंटो इसे असाधारण एवं अद्भुत समझता था!

३
पर्वत-खण्ड

दूसरे दिन बड़े सवेरे ही आराधना समाप्त करके फ़ादर लातूर तथा उनका पथ-प्रदर्शक वहाँ से रवाना हो गये और उन्होंने शीघ्र ही लगूना एवं अकोमा के बीच के निचले मैदानी प्रदेश को पार कर लिया। अपनी अब तक की सारी यात्राओं में बिशप ने ऐसा प्रदेश पहले कभी नहीं देखा था। लाल मिट्टी के इस समतल सागर में जगह-जगह ऊँचे एवं विशाल समतल पर्वत-खण्ड थे, जो बाह्य आकृति में नोकदार ऊँची मेहराब की बनावट के थे और विशाल गिरजाघरों जैसे लगते थे। वे अव्यवस्थित रूप से पास-पास सटे हुए नहीं थे, अपितु एक दूसरे से काफ़ी दूर थे तथा बीच में मैदान का अच्छा दृश्य मिलता था। ऐसा लगता था कि यह मैदान कभी एक विशाल नगर रहा होगा, जिसकी सभी छोटी-छोटी इमारतें कालान्तर में नष्ट हो गयीं तथा केवल बड़ी-बड़ी सार्वजनिक इमारते हीं, जो पहाड़ों की तरह थीं, खड़ी रह गयीं। मैदान की रेतीली मिट्टी में कहीं-कहीं सदाबहार की झाड़ियाँ थीं और कहीं-कहीं फूलों से युक्त एक अन्य झाड़ी थी, जिसका ज़ैतूनी रंग का पौधा आंदोलित सागर की भाँति बड़ी तेजी से बढ़ता है। वर्ष के इस मौसम में ये पौधे पीले तथा गेंदे के रंग की तरह केसरिया रंग के फूलों से लदे हुए थे।

समतल पर्वत-खण्डों वाला यह मैदान देखने में अत्यन्त प्राचीन एवं अपूर्ण लगता था, मानो सृष्टिकर्त्ता ने अपनी रचना के सभी साधनों को

एकत्र करने के बाद अचानक काम बंद कर दिया हो और वे सभी वस्तुओं को व्यवस्थित रूप में रखने तथा उन्हें पर्वतों, मैदानों एवं पठारों का रूप देने के पहले ही छोड़कर चले गये हों। वह प्रदेश अब भी समतल क्षेत्र के रूप में परिवर्तित होने की बाट जोह रहा था।

बिशप इसके बाद हमेशा ही अकोमा की अपनी इस प्रथम यात्रा को समतल पर्वत-खण्ड वाले प्रदेश से अपने प्रथम परिचय के रूप में स्मरण करते थे। एक बात जिसने उनका ध्यान तुरन्त आकर्षित किया, यह थी कि प्रत्येक पर्वत-खण्ड की बादल-खण्ड के रूप में एक अनुकृति थी, जैसे यह उसकी छाया हो, जो निश्चल रूप में उसके ऊपर लटक रही हो या उसके पीछे से धीरे-धीरे ऊपर आ गयी हो। वायुमण्डल चाहे कितना ही गरम या ठंडा क्यों न हो, ये बादल वहाँ हमेशा ही दीख पड़ते थे। कभी-कभी वे वाष्प के चबूतरों तथा परतों के रूप में दिखलाई पड़ते थे और कभी-कभी वे गुंबदाकार या विलक्षण आकृति के, एक दूसरे के ऊपर उठते हुये श्वेत बौद्ध-मंदिरों के अनेक गुंबदों के रूप में दीखते थे; मानो कोई प्राच्य नगर ठीक इन्हीं पर्वत-खण्डों के पीछे बसा हुआ है। इस शून्य विस्तृत मैदान में स्फटिक शिला के इन विशाल पर्वत-खण्डों की कल्पना, उनके साथी बादलों के बिना नहीं की जा सकती थी। जो ठीक उसी तरह उनके एक अंग थे, धुआँ धूपदानी का या फेन लहर का।

कंसास राज्य के विस्तृत मैदानों से होकर सांता फ़े की सड़क से जाते हुए फ़ादर लातूर ने आकाश को बनस्पति युक्त मैदान की अपेक्षा मरुस्थल के रूप में अधिक पाया। चमकते हुए शून्य नीले आकाश की एकरसता फ्रांसीसी आँखों के लिये अत्यन्त अरुचिकर थी। परन्तु पेकोस से पश्चिम, यह सब कुछ बदल गया; यहाँ आकाश में दिन भर बादल बनते और बिगड़ते रहते थे। चाहे वे काले, भयंकर एवं वर्षायुक्त हों या धुंधले, श्वेत रंग के निस्पंद एवं सारहीन बादल, वे नीचे की दुनिया को अत्यधिक

प्रभावित करते थे। इन बादलों की छाया पड़ने के कारण, मरुस्थल, पहाड़ों एवं पर्वत-खण्डों के रूप-रंग बराबर ही बदलते रहते थे। इस प्रकार लगातार बल-परिवर्तन के कारण तथा प्रकाश के चिर-परिवर्तनशील वितरण के प्रभाव से सारा प्रदेश ही आँखों के सामने प्रतिक्षण बदलता दीख पड़ता था।

फ़ादर लातूर इसी विचारधारा में बहे जा रहे थे कि जैसिंटो ने अचानक इस विचारधारा को तोड़ दिया। उसने जोर से कहा, "वह रहा अकोमा"। उसने अपना खच्चर रोक दिया।

बिशप की आँखों ने रेड इण्डियन युवक के उठे हुए हाथ का अनुसरण किया और उन्होंने दूर दो बड़े-बड़े समतल पर्वत-खण्ड देखे। वे लगभग वर्गाकार थे और इतनी दूर से एक-दूसरे के समीप दीख पड़ते थे, यद्यपि वास्तव में उनमें कई मीलों का अंतर था।

"वह दूर वाला है," उनका पथ-प्रदर्शक अब भी वैसे ही संकेत कर रहा था।

बिशप की दृष्टि उतनी तेज नहीं थी, जितनी जैसिंटो की, परन्तु जिस ऊँचे पठारी स्थान पर वे रुके खड़े हुए थे, वहाँ से दूर वाले पर्वत-खण्ड की ऊपरी भूरी सतह पर दृष्टि डालते हुए, उन्होंने उस पर एक भूरी बाह्य रेखा देखी—वर्गों से बना हुआ एक बड़ा सफ़ेद वर्ग। उनके पथ-प्रदर्शक ने बताया कि वही अकोमा की बस्ती है।

आगे बढ़ते हुए वे शीघ्र ही अलौकिक पर्वत-खण्ड के नीचे पहुँच गये और जैसिंटो ने उन्हें बताया कि इस पर भी कभी एक गाँव था, परन्तु शताब्दियों पहले उसकी सीढ़ियाँ, जो ऊपर चढ़ने के लिए एकमात्र साधन थीं, किसी भयंकर तूफान में नष्ट हो गयीं और उसके निवासी ऊपर ही भूख से तड़प-तड़प कर मर गये।

"परन्तु इस प्रकार के खुले पर्वत-खण्डों पर, सैकड़ों फुट ऊपर, जहाँ

मिट्टी या पानी कुछ भी नहीं, लोगों ने रहने की बात पहले सोची ही कैसे ?", बिशप ने उससे पूछा ।

जैसिंटो ने विरक्ति के भाव से कहा, "कोई जब मनुष्य का जंगली जानवर की भांति दिन-रात पीछा करे, तो वह सब कुछ कर सकता है। यहाँ पर उत्तर से 'नवाजों' के आक्रमण होते थे, दक्षिण से 'अपाचों' के आक्रमण होते थे; विवश होकर अकौमा निवासी सुरक्षा के लिये इन पर्वत-खण्डों पर भाग जाते थे।"

बिशप ने अनुमान लगाया कि कभी इस सारे मैदानी प्रदेश में मनुष्य का शिकार किया जाता था तथा बेचारे रेड इण्डियनों ने पीढ़ियों तक भय के ही वातावरण में पैदा होकर हत्या के ही शिकार होकर, अन्त में धरती से यह उड़ान भरे थे और इस पर्वत-खण्ड पर पीड़ित एवं त्रस्त प्राणियों की चिर आशा—त्राण—प्राप्त किये थे। वे शिकार करने तथा अपने खेत जोतने-बोने नीचे मैदान में उतरते थे, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर शरण के लिये एक स्थान तो रहता था। यदि 'नवाजों' का कोई दल अकोमा के मार्ग पर आक्रमण के लिये बढ़ता आ रहा हो, तो रेड इण्डियन अपने इस गुप्त आश्रय पर पहुँच जाते थे। चट्टान की टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियों पर मोरचा बना कर मुट्ठी भर आदमी सैकड़ों और हजारों आक्रामकों को पीछे ढकेल सकते थे। एक बार के अतिरिक्त, जब स्पेनियार्डों ने बन्दूक आदि से सुसज्जित सेना लेकर आक्रमण किया था, अकोमा के पर्वत-खण्ड पर कभी भी कोई शत्रु अधिकार नहीं कर सका। यह चट्टान किसी पहाड़ी दुर्ग से बहुत भिन्न था; अपेक्षाकृत अधिक एकान्त, अधिक दुर्भेद्य, अधिक भयप्रद तथा कल्पना में अधिक सुहावना। यह पर्वत-खण्ड मानव आवश्यकता का मूर्त-रूप था; अनुभूति मात्र से ही उसके लिये लालायित होना पड़ जाता था; प्रेम और मैत्री में वह सच्ची निष्ठा का आदर्श प्रतीक था। स्वयं ईसा मसीह ने जिस शिष्य को अपने गिरजाघर की चाबी दी थी, उसकी तुलना आदर्श के रूप

में इससे ही की थी। और 'ओल्ड टेस्टामेंट' (बाइबिल के प्रथम भाग) में जिन हिब्रुओं की चर्चा आयी है, और जो हमेशा ही कैद होकर विदेशों में भेजे जाते थे, वे अपने पर्वत-खण्ड को ईश्वर समझते थे; यही एक ऐसी वस्तु थी, जिसे उनके विजेता उनसे नहीं छीन सकते थे।

बिशप ने यह पहले ही देख लिया था कि रेड इण्डियनों के जीवन में एक विलक्षण वास्तविकता थी, जो कभी-कभी स्तब्ध एवं घबरा देने वाली हो जाती थी। अकोमा के निवासियों ने जिन्हें भी स्वभावतः अखिल मानवजाति की भाँति चिर काल से ही किसी स्थायी, टिकाऊ एवं अपरिवर्तनीय वस्तु की खोज थी, अपने इस आदर्श को स्थूल वास्तविकता में पाते थे। वे वास्तव में अपने पर्वत-खण्ड पर रहते थे, उसी पर पैदा होते थे और उसी पर मरते थे। बात यह कितनी सीधी सी थी कि वे उसी पर पैदा होते थे, रहते थे एवं मर जाते थे, परन्तु यह कि वे सचमुच ही ऐसा कर सकते थे, इसमें एक प्रकार की अत्युक्ति अवश्य थी।

उनके अकोमा पर्वत-खण्ड के पास पहुँचने के साथ ही उसके पीछे से, काले बादल उठने लगे, जैसे स्वच्छ आकाश में स्याही के धब्बे फैल रहे हों।

"वर्षा आयी," जैसिंटो ने कहा। "अच्छा है, वे आनन्द में रहेंगे।" उसने खच्चरों को पर्वत-खण्ड की तलहटी स्थित एक लकड़ी के छड़ों से बने एक बाड़े में छोड़ा, कम्बल आदि लिया और फादर लातूर को शीघ्रता से चट्टान की एक दरार के पास ले गया जहाँ खड़ी, ऊँची-नीची चट्टान से एक प्रकार की प्राकृतिक सीढ़ी बन गयी थी, जो ऊपर तक जाती थी। जहाँ कहीं ढाल खतरनाक थी, वहाँ चट्टान में हाथ से पकड़ने के लिये घूंसेबाजी के दस्तानों की तरह खड्डे बने हुए थे। यों तो पर्वत-खण्ड पूर्णतया वनस्पति-हीन था, परन्तु उसकी तलहटी में एक तेज गंध वाला पौधा उगा हुआ दिखाई पड़ता था, जिसके बड़े-बड़े श्वेत फूल कुमुदिनी की तरह थे। उसकी

गाढ़ी नीली-हरी पत्तियों से, जो बड़ी तथा खुरदरी थीं, फादर लातूर ने पहचान लिया कि यह पौधा महकने वाले धतूरे की जाति का है। इस पौधे के आकार तथा फैलाव को देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वे भड़कीले रेशम के बने हुए विशाल कृत्रिम पौधों की तरह लगते थे।

वे पहाड़ पर अभी चढ़ ही रहे थे कि ऊपर आकश में भयानक गर्जन के साथ कड़ाके की बिजली चमकी और मूसलधार वृष्टि होने लगी, जैसे बादलों ने उसी स्थान पर अपना सारा पानी उड़ेल दिया हो। सीढ़ियों की एक गहरी मोड़ पर ऊपर से लटकी हुई चट्टान के नीचे खड़े होकर वे वर्षा की धार को देखने लगे जो हवा के कारण ऐसी लगती थी, मानों कोई मोटा परदा इधर-उधर हिल रहा हो। क्षण भर में ही सँकरी सीढ़ी, जहाँ वे खड़े थे, किसी एक विशाल नाले की तेज शाखा बन गयी। बाहर यत्र-तत्र पर्वत-खण्डों से युक्त वर्षा की बूंदों से चमकते हुए मैदान की ओर दृष्टि डालते हुए बिशप ने दूरस्थ पर्वतों को सूर्य के प्रकाश में चमकते हुए देखा। उनके मन में फिर यह विचार उठा कि सृष्टि का प्रथम प्रातःकाल कदाचित् ऐसा ही रहा हो, जब सूखी भूमि सागर से प्रथम बार निकाली गयी थी, और चारों ओर गड़बड़ी छायी हुई थी।

वर्षा आधे घण्टे बाद बन्द हो गयी। बिशप और जैसिंटो जब तक सीढ़ियों के अन्तिम मोड़ पर पहुँच कर, दरार में से बाहर हुए और पर्वत-खण्ड की समतल भूमि पर पहुँचे, मध्याह्न सूर्य की प्रखर किरणें प्रचण्ड रूप से अकोमा पर चमक रही थी। नगर की पथरीली फ़र्श एवं घिसे हुए मार्ग धुल कर सफ़ेद एवं स्वच्छ हो रहे थे, और फ़र्श के वे गड्ढे, जिन्हें अकोम निवासी अपना होज कहते थे, वर्षा के ताजे जल से भरे हुए थे। महिलाएँ धुलाई आरम्भ करने के लिए अपने कपड़े निकाल रही थीं। पीने का पानी तो औरतें नीचे एक गुप्त सोते से मिट्टी के घड़ों में सिर पर

लाद कर ले आती थीं, परन्तु अन्य सभी कार्यों के लिए लोग इन हौज़ों में भरे वर्षा के पानी पर भी निर्भर रहते थे।

बिशप ने अनुमान लगाया कि पर्वत-खण्ड का ऊपरी समतल मैदान क्षेत्रफल में लगभग दस एकड़ था, और उस पर कोई वृक्ष या हरियाली का एक भी तिनका नहीं था। वहाँ कच्ची ईंटों की दीवार से घिरे हुए गिरजाघर के अहाते के अतिरिक्त, जहाँ दफ़नाने की क्रिया के लिये नीचे के मैदान से टोकरियों में भर-भर कर मिट्टी लाकर रखी हुई थी, अन्य कहीं भी एक मुट्ठी मिट्टी नहीं मिल सकती थी। दो-दो, तीन-तीन मंज़िल के श्वेत मकान छिट-फुट नहीं बने हुए थे, अपितु वे एक दूसरे से सटे हुए एक ही स्थान में बने हुए थे। उनके चारों ओर सुरक्षात्मक ढालू जमीन नहीं थी और न तो किसी चट्टान की कोई उभाड़ ही थी। वे समतल भूमि पर समतल रूप में बने हुए थे, चमकती हुई भूमि पर स्वयं चमक रहे थे—चट्टान तथा श्वेत रंग में पलस्तर किये हुए मकानों से प्रतिबिम्बित सूर्य का प्रकाश आँखो को चकाचौंध कर देने वाला था।

पर्वत-खण्ड की एक ओर ठीक छोर पर अकोमा का पुराना एवं सैनिकोचित पत्थर की दो मीनारों वाला गिरजाघर खड़ा था। वह नीचे की गहराई के ठीक ऊपर था, जिससे उसकी बाहरी दीवार को देख कर ऐसा लगता था कि चट्टान का किनारा ही ऊपर उठता गया है। उसका मध्य भाग संकरा, सफ़ेद रङ्ग का तथा कुछ मनहूस-सा लगने वाला एवं सत्तर फुट ऊँचा था। उसकी छत टूट-फूट रही थी। वह किसी पूजा के स्थान की अपेक्षा छोटे किले की तरह अधिक लगता था। उसके लम्बे-चौड़े आन्तरिक भाग को देख कर बिशप खिन्न हो गये, जैसा वे किसी अन्य मिशन के गिरजा को देख कर पहले कभी नहीं हुए थे। उन्होंने दोपहर के पहले ही वहाँ सार्वजनिक आराधना की और 'मास' की धार्मिक विधि पूरी करने में उन्हें इतनी कठिनाई पहले कभी नहीं हुई थी। उनके समक्ष

भूरी फ़र्श पर, भूरे प्रकाश में पचास-साठ व्यक्ति चुपचाप गाढ़े रङ्गों की शालें और कम्बल ओढ़े बैठे हुए थे, ऊपर और पीछे वही भूरी रङ्ग की दीवारें। उन्हें ऐसा लगा, मानो वे सागर के अतल तल में, तथा उन जन्तुओं के लिये 'मास' मना रहे हों; जो हिब्रू बादशाह नोआ के युग में आयी हुई भयानक बाढ़ से भी पहले के थे, तथा इस प्रकार के जीवों के लिये, जो इतने प्राचीन, इतने अनुदार, अपनी ही चार दीवारों के बीच इतने सीमित थे कि महात्मा ईसा के बलिदान की गाथा उनके कानों तक पहुंच ही नहीं सकती थी। बिशप ने सोचा कि उनके समक्ष खड़े हुए इन जन्तुओं को 'बपतिस्मा' (दीक्षा) एवं दैवी कृपा द्वारा कदाचित् बचाया जा सके, जैसे नन्हें, कोमल शिशुओं को बचाया जाता है; परन्तु, उनकी निजी अनुभूति द्वारा यह सम्भव हो सके, इसमें सन्देह था। बिशप ने उन्हें आशीर्वाद दिया और विदा किया, परन्तु एक असन्तोष एवं आध्यात्मिक पराजय की भावना से।

पादरी के विधि-संस्कार सम्बन्धी अपने कपड़ों को उतारने के पश्चात् फ़ादर लातूर जैसिंटो के साथ गिरजाघर को घूम-घूम कर देखने लगे। उसको ध्यान से देखने पर उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया। अकोमा में इस विशाल गिरजाघर की कभी भी क्या आवश्यकता रही होगी? वह सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में फ्रे जुवां रैमिरेज़ नामक एक महान् धर्म-प्रचारक (पादरी) द्वारा बनाया गया था, जिसने अकोमा के इस पर्वत-खण्ड पर लगातार बीस वर्षों तक परिश्रम किया था। फ़ादर रैमिरेज़ ने ही पर्वत-खण्ड की दूसरी ओर खच्चरों के चढ़ने के लिये एक मार्ग बनाया था। यही एक ऐसा मार्ग था, जिससे कोई गधा पर्वत-खण्ड के ऊपरी भाग तक चढ़ सकता था और जो अब भी 'अल कैमिनो दल पादरे' कहा जाता था।

फ़ादर लातूर जितना ही अधिक इस गिरजाघर को ध्यान से देखते

थे, उतना ही अधिक वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते थे, कि फ्रे रैमिरेज़ या उनके बाद का कोई अन्य स्पेनिश पादरी, भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं से मुक्त नहीं था और उन्होंने इसे कदाचित् आत्म-सन्तोष के लिए ही बनाया था, न कि रेड इण्डियनों की आवश्यकताओं के अनुसार। भवन-निर्माण के इस भव्य स्थान तथा इस दुर्ग की प्राकृतिक छटा ने कदाचित् उनके दिमाग फेर दिये थे। वे स्पेनिश पादरी शक्तिशाली मनुष्य रहे होंगे; तभी तो वे बिना किसी सैनिक सहायता के, इस विशाल कार्य के लिये रेड इण्डियन मजदूरों को जुटा सके। इस इमारत का प्रत्येक पत्थर, इस हजारों-लाखों पौंड के वज़न की इमारत की प्रत्येक मुट्ठी भर मिट्टी, पुरुषों, स्त्रियों एवं छोटे-छोटे लड़कों की पीठों पर लाद कर सीढ़ी की राह ऊपर पहुँचायी गयी रही होगी। और छत में लगी खुदी हुई विशाल लकड़ी की बल्लियाँ—फ़ादर लातूर ने अचम्भे से उनकी ओर देखा। जिस मैदान से होकर वे यहाँ तक आये थे, उसमें कहीं भी, कुछ छोटे-छोटे देवदारु के वृक्षों के अतिरिक्त अन्य कोई वृक्ष नहीं थे। उन्होंने जैसिंटो से पूछा कि वे बड़ी-बड़ी बल्लियाँ कहाँ से आयी होंगी।

"मेरा अनुमान है कि सैन मैटियो पहाड़ से"

"परन्तु सैन मैटियो पहाड़ तो चालीस या पचास मील दूर है। वहाँ से वे इतनी भारी-भारी लकड़ियाँ कैसे लाये होंगे ?"

जैसिंटो ने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया, "बेचारे अकोमा के निवासी ही ढो कर लाये होंगे।" निस्संन्देह, अन्य कोई तरीक़ा नहीं हो सकता था।

गिरजाघर की मुख्य इमारत के अतिरिक्त उसी से संलग्न, उसी के एक भाग के रूप में, अनेक नीची मेहरावों वाला एक लम्बा-चौड़ा एवं मोटी दीवारों वाला प्रकोष्ठ बना था, जिसे बनाने में नीचे मैदान से सामान

आदि ढोने में बड़ा परिश्रम लगा होगा। इस प्रकोष्ठ के लम्बे-लम्बे गलियारे बड़े ठण्डे थे, जबकि बाहर चट्टान पर झुलस देने वाली गरमी थी। प्रकोष्ठ के एक छोर पर एक घिरा हुआ बगीचा था, जिसकी मिट्टी की गहराई से यह अनुमान लगता था कि वह कभी बड़ा हरा भरा रहा होगा। सम्भव है कि प्रारम्भिक काल के मिशनरी लोग इन छायादार गलियारों में, जिनकी कच्ची ईंटों की बनी खिड़की रहित चार फुट मोटी दीवारों के कारण इस बगीचे तथा ऊपर नीले आकाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं दिखलाई पड़ सकता था, टहलते हुए अकोमा निवासियों को, जिन्हें चट्टानी कछुओं की एक आदिम जाति कहना अधिक उपयुक्त होगा, भूल गये रहे हों, और यह समझने लगे हों कि वे तो पाइरेनीज़ पर्वत के अंचल में बने किसी प्रकोष्ठ में टहल रहे हैं।

घिरे हुए बगीचे की भूरी मिट्टी में दो पतले तथा अर्ध-शुष्क आड़ू के वृक्ष थे, जो अब भी पानी माँग रहे थे, अर्थात् जो पानी पाने पर हरे हो सकते थे। यह ऐसा वृक्ष नहीं होता, जो किसी पुरानी जड़ से स्वयं पनप कर निकलता है, परन्तु फलता नहीं। दीवार के पास किसी अंगूर-वृक्ष के एक पुराने और बहुत ही मोटे और कड़े ठुंठ से पीले रङ्ग के अंकुर निकले हुए थे। कभी यह वृक्ष के गुच्छों से लदा रहा होगा।

प्रकोष्ठ के पूर्वोत्तर किनारे पर बिशप ने एक छज्जा बना देखा, जो उपर से तो ढंका हुआ था परन्तु अगल-बगल खुला हुआ था। वहाँ से अकोमा के श्वेत मकानों तथा भूरी चट्टानों एवं नीचे के विस्तृत मैदान का अच्छा दृश्य मिलता था। बिशप ने निर्णय किया कि वे रात वहीं बितायेंगे। इस छज्जे पर खड़े-खड़े उन्होंने सूर्य को अस्त होते देखा; उन्होंने देखा कि प्रतिबिम्ब लम्बे होते गये और धीरे-धीरे सारा मरुस्थल अन्धकार-मय हो गया। विस्तृत मैदान में इधर-उधर छिटके हुए पर्वत-खण्डों के ऊपरी समतल भाग जो गोधूलि के प्रकाश में लाल रंग के हो रहे थे, एक-

एक करके प्रकाश-हीन हो गये, जैसे एक के बाद एक मोमबत्तियाँ बुझ रही हों। बिशप मरुस्थल में, एक वनस्पतिहीन, मुक्त पर्वत-खण्ड पर थे, पाषाण-युग कालीन वातावरण में थे। जिसमें वे स्वजनों एवं अपने युग-कालीन सभ्यता की, युरोपीय मनुष्य तथा उसकी आकांक्षाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं के उज्ज्वल इतिहास की उछ्वासपूर्ण याद के शिकार हो सकते थे। उन अनेक विगत शताब्दियों में, जब विश्व का उनका अपना भाग प्रातःकालीन आकाश की भाँति बराबर परिवर्तित होता जा रहा था, वहाँ के ये लोग बिलकुल अचल रह गये थे; न तो उनकी संख्या में कोई वृद्धि हुई थी और न उनकी आकांक्षाओं में। वे आज भी अपनी चट्टान पर चट्टानी कछुए ही थे। इन्हें ऐसा लगा, जैसे यहाँ की सारी बातें रेंगने की चाल से आगे बढ़ रही हों, जैसे सभी वस्तुएँ स्थिर हों, प्रगति का नाम नहीं एक ऐसा जीवन, जो पहुँच से परे हो, जहाँ प्रगतिशील बातें पहुँच ही न सकती हों, जैसे केंकड़े, कछुए, घोंघे आदि जीव अपने खोल में सिकुड़ जाने के बाद पहुँच से बाहर हो जाते हैं।

घर वापस आते समय बिशप ने इज़लेता के भलेमानस पादरी फ़ादर जेसस के साथ एक रात और बितायी। पादरी ने उनसे मोक़ी प्रदेश तथा और भी पश्चिम स्थित उसी प्रकार के पर्वत-खण्डों वाली बस्तियों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें बतायीं। उनमें से एक कहानी अकोमा के किसी पादरी के सम्बन्ध में थी, जिसे लोग बहुत पहले ही भूल चुके थे, तथा जो बहुत कुछ यों थी —

४
फ़्रे बल्ज़ार की कथा

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में, जब रेड इण्डियनों के उस भयंकर विद्रोह के बीते पचास वर्ष हो चुके थे, जिसमें उत्तरी न्यू मेक्सिको के

सभी धर्म-प्रचारक पादरी एवं स्पेनियार्ड या तो वहाँ से भगा दिये गये थे या मार डाले गये थे, तथा जब देश पुनः विजित हो चुका था और शहीदों के स्थान पर नये पादरी आ गये थे, फ़्रे बल्ज़ार मांटोया नामक एक व्यक्ति अकोमा का पादरी था। वह निरंकुश एवं क्रूर स्वभाव का व्यक्ति था और वहाँ के अधिवासियों को सताया करता था। वे सभी धर्म-प्रचार-केन्द्र (मिशन) जो इस समय नष्ट हो चुके थे, उस समय कार्य कर रहे थे; प्रत्येक केन्द्र में एक पादरी रहता था, जो अपने स्वभाव के अनुसार या तो जनता के लिये जीता था या जनता के सहारे जीता था। फ़्रे बल्ज़ार बड़ा ही महत्त्वाकांक्षी एवं उत्पीड़क था। वह यह सोचता था कि अकोमा की बस्ती मुख्यतः उसके सुन्दर गिरजाघर के खर्च आदि को चलाने के लिये ही थी, तथा वह रेड-इण्डियनों के लिये गर्व की वस्तु होनी चाहिये, जैसे वह उसके लिये थी। वह उनसे उनके सर्वश्रेष्ठ अनाज, फल आदि अपने खाने के लिये ले लेता था तथा जब वे कोई भेंड़-बकरा आदि काटते थे, तो उसका सर्वश्रेष्ठ भाग अपने लिए चुन लेता था, और अपने निवास स्थान में फ़र्श पर बिछाने के लिए उनके सब से अच्छे पशु-चर्मों को रख लेता था। इसके अतिरिक्त वह श्रम के रूप में उनसे भारी कर वसूल करता था। वह उनसे नीचे मैदान से टोकरियों में भर-भर कर मिट्टी मँगवाने से थकता ही नहीं था। उसने गिरजा के अहाते को बढ़ाकर बड़ा बनवा डाला तथा उसके प्रकोष्ठ में बहुत सी मिट्टी डलवा कर एक बगीचा बनवा दिया और पशुओं के बाड़े से गोबर लीद आदि मँगवाकर उसकी भूमि को उर्वरा बना दिया। उसमें उसने एक सुन्दर सी बाटिका तैयार कर ली; प्रतिदिन संध्या समय औरतें उसे सींचती थीं, यद्यपि यह बिलकुल उचित नहीं था कि औरतें कभी भी गिरजाघर के प्रकोष्ठ में प्रवेश करें। प्रत्येक औरत को पादरी के लिए प्रति सप्ताह हौजों से उनके लिए निश्चित संख्या के घड़े में पानी ले आना पड़ता था, और वे केवल परिश्रम के ही ख्याल से इसे बुरा

नहीं मानती थीं, अपितु इसलिये भी कि इसके कारण उनकी आवश्यकता के पानी में कमी हो जाती थी।

बल्ज़ार कोई सुस्त व्यक्ति नहीं था, और अपने कार्य-काल के प्रारम्भिक दिनों में, जब वह बहुत मोटा नहीं हुआ था, अपने गिरजाघर तथा बगीचे के लिए बड़ी-बड़ी यात्राएँ करता था। वह अच्छे-से-अच्छे आड़ू के बीज के लिये कई दिन की यात्रा करके ओरैबी तक गया। (ओरैबी के आड़ू के बगीचे बहुत पुराने थे; वे प्रारम्भिक स्पेनिश खोज-यात्राओं के ज़माने से ही वहाँ लगे थे, जब कॉरोनेडो के कप्तान लोग स्पेन से लाये हुए आड़ू के बीज मोकी वासियों को दिये थे।) उसकी अंगूर की कलमें टोकरियों में खच्चरों पर लादकर सोनोरा से मँगायी गयी थीं और जब अनुकूल मौसम आने पर मालगाड़ियाँ रायो ग्रैंड घाटी में से होकर इधर आती थीं, तो वह बगीचे में लगाने के लिये अच्छे-अच्छे पौधों एवं बीजों के लिये सांता फ़े तक जाया करता था। प्रारम्भिक काल के मिशनरियों ने इन बीजों का व्यापार करके अच्छा पैसा कमाया, यद्यपि बेचारे रेड इण्डियन तथा मेक्सिकन लोग अपनी सेमों, लौकियों तथा मिर्चों से ही संतुष्ट थे और अन्य कुछ भी नहीं चाहते थे।

फ़े बल्ज़ार स्पेन के एक धार्मिक संस्थान से आया था, जो अपनी अच्छाई के लिये सुविदित था, तथा उसने स्वयं उसके रसोईघर में काम किया था। वह बड़ा अच्छा रसोइया था और बढ़ई का भी कुछ काम जानता था; अतः उसने दुनिया के इस कोने में, उस पर्वत-खण्ड पर, आराम का जीवन बिताने के लिये काफ़ी परिश्रम किया। उसने दो रेड इण्डियन लड़कों को नौकर रख लिया, एक उसके गधे की देखभाल तथा बगीचे में काम करने के लिये और दूसरा भोजन बनाने तथा खिलाने के लिये। कुछ दिन बाद, जब वह मोटा हो गया, उसने एक तीसरे लड़के को भी नौकर रख लिया और उससे दूरस्थ मिशनों में सन्देश आदि ले जाने आदि का काम लेने लगा। यह लड़का लाल कपड़ा, फावड़ा या कोई नयी छुरी लेने पैदल ही

सांता फ़े तक जाया करता था; रास्ते में वह रुक कर वन लिलो से चमड़े की बोतल में भरकर अंगूरी ब्रांडी ले आया करता था। वह पादरी के उपवास के दिनों के लिये मछली पकड़ने, उन्हें सुखाने तथा उनमें नमक मलने के लिये, पांच दिन की यात्रा करके सैंड़िया पहाड़ तक जाया करता था, या वह ज़ूनी तक जाता था, जहाँ पादरी लोग ख़रगोश पालते थे, और वहाँ से अपने पादरी के लिये एकाध खरगोश ले आता था। उसके कार्य कदाचित् ही कभी गिरजा से सम्बन्धित होते थे।

यह स्पष्ट था कि अकोमा का यह पादरी आध्यात्मिक शान्ति की अपेक्षा भौतिक आनन्द की खोज में अधिक रहता था। इस शुष्क एवं वनस्पतिहीन पर्वत-खण्ड पर यदि पादरी को सुस्वादु एवं भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन मिलने में कोई कठिनाई होती थी, तो इससे उसकी क्षुधा और भी बढ़ती थी और वह उसे प्राप्त करने के लिए और भी प्रयत्नशील होने के लिये प्रेरित हो उठता था। परन्तु उसकी विलासिता, भोजन एवं बगीचे तक ही सीमित थी। रेड इण्डियन महिलाओं के साथ संभोग करना उसके लिये बड़ा आसान हुआ होता, और पादरी अपने यौवन के चरमोत्कर्ष पर था, जब इस प्रकार के प्रलोभन बड़े ही प्रचण्ड होते हैं। परन्तु धर्म-प्रचारक लोग बहुत पहले ही यह जान गये थे कि ब्रह्मचर्य से तनिक भी फिसलने से धर्म-परिवर्तित रेड इण्डियनों पर उनका रोष एवं दबदबा बहुत कम हो जाता था। रेड इण्डियन लोग स्वयं ही कभी-कभी प्रायश्चित के रूप में, या देवी-देवताओं या प्रेतात्माओं को प्रसन्न करने के लिये, ब्रह्मचर्य का अभ्यास करते थे और वे उस समय यह भी चाहते थे कि उनका पादरी भी उनकी खातिर ऐसा करे। यहाँ पर स्त्रियों के साथ कामाचार आदि के दुष्परिणाम स्पेन की अपेक्षा कदाचित् अधिक गम्भीर होते थे और फ़्रे बल्ज़ार ने अकोमावासियों को अपनी इस प्रकार की मानवीय कमज़ोरी पर उल्लसित होने का अवसर कभी नहीं प्रदान किया।

वह अकोमा में अपने पद पर पन्द्रह समृद्धिशाली वर्षों तक रहा। इन पन्द्रह वर्षों में वह अपने गिरजाघर को और अपने निवास-स्थान को बराबर दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक सुधारता रहा; वह नयी-नयी तरकारियाँ, नयी-नयी जड़ी-बूटियां लगाता रहा; 'यूक्का' (एक प्रकार का पुष्प पौधा) वृक्ष की जड़ से उसने साबुन भी बनाया। वह मोटा और भद्दा हो गया तब भी उसके हाथ मज़बूत और उँगलिया निपुण बनी रहीं। उसने अपने आड़ू के वृक्षों को बड़ा किया और अपने बगीचे की ओर छोटे से राज्य की तरह गर्व से देखता था; वह रेड इण्डियन औरतों को पानी सींचने में कभी कमी नहीं करने देता था। उसने अपने पहले के तीनों बेगार नौकरों को ब्याह करने के लिये अपने यहाँ से मुक्त कर दिया, और उनके स्थान पर दूसरे लड़के आये, जो अपने कामों में उनसे भी अधिक अच्छी तरह प्रशिक्षित किये गये।

बल्ज़ार के अत्याचार धीरे-धीरे बढ़ने लगे, और अकोमा के लोग कभी-कभी विद्रोह करने के लिये उद्यत हो उठते थे। परन्तु वे यह अनुमान नहीं लगा सके थे कि पादरी का जादू कितना शक्तिशाली है और उसकी परीक्षा करने से डरते थे। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि स्पेन के सम्राट ने इसी पादरी के कहने पर सेंट जोसेफ़ का पवित्र चित्र भेजा था, और वह चित्र सूखा न पड़ने देने में उन सभी स्थानीय लोगों की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुआ था, जो जादू-टोने आदि से पानी बरसाने का प्रयास करते थे। समुचित ढंग से प्रार्थना एवं पूजा करने पर चित्र पानी बरसाने से कभी नहीं चूका था। जब से बल्ज़ार वह चित्र यहाँ लाया, तब से अकोमा में अनावृष्टि आदि से खेती कभी नहीं नष्ट हुई, यद्यपि समीपस्थ लगूना और ज़ूनी में ऐसे-ऐसे सूखे पड़े कि लोगों को अकाल के लिये संचित अनाज के सहारे दिन काटने पड़े। (इस प्रकार की स्थिति अत्यन्त संकटापन्न स्थिति समझी जाती थी।)

लगूना के रेड इण्डियन अकोमा में बराबर अपने प्रतिनिधि-मण्डल भेजते रहते थे कि वे उन्हें किराये पर वह पवित्र चित्र दे दें, परन्तु फे बल्ज़ार ने उन्हें चेतावनी दे रखी थी कि वे उसे कभी बाहर न जाने दें। इसलिये वे सोचते थे कि यदि इतना शक्तिशाली संरक्षण हटा लिया जायगा, या यदि पादरी अपने जादू को उनके विरुद्ध घुमा देगा, तो बस्ती के लिये इसका परिणाम विनाशकारी हो सकता है। अच्छा है कि पादरी अच्छा-से-अच्छा अनाज ले, अच्छी-से-अच्छी भेड़ें ले, अच्छे-से-अच्छे बर्तन ले और तीन नौकरों को भी अपने बेगार में रखे। इस प्रकार वह धर्म-प्रचारक पादरी तथा उसकी प्रजा दिखावटी मैत्री के साथ येन केन प्रकारेण खींचे जा रहे थे।

एक बार गरमी के दिनों में पादरी ने, जो अब अत्यधिक भारी भरकम शरीर के कारण लम्बी यात्राओं पर नहीं जा सकता था, निर्णय किया कि कुछ उसकी श्रेणी के लोग उसके यहाँ आवें, जो उसकी सुन्दर वाटिका की, उसके निराले रसोई घर की, उसके हवादार छज्जे की, जहाँ सुन्दर कालीन बिछे थे, पानी के घड़े रखे थे तथा जहाँ वह पूजा करता था और भोजन के पश्चात् विश्राम करता था, प्रशंसा करें। यह सोचकर उसने 'सेंट जान्स डे' के पश्चात् पड़ने वाले सप्ताह में भोजन की एक दावत देने का आयोजन किया।

उसने अपने नौकर को जूनी, लगूना एवं इज्लेता भेजकर वहाँ के पादरियों को भोज के लिये आमन्त्रित किया। नियत दिन पर वे चार पादरी (जूनी में दो पादरी थे) आये। अस्तबल की देख-रेख करनेवाला लड़का पर्वत-खण्ड के नीचे तैनात किया गया, जिससे वह पादरियों के जानवरों को वहाँ सम्भाल सके और उन्हें ऊपर आने का रास्ता आदि बता सके। ऊपर सीढ़ियों के पास ही बल्ज़ार ने उनका स्वागत किया। उन्हें सारा स्थान दिखलाया गया और वे दोपहर के पहले प्रकोष्ठ में घूमते तथा बातें करते रहे, जो बड़ा ही ठण्डा एवं शान्तिपूर्ण था, यद्यपि बाहर

चट्टान इतना जल रहा था कि उसे छूना भी कठिन था। अंगूरी लता की पत्तियाँ मंद हवा में धीरे-धीरे डोल रही थीं और गाजर एवं प्याज़ के पौधों के पास की मिट्टी से, जो गत संध्या को जल से तर की गयी थी, परन्तु अब सूखने लगी थी, बड़ी सोंधी बास उठ रही थी। मेहमानों ने समझा कि उनका मेज़बान बड़े सुख से रहता है, और वे उसका भेद जानने के लिये लालायित हो उठे। यदि वह अपने इस हवादार स्थान के सम्बन्ध में थोड़ी डींगें हांकता था, तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता था।

भोजन तैयार करने में बल्ज़ार ने बड़ा परिश्रम किया था। जिस मठ में उसने भोजन बनाने की विधि सीखी थी, वह सैवाइल जाने वाले मुख्य राजपथ के समीप पड़ता था; स्पेनिश सामंत लोग तथा सम्राट स्वयं वहाँ मनोविनोद के लिये कभी-कभी रुक जाया करते थे। उस मठ के विशाल रसोईघर में, जिसमें भिन्न आकार के मांस भूनने के सींकचे थे, कोई तो इतना छोटा कि उस पर लवा चिड़िया भूनी जाय और कोई इतना बड़ा कि उस पर सुअर भी भूना जा सके, पादरी ने चटनी आदि बनाना भी सीख लिया था और अकोमा से अपने एकान्त जीवन में, भोजन बनाने में स्वाभाविक रुचि के कारण, उसने अपनी कला में और भी प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। सामानों की कमी उसे हतोत्साहित करने के बजाय, प्रेरणा प्रदान करने वाली सिद्ध हुई थी।

निस्सन्देह, अतिथि पादरियों को इतना सुन्दर भोजन करने को कभी नहीं मिला था, जिसे वे आज इस ठण्डे कमरे में, जिसकी खिड़कियों के परदे केवल इतना खुले थे कि नीचे जलते हुए मरुस्थल की एक लीक ही दिखलाई पड़ती थी, बैठे बड़े आनन्द से कर रहे थे। उनका मेज़बान उनसे बड़े दम्भपूर्ण ढंग से बतला रहा था कि अगली बार जब वे यहाँ आवेंगे, तो वे प्रकोष्ठ में एक फ़व्वारा भी देखेंगे। उसे अपने भूखे अतिथियों को चटनी, अचार तथा 'सूप' को सम्भल कर खाने के लिये आगाह करना पड़ा तथा यह कहना पड़ा कि वे अभी और आने वाली वस्तु के लिये भूख

बचा कर खायें। भूने हुए मांस का 'कोर्स' एक जंगली 'टर्की' का था, जो बहुत ही अच्छी ढंग से बनाया गया था, परन्तु हाय, उसे तो चखने का अवसर ही नहीं आया। उसके पहले जो 'कोर्स' आया, उसे मेज़बान ने बड़े ही यत्न से स्वयं ही तैयार किया था और रसोइये के मत्थे कुछ भी नहीं छोड़ा था। वह था खरगोश के मांस की बनी कोई कढ़ी जो एक चीनी मिट्टी के नक़ाशदार सुन्दर बर्तन में भर कर लायी गयी। उसके साथ एक चटनी भी आयी, जिसे पादरी ने बहुत दिनों के परिश्रम के पश्चात् विभिन्न प्रयोगों के बाद तैयार किया था। कढ़ी में ऊपर कटे हुए गाजर एवं प्याज भी तैर रहे थे। जिस बर्तन में यह कढ़ी रसोईघर से लायी गयी, वह बड़ा तो था, लेकिन बहुत बड़ा नहीं, क्योंकि वह बिलकुल मुँह तक भरा हुआ था। भोजन परसने का काम अस्तबल की देख-रेख करने वाला लड़का कर रहा था, क्योंकि रसोइया अब भी भूनने आदि के काम में व्यस्त था। लड़का बड़ी मुस्तैदी एवं सफ़ाई से काम कर रहा था। पादरी साहब उस पर प्रसन्न हो रहे थे और सोच रहे थे कि वे उसे उसके परिश्रम के लिये कोई चाँदी या जस्ते का पदक प्रदान करेंगे।

जिस समय यह कढ़ी खाने के कमरे में पहुँची, इज़लेता के पादरी कोई मज़ेदार कहानी सुना रहे थे, जिस पर सभी लोग ठहाका मार कर हँस रहे थे। परसने वाला लड़का, जो थोड़ी बहुत स्पेनिश भाषा जानता था, कदाचित् कहानी के उस अंश को समझने का प्रयास कर रहा था, जिस पर पादरी लोग इतना हँस रहे थे। जो भी हो, उसका ध्यान कढ़ी के बर्तन पर से हट गया, और ज्योंही वह जूनी के बड़े पादरी के पीछे पहुँचा, उसका बर्तन टेढ़ा हो गया और कढ़ी का लाल-लाल शोरबा काफ़ी मात्रा में पादरी के सिर और कंधों पर गिर गया। बल्ज़ार यों ही क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति था और आज तो उसने अंगूरी ब्रांडी भी काफ़ी पी ली थी। उसने झट सामने पड़ा हुआ जस्ते का खाली मग उठा लिया और बेशऊर लड़के को गाली देता हुआ तान कर मारा। मग जाकर लड़के की कनपटी पर लगा। कढ़ी

का बर्तन उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ा, लड़का एकाध कदम लड़खड़ाया और गिर पड़ा। फिर न तो वह वहाँ से उठा और न हिला डुला। ज़ूनी का पादरी चिकित्सा आदि में निपुण था। आँख पर से शोरवा पोंछते हुए वह उठा और जाकर लड़के को देखने लगा।

"यह तो मर गया," उसने धीरे से कहा। फिर तुरन्त अपने छोटे पादरी का हाथ पकड़ कर उसने उसे उठाया और दोनों बिना एक शब्द बोले बगीचा पार करते हुए सीढ़ियों की ओर दौड़े। एक क्षण बाद ही लगूना और इज़लेता के पादरी भी वहाँ से चुपचाप भाग निकले। चारों मेहमान आश्चर्यजनक गति से सीढ़ियों से नीचे उतरे और अपने खच्चरों पर सवार होकर मैदान में सरपट भाग निकले।

बल्ज़ार अपने आवेश एवं क्रोध के परिणाम को भुगतने के लिये अकेला रह गया। दुर्भाग्य से, उधर रसोइये ने जब यह देखा कि खाने के कमरे से बहुत देर से कोई आवाज़ नहीं आ रही है, तो जिज्ञासा में वह उठ कर आया और कमरे में ठीक उसी समय झाँका जब अन्तिम दोनों पादरी प्रकोष्ठ से बाहर हो रहे थे। उसने अपने साथी को फ़र्श पर पड़े देखा और चुपके से वहाँ से एक ऐसे मार्ग से अदृश्य हो गया, जिसे अकेला वही जानता था।

जब फ्रे बल्ज़ार रसोईघर में गया, तो वह खाली थी, टर्की अब भी सींकचे में पड़ी हुई आग पर जल रही थी। अब उसे इसे खाने की इच्छा नहीं रह गयी थी। वास्तव में उसे उस समय बड़ी ग्लानि एवं व्याकुलता हुई; उसे अपने भागे हुए मेहमानों पर क्रोध भी आ रहा था तथा उनके प्रति घृणा भी हुई। एक बार तो उसके मन में आया कि वह भी उन्हीं की तरह भाग निकले; परन्तु उसने सोचा कि कुछ दिनों के लिये भाग जाने से उसकी स्थिति ही तो कमज़ोर होगी और स्थायी रूप से भाग जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। उसका बगीचा अपनी जवानी पर था, उसके आड़ू के फल पकने ही को थे और उसके अंगूर की लता में गुच्छे लटक रहे थे।

विना किसी प्रेरणा के उसने टर्की को सींकचे पर से उठा लिया, इसलिये नहीं कि उसे खाने की तनिक भी इच्छा थी, वरन् दया की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति से उसने ऐसा किया, मानो यदि वह चिड़िया और देर तक आग पर रहती, तो उसे अधिक कष्ट होता। फिर वह अपने छज्जे पर बैठ गया और बैठकर दैनिक पूजा की पुस्तक पढ़ने लगा, जिसे उसने कई दिन से, इस भोज के आयोजन में व्यस्त रहने के कारण, नहीं पढ़ा था। उसने उस कढ़ी को तैयार करने में कुछ उठा नहीं रखा था, जिसने उसका सत्यानाश कर दिया था।

वह हवादार छज्जा, जहाँ वह दोपहर के भोजन के पश्चात् विश्राम किया करता था, हवा में लटकते हुए चिड़िया के पिंजड़े की भाँति था। उसके अगल-बगल के खुले हुए मेहराबदार दरवाजों से उसने बस्ती के सटे हुए मकानों पर दृष्टि दौड़ायी और फिर नीचे विशाल मैदान को देखने लगा, जिसमें इधर-उधर अनेक पर्वत-खण्ड छिटके हुए थे। उसका किसी काम में मन नहीं लग रहा था। बस्ती बिल्कुल निस्तब्ध एवं शांत थी। साधारणतया प्रतिदिन इस समय गाँव की औरतें बर्तन-कपड़े आदि धोती रहती थीं, और बच्चे हौज़ों के पास खेलते रहते थे तथा टर्कियों के पीछे भागते रहते थे। परन्तु आज चट्टान निपट निस्तब्धता में सूर्य की भयानक गर्मी से तप रहा था और उस पर एक भी प्राणी नहीं दीख रहा था; परन्तु हाँ, एक व्यक्ति अब वहाँ दीख रहा था, जो कुछ देर पहले वहाँ नहीं था। चट्टान की सीढ़ियों के पास कुछ काली चमकदार वस्तु दिखलायी पड़ रही थी; वह था किसी रेड इण्डियन का सिर। पादरी को अब सन्देह हुआ कि रेड इण्डियनों ने सीढ़ियों के पास संतरी तैनात कर दिया है।

अब पादरी घबराने लगा और पछताने लगा कि क्यों नहीं वह भी समय रहते ही पादरियों के साथ सीढ़ियों से नीचे उतर गया। इस पर्वत-खण्ड से दूर संसार के किसी भी स्थल में पहुँच जाने की वह कामना करने लगा। हाँ, फ़ादर रैमिरेज़ का गधे वाला मार्ग तो है; परन्तु यदि रेड

इण्डियनों ने लोग एक मार्ग पर पहरा नियुक्त कर दिया है, तो दूसरे पर भी पहरा देते होंगे। वह काले बालों वाला सिर अपने स्थान से एक क्षण को भी हिला-डुला नहीं; और मैदान में पहुँचने के वे ही दो मार्ग थे, केवल दो....। इनके अतिरिक्त अन्य किसी स्थान से नीचे उतरने का अर्थ साढ़े तीन सौ फुट ऊँचे, खड़े एवं वनस्पतिहीन टीले से उतरने का प्रयास करना था जिस पर एक भी वृक्ष या झाड़ी नहीं, जिसे मनुष्य सहारे के लिये थाम सके।

संध्या होते-होते नीचे बस्ती में पुरुषों की शिकायत भरी एक गम्भीर आवाज़ आरम्भ हो गयी, जो किसी मंत्रोच्चारण आदि की भाँति नहीं थी, अपितु रेड इण्डियनों की लय के साथ एक ऐसी ध्वनि थी, जो उस समय होती थी जब किसी गम्भीर मामले पर विचार-विमर्श होता रहता था। उसे सुनकर सन् १७८० ई० के विद्रोह के समय मिशनरियों की यंत्रणा की भयानक कहानियाँ वल्ज़ार के मस्तिष्क में कौंध गयीं; किस प्रकार किसी फ्रांसिस्कन की आँखे निकाल ली गयी थीं, एक मिशनरी जीवित ही जला दिया गया था और जामेज़ को बुड्ढा पादरी नंगा होकर चोपाल में रात भर घुटनों के बल चलने को वाध्य किया गया था और शराब में चूर रेड इण्डियन उसकी पीठ पर बैठ कर उसे तब तक दौड़ाते रहे, जब तक वह थकान से गिरकर मर नहीं गया।

छज्जे से चंद्रोदय का दृश्य बड़ा सुहावना लगता था। यहाँ तक कि वह इस पादरी को भी अच्छा लगता था, जिस पर किसी वस्तु का बहुत आसानी से प्रभाव नहीं पड़ता था। परन्तु आज रात तो वह यही सोच रहा था कि चंद्रमा नहीं निकले तभी अच्छा है, क्योंकि अकोमा वासियों के लिये चन्द्रमा का निकलना एक प्रकार की घड़ी का काम करता था और वे तभी कोई नियत कार्य आरम्भ करते थे। वह भय से उस सुनहरे हँसिये के रात के स्वच्छ नीले आकाश में निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

चंद्रमा निकला और उसके साथ ही अकोमा के लोग भी अपने-अपने घरों से बाहर निकले। पुरुषों का एक दल चुपचाप चलकर गिरजाघर

के प्रकोष्ठ में पहुँचा। वे सीढ़ियों से चढ़ कर छज्जे तक पहुँचे। पादरी ने उनसे कर्कश स्वर में पूछा कि तुम लोग क्या चाहते हो; परन्तु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वे न तो उससे एक शब्द बोले और न आपस में ही बोले और चुपचाप उसके हाथ-पाँव बाँध दिये।

अकोमा के लोगों ने बाद को बतलाया कि पादरी ने न कोई आरज़ू-मिन्नत की और न तो उसने कोई विरोध ही किया। यदि उसने ऐसा किया होता, तो सम्भव है कि वे उसके साथ और भी निर्दयता से पेश आते। परन्तु वह तो अपने रेड इण्डियनों को जानता था कि यदि उन्होंने सब मिल कर जब कोई निर्णय कर लिया तो कर लिया। और इसके अतिरिक्त वह एक दम्भी स्पेनियार्ड था और उसके विशाल शरीर में साहस भी था। उसे तो आज्ञा देने की आदत थी, आरज़ू-मिन्नत करने की नहीं, और अन्त तक उसने अपने प्रति रेड इण्डियनों का सम्मान बनाये रखा।

वे उसे लेकर छज्जे से नीचे उतरे और प्रकोष्ठ को पार करके पर्वत-खण्ड के एक किनारे पर ले गये, जहाँ टीला सबसे अधिक खड़ा और सीधा था और जहाँ से औरतें टूटे-फूटे बर्त्तन आदि तथा अन्य कूड़ा-करकट नीचे फेंकती थीं। वहाँ पर बहुत से लोग एकत्र थे। उन्होंने उसके बँधन खोल दिये और दो-दो आदमी उसके हाथ पाँव पकड़ कर उसे चट्टान के ठीक छोर पर इधर-उधर झुलाने लगे। वह वजन में भारी था और उन्होंने सोचा कि इस प्रकार झुलाना खतरे से खाली नहीं है। उसके मुँह से एक सी-सी की आवाज़ के अतिरिक्त कुछ नहीं निकल रहा था। चारों आदमियों ने उसे ज़मीन पर से, जहाँ उसे रख दिया था, फिर उठाया और एक-दो बार झुला कर चट्टान के नीचे फेंक दिया।

इस प्रकार वे अपने पर्वत-खण्ड को इस अत्याचारी से, जिसे सामान्यतः उन्होंने बहुत पसन्द किया था, मुक्त कर सके। परन्तु वे कब तक उसे पसन्द करते रहते। प्रत्येक वस्तु की एक सीमा होती है। उसकी हत्या के बाद, उन्होंने न तो गिरजाघर को अपवित्र किया और न तो पवित्र

बर्तनों आदि को तोड़ा-फोड़ा। हां, उन्होंने पादरी के भाण्डार, सामान आदि को आपास में लाँट लिया। औरतें अवश्य ही उसके बगीचे को पानी न पाने से सूखते हुए देख कर प्रसन्न हुई, और प्रकोष्ठ में जाकर आड़ू के सूखते हुये पत्तों को तथा अँगूर के गुच्छों को लताओं में ही सूख कर सिकुड़ते हुए देख कर वे हँसती थीं और आपस में बातें करती थीं।

जब कई वर्ष बाद दूसरा पादरी आया, तो उसे वहाँ अपने प्रति कोई बुरी भावना नहीं मिली। वह मेक्सिको का ही रहने वाला था, वह आडम्बर-पूर्ण नहीं था और सेम के बीजों तथा सुखाये हुए माँस में ही सन्तोष कर लेता था, तथा वहाँ की टर्कियों को उस गरम मिट्टी में उछलने खेलने देता था, जो कभी बल्ज़ार के बगीचे की मिट्टी थी। आड़ू के ठूँठों से वर्षों तक पीले-पीले अंकुर निकलते रहे।

अध्याय ४

सर्प विश्वास

१

पेकोस में एक रात

बिशप की अलबुकर्क एवं अकोमा यात्रा के एक मास पश्चात् मौजी फ़ादर गैलेगोस को औपचारिक रूप से निलम्बित कर दिया गया, और फ़ादर वेलेंट ने उसके हलके का कार्य स्वयं सम्भाला। पहले तो वहां लोगों को यह बहुत बुरा लगा; बड़े-बड़े कृषक तथा अलबुकर्क की आमोदी स्त्रियां फ्रांसीसी पादरी के बहुत विरुद्ध हो गयीं परन्तु उन्होंने अपने सुधार तुरन्त आरम्भ कर दिये। प्रत्येक वस्तु बदल दी गयी। पर्वों के दिन जहां फ़ादर गैलेगोस के ज़माने में आमोद-प्रमोद चला करते थे, वहां अब इन दिनों बड़ी सख्ती से पूजा, आराधना आदि के कार्य चलने लगे। चञ्चल-बुद्धि मेक्सिकन जनता को शीघ्र ही धार्मिक कार्यक्रमों में उतना ही आनन्द आने लगा, जितना दूसरों की निन्दा आदि करने में। फ़ादर वेलेंट ने फ्रांस में अपनी बहिन फ़िलोमीन को पत्र लिखा कि उनके इस हलके का मिजाज लड़कों के किसी स्कूल के मिजाज जैसा था; किसी एक शिक्षक के अनुशासन में रह कर लड़के अवज्ञा एवं शरारत में एक दूसरे से आगे बढ़ने के प्रयास करते हैं, तथा किसी अन्य शिक्षक के अधीन वे ही बालक

आज्ञाकारी बनने तथा अन्य अच्छे कार्यों में आगे बढ़ना चाहते हैं। क्रिसमस से पहले जो नौ दिनों तक सार्वजनिक धार्मिक समारोह होता है, वह बहुत दिनों से नाच-गान आदि कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता था, परन्तु इस वर्ष उस अवसर पर धार्मिक उत्साह पुनर्जीवित किया गया।

यद्यपि फ़ादर वेलेंट अलबुक़र्क में एक पादरी के हलके के सभी कार्य कर रहे थे, फिर भी वे 'विकार जेनरल' थे; और फरवरी में बिशप ने किसी अत्यन्त आवश्यक कार्य से उन्हें ला वेगास भेजा। नियत तिथि पर वे वापस नहीं आये और जब कई दिन बीत गये और उनका कोई समाचार भी नहीं मिला, तो फ़ादर लातूर को चिन्ता होने लगी।

एक दिन सुबह ही एक रेड इण्डियन लड़का बिलकुल बीमार दशा में फ़ादर जोसेफ़ के श्वेत खच्चर कंटेंटो पर सवार, बिशप के आँगन में पहुँचा और उसने बुरा समाचार सुनाया। उसने बताया कि फ़ादर जोसेफ़ पेकोस पहाड़ के अंचल में स्थित उसके गाँव में, जहाँ चेचक का प्रकोप हो गया था, मरने वालों का मृत्यु-संस्कार कराने के लिये रुक गये थे और स्वयं ही बीमारी के शिकार हो गये हैं। लड़के ने यह भी बताया कि जब वह वहाँ से सांता फ़े के लिये रवाना हुआ, तो वह बिलकुल ठीक था, परन्तु रास्ते में बीमार हो गया।

विशप ने इस दूत को बगीचे के एक छोर पर बिलकुल अलग बने हुए लकड़ी के मकान में रखा, जहाँ लोरेटो की 'सिस्टरें' उसकी सेवा-शुश्रुषा कर सकें। उन्होंने 'मदर सुपीरियर' को एक थैले में बीमारों के लिये कुछ दवाएं तथा आराम के अन्य साधन रखने की आज्ञा दी, जिसे वे अपने साथ ले जाना चाहते थे, और अपने रसोइये फ्रिक्टोसा से अपने लिये खाने की ऐसी सामग्रियां बाँधने को कहा, जिन्हें वे घोड़े पर यात्रा के समय अपने साथ ले जाया करते थे। जब उनका नौकर सामान ढोनेवाला एक खच्चर तथा उनका अपना खच्चर एंजेलिका दरवाज़े पर ले आया, तो फ़ादर लातूर ने जो अब तक घुड़सवारों वाला 'ब्रीचेस' तथा चमड़े का जैकेट

पहने तैयार हो गये थे, अपने सुन्दर जानवर को देख कर सिर हिलाया और कहा—

"नहीं, इसे कंटेंटो के साथ ही रहने दो। यह नया फौजी खच्चर काफ़ी मज़बूत है, और अकेले इसी से काम चल जायगा।"

रेड इण्डियन दूत के आने के दो घण्टे पश्चात् बिशप सांता फ़े से रवाना हो गये। वे सीधे पेकोस गाँव को जा रहे थे, जहाँ से वे जैसिंटो को अपने साथ लेने को थे। वे दुपहरी ढलते-ढलते गाँव में पहुँचे, जो चारों ओर लाल पत्थर की चट्टानों से घिरा हुआ था तथा उनके एक ओर देवदारु वृक्षों वाला पहाड़ फैला हुआ था और सामने सदाबहार की झाड़ियों एवं देवदारु जाति के ही एक अन्य वृक्ष का जंगल फैला हुआ था। बिशप का विचार पेकोस में घोड़े बदल कर उसी दिन पर्वतों को पार करते हुए सीधे आगे बढ़ने का था, परन्तु जैसिंटो तथा उनके पास एकत्र वृद्ध रेड इण्डियनों ने उनसे रात भर वहीं रुकने का आग्रह किया और कहा कि वे दूसरे दिन बड़े तड़के ही रवाना हो जांय। नीले स्वच्छ आकाश में सूर्य चमक रहा था, परन्तु पश्चिम दिशा में, पहाड़ के पीछे, काले रंग के घने बादल का एक विशाल टुकड़ा पर्वत-खण्ड की भाँति स्थिर खड़ा था। बूढ़ों ने उसकी ओर देख कर सिर हिलाया।

"बड़े जोर का तूफ़ान आयेगा," गवर्नर ने गम्भीरता से कहा। बड़ी अनिच्छा से बिशप उतर पड़े और खच्चरों को जैसिंटो के हवाले किया; उन्हें लगा जैसे वे अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। रात होने में अब भी एक घण्टे की देर थी और इतनी देर वे गाँव तथा पुराने मिशन गिरजाघर के खण्डहर के बीच के चट्टानी मैदान में टहलते रहे। सूर्य अब एक लाल विशाल गोले के रूप में डूबने को था। वह चीड़ के वृक्षों से आच्छादित पर्वत-शिखर पर चमकते हुये ताँबे के रंग का लाल प्रकाश फेंक रहा था तथा उस स्याही के रंग के अशुभ-सूचक बादल के छोरों को पिघले हुए चाँदी की भाँति चमका रहा था। गिरजाघर की लाल मिट्टी की विशाल दीवारें,

जो ईंट के चूरे की तरह लाल थीं, आधी गिरी हुई दशा में विषाद की कहानी कह रही थीं—छत का एक भाग गिर चुका था और शेष गिरने ही वाला था।

इस घड़ी फ़ादर जोसेफ़ बहुत ही बीमार दशा में एक रेड इण्डियन गाँव के गन्दे एवं अस्वस्थ वातावरण में, जाड़े के दिनों में, पड़े हुए थे। बिशप सोच रहे थे कि आखिरकार वे अपने मित्र को इस कठिन एवं खतरनाक जीवन में क्यों घसीट लाये? फ़ादर वेलेंट बचपन से ही दुर्बल शरीर के थे, यद्यपि उनमें अथाह उत्साह के परिणाम-स्वरूप कष्ट झेलने की अद्भुत शक्ति थी। मांटफ़ेरांड धार्मिक विद्यालय के शिक्षकों की आदत बच्चों को अनावश्यकता से अधिक लाड़-प्यार करने की नहीं थी; परन्तु प्रत्येक वर्ष वे इस युवक को विश्राम के लिये ऊँचे वाल्विक पहाड़ों पर भेज दिया करते थे, क्योंकि कालेज-जीवन के अवरुद्ध वातावरण में रहते-रहते उनकी शक्ति क्षीण हो जाती थी। जब वे और फ़ादर लातूर ओहिओ में धर्म-प्रचारकों का काम कर रहे थे, तो दो बार फ़ादर जोसेफ़ मृत्यु के निकट पहुँच चुके थे; एक बार तो वे हैज़ा से इतना अधिक बीमार हो गये थे कि समाचार-पत्रों ने उनका नाम मृतकों की सूची में छाप दिया था। उस अवसर पर उनके ओहिओ के बिशप ने उनका नाम 'मृत्युञ्जय' रख दिया था। सच ही तो है, फ़ादर लातूर ने स्वयं को आश्वस्त किया, 'ब्लांचेट' ने मृत्यु को इतनी बार चकमा दिया था कि यह सम्भावना तो बराबर ही थी कि एक बार फिर वे ऐसा कर सकेंगे।

गिरजाघर के खण्डहरों में चक्कर लगाते हुये बिशप ने देखा कि पवित्र वर्तन आदि रखने वाला कक्ष अब भी साफ़ था और उसमें सील नहीं थी, और उन्होंने निर्णय किया कि वे इसी स्थान में, अंदर की दीवारों में बनी हुई मिट्टी की बेंचों पर कम्बल ओढ़ रात बिता देंगे। वे इस कमरे की जांच करने में तल्लीन थे कि बड़ी तेज़ हवा चलने लगी और बड़ी जल्दी अंधेरा छा गया। बस्ती के मकानों के छोटे-छोटे दरवाज़ों से जलती हुई

आग का लाल प्रकाश झलक रहा था, जो उस समय आँखों को असाधारण रूप से सुहावना लग रहा था। उन्होंने बाहर चट्टान पर जैसिंटो की दुबली-पतली आकृति देखी, जो खड़ा-खड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपना कम्बल सिर पर ओढ़े हुए था और हाथ उठा कर कम्बल के एक भाग से हवा से बचने का प्रयास कर रहा था।

उस रेड इण्डियन लड़के ने उन्हें बताया कि भोजन तैयार है और बिशप उसके साथ उन छोटी-छोटी झोपड़ियों की क़तार में से उसकी अपनी कुटी में गये। ये सभी झोपड़ियां एक ही ढंग की तथा एक दूसरे से मिली हुई एक साथ ही बनी थीं। जैसिंटो के दरवाज़े के पास एक सीढ़ी थी, जो दूसरे तल्ले पर जाने के लिये लगी थी, परन्तु वह किसी दूसरे परिवार का निवास-स्थान था; जैसिंटो के घर की छत ऊपर वाले परिवार के घर का बरामदा था। बिशप ने नीचे दरवाज़े में सिर झुकाकर प्रवेश किया और झोपड़ी के अन्दर प्रवेश किया; उस कमरे की फ़र्श चौखट से एक क़दम नीचे थी—आंधी तूफ़ान से बचने का रेड इण्डियनों का यही तरीक़ा था। जिस कमरे में वे उतरे, वह लम्बा एवं संकरा था, उसकी दीवारों पर सफ़ाई से सफ़ेदी की हुई थी; अपनी सादगी के कारण वह देखने में बड़ा स्वच्छ लग रहा था। दीवारों पर लोमड़ी की एकाध खालें तथा तार में पिरोयी हुई सूखी लौकियां एवं लाल मिर्चें टंगी हुई थीं। गाढ़े रंग के कम्बल, जिन पर जैसिंटो को बड़ा नाज़ था, मिट्टी की बनी एक बेंच पर लपेट कर रखे हुए थे—यहीं पर वह और उसकी पत्नी आग के पास सोते थे। उस बेंच की मिट्टी दिन भर में गरम हो जाती थी और रात भर तक उसकी गरमी बनी रहती थी, जिस प्रकार रूसी कृषकों के 'स्टोव-बेड' होते थे। भट्ठी पर एक बर्तन में सेम के बीज तथा सुखाया हुआ मांस पक रहा था। देवदारु की जलती हुई लकड़ी का सुगंध युक्त धुआं कमरे में फैल रहा था। जैसिंटो की पत्नी क्लारा पादरी को देख कर मुस्करायी। उसने मांस की कढ़ी तश्तरियों में परसा और बिशप तथा जैसिंटो अपनी-अपनी प्लेटें लेकर भट्ठी

के पास फ़र्श पर बैठ गये। उन दोनों के बीच क्लारा ने एक बर्त्तन में लौकी के बीजों के साथ सेंकी हुई रोटियां रख दी। रेड इण्डियनों में यह रोटी बहुत अच्छी वस्तु समझी जाती थी, जैसे कि श्वेतों में किशमिश की रोटी समझी जाती थी। बिशप ने ईश्वर का नाम स्मरण किया और हाथ से रोटी तोड़ी। दोनों आदमियों ने भोजन आरम्भ किये और क्लारा बैठी उन्हें देख रही थी तथा बीच-बीच में चमड़े की डोर से छत से लटके हुये मृगछाले का बना एक छोटा सा पालना हिलाती-डुलाती जाती थी। पूछने पर जैसिंटो ने दु:खी होकर बताया कि बच्चा बीमार है। फ़ादर लातूर ने उसे देखने की इच्छा नहीं प्रकट की; वे जानते थे कि वह कई चीथड़ों में लपेटा होगा, यहां तक कि ठण्डी हवा से बचाने के लिये उसका सिर और मुँह भी ढँका होगा। रेड इण्डियनों के बच्चे जाड़े में कभी नहीं नहलाये जाते थे, और बीमार बच्चों के लिये कोई चिकित्सा आदि बतलाना बेकार था। इस सम्बन्ध में रेड इण्डियन लोग सब की अनसुनी कर देते थे।

यह बड़े दु:ख की बात थी कि वे जैसिंटो के बच्चे के लिये कुछ नहीं कर सकते थे। पेकोस गाँव में बहुत से पालने नहीं थे। यह कबीला धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा था; शिशु-मरण बहुत अधिक था, नव दम्पतियों के बच्चे बहुत कम पैदा होते थे,—ऐसा लगता था, जैसे प्रजनन शक्ति ही क्षीण हो गयी हो। बार-बार चेचक के प्रकोप में बहुत से लोग मर गये थे।

जन संख्या की उत्तरोत्तर कमी के अन्य भी कारण थे, जिन पर सांता फ़े के बहुत से भलेमानस विश्वास करते थे। पेकोस के सम्बन्ध में अन्य गाँवों की अपेक्षा बहुत अधिक अंध-गाथायें थीं; ऐसा कदाचित् इसलिये था कि श्वेत लोग इस गाँव से अत्यधिक आकृष्ट हुए थे और अपेक्षाकृत वह अधिक ऐतिहासिक था। यह कहा जाता था कि यहां के लोग अनादिकाल से ही पहाड़ की किसी खोह में एक पवित्र आग बराबर जलती रखे हुए थे; यह आग कभी बुझने नहीं पायी थी तथा श्वेत लोगों को उसके सम्बन्ध में कभी

नहीं बताया गया था। कहा तो यह जाता था कि इस आग को बराबर जलाये रखने का काम जिन व्यक्तियों को दिया जाता था, और इस काम के लिये कुनबे के सर्वश्रेष्ठ नवयुवक ही चुने जाते थे, उनकी शक्ति इस काम में क्षीण हो जाती थी। फ़ादर लातूर ने सोचा कि कदाचित् ही यह सच हो। किसी पहड़ की खोह में, जहाँ लकड़ी की इतनी प्रचुरता हो, किसी आग को, जो इतनी सूक्ष्म हो कि शताब्दियों तक उसे गुप्त रखना सम्भव हो सके, जलाये रखना इतना कठिन क्यों हो?

और, फिर सांपों की भी गाथा थी, जिसे प्रथम बार प्रारम्भिक अन्वेषकों (स्पेनिश और अमेरिकन दोनों) ने बतायी और जिस पर तब से ही विश्वास किया जा रहा है। गाथा यह थी कि इस कबीले की सर्प-पूजा की एक विचित्र परम्परा थी; वे विषधर सर्पों को अपने मकानों में छिपा कर रखते थे, और उन्होंने पहाड़ में कहीं एक विशाल अजगर को घेर कर रखा था, जिसे वे कुछ विशेष भोज आदि के अवसर पर बस्ती में लाते थे। कहा जाता है कि वे इस विशाल अजगर को छोटे-छोटे शिशुओं की बलि देते थे, और इस प्रकार उनकी संख्या कम होती गयी।

यह अपेक्षाकृत बहुत अधिक युक्ति संगत जान पड़ता था कि श्वेत लोगों द्वारा यहाँ लाये गये संक्रामक रोग ही इस कबीले की उत्तरोत्तर घटती के वास्तविक कारण थे। रेड इण्डियनों में चेचक, लाल बुखार तथा कूकर-खाँसी उतने ही मृत्यु-कारक सिद्ध होती थी, जितना आंत्रिक ज्वर और हैज़ा। निस्संदेह, कबीले वालों की संख्या वर्ष प्रति वर्ष कम होती जा रही थी। जैसिंटो की झोपड़ी जीवित बस्ती के एक किनारे पर थी; उसके पीछे मृत बस्ती की लम्बी चट्टानी रेखा थी—खाली झोपड़ियाँ जो आँधी, वर्षा, तूफ़ान आदि से नष्ट हो गयी थीं, और अब मिट्टी और पत्थर के ढेर ही रह गये थे। बस्ती में एक सौ से अधिक बालिग़ नहीं थे।* कारोनेडो

* वास्तव में, जब अमेरिका ने न्यू मैक्सिको पर अधिकार किया, तो मेकोस का यह गाँव वीरान हो चुका था।

के अभियान के समय के समृद्ध एवं घनी आबादी वाले इस नगर में अब इतना ही कुछ शेष था। उसकी रिपोर्ट के अनुसार, उस समय इस रेड इण्डियन नगर में छः हजार प्राणी रहते थे। उनके हरे-भरे खेत थे जिनकी सिंचाई पेकोस नदी से की जाती थी। नदियों में मछलियाँ बहुतायत से पायी जाती थीं, जंगलों में खूब शिकार मिलते थे। बस्ती वस्तुतः इन हरे-भरे पर्वतों के घुटनों पर पलती थी, जैसे कोई दुलारा बच्चा हो। और, दूसरी ओर, गाँव के सामने सदाबहार की झाड़ियों से युक्त पठारी मैदानों में स्पेनियार्ड तम्बू डाले डटे हुए थे और अपने इन अभागे मेजबानों से अनाज, जानवरों की खालें एवं रोवें, सूती कपड़े आदि वसूल करते थे। कहा जाता था कि यहीं से वे वसंत ऋतु में क्वोवेरा के सात सुनहरे नगरों की खोज में अपनी अगामी यात्रा पर रवाना हुए थे और अपने साथ पेकोस गाँव से अपहरण किये हुए गुलाम एवं रखेल औरतें ले गये थे।

आग के पास बैठे हुए तथा पहाड़ों से पठार पर गरजती हुई हवा की ध्वनि सुनते हुए फ़ादर लातूर यही बातें सोच रहे थे; और वे यह सोचने लगे कि क्या उसी आग के पास बैठा हुआ जैसिंटो भी वही बातें सोच रहा है। वे जानते थे कि यह हवा सूर्यास्त के समय वाले उन काले बादलों के कारण बह रही है; परन्तु यह भी तो हो सकता है कि वह किसी अंधकारमय अतीत की ही गाथा सुना रही हो। इस भयानक हवा के विरुद्ध उठने वाली अकेली मानव आवाज़ पालने में बीमार पड़े हुए बच्चे की कराह ही थी। क्लारा एक कोने में बैठी हुई चुपचाप खा रही थी, जैसिंटो आग की ओर टकटकी लगाये था।

विशप ने आग की ही रोशनी में एक घण्टे तक धार्मिक पुस्तक पढ़ी। फिर हड्डियों तक गरम होकर और यह निश्चित् होकर कि उनके कम्बल का बंडल भी खूब गरम हो गया होगा, वे जाने के लिये उठे। जैसिंटो भी कम्बल तथा अपना एक भैंसों वाला कपड़ा लेकर उनके पीछे चला। वे लाल दरवाज़ों की एक क़तार से सामने से गुज़रते हुए, बनस्पतिहीन चट्टानी

मैदान पार करके गिरजा के खण्डहरों में पहुँचे, जिसकी पार्श्ववर्ती दीवारें अपने सहारों पर अड़ी हुई अब भी तूफ़ान का सामना कर रही थीं। तारों का क्षीण प्रकाश खण्डहर के अंदर पहुँच रहा था।

२

गुफा-द्वार

बिशप को प्रातःकाल बहुत जल्दी ही उठने में कोई कठिनाई नहीं हुई। आधी रात के बाद उनका शरीर शीत से ठिठुरने और अकड़ने लगा। बिस्तर पर ही पड़े-पड़े उन्होंने प्रार्थना की; उन्हें फ़ादर वेलेंट का यह कथन याद आया कि यदि आप पहले अपनी प्रार्थना कह लें, तो फिर आपको दिन में अन्य कार्यों के लिये बहुत समय मिलेगा।

निस्तब्ध बस्ती में से होकर वे जैसिंटो के दरवाज़े पर पहुँचे और उसे जगाकर आग जलाने को कहा। उधर वह लड़का खच्चरों को तैयार करने गया और इधर फ़ादर लातूर ने अपने थैले से कॉफ़ी बनाने का बर्तन, टीन का प्याला तथा एक मेक्सिकन डबल रोटी निकाली। इस रोटी और बिना दूध की कॉफ़ी के सहारे वे कई दिन काट सकते थे। जैसिंटो बिना नाश्ता किये ही रवाना हो जाना चाहता था, परन्तु फ़ादर लातूर ने उसे बैठा लिया और डबल रोटी उसे भी खिलायी। रेड इण्डियन घरों में डबल रोटी बहुत कम ही मिलती है। क्लारा अब भी अपने बच्चे के साथ उस मिट्टी की बेंच पर सो रही थी।

चार बजे वे सड़क पर थे। जैसिंटो कम्बल आदि ढोने वाले खच्चर पर सवार था। वह अपने यहाँ के पहाड़ी रास्तों से भली-भाँति परिचित था; अतः वह अंधेरे में भी उनका अनुसरण कर सकता था। दोपहर होते-होते खच्चरों को थोड़ा विश्राम देने के विचार से बिशप ने थोड़ी देर रुकने की बात कही, परन्तु उनके पथ-प्रदर्शक ने आकाश की ओर देखकर सिर हिला दिया। सूर्य का कहीं पता नहीं था, वायुमण्डल धुंधला हो रहा था

और बर्फ़ पड़ने के लक्षण दीख रहे थे। शीघ्र ही बर्फ़ पड़ने लगी—पहले तो धीरे-धीरे, परन्तु वह उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। वायुमण्डल में तैरते हुए हिम-चूर्णों के कारण उनके सामने चीड़ के वृक्षों की लम्बी क़तार दृष्टि में उत्तरोत्तर छोटी होती गयी। दोपहर के थोड़ी देर पश्चात् हवा के एक झोंके ने यात्रियों को बर्फ़ के भँवर में डुबो दिया और फिर भयंकर तूफ़ान आरम्भ हो गया। तूफ़ान समुद्री तूफ़ान जैसा था और वायुमण्डल हिम-चूर्णों से पूर्णतः आच्छादित हो गया। बिशप मुश्किल से अपने पथ-प्रदर्शक को देख पा रहे थे—वे उसके कुछ ही अंग देख पाते थे, कभी सिर दिखायी पड़ा तो कभी कंधा और कभी केवल उसके खच्चर की काली पूँछ ही। मार्ग के चीड़ वृक्ष एक क्षण के लिये दिखलायी पड़े और फिर बर्फ़ के बवंडर में पूर्णतः अदृश्य हो गये। मार्ग, सभी सीमाचिह्न तथा स्वयं पर्वत भी लुप्त हो गये।

जैसिंटो खच्चर पर से नीचे कूद पड़ा और कम्बल का बंडल नीचे उतार लिया। थैले बिशप को फेंक कर देते हुए उसने चिल्लाकर कहा—'मेरे साथ आइये, मैं एक स्थान जानता हूँ। जल्दी कीजिये फ़ादर।''

बिशप ने आपत्ति की कि वे खच्चरों को नहीं छोड़ सकते परन्तु जैसिंटो ने कहा कि उन्हें भाग्य के सहारे छोड़ दीजिये।

अगला घण्टा फ़ादर लातूर की कष्ट झेलने की शक्ति की परीक्षा का समय था। उनको कुछ भी नहीं दिखायी पड़ रहा था और मुंह बाये वे हाँफ रहे थे। वे अस्पष्ट दीख पड़ने वाली चट्टानों पर येन केन प्रकारेण चढ़ पा रहे थे, मार्ग में गिरे हुए वृक्षों से टकरा कर गिरते थे, फिर उठते थे, गहरे गड्ढों में गिर पड़ते थे, फिर निकलते थे, परन्तु प्रतिक्षण वे रेड इण्डियन लड़के के कंधों पर पड़े लाल कम्बलों के बंडल को देखते हुए, उसी का अनुसरण कर रहे थे, जो लड़के के धुँध में अदृश्य हो जाने पर भी दिखलायी पड़ता रहता था।

अचानक बर्फ़ में कमी सी प्रतीत हुई। पथ-प्रदर्शक भी अचानक रुक

गया। बिशप ने देखा कि वे पर्वत की किसी वाहर निकली हुई चट्टान के नीचे खड़े थे, जो तूफ़ान से रक्षा कर रही थी। जैसिंटो ने कम्बलों का बंडल ज़मीन पर रख दिया और उस खड़े टीले पर चढ़ने की तैयारी करने लगा। ऊपर दृष्टि डालते हुए बिशप ने चट्टानों में एक विचित्र आकृति देखी। चट्टान की एक सुडौल सी परत और ठीक उसी के ऊपर वैसी ही एक दूसरी परत, तथा उन दोनों के बीच मुँह की आकृति का एक द्वार। उनको देखकर ऐसा लगता था, जैसे वे पत्थर के दो विशाल ओठ हों, जो तनिक खुले हों और आगे बढ़े हुए हों। जैसिंटो सुपरिचित गड्ढों के सहारे इस द्वार तक चढ़ गया। वहाँ पहुँच कर वह निचली चट्टान पर लेट गया और बिशप को भी सहारा देकर ऊपर चढ़ा लिया। उन्हें वहीं प्रतीक्षा करने को कहकर वह सामान ऊपर चढ़ाने फिर नीचे चला गया।

कुछ देर पश्चात् बिशप जैसिंटो तथा सामान के पीछे-पीछे इस गुफ़ा द्वार में प्रवेश करके उसके गले में नीचे उतरे। वहाँ एक लकड़ी की सीढ़ी थी, जिससे वे नीचे गुफ़ा की फ़र्श पर उतरे।

वहाँ उन्होंने स्वयं को एक गहरी कंदरा में पाया, जिसकी शक्ल बहुत कुछ ऊँची मेहराबों वाले गिरजाघर से मिलती-जुलती थी और जिसकी वाह्य रेखा बिलकुल अस्पष्ट एवं धुंधली थी, अन्दर वही प्रकाश था, जो उस संकीर्ण गुफ़ा द्वार से होकर नीचे पहुँचता था। यद्यपि बिशप को आश्रय की भारी आवश्यकता थी, तथापि सीढ़ी से नीचे उतरते समय वे हिचकिचाये और उन्हें इस स्थान से बड़ी घृणा हुई। गुफ़ा के अन्दर की हवा बर्फ़ की तरह ठण्डी थी, वह हड्डियों तक घुस जाती थी, और वहाँ उन्हें एक भयानक दुर्गंध मालूम हुई, जो तेज़ तो बहुत नहीं थी, लेकिन अरुचिकर बहुत। लगभग बीस फुट ऊपर छत में गुफ़ा-द्वार से प्रकाश की एक क्षीण किरण आ रही थी, जो किसी जंगले के आड़े डंडे की तरह लग रही थी।

बिशप आश्चर्य से चारों ओर देख रहे थे और कंदरा की लम्बाई-

चौड़ाई का अनुमान लगाने का प्रयास कर रहे थे और उधर उनका पथ-प्रदर्शक फ़र्श तथा दीवारों की सूक्ष्म जाँच में लगा हुआ था। सीढ़ी के पास ही लकड़ी के अधजले टुकड़ों का एक ढेर था। मालूम होता है, वहाँ आग जलायी गयी थी, और वह ताज़ी मिट्टी डालकर बुझा दी गयी थी—आग के बीच वाले भाग में मिट्टी का एक ढेर पड़ा हुआ था। कंदरा की दीवार से टेक कर देवदारु की लकड़ी के कई गट्ठे संभाल कर रखे हुए थे। फ़र्श की भली-भाँति जांच कर लेने के पश्चात् उनके पथ-प्रदर्शक ने बड़ी होशियारी से एक-एक लकड़ी उठाकर एक दूसरे स्थान पर लगाना आरम्भ किया। बिशप ने सोचा कि फ़ौरन ही वह आग जलायेगा, परन्तु वह कोई जल्दी नहीं कर रहा था। सचमुच लकड़ी का ढेर लगा लेने के बाद वह फ़र्श पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। फ़ादर लातूर ने उसे अब बिना देर किये आग जलाने को कहा।

"फ़ादर," उस रेड इण्डियन लड़के ने कहा, "मैं नहीं कह सकता कि आपको यहाँ लाकर मैंने ठीक किया या नहीं। मेरे कबीले के लोग इस स्थान पर अनुष्ठान आदि करते हैं और यह केवल हमीं लोगों को ज्ञात है। यहाँ से बाहर निकलने पर आप इस स्थान को बिल्कुल भूल जाइये।"

"मैं इसे निश्चय ही भूल जाऊँगा। परन्तु या तो फ़ौरन आग जलाओ अन्यथा बाहर तूफ़ान ही में चला जाय। मेरी तो तबीयत यहाँ खराब होने लगी है।"

जैसिटो ने कम्बलों का बंडल खोला और सबसे सूखा कम्बल बिशप को ओढ़ा दिया। फिर वह अधजली लकड़ियों एवं राख के ढेर के पास बैठ गया; और उसमें से पत्थर के टुकड़े एकत्र करने लगा, जो जलते शोलों को घेरने के लिये वहाँ रखे गये रहे होंगे। पत्थरों को अपने 'सराप' में एकत्र करके वह कंदरा की पिछली दीवार के पास ले गया, जहाँ उसमें उसके सिर से तनिक अधिक ऊँचाई पर एक सूराख सा दीख रहा

था। वह एक बड़े तरबूज़ के बराबर बड़ा था तथा आकार में कुछ अण्डाकार था।

पजारिटो पठार के काले ज्वालामुखी पर्वतों में इस आकार के बहुत से छेद पाये जाते हैं। परन्तु यहाँ तो यही एक छेद था और उसमें बिलकुल अँधेरा था और ऐसा लगता था कि उसमें से किसी एक दूसरी कंदरा को रास्ता जाता था। यद्यपि वह जैसिटो की ऊँचाई से थोड़ी अधिक ऊँचाई पर था, फिर भी हाथ उठाने पर वह उस तक पहुँच सकता था। बिशप को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एकत्र किये हुए पत्थरों को बड़ी कुशलता से तथा बिना कोई आवाज़ किये हुए इस छेद के द्वार पर एक दूसरे से सटा कर रखने लगा और थोड़ी देर में उसने सूराख बिलकुल बंद कर दिया। फिर उसने रखी हुई देवदारु की लकड़ी में से पतली-पतली खपच्चियाँ काट कर पत्थरों के बीच के छिद्रों में ठूंसने लगा। अन्त में उसने आग बुझाने के काम में आयी हुई मिट्टी में से थोड़ी मिट्टी लेकर उसे गुफा-द्वार में से उड़कर आयी हुई बर्फ़ से गीला किया। सानी हुई मिट्टी को उसने सूराख के मुँह पर अच्छी तरह लगा दिया और अपनी हथेली से उसे चिकना बना दिया। इस सारे काम में उसे मुश्किल से पन्द्रह मिनट लगे होंगे।

अपने इस कार्य के सम्बन्ध में बिना एक शब्द बोले वह आग जलाने के काम में लग गया। कन्दरा की दुर्गंध जो बिशप को इतनी बुरी लग रही थी, लकड़ी के जलते ही उसकी सुगन्ध के सामने समाप्त हो गयी। आग की गरमी ने भयानक ठण्ड समाप्त करने के साथ ही साथ वहाँ की हवा को भी शुद्ध कर दिया, परन्तु फ़ादर लातूर के कानों में जो एक विचित्र प्रकार की आवाज़ सी बज रही थी, वह नहीं बन्द हुई। पहले तो उन्होंने सोचा कि उन्हें सर में चक्कर आ रहा है, जिससे कानों में एक प्रकार की तन्त्री सी बज रही है और जो कदाचित् खून में ठण्डक आ जाने से पैदा हुई है। परन्तु कुछ गरम एवं स्वस्थ हो जाने के बाद अब उन्हें

इस कन्दरा में एक असाधारण प्रकार के स्पंदन का अनुभव हुआ। वहाँ मधुमक्खियों की भनभनाहट जैसी ध्वनि सुनाई पड़ रही थी या यों कहिये कि कहीं दूर बजने वाले ढोलों की आवाज़ सुनाई पड़ रही हो। कुछ देर बाद उन्होंने जैसिंटो से पूछा कि क्या तुम्हें भी ऐसा लग रहा है। वह दुबला-पतला रेड इण्डियन लड़का कन्दरा में प्रवेश करने के बाद से पहली बार अब मुस्कराया। उसने एक जलती लकड़ी उठा ली और प्रकाश के लिये मशाल की तरह उसे उठाये फ़ादर से अपने पीछे एक सुरंग में आने को कहा। यह सुरंग पहाड़ के अन्दर तक जाती थी और उसकी चौड़ाई उत्तरोत्तर कम होती जाती थी, यहाँ तक कि अन्त में उसकी छत को हाथ से छुआ जा सकता था। वहाँ पहुँच कर, वह पत्थर की फ़र्श पर बनी एक दरार के पास, जो मिट्टी से बन्द कर दी गयी थी, बैठ गया और अपने शिकारी चाकू से थोड़ी मिट्टी खोद कर उस पर अपना कान लगा कर कुछ सुनने लगा तथा बिशप को भी वैसा ही करने के लिये संकेत किया।

फ़ादर लातूर इस दरार पर बहुत देर तक कान लगाये पड़े रहे, यद्यपि उस दरार में से बड़े ज़ोर की ठण्ड आ रही थी। उन्हें ऐसा लगा जैसे वे विश्व की कोई सबसे प्राचीन ध्वनि सुन रहे हों। जो ध्वनि उन्हें उस समय सुनायी पड़ रही थी, वह धरती के नीचे किसी प्रतिध्वनित सुरंग में बहने वाली एक विशाल नदी की ध्वनि थी। पानी बहुत नीचे था, कदाचित् इतना नीचे कि वहाँ से पहाड़ की धरातल से ऊँचाई आरम्भ होती थी, जैसे कोई नदी अत्यन्त प्राचीन पर्वत की परतों के नीचे निपट अन्धकार में बह रही हो। ध्वनि तेज़ धार से बहने वाले पानी की आवाज़ जैसी नहीं थी, अपितु एक ऐसी विशाल नदी की आवाज़ जैसी थी, जो बड़े शान से अथाह जल राशि लेकर आगे बढ़ती है।

"यह तो अद्‌भुत है," अन्त में उठते हुए उन्होंने कहा।

"हाँ, फ़ादर।" जैसिंटो ने दरार में से खोदी हुई मिट्टी पर थूकना आरम्भ किया और उसे गीली करके फिर दरार पर चिपका दिया।

जब वे आग के पास लौटे तो गुफ़ा-द्वार से आने वाला प्रकाश पीला पड़ चुका था। बिशप ने दु:खी मन से देखा कि वह प्रकाश भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। उन्होंने अपने थैले से कॉफ़ी का बर्तन, एक डबल रोटी तथा बकरे के माँस का पनीर निकाला। जैसिंटो गुफ़ा-द्वार की निचली परत पर चढ़ गया और चीड़ के वृक्ष की एक टहनी को झकझोर कर कॉफ़ी के बर्तन तथा एक कम्बल में बर्फ़ भर ले आया। जिस समय जैसिंटो इस काम में लगा हुआ था, उसी समय बिशप ने अपनी जेब के फ्लास्क में से एक घूंट पुरानी लाग्रोस ह्विस्की पी। वे किसी रेड इण्डियन के सामने शराब पीना कभी नहीं पसन्द करते थे।

जैसिंटो ने कहा कि वह रोटी तथा बिना दूध की कॉफ़ी पाकर अपने को बड़ा भाग्यवान् समझता था। कॉफ़ी पीने के बाद खाली प्याले को उसने बिशप को वापस किया और हाथ अपने चौड़े रूमाल से पोंछते हुए प्रसन्नता से हँस पड़ा, जिससे उसके सभी सफ़ेद दाँत बाहर झलकने लगे।

"बड़े भाग्य से हम इसके समीप पहुँच गये थे," उसने कहा। "जब हमने खच्चरों को छोड़ा, तो मेरा अनुमान तो था कि मैं यहाँ पहुँच जाऊँगा, परन्तु मैं निश्चित नहीं था, क्योंकि मैं यहाँ कई बार नहीं आया था। आप डर गये थे, फ़ादर?"

बिशप ने सोच कर उत्तर दिया, "तुमने मुझे डरने का समय ही नहीं दिया, मेरे बच्चे! क्या तुम डर गये थे?"

"मैंने सोचा कि अब गाँव वापस नहीं पहुँचा जा सकता," उसने अपने कन्धे सिकोड़ते हुए उत्तर दिया।

फ़ादर लातूर आग की रोशनी में बहुत देर तक अपनी पूजा की पुस्तक पढ़ते रहे। प्रात:काल से ही उनका मस्तिष्क आध्यात्मिक बातों के अतिरिक्त अन्य विषयों में लगा हुआ था। अन्त में अब उन्हें नींद आने लगी। उन्होंने अपने साथ जैसिंटो से भी ईश्वर की प्रार्थना करायी, जैसा

कि वे हमेशा ही रात को एक साथ रहने पर करते थे, और कम्बल ओढ़ कर आग की ओर पाँव करके लेट गये। वे यह सोच कर सोये कि रात में वे उठेंगे और उस छोटे से अद्भुत सूराख को ज़रा ध्यान से देखेंगे, जिसे जैसिंटो ने इतने यत्न से बन्द किया था। मिट्टी लगा देने के बाद जैसिंटो ने उसकी ओर एक बार भी नहीं देखा था, और फ़ादर लातूर ने भी रेड इण्डियनों के रीति-रिवाजों का अनुसरण करते हुए, उसकी ओर एक बार भी देखने का प्रयत्न नहीं किया था।

वे रात को जगे भी, और अब भी जलती आग के कारण उस कन्दरा में काफ़ी रोशनी थी। परन्तु वहाँ दीवार के सहारे किसी अदृश्य वस्तु पर खड़ा हुआ उनका पथ-प्रदर्शक था। उसके हाथ चट्टान पर सीधे फैले हुए थे, उसका शरीर दीवार से चिपका हुआ था और उसका कान उसी ताज़ी लगायी हुई मिट्टी पर था, जैसे वह अत्यंत एकाग्र चित्त से सुनने का प्रयास कर रहा हो और इस प्रचण्ड उत्सुकता के कारण ही वह दीवार से चिपका हुआ लटका मालूम पड़ रहा था। बिशप ने बिना किसी प्रकार का शब्द किये अपनी आँखें बन्द कर लीं और सोचने लगे कि ऐसा अनुमान उन्होंने क्यों कर लिया था कि जब वे उठेंगे तो उनका पथ-प्रदर्शक सोता ही रहेगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल वे कन्दरा में से बाहर निकले और चमचमाती हुई दुनिया में पुनः पहुँचे। सूर्योदय के प्रकाश में हिमाच्छादित पर्वत-प्रदेश लाल रंग का हो रहा था। बिशप एक के बाद दूसरे चीड़ वृक्षों को खड़े देखते ही रह गये, जिन पर वह स्वर्णिम प्रभात प्रस्फुटित हो रहा था और जिनकी सभी शाखाएं अछूते हिम के गुलाबी बादलों से बोझिल हो रही थीं।

जैसिंटो ने कहा कि खच्चरों को ढूंढ़ना बेकार सिद्ध होगा। बर्फ़ के पिघल जाने पर वह काठी, लगाम आदि ढूंढ़ लेगा। वे आठ मील पैदल चलकर किसी खानाबदोश के खेमे तक पहुँचे, वहाँ किराये पर घोड़े लिये और तारों के ही प्रकाश में अपनी यात्रा पूरी की। जब वे फ़ादर वेलेंट के

पास पहुँचे, तो वे भैंसों की खाल से बने हुए विस्तर पर बैठे हुए मिले। उनका ज्वर उतर गया था और अब वे अच्छे होने लगे थे। बिशप के पहुँचने के पहले ही एक अन्य सच्चा मित्र उनके पास पहुँच गया था। किट कारसन ने, जो ताओस के दो रेड इण्डियनों के साथ फिर पहाड़ों पर हिरन के शिकार के लिये निकला था, सुना था कि इस गाँव में चेचक का प्रकोप हो गया है और विकार यहीं पर हैं। वह रक्षा के लिये तुरन्त दौड़ पड़ा था और काफ़ी हिरन का मांस साथ लिये हुए तूफ़ान शुरू होने के पहले ही बस्ती में पहुँच गया था। ज्योंही फ़ादर वेलेंट इस योग्य हुए कि वे घोड़े पर बैठ सकें, कारसन और बिशप उन्हें सांता फ़े वापस ले गये। यात्रा उन्होंने चार दिन में पूरी की, क्योंकि फ़ादर वेलेंट अभी काफ़ी कमज़ोर थे।

बिशप ने अपने वादे के अनुसार जैसिंटो की गुफ़ा के सम्बन्ध में कभी किसी से कोई चर्चा नहीं की, परन्तु उसके सम्बन्ध में उनका विस्मय से सोचना नहीं बन्द हुआ। रह-रह कर उन्हें उसकी याद आ जाया करती थी और घृणा से वे कांप उठते थे, यद्यपि वहां उन्हें ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ था, जिससे इस प्रकार की भावना को न्यायसंगत समझा जाता। घोर आवश्यकता के समय वहां उन्हें आश्रय मिला था। फिर बाद को जब उन्हें इस तूफ़ान की, यहां तक कि अपनी उस थकान एवं परेशानी की भी याद आती थी, तो उन्हें एक प्रकार का आनन्द ही मालूम होता था; परन्तु उस कन्दरा के, जिसने शायद उनकी जान बचायी थी, स्मरण मात्र से ही वे भयभीत हो उठते थे, वे सोचते थे कि कोई भी कहानी चाहे वह कितनी ही अद्भुत क्यों न हो, उन्हें अब किसी कन्दरा में जाने का प्रलोभन नहीं दे सकती।

घर वापस आने पर वे अब भी उस अनुष्ठानिक कन्दरा एवं जैसिंटो की विचित्र हरकतों के सम्बन्ध में एक प्रकार की जिज्ञासा का अनुभव करते थे। इसके आधार पर पेकोस निवासियों के धर्म के सम्बन्ध में जो अनेक अप्रिय गाथाएँ थीं, उनमें बहुत सी सम्भाव्य जान पड़ने लगीं। उन्हें अब

यह पूर्ण विश्वास हो गया कि न तो श्वेत लोग और न ही सांता फ़े के मेक्सिकन, रेड इण्डियनों के धार्मिक विश्वासों एवं उनके मस्तिष्क की कार्य-प्रणाली के सम्बन्ध में कुछ भी जानते हैं।

किट कारसन ने उन्हें बताया था कि ग्लोरीटा पास और पेकोस गाँव के बीच स्थित मालगोदाम का मालिक एक व्यापारी इन रेड इण्डियनों का एक प्रकार से पड़ोसी बन गया था और उनके सम्बन्ध में वह किसी से भी कम नहीं जानता था। उससे पहले उसके बाप ने यह दूकान रखी थी और माँ पास-पड़ोस में रहने वाली प्रथम श्वेत महिला थी। उस व्यापारी का नाम ज़ेब ऑरचर्ड था; वह उस पर्वत-प्रदेश में अकेला रहता था और रेड इण्डियनों तथा श्वेतों को नमक, चीनी, ह्विस्की तथा तम्बाकू बेचा करता था। कारसन ने बताया था कि वह ईमानदार और सच्चा था, रेड इण्डियनों का सच्चा मित्र था, और कभी किसी पेकोस की ही लड़की से विवाह करना चाहता था; परन्तु उसकी बूढ़ी माँ ने, जिसे 'श्वेत' होने पर बड़ा नाज़ था, इसे नहीं माना, और इस प्रकार वह अविवाहित एवं एकांत सेवी रह गया था।

फ़ादर लातूर अपनी किसी प्रचार-यात्रा के समय एक रात भर के लिये इस व्यापारी के साथ ठहरे थे और उससे पेकोस की प्रथाओं एक धार्मिक रीति-रिवाज़ों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें पूछीं।

ऑरचर्ड ने उन्हें बताया कि चिर-जाग्रत आग की लोक-गाथा निस्सन्देह सत्य है; परन्तु वह पहाड़ों में जलती हुई नहीं रखी गयी है, अपितु उनके गाँव में ही है। यह आग एक मिट्टी के चूल्हे में अर्द्ध-प्रज्ज्वलित आग है और शताब्दियों पहले, जब यह गाँव बसा था, तभी से जल रही है। सर्प की गाथा के सम्बन्ध में वह कुछ निश्चित नहीं कह सकता। उसने गाँव में विषधर अवश्य देखे हैं, परन्तु ऐसे साँप तो सभी जगह हैं। कुछ वर्ष पहले पेकोस गाँव के एक लड़के को साँप ने काट लिया था और वह ह्विस्की

के लिये उसके पास लाया गया था; उसका शरीर फूल गया था और उसकी दशा खराब थी, जैसा कि किसी भी लड़के की हो सकती थी।

बिशप ने ऑरचर्ड से पूछा कि जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है, क्या यह सम्भव है कि रेड इरिडयनों ने किसी विशाल अजगर को कहीं छिपा कर रखा है ?

"कोई न कोई जानवर तो अवश्य वे पहाड़ों में छिपा कर रखते हैं, जिसे वे धार्मिक अनुष्ठानों के लिये ले आते हैं," व्यापारी ने कहा। "परन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि वह सांप है या अन्य कोई जानवर। कोई भी श्वेत व्यक्ति रेड इरिडयनों के धर्म के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता, फ़ादर।"

बातचीत के दौरान में ऑरचर्ड ने यह स्वीकार किया कि जब वह बच्चा था, तो वह भी इन सांप की कहानियों के विषय में बड़ा उत्सुक रहता था, और एक बार रेड इरिडयनों के किसी त्यौहार के समय उसने उनके सभी कर्मों को छिप कर देखा था, यद्यिपि ऐसा करना बहुत निरापद नहीं था। वह दो रात तक पहाड़ पर छिप कर बैठा था, और उसने रेड इरिडयनों के एक दल को मशाल की रोशनी में एक भारी संदूक ले आते देखा था। यह एक बड़ा सन्दूक था और वज़न में इतना भारी था कि बांस की जिन बल्लियों पर लटका कर वह लाया गया था, वे लचक गयी थीं। "यदि मैं श्वेत लोगों को अंधेरे में ऐसा सन्दूक ले आते देखे होता," उसने कहा, "तो मैं यह अनुमान लगा सकता कि उसमें क्या है; शायद रूपया-पैसा हो, ह्विस्की हो या बन्दूक, कारतूस आदि। परन्तु यह देख कर कि वे लोग रेड इरिडयन हैं, मैं कुछ भी अनुमान नहीं लगा सका। सम्भव है कि उसमें कुछ विचित्र आकार के पत्थर ही रहे हों, जिनके प्रति उनके पूर्वजों ने कुछ खास धारणाएं बना ली हों। बहुत सी ऐसी वस्तुएं हैं, जिन्हें वे तो बहुत मूल्यवान् समझते हैं, परन्तु वे हमारे लिये कुछ भी नहीं हैं। उनके

अपने अंध-विश्वास हैं, और उनके मस्तिष्क प्रलय के दिन तक भी उन्हीं लीकों में बार बार घूमते रहेंगे।"

फ़ादर लातूर ने कहा कि पुरानी रीति-रिवाज़ों के प्रति सम्मान की भावना रेड इरिडयनों का एक ऐसा गुण है, जिसे वे वहुत पसन्द करते हैं और उनके अपने (बिशप के) धर्म में भी उसका बड़ा महत्त्व है।

व्यापारी ने उन्हें वताया कि रेड इरिडयनों में से वे बहुत से अच्छे कैथोलिक वना सकते हैं, परन्तु वे उन्हें उनके विश्वासों से अलग नहीं कर सकते। "उनके पुरोहितों के अपने अलग रहस्यानुष्ठान हैं। यह मैं नहीं जानता कि इसमें कितना सत्य है और कितना वनाया हुआ। मुझे एक घटना याद है, जो उस समय की है जब मैं वहुत छोटा था। एक रात पेकोस की एक रमणी गोद में एक बच्चा लिये यहाँ दौड़ी हुई आयी और मेरी माँ से विनती करने लगी कि वह उसे त्यौहार तक अपने पास छिपा ले क्योंकि उसने नेताओं को आपस में इशारा करते देख लिया था, और उसे पक्का विश्वास हो गया कि वे लोग साँप को उसके बच्चे की बलि देना चाहते हैं। चाहे वह सच रहा हो या झूठ, परन्तु उस बेचारी ने निश्चय ही इसे सच मान लिया था। माँ ने उसे अपने यहाँ रहने दिया, और उस समय इस घटना का मेरे ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा था।"

अध्याय ५

पादरी मार्टिनेज़

१

पूर्व व्यवस्था

बिशप लातूर जैसिंटो के साथ ताश्रोस की अपनी प्रथम आधिकारिक यात्रा पर पर्वतों से होकर चले जा रहे थे। ताश्रोस के पादरी का यह इलाक़ा उनके समूचे अधिकार-क्षेत्र में अलबुक़र्क के अतिरिक्त सबसे बड़ा एवं समृद्ध इलाक़ा था। वहां का पादरी तथा जनता दोनों ही अमेरिकनों के विरुद्ध थे तथा किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं चाहते थे। सिवा किसी स्पेनियार्ड के, कोई भी यूरोपियन विदेशी समझा जाता था। बिशप ने इस इलाक़े को अब तक छोड़ रखा था, ताकि इस लम्बी अवधि में उनका वैमनस्य ठण्डा पड़ जाय। कारसन की सहायता से वे वहां की स्थिति तथा वहां के पुराने शक्तिशाली पादरी एंटोनिश्रो जोज़ मार्टिनेज से, जो वहां के लौकिक एवं धार्मिक दोनों मामलों का शासक था, पूर्णतः अवगत हो चुके थे। फ़ादर लातूर के यहां आगमन के पूर्व वस्तुतः वह उत्तरी न्यू मेक्सिको के सभी पादरी-इलाकों का अधिनायक था, और सांता फ़े के सभी स्थानीय पादरी उसकी मुट्ठी में थे।

यह सर्वविदित बात थी कि पादरी मार्टिनेज ने ही पांच वर्ष पहले

ताग्रोस के रेड इण्डियनों के विद्रोह को उकसाया था, जिसमें बेएट नामक अमेरिकन गवर्नर तथा एक दर्जन अन्य श्वेत व्यक्तियों की हत्या कर दी गयी थी तथा उनके सिर की चमड़ी उतार ली गयी थी। ताग्रोस के सात रेड इण्डियनों पर एक सैनिक अदालत के सामने मुक़दमा चला था और उन्हें हत्या के अभियोग में फांसी दे दी गयी थी, परन्तु षड्यंत्रकारी पादरी से जवाब-तलब करने की कोई भी कोशिश नहीं की गयी थी। उलटे, इस मामले से पादरी मार्टिनेज़ ने काफ़ी लाभ उठा लिया था।

जिन रेड इण्डियनों को मृत्यु-दण्ड दिया गया था, उन्होंने पादरी मार्टिनेज़ को बुला कर उनसे विनती की कि वे उन्हें इस मुसीबत से, जिसमें उन्होंने ही उन्हें डाला था, बाहर निकालें। मार्टिनेज़ ने उनसे वादा किया कि यदि वे बस्ती के पास की अपनी जमीन उसके नाम लिख दें, तो वह उनकी जान बचा लेगा। उन्होंने उसकी बात मान ली, और जब जमीन का कानूनी ढंग से हस्तान्तरण हो गया, तो पादरी ने फिर उनके मामले की कोई चिन्ता नहीं की, और वह अपने जन्म स्थान अबीक़ी नगर चला गया। उसकी अनुपस्थिति में, सातों रेड इण्डियनों को नियत तिथि पर फांसी दे दी गयी। मार्टिनेज़ अब उनकी उपजाऊ जमीन पर खेती कराने लगा, जिससे वह उस इलाक़े का सब से अधिक सम्पत्तिशाली व्यक्ति बन गया।

फ़ादर लातूर ने मार्टिनेज़ को कई शिष्टतापूर्ण पत्र लिखे थे, परन्तु वे उससे मिले थे केवल एक बार, उस चिर-स्मरणीय अवसर पर, जब यह पादरी ताग्रोस से सांता फ़े तक केवल इसी लिये आया था कि यह नये बिशप को अस्वीकार करने में सांता फ़े के पादरी का हाथ मजबूत कर सके। यद्यपि उस घटना को बीते पर्याप्त समय हो चुका था, तथापि बिशप को लगता था, जैसे वह कल की बात हो,—ताग्रोस का पादरी ऐसा व्यक्ति नहीं था कि उसे कोई आसानी से भूल सके। सड़क पर उससे भेंट हो जाने पर उसकी महान् शारीरिक-शक्ति एवं निरंकुश स्वभाव की छाप

अवश्य पड़ती थी। वास्तव में वह बिशप से बहुत अधिक लम्बा नहीं था, परन्तु छाप यह छोड़ता था, जैसे वह कोई वृहत् व्यक्ति हो। उसके चौड़े कंधे भैंसों के कंधों की तरह थे; उसका बड़ा सिर एक मोटी गरदन पर चुनौती देता हुआ रखा हुआ था, और उसका भरा हुआ, लाल रंग का अंडाकार स्पेनिश चेहरा—विशप को सूक्ष्माति-सूक्ष्म विवरण में उसका चेहरा याद था। यह कितनी विचित्र बात थी कि वे पुनः इस चेहरे को देखेंगे; उभरा हुआ पतला माथा, चमकती हुई, पीली, गड्ढे में धँसी आँखें और फूले हुए गाल, जिनमें कोई गड्ढे आदि नहीं थे, जैसा कि आंग्ल-सैक्सन चेहरों में होता है, अपितु वे पूर्णतया मांसल थे, और भावनाओं के परिवर्तन के साथ-साथ उनमें भी चेहरे के अन्य भागों की भाँति क्षण-क्षण सिकुड़न, खिंचाव आदि होते रहते थे। उसका मुँह प्रचण्ड, असंयत इच्छाओं एवं निरंकुश स्वेच्छाचार का मूर्त रूप था; उसके मोटे ओठ बाहर निकले हुए तथा खिचे हुए थे, जैसे जानवरों की मांस पेशियाँ भय या उद्वेग से फूल जाती हैं।

फ़ादर लातूर ने यह समझ लिया कि कानून-विरुद्ध वैयक्तिक शक्ति के दिन अब यहाँ भी समाप्तप्राय थे, और इस पादरी का स्वरूप उन्हें अभी से सरल, चित्ताकर्षक, परन्तु वास्तव में शक्तिहीन तथा पूर्वकाल के अवशेष के रूप में दीखने लगा था।

बिशप और जैसिंटो पहाड़ से नीचे उतरे, रास्ता एक मैदान में पहुँचा, जो एक प्रकार की भटकने वाली झाड़ी के कुंजों से, जिसके तने मनुष्य की टाँग के बराबर मोटे थे, भरा था। जैसिंटो ने आसमान में उड़ती हुई धूल की ओर संकेत किया, जो तेजी से उनकी ओर बढ़ती आ रही थी,—सौ या अधिक सवारों का दल, जिसमें रेड इण्डियन और मेक्सिकन दोनों थे, अपने बिशप का स्वागत करने गाता-बजाता तथा बन्दूक दागता चला आ रहा था।

घुड़सवारों के समीप पहुँचने पर, उनमें स्वयं पादरी मार्टिनेज़ दिखलायी

पड़ा, जिसे आसानी से पहचाना जा सकता था। वह हिरन के चमड़े का ब्रीचेज तथा ऊँचे बूट पहने हुए था और उसकी एंड़ चाँदी की थी; वह सिर पर एक चौड़ी मेक्सिकन टोपी लगाये था और कंधों में एक लम्बी काली गरदनी बँधी थी, जो गड़रियों के ऊनी 'प्लेड' जैसा था। वह बिशप के पास तक आया और घोड़े की लगाम खींचकर रोकता हुआ टोपी उतार कर बिशप को नमस्कार किया और उसके साथी पादरियों के चारों ओर एकत्र होकर हवा में बन्दूकें दागने लगे।

दोनों पादरियों ने अगल-बगल घोड़े पर सवार लोस रांचोस दि ताओस में प्रवेश किया। ताओस एक छोटा सा नगर था, जिसके मकानों की दीवारें पीले रंग की थीं, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कें थीं और उसमें हरे-भरे फलों के बाग थे। वहाँ के सभी नागरिक गिरजाघर के सामने वाले मैदान में एकत्र हुए थे। जब बिशप उतर कर गिरजाघर में जाने लगे, तो स्त्रियों ने उनके चलने के लिये उस धूलि भरे मार्ग पर अपनी शालें बिछा दीं, और जब वे सिर झुकाये हुए लोगों के बीच से आगे बढ़ने लगे, तो पुरुषों और स्त्रियों में उनकी विशेष धार्मिक अंगूठी को चूमने के लिये छीना-झपटी होने लगी। अपने देश में जीन मेरी लातूर को यह सब बहुत बुरा लगा होता। परन्तु, यहाँ ये प्रदर्शन, के देहाती दृश्य एवं उपवनों, लहलहाते नागफनी के पौधों एवं भड़कीले रंग में सजायी हुयी वेदियों, क्लेश की मुद्रा में महात्मा ईसा तथा मलिन मेरी की मूर्तियों एवं चित्रों में तथा अन्य संतों की मानवाकृतियों में जो एक विचित्र भड़कीली शान थी, उसी के एक अंग जान पड़ते थे। उन्हें यह पहले ही ज्ञात हो चुका था कि यहां की जनता धर्म को भी नाटकीय बनाना आवश्यक समझती थी।

लोस रांचोस से रवाना होकर यह दल पूरे मैदान को पार करने के पश्चात् ताओस नगर में पादरी के घर पहुँचा, जो गिरजाघर के ठीक सामने था और जहां एक भारी भीड़ एकत्र हुई थी। सभी लोग घुटनों के बल बैठ गये, परन्तु एक दस बारह वर्ष का भद्दा-सा लड़का खड़ा ही रह

गया; उसका मुँह खुला था और वह अब भी सिर पर टोपी लगाये था। पादरी मार्टिनेज़ सिर झुकायी हुई कई स्त्रियों को कूदते-फांदते लड़के के पास पहुँचे, उसकी टोपी उतार ली और उसकी कनपटी पर कई थप्पड़ लगाये। फ़ादर लातूर के विरोध करने पर स्थानीय पादरी ने बड़ी धृष्टता से कहा —

"वह मेरा ही बेटा है, बिशप, और मैं उसे अदब, तहज़ीब सिखाना चाहता हूँ।"

तो यह है यहाँ का मिजाज़, बिशप ने मन में सोचा। परन्तु इस चुनौती से उनके संयत चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी और वे पादरी के घर के अन्दर गये। वे पहिले मार्टिनेज़ के लिखने-पढ़ने के कमरे में गये, जहाँ फ़र्श पर एक नौजवान व्यक्ति गहरी निद्रा में सोता हुआ पड़ा था। वह एक विशालकाय नवयुवक था, बहुत ही हट्टा-कट्टा और एक पुस्तक का तकिया बनाये चित लेटा था। उसकी गहरी सांस से उसका पेट अद्‌भुत रूप से फूलता और पिचकता था। वह एक फ्रांसिस्कन बादामी रंग का गाउन पहने हुए था और उसके बाल बहुत छोटे थे। उसको देखते ही पादरी मार्टिनेज़ ठहाका मार कर हँस पड़े और उसकी पसलियों में मजे के जोर से लात मारा। बेचारा घबड़ा कर उठा और अंदर आंगन में भाग गया।

"हे, सुनते हो", पादरी ने चिल्लाकर उससे कहा, "वे ही नौजवान दिन में सोते हैं, जो रात में परिश्रम बहुत करते हैं। तुम अवश्य ही मोमबत्ती जलाकर रात में बहुत देर तक पढ़ते रहे होगे। मैं धर्म-शास्त्र में तुम्हारी परीक्षा लूँगा।" इसका उत्तर एक हँसी से मिला, जो खिड़कियों से सुनायी पड़ी और जो आंगन के उस किनारे से आ रही थी, जहाँ वह व्यक्ति सूखने के लिये डाले गये किसी कपड़े के पीछे छिप गया था। उसने अपना लम्बा-चौड़ा शरीर झुका लिया और दो गीली चादरों के बीच अदृश्य हो गया।

"वह मेरा विद्यार्थी त्रिनिदाद है", मार्टिनेज़ ने कहा, "अर्रोयो होंडो के मेरे पुराने मित्र फ़ादर लुसेरो का भतीजा है। वह एक भिक्षु हैं, परन्तु हम उसे पादरी बनाना चाहते हैं। हमने उसे डुरैंगो के धर्म शिक्षालय में भेजा, परन्तु या तो उसे घर की बहुत याद आती थी या वह इतना मूर्ख है, कि कुछ भी नहीं सीख सका। इसलिये अब मैं ही उसे पढ़ा रहा हूँ। हम एक न एक दिन उसे पादरी बना कर ही छोड़ेंगे।"

फ़ादर लातूर से कहा गया कि वे इसे अपना ही घर समझें, परन्तु इसके लिये उनका मन गवाही नहीं देता था। वहाँ इतनी अधिक अव्यवस्था थी कि उनकी कोमल रुचि उसे स्वीकार नहीं कर सकती थी। पादरी की मेज़ पर सुँघनी बिखरी पड़ी थी और उस पर पुस्तकों का इतना ऊँचा ढेर लगा हुआ था कि उसके पीछे दीवार पर टँगा हुआ क्रूश उनकी आड़ में छिप जाता था। सारे मकान में जहाँ ही देखिये वहीं मेज़ों और कुर्सियों पर पुस्तकों का ढेर लगा हुआ था, तथा फ़र्श और पुस्तकों आदि पर आंधी से उड़ी हुई धूलि की परत जमी हुई थी। फ़ादर मार्टिनेज़ के जूते और हैट कोने में पड़े हुए थे, उनके कोट तथा अन्य कपड़े खूँटियों पर टँगे थे, कुर्सियों, मेज़ों आदि पर लटके पड़े थे। घर में बहुत सी नौकरानियाँ थीं, जिनमें बहुत सी नौजवान थीं और बहुत सी बूढ़ी। बहुत सी बड़ी-बड़ी पीली रंग की मुलायम रोयें वाली बिल्लियाँ इधर-उधर दौड़ रही थीं। ये किसी विशेष जाति की बिल्लियाँ मालूम पड़ती थीं। वे खिड़कियों पर सोती थीं, आँगन में कुयें की जगत पर पड़ी रहती थीं और उनमें से जो बहुत ढीठ थीं, सीधे भोजन की मेज़ पर आ जाती थीं, जहाँ उनका स्वामी बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हें अपनी प्लेट में से खाना खिलाता था।

जब बिशप और पादरी भोजन करने बैठे, तो मेजबान ने उस पेट निकले हुए नौजवान हट्टे-कट्टे व्यक्ति का, जो उनके आने पर फ़र्श पर सोया हुआ था, बिशप से परिचय कराया। उन्होंने फिर कहा कि त्रिनिदाद

लुसेरो उनके साथ पढ़ रहा है, और एक प्रकार से उनका सेक्रेटरी है। इतना कहकर पादरी ने आगे यह भी बताया कि वह अपना अधिकांश समय रसोई घर में बिताता है, और नौकरानियों को उनके काम में बाधा पहुँचाता रहता है।

यद्यपि ये बातें उस आदमी के सामने ही कही गयीं, परन्तु इसकी उसे जैसे कोई चिन्ता ही नहीं। उसका सारा ध्यान गोश्त की उस कढ़ी पर जमा हुआ था, जिसे वह प्लेट सामने आते ही असाधारण शीघ्रता से खाने लगा। बिशप ने बाद को यह अनुमान लगा लिया कि त्रिनिदाद के साथ किसी गरीब सम्बन्धी या नौकर की तरह व्यवहार किया जाता था। उसे छोटे-छोटे कामों के लिये यहाँ वहाँ दौड़ाया जाता था, बिना किसी संकोच के पादरी के जूते उठा कर लाने को कहा जाता था, आग जलाने के लिये लकड़ी लाने को कहा जाता था, पादरी का घोड़ा कसने को कहा जाता था। फ़ादर लातूर ने उसके व्यक्तित्व को इतना अधिक नापसन्द किया कि मुश्किल से उसकी ओर आँख उठा कर देख सके। उसका चेहरा इतना बेहूदा था कि उसे देखकर चिढ़ होती थी और नरम पनीर जैसा चिकना-चिकना सा लगता था। उसके मुँह के कोनों पर बहुत अधिक चर्बी के कारण बल पड़े हुए थे, जैसे कि स्वस्थ शिशुओं की जाँघों आदि में पड़ जाते हैं और उसके लोहे के फ्रेम वाले चश्मे का नाक पर का भाग मुलायम माँस में धँसा हुआ था। भोजन करते समय वह एक भी शब्द नहीं बोला, जैसे वह डर रहा हो कि अब फिर वह भोजन कभी नहीं देखेगा, जितना खाना हो, खा लो। एक क्षण के लिये जब उसका ध्यान प्लेट पर से हटा, तो फ़ौरन वह भोजन परसने वाली लड़की पर उतनी ही लालच भरी निगाहों से केंद्रित हो गया। लड़की उसकी ओर नाक सिकोड़ कर घृणा के भाव से देखती थी। विद्यार्थी को देखने से लगता था, जैसे वह प्रति क्षण किसी न किसी विषय-आक्रमण से अचेत एवं मुग्ध होता ही रहता है।

पादरी मार्टिनेज गले में एक रूमाल बाँध कर लटकाये हुए, ताकि

खाने की कोई चीज गिरने से उनका चोंगा न खराब हो, बड़े आनन्द से खा रहे थे। यद्यपि वहाँ पर बहुत से रसोइये थे, फ़ादर लातूर ने देखा कि भोजन अच्छा नहीं है। हाँ, अल पासो द नार्ते से आयी हुई शराब अवश्य अच्छी थी।

भोजन करते समय पादरी ने विशप से स्पष्ट तौर पर पूछा कि क्या वे किसी पादरी के लिये कुँवारा रहना अनिवार्य समझते हैं ?

फ़ादर लातूर ने केवल यह उत्तर दिया कि यह प्रश्न तो शताब्दियों पहले पर्याप्त वाद-विवाद के पश्चात् निर्णीत हो चुका है।

"हमेशा के लिये कुछ भी नहीं निर्णीत हुआ है", मार्टिनेज़ ने आवेश से उत्तर दिया। "फ्रांसीसी पादरियों के लिये कुवाँरापन बहुत अच्छा हो सकता है, परन्तु हम लोगों के लिये नहीं। स्वयं सन्त ऑगस्टिन ने कहा है कि प्रकृति के विरुद्ध न जाना अपेक्षाकृत अच्छा है। मुझे यह सिद्ध करने के लिये अनेक प्रमाण मिले हैं कि वृद्धावस्था में उन्हें इस पर पश्चात्ताप रहा कि वे ब्रह्मचारी क्यों बने रहे।"

विशप ने कहा कि उन्हें सन्त आगस्टिन के अभिलेख के उन अंशों को देखकर बड़ी प्रसन्नता होगी, जिनसे पादरी साहब इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, क्योंकि सन्त ने जो कुछ लिखा है, उससे वे अच्छी तरह परिचित हैं।

"मैंने इन अंशों को अलग लिखकर कहीं रख लिया है। आपके जाने के पहले मैं इसे ढूँढ़ कर आपको दिखाऊँगा। आपने उनके अभिलेखों को कदाचित् बन्द मस्तिष्क से पढ़ा है। कुआँरे पादरी तो उचित-अनुचित का ज्ञान ही खो बैठते हैं। कोई भी पादरी, जब तक स्वयं पाप में नहीं गिरता, यह अनुभव नहीं कर सकता कि पाप के पश्चात् पछतावा कैसा होता है, तथा उसके लिये क्षमा कैसे मिलती है। चूँकि काम की तृप्ति सबसे बड़ा प्रलोभन है, यह अच्छा है कि वह इसका कुछ अनुभव कर ले। आत्मा को अनशनों एवं प्रार्थना से नहीं तुष्ट किया जा सकता; उसे भयानक पाप द्वारा पतित कर देना चाहिये, जिससे वह पाप के बाद क्षमा का अनुभव कर

सके और फिर निखर कर ऊपर उठे। अन्यथा, धर्म नीरस तर्कशास्त्र के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।"

"यह एक ऐसा विषय है, जिस पर हम बाद को विस्तार में बातें करेंगे", बिशप ने धीरे से कहा। "मैं अपने समूचे अधिकार-क्षेत्र में यथा सम्भव शीघ्र ही इन रीतियों का सुधार करूंगा। मुझे विश्वास है कि थोड़े ही दिनों में यहाँ ऐसा कोई पादरी नहीं रह जायगा, जो उन सारी प्रतिज्ञाओं का पालन नहीं करता, जो उसने गिरजाघर का सेवाव्रत लेने के पहले की थी।"

साँवला पादरी इस पर हँस पड़ा, और बड़ी बिल्ली को, जो उसके कंधे पर चढ़ गयी थी, उतार कर ज़मीन पर फेंक दिया। "यह आपको व्यस्त रखेगा, बिशप। यहाँ प्रकृति आप से आगे बढ़ी हुई है। इसके बावजूद, यहाँ के हमारे स्थानीय पादरी आपके फ्रांसीसी जेसुइटों की अपेक्षा अधिक धार्मिक हैं। यहाँ का हमारा ईसाई सम्प्रदाय एक जीवित सम्प्रदाय है, न कि यूरोपीय ईसाई सम्प्रदाय की एक प्राणहीन शाखा। हमारा धर्म यहाँ की धरती से उत्पन्न हुआ है और उसकी अपनी अलग उत्पत्ति है। हम तो महात्मा ईसा को ही पितृ तुल्य सम्मान प्रदान करते हैं, परन्तु रोम के अधिकार को बिलकुल नहीं मानते हैं। हम रोम की धर्म-व्यवस्था समिति से कोई सहायता नहीं चाहते और उसके हस्तक्षेप को बुरा मानते हैं। फ्रांसिस्कन फ़ादर्स ने जिस धर्म की स्थापना यहाँ की थी, वह मर चुका था; यह तो पुनर्जीवन है और यहीं से उसे प्राप्त हुआ। यहाँ के लोग अब भी संसार में सब से अधिक धार्मिक बचे हुए हैं। यदि आप यूरोपीय औपचारिकताओं से उनके विश्वासों एवं आस्थाओं को नष्ट करेंगे, तो वे नास्तिक और लम्पट बन जायेंगे।"

इस भाषण के उत्तर में बिशप ने शान्ति से कहा कि मैं यहाँ लोगों को उनके धर्म से वंचित करने नहीं आया हूं, परन्तु यदि यहाँ के कुछ पादरी अपनी रहन-सहन का ढंग नहीं बदलते, तो बाध्य होकर उन्हें उनके पद से च्युत करना पड़ेगा।

फ़ादर मार्टिनेज़ ने अपना गिलास भरा और बड़ी मस्ती से उत्तर दिया। "आप मुझे पदच्युत नहीं कर सकते, बिशप। प्रयास करके देख लीजिये। मैं यहाँ अपना अलग धर्म-सम्प्रदाय संगठित कर लूँगा। आप ताओस में अपना फ्रांसीसी पादरी रख सकते हैं, परन्तु जनता मेरे साथ रहेगी।"

इतना कह कर वह कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ और आग के पास खड़ा होकर अपनी पीठ सेंकने लगा; उसने अपना चोंगा कमर के ऊपर तक उठा लिया, जिससे उसके पतलून में सीधे आँच लगने लगी। "आप अभी नौजवान हैं, बिशप साहब," अपना बड़ा सिर पीछे झुकाकर धुएँ से काले हुए छत के खंम्भों पर दृष्टि फेरते हुए वह कहने लगा। "और आप रेड इण्डियनों तथा मेक्सिकनों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते। यदि आप यहाँ यूरोपीय सभ्यता का प्रचलन करने तथा हमारे पुराने तरीकों को बदलने, उदाहरण के लिने रेड इण्डियनों के गुप्त नृत्यों में हस्तक्षेप करने, या 'पेनीटेंटों' के बलि संस्कार की प्रथा को बन्द करने, का प्रयत्न करेंगे, तो मैं कहे देता हूँ कि शीघ्र ही आपकी मृत्यु हो जायेगी। मैं आपको सलाह देता हूँ कि सुधार आरम्भ करने के पहले आप हमारे स्थानीय रीति-रिवाज़ों का अध्ययन करें। मेरे फ्रांसीसी मित्र, आप यहाँ असभ्यों के बीच, दो जंगली जातियों के बीच हैं। बहुत-सी ऐसी बुरी बातें, जिनकी आपके धर्म में मनाही है, रेड इण्डियनों के धर्म के एक अंग हैं। आप यहाँ फ्रांसीसी फैशन नहीं प्रचलित कर सकते।"

इसी समय वह विद्यार्थी, त्रिनिदाद, धीरे से उठा और बिशप को नौकर की तरह झुक कर सलाम करते हुए, दबे पाँव रसोई घर की तरफ भाग गया। जब दरवाज़े से उसकी भूरी कमीज बिलकुल अदृश्य हो गयी, फ़ादर लातूर अपने मेज़बान की ओर घूम पड़े।

"मार्टिनेज़, मैं युवकों की उपस्थिति में इस प्रकार असंयत ढंग से बात करना बहुत अनुचित समझता हूँ, विशेष कर ऐसे किसी युवक की

उपस्थिति में, जो पादरी की शिक्षा प्राप्त कर रहा हो। इसके अतिरिक्त, मेरी समझ में यह नहीं आया कि ऐसे मूर्ख नवयुवक को पादरी बनाने का क्यों प्रयास किया जा रहा है। मेरे अधिकार-क्षेत्र में वह कभी भी पादरी नहीं बन सकता।"

पादरी मार्टिनेज़ हंस पड़ा और उसके बड़े-बड़े पीले दांत दिखलायी पड़ने लगे। उसका हंसना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि उसके दांत बहुत ही बड़े थे, स्पष्ट तौर पर गँवारों जैसे। "ओह, त्रिनिदाद अपने चाचा का जो अब वृद्ध हो रहे हैं, सहायक बन कर अरोंयो होंडो जायगा। यह त्रिनिदाद बड़ा ही धार्मिक व्यक्ति है। आप उसे 'पैशन वीक' (ईस्टर से पहले का सप्ताह) में देखिये। वह अबीक़ी पहुँच कर बिलकुल दूसरा आदमी बन जाता है; भारी से भारी क्रूश को पहाड़ों पर ढो कर ले जाता है और जितने कोड़े वह खाता है, उतना अन्य कोई नहीं। वह यहाँ पीठ पर इतने घाव लेकर आता है कि नौकरानियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ता है।"

फ़ादर लातूर थके हुए थे और भोजन के फ़ौरन ही बाद वे अपने कमरे में चले गये। उन्होंने जाँच करके देखा कि बिस्तर साफ़ तथा आरामप्रद था, परन्तु उसके आस-पास के वातावरण के सम्बन्ध में वे शंकित थे। उन्हें सारे घर का ही वातावरण अच्छा नहीं लग रहा था। बिस्तर पर पड़ने के बाद प्लेट आदि धोने तथा आँगन के उस पार से स्त्रियों के खिलखिला कर हँसने की आवाज़ के कारण वे बहुत देर तक जागते रहे और जब वह बन्द हुई, तो पास के किसी कमरे से फ़ादर मार्टिनेज़ के खर्राटों की आवाज़ आने लगी। अवश्य ही आँगन में खुलने वाले अपने दरवाजे को उन्होंने खुला छोड़ रखा होगा, अन्यथा कच्ची ईंटों की बनीं दीवार इतनी मोटी थी कि उससे होकर आवाज नहीं आ सकती थी। पादरी क्रुद्ध साँड़ की तरह फुफकार रहा था, और अंत में बिशप ने उठकर उसका दरवाजा बंद करने का निर्णय किया। वे उठे। उन्होंने मोमबत्ती जलायी और आधे मन से अपने कमरे का दरवाजा खोला। हवा का एक हलका झोंका आया।

और कोई काली वस्तु दीवार के पास से उड़कर बीच कमरे में आ गयी। कदाचित् कोई चूहा हो, बिशप ने सोचा। परन्तु नहीं, वह तो स्त्री के सिर के बालों की एक लच्छी थी, जो किसी फूहड़ स्त्री ने बाल झाड़ते समय लापरवाही से कोने में फेंक दिया था। इसे देखकर बिशप को अत्यधिक चिढ़ हुई।

विशेष सार्वजनिक पूजा दूसरे दिन ग्यारह बजे होने को थी; पादरी उसका नेतृत्व करने को थे और बिशप अध्यक्ष पद पर बैठने को थे। वे ताओस के गिरिजाघर से पूर्णतः संतुष्ट थे। इमारत साफ़ थी और उसकी अच्छी तरह से मरम्मत हुई थी। भीड़ काफ़ी बड़ी थी और बड़ी ही धर्मिष्ठ। वेदी पर के सुन्दर गोटों, स्वच्छ कपड़ों एवं चमकते हुए पीतल को देखने से मालूम हो जाता था कि बड़ी श्रद्धा से वह सजायी गयी है। वेदी पर काम करने वाले लड़के लाल रंग के चोंगों पर चुन्नटदार बेल-बूटे लगाये हुए थे। फ़ादर मार्टिनेज़ ने जितने प्रभावपूर्ण ढंग से 'मास' गाया, वैसा बिशप ने पहले कभी नहीं सुना था। उसका स्वर बड़ा ऊँचा था, और वह बड़ी भावुकता से गा रहा था। सारी प्रार्थना में किसी भी अंश की रंचमात्र भी उपेक्षा नहीं की गयी, और प्रत्येक शब्द पर उचित बल दिया गया था। 'एलेवेशन' (प्रार्थना का चरम बिंदु) के समय ऐसा मालूम होता था कि इस सांवले पादरी ने स्वर को ऊँचा चढ़ाने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी, जिससे उसका सारा रक्त आलोड़ित होकर ऊपर चढ़ गया हो। बिशप ने सोचा कि यदि इस मेक्सिकन का उचित पथप्रदर्शन हुआ होता, तो वह एक महान् व्यक्ति हो गया होता। उसका व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभाव शाली था; उसके पास एक उलझन में डाल देने वाली एक अद्भुत आकर्षण शक्ति थी।

प्रार्थना, दीक्षा आदि के बाद फ़ादर मार्टिनेज़ ने घोड़े मंगवाये और बिशप को अपना फ़ार्म तथा पशुओं का बाड़ा दिखाने लिवा ले गये। उन्होंने उन्हें ताओस तथा रेड इण्डियनों की बस्ती के बीच की उपजाऊ भूमि में

पड़ने वाले अपने खेतों को दिखाया, जिसे, जैसा कि फ़ादर लातूर ने बाद को जाना, फाँसी पर लटके हुए सात रेड इण्डियनों से उसने हस्तगत किया था। घोड़े पर चलते-चलते ही मार्टिनेज़ ने बड़ी लापरवाही से वेन्ट हत्याकाण्ड की चर्चा की। उसने बड़े गर्व से कहा कि न्यू मेक्सिको में जो भी गड़बड़ी पैदा होती थी, उसकी शुरुआत ताओस से ही होती थी।

वे लोग सूर्यास्त से कुछ पहले बस्ती के समीप पश्चिम की ओर रुके। बिशप जिन बस्तियों में अब तक गये थे, उनसे यह बस्ती बिलकुल भिन्न थी उसमें दो ही विशाल सामुदायिक मकान थे; उनके आकार, पिरामिड जैसे थे और वे सांध्य-रवि के प्रकाश में सुनहरे रंग के हो रहे थे। लाल पर्वत उनके पीछे था। सुनहरे रंग के मनुष्य श्वेत रंग का लबादा ओढ़े सीढ़ीनुमा छतों पर निकल आये और मूर्तिवत खड़े हो गये; लगता था कि वे पर्वत पर क्षण-क्षण परिवर्तित होने वाले प्रकाश को देख रहे हों। वहाँ एक अद्भुत निस्तब्धता थी, जैसे किसी पूजा आदि में लोग ध्यानमग्न हों। सुनहरे गुबार में से हो कर घर आती हुयी बकरियों के मिमियाने के अतिरिक्त अन्य कोई ध्वनि नहीं सुनायी पड़ रही थी।

पादरी ने उन्हें बताया कि गत एक हजार वर्ष से भी अधिक समय से इसी कबीले के लोग इन दोनों मकानों में लगातार रहते चले आ रहे हैं। कोरोनेडो दल के लोगों ने पहली बार इन्हें यहाँ देखा और उन्हें उच्च किस्म के रेड इण्डियन बतलाया, जो सुन्दर तथा गौरवपूर्ण आचरण के थे, तथा मृग चर्म के बने कोट और यूरोपियनों की भाँति पैजामे पहनते थे।

यद्यपि पर्वत पर काफी वनस्पतियाँ थी, उसके सभी किनारे इतने सीधे और सुडौल आकार के थे कि लगता था, जैसे वे सैंडियाज़ पर्वतों की भाँति वनस्पतिहीन पर्वतों को गढ़ कर बनाये गये हों। उसकी ढाल पर की वनस्पतियाँ सदा हरी रहती थीं, परन्तु दर्रों एवं घाटियों में मंजनू के वृक्ष थे, जिसका परिणाम यह होता था कि प्रत्येक दर्रे या घाटी का ऊपरी भाग हलके हरे रंग का था, और वह ऊपर पर्वत के गाढ़े हरे रंग के

साथ मिलकर कुछ विचित्र सांकेतिक चिह्नों का रूप धारण कर लेता था; कोई सर्प जैसा टेढ़ा-मेढ़ा, कोई अर्द्ध-चंद्राकार और कोई अर्द्ध-परिधि के आकार का। पादरी ने बतलाया कि अनेक शताब्दियों से रेड इण्डियन लोग इस पर्वत पर तथा उसकी घाटियों में यत्र-तत्र रह कर शान्त जीवन बिताते चले आ रहे हैं, यहीं पर पुराने धार्मिक अनुष्ठान होते आ रहे हैं, तथा उसके गर्भ में रेड इडियनों की अनेक गुप्त बातें छिपी हुई हैं।

"और आप विश्वास रखिये इसी पर्वत पर कहीं उनके पोप की गुप्त 'गुफ़ा भी है, परन्तु कोई श्वेत मनुष्य उसे कभी नहीं देख सकेगा। मेरा तात्पर्य उस गुफ़ा से है, जहाँ सन् १६८० के विद्रोह की योजना बनाते समय उनके पोप चार वर्ष तक बंद पड़े रहे और दिन की रोशनी नहीं देख सके। आप तो उस विद्रोह के सम्बन्ध में सब कुछ जानते होंगे, बिशप लातूर।"

"हाँ 'शहीदों का इतिहास' नामक पुस्तक पढ़ कर थोड़ा बहुत अवश्य जानता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि विद्रोह का आरम्भ ताओस से हुआ था।"

"मैंने आपसे अभी बताया है न कि न्यू मेक्सिको में पैदा होने वाली किसी भी गड़बड़ी का आरम्भ ताओस से ही होता है," पादरी ने कहा। पोप एक सैन जुआन के रेड इण्डियन थे, परन्तु इससे क्या? नेपोलियन भी तो कार्सिका में पैदा हुए थे। वे (पोप) अपना कार्य ताओस से करते थे।"

पादरी मार्टिनेज़ अपने देश को भली भाँति जानता था, वह देश, जिसका कोई लिखित इतिहास नहीं था। उसने सन् १६८० के महान् रेड इण्डियन विद्रोह के सम्बन्ध में जो कुछ सुन रखा था, उसे बिशप को विस्तार से सुनाया। इस विद्रोह ने, जिसमें सभी स्पेनियार्ड या तो मार डाले गये थे या बाहर खदेड़ दिये गये थे और अल पासो द नार्ते के उत्तर

एक भी यूरोपियन जीवित नहीं बचा था, नयी दुनिया के शहीदों के इतिहास में एक नया लम्बा अध्याय जोड़ा।

उस रात भोजन के पश्चात्, जब पादरी सुँघनी सूंघता हुआ बैठा था, फ़ादर लातूर ने उससे अनेक प्रश्न किये और उसके जीवन-वृतान्त के सम्बन्ध में बहुत कुछ जाना।

मार्टिनेज ताग्रोस से पश्चिम क्षितिज में मिले हुए उस एकाकी नीले पर्वत के ठीक नीचे एक गांव में पैदा हुआ था, जो पिरामिड के आकार का था, जिसका ऊपरी नुकीला भाग कट कर अबीक़ी में पहुँच गया था। वह गांव इस राज्य-क्षेत्र का लगभग सबसे पुराना गांव था, जिसके चारों ओर इतनी गहरी-गहरी खाइयां तथा इतनी ऊबड़-खावड़ पर्वत श्रेणियां थी कि वह बाहरी दुनिया से बिलकुल अलग हो गया था। इतना निःसंग रहने के कारण वहां के लोग मलिन प्रकृति के थे, धार्मिक मामलों में विवेकहीन रूप से उत्साही और उग्र थे तथा 'पैशन' सप्ताह क्रूश ढो कर और लहू-लुहान कर देने वाली कोड़ेबाजियां करके मनाते थे।

ऐंटोनियो जोज़ मार्टिनेज़ यहीं बड़ा हुआ; उसने पढ़ना-लिखना कुछ भी नहीं सीखा, बीस वर्ष की अवस्था में विवाह किया और जब वह तेईस वर्ष का था, तो उसकी पत्नी और बच्चे का देहान्त हो गया। विवाह के पश्चात् उसने वहां के गिरजा के पादरी से लिखना-पढ़ना सीख लिया था, और जब वह विधुर हो गया तो उसने पादरी बनने के लिये पढ़ने का निर्णय किया। अपने कपड़े तथा घर के सामान बेचने से जो थोड़ा सा पैसा मिला उसे लेकर वह घोड़े पर सवार होकर 'ओल्ड' मेक्सिको के डुरंगों नामक स्थान के लिये रवाना हो गया। वहां वह धार्मिक शिक्षालय में भर्ती हो गया और गहरे अध्ययन का जीवन आरम्भ किया।

बिशप ने यह सहज ही अनुमान लगा लिया कि किसी नवयुवक को, जो युवावस्था तक लिखना-पढ़ना नहीं जानता हो, शिक्षालय की यह कड़ी

शिक्षा प्राप्त करने में कितना कठिन परिश्रम करना पड़ा होगा। उन्होंने देखा, कि मार्टिनेज़ न केवल धार्मिक शिक्षा में ही प्रवीण है, अपितु वह लेटिन और स्पेनिश उच्च साहित्य से भी पूर्णतः भिज्ञ है। धार्मिक शिक्षालय में छः वर्ष तक रहने के बाद मार्टिनेज़ अपने घर अबीक़ी के गिरजा के पादरी रूप में वापस आ गया था। उसकी उस पिरामिड आकार के पर्वत के अंचल में बसे हुए गाँव से अत्यन्त अनुरक्ति थी। ताओस के अपने निवासकाल में, जिसका अन्त होते-होते उसका लगभग आधा जीवन समाप्त हो रहा था, वह बहुधा ही घोड़े पर सवार होकर अबीक़ी की 'तीर्थ-यात्रा' किया करता था, मानो उसकी जन्म-भूमि की पीली मिट्टी की गंध उसकी आत्मा के लिये औषध का काम करती थी। स्वाभाविक था कि वह अमेरिकनों से घृणा करे। न्यू मेक्सिको पर अमेरिकन अधिपत्य हो जाने का अर्थ उस जैसे व्यक्तियों का अन्त था। वह पुरानी समाज-व्यवस्था का व्यक्ति था, अबीक़ी की एक संतान था और अब उसके दिन लद चुके थे।

ताओस से विदा होने के बाद, बिशप अपने कार्य-क्रम के विपरीत किट कारसन के फ़ार्म वाले मकान पर गये। वे जानते थे कि कारसन भेंड़ें खरीदने बाहर गया हुआ है, परन्तु फ़ादर लातूर उसकी पत्नी सिनोरा कारसन से मिल कर उसे मैगडलेना के प्रति दया दिखाने के लिये पुनः धन्यवाद देना चाहते थे, तथा उसे यह बताना चाहते थे कि वह लड़की अब सांता फ़े के विद्यालय में 'सिस्टरों' के साथ रह कर बहुत सुखी है और धार्मिक जीवन बिता रही है।

कारसन की पत्नी ने उनका स्वागत उस सरल परन्तु निःसंकोच भाव से किया, जो मेक्सिकन परिवारों की सामान्य विशेषता है। वह एक लम्बे क़द की महिला थीं, दुबली-पतली, झुके हुए कंधे तथा चमकदार काली आँखें और वैसे ही बाल। यद्यपि वह लिखना-पढ़ना नहीं जानती थी, तथापि उसका चेहरा और बातचीत का ढंग ऐसा था कि वह बुद्धिमान्

लगती थी। बिशप के विचार से वह सुन्दर थीं; उसके चेहरे पर जीवन के उस अनुशासन की झलक थी, जो उन्हें बहुत प्रिय थी। उसका स्वभाव भी बड़ा मृदुल तथा विनोद-भावना बड़ी आनन्दप्रद। उस पर भरोसा रख कर बात किया जा सकता था। उसने बिशप से कहा कि आशा है कि आप पादरी मार्टिनेज़ के घर में आराम के साथ रहे होंगे। परन्तु उसके कहने का ढंग ऐसा था, जिससे यह स्पष्ट हो जाता था कि जैसे उसे इसमें सन्देह था, और जब उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे त्रिनिदाद लूसेरो की उपस्थिति के कारण चिढ़ गये थे, तो वह हँस पड़ी।

"कुछ लोग कहते हैं कि वह फ़ादर लुसेरो का बेटा है," उसने कुछ संकोच से कहा। "परन्तु मैं ऐसा नहीं सोचती। सम्भवतः वह पादरी मार्टिनेज़ के ही अनेक पुत्रों में से एक है। आपने सुना कि गत वर्ष 'पैशन सप्ताह' में उसे अबीकी में क्या हुआ? वह महात्मा ईसा बनने का प्रयास करने लगा, और स्वयं क्रूश-बद्ध हो गया। परन्तु क्रूश पर वह कीलों के सहारे नहीं रहा! रस्सियों से वह एक क्रूश पर बांध दिया गया और रात भर उसी पर लटके रहने के लिये छोड़ दिया गया। अबीकी में कभी-कभी ऐसा करने की प्रथा है; यह बहुत ही पुराने ख्यालों का स्थान है। क्रूश पर वह बँध तो गया, परन्तु वह वजन में इतना भारी है कि कुछ घण्टों के बाद उसको लिये-दिये क्रूश ही गिर पड़ा और इस पर वह बड़ा लज्जित हुआ। फिर उसने स्वयं को एक खम्भे से बँधवा दिया और कहा कि वह इतने कोड़े खायेगा, जितने स्वयं महात्मा ईसा ने खाये थे—छः हजार कोड़े जैसा कि सेंट ब्रिजेट को उद्घाटित हुआ था। परन्तु सौ कोड़े खाते-खाते वह बेहोश हो गया। लोगों ने उसे नागफनी के डंडों से मारा था; जिसके उसके तन में इतना विष हो गया कि बहुत दिन तक बीमार पड़ा रहा। इस साल वहाँ से लोगों ने उसके पास कहला दिया कि वह अबीकी न आवे। अतः वह पवित्र सप्ताह में यहीं रहा और लोगों ने खूब हँसी उड़ायी।"

फ़ादर लातूर ने कारसन की पत्नी से पूछा कि वह उसे स्पष्ट बतलाये

कि क्या उसके विचार से यह सम्भव है कि वे यहाँ के अधार्मिक एवं पापपूर्ण कार्यों एवं प्रथाओं को बन्द कर दें। वह मुस्करा पड़ी और सन्देह-सूचक सिर हिलाते हुए बोली, "मैं बहुधा ही अपने पति से कहती हूँ कि अच्छा होगा कि आप ऐसा करने का प्रयत्न न करें। इसका परिणाम केवल यह होगा कि जनता आपके विरुद्ध हो जायगी। यहाँ के वृद्धजन तो अपनी प्रथाओं को. रीति-रिवाजों को छोड़ नहीं सकते; और नयी पीढ़ी के लोग समय के साथ चलेंगे।"

बिशप जब विदा होने को हुए, तो उसने मैगडलेना के लिये एक सुन्दर गोटे का काम उनके झोले में डाल दिया। "वह इसे स्वयं अपने काम में नहीं लायेगी, परन्तु सिस्टरों को देने के लिये इसे पाकर उसे प्रसन्नता होगी। उसका हत्यारा पति उसके लिये कुछ नहीं छोड़ गया। उसकी फांसी के बाद, उसकी बन्दूक एवं एक गधे के अतिरिक्त बेचने के लिये कोई वस्तु थी ही नहीं। अतः वह दोनों पादरियों को, उनके खच्चरों के लालच में मार डालने का जोखिम उठा रहा था—सम्भव है कि धर्म के प्रति घृणा के कारण ही वह आप लोगों को मारना चाहता हो! मैगडलेना बतलाती थी कि वह मोरा के पादरी को मारने की बहुधा ही धमकी दिया करता था।"

सांता फ़े पहुँचने पर बिशप ने देखा कि फ़ादर बेलैंट उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। ईस्टर से ही वे एक दूसरे से नहीं मिले थे और बहुत सी बातों पर विचार करना आवश्यक था। बिशप लातूर के प्रशासन की कुशलता एवं उत्साह की रोम में पहले से ही वाहवाही हो रही थी और हाल ही में वहाँ की धार्मिक व्यवस्थापिका समिति के अध्यक्ष कार्डिनल फ्रांसोनी का उन्हें एक पत्र मिला था, जिसमें उन्होंने यह घोषित किया था कि सांता फ़े के 'विकारेट' का पद औपचारिक रूप से बढ़ा दिया गया था और अब वह पूर्ण रूपेण बिशप का अधिकार-क्षेत्र बना दिया गया था। उसी पत्र

के साथ कार्डिनल का एक निमंत्रण-पत्र भी था, जिसमें उन्होंने विशप से अगले वर्ष वैटिकन में होने वाली महत्त्वपूर्ण बैठकों में भाग लेने के लिये आग्रह किया था। यद्यपि इन सब बातों पर विशप और उनके विकार-जेनरल के बीच भी विचार-विमर्श होना आवश्यक था, फ़ादर जोसेफ़ इस समय तो अलबुकर्क से केवल इसलिये आये थे कि वे यह जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक हो रहे थे कि विशप का ताओस में कैसा स्वागत हुआ।

अपने पुराने लबादे पहने हुए वे लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठकर मोमबत्तियों के प्रकाश में रात बड़ी देर तक बातें करते रहे।

"इस समय तुरन्त ही" फ़ादर लातूर ने कहा, "मैं, ताओस की विचित्र स्थिति को बदलने के लिये कुछ भी नहीं करूँगा। इस समय हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। वहाँ के गिरजा का संगठन काफ़ी दृढ़ है और लोग बड़े धर्मनिष्ठ हैं। पादरी का आचरण चाहे जैसा हो, उसका संगठन सुदृढ़ है, तथा उसकी जनता उसके प्रति बहुत ही वफ़ादार है।"

"परन्तु क्या तुम्हारे विचार से उसे अनुशासित किया जा सकता है?"

"अनुशासन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। उसकी सत्ता काफ़ी समय से जमी हुई है। वहाँ की जनता उसका एक फ्रांसीसी विशप के विरुद्ध निश्चय ही समर्थन करेगी। इस समय तो जो कुछ भी मैंने वहाँ नहीं पसन्द किया, उस पर ध्यान ही नहीं दूँगा।"

"परन्तु जीन," फ़ादर जोसेफ़ ने आवेश में आकर कहा, "उसके कार्य तो बड़े निदनीय हैं, जगह-जगह उसकी बुराइयों की चर्चा होती रहती है। अभी कुछ ही सप्ताह पहले मैंने एक मेक्सिकन लड़की की बड़ी दर्दनाक कहानी सुनी है। वह कोस्टेला घाटी में हुए रेड इण्डियनों के एक धावे में उड़ा ले जायी गयी थी। जब वह उड़ायी गयी थी, तो आठ वर्ष की एक बच्ची थी, और जब उसका पता लगा और पैसा देकर उसको वापस लाया गया, तो उस समय उसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी। इस अवधि में यह भोली लड़की अनेक चमत्कारों की सहायता से अपने सतीत्व की रक्षा करती

रही। उसके गले में कुआडालूप में बनी देवी की समाधि का एक पदक बँधा हुआ था और वह सीखी हुई प्रार्थना दुहराया करती थी। अनेक बार उसके सतीत्व को संकट पैदा हुआ, परन्तु प्रत्येक बार कोई-न-कोई ऐसी अप्रत्याशित घटना घट जाती थी कि वह बच जाती थी। मिल जाने पर उसे अरोंयो होंडो में रहने वाले किसी सम्बन्धी के यहाँ वापस भेज दिया गया। वहाँ वह इतनी धर्मनिष्ठ हो गयी कि किसी मठ आदि में भिक्षुणी बनने के लिये तैयार हो गयी। परन्तु इसी मार्टिनेज़ ने उसके साथ बलात्कार किया और उसने उसका विवाह अपने किसी अर्दली से कर दिया। इस समय वह उसके किसी फ़ार्म पर रह रही है।"

"हाँ, क्रिस्टोबाल ने मुझे यह क़िस्सा सुनाया था,' बिशप ने कुछ विचलित भाव से कहा। "परन्तु पादरी मार्टिनेज़ की अवस्था अब इतनी काफ़ी हो रही है कि अधिक दिनों तक अब वह लम्पटता नहीं कर सकता। मैं ताओस का पादरी इलाक़ा केवल इसलिये नहीं खो देना चाहता कि मैं वहाँ के पादरी को दण्ड दूँ, मेरे मित्र! उसके स्थान पर काम करने के लिये मेरे पास ऐसा कोई शक्तिशाली पादरी नहीं है। तुम्हीं एक ऐसे व्यक्ति हो, जो वहाँ की परिस्थिति सँभाल सकते हो और तुम अलबुक़र्क में हो। अब एक वर्ष बाद मैं रोम में होऊँगा, और वहाँ से मैं ताओस के लिये एक स्पेनिश मिशनरी ले आने का प्रयत्न करूँगा। मेरे विचार से ताओस में किसी स्पेनियार्ड का ही स्वागत होगा।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो," फादर जोसेफ ने कहा। "मैं तो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में बहुधा ही जल्दीबाज़ी कर देता हूँ। तुम्हारी यूरोप यात्रा के समय तुम्हारी अनुपस्थिति में सम्भव है, मैं तुम्हारा काम यहाँ ठीक से न कर सकूँ। क्यों, तुम्हारे चले जाने पर, मुझे अपना प्यारा अलबुक़र्क छोड़ कर सांता फ़े आना पड़ेगा न?"

"निश्चय ही। इससे अलबुक़र्क के लोग तुम्हें और भी चाहने लगेंगे, क्योंकि तुम्हारी अनुपस्थिति में ही उन्हें तुम्हारे सच्चे मूल्य का अनुमान हो

सकेगा। मैं सोचता हूं कि मैं ग्रापके साथ ग्रावर्न से कुछ ग्रौर व्यक्तियों को, मेरा मतलब अपने ही धर्म शिक्षालय से कुछ नवयुवकों को, ले ग्राऊं ग्रौर उनमें से एक को कदाचित् ग्रलबुक़र्क में रखना पड़े। तुम वहां काफ़ी दिन रह चुके। वहां जो कुछ ग्रावश्यक था, वह सब तुम कर चुके। फ़ादर जोसेफ, ग्रब मुझे तुम्हारी यहां ग्रावश्यकता है। इस समय तो स्थिति यह है कि किसी ग्रावश्यक विषय पर ग्रापस में विचार-विमर्श करना हो, तो हम में से एक को सत्तर मील की घोड़े की यात्रा करनी पड़ती है।"

फ़ादर वेलेंट ने ठंडी सांस भरी। "ग्राह, मैं जानता था कि यह होगा! तुम मुझे ग्रलबुक़र्क से भी वैसे ही छीन लोगे जैसे सैंडस्की से छीना था। जब मैं वहां पहली बार गया था, तो प्रत्येक मनुष्य मेरा शत्रु था ग्रौर ग्रब प्रत्येक मनुष्य मेरा मित्र है; ग्रतः ग्रब वहां से हट जाने का काम है।" फादर ने ग्रपना चश्मा उतार लिया ग्रौर उसे मोड़ कर केस में रख दिया। उनका यह कार्य उनके सोने जाने के इरादे का सूचक था। "तो ग्रब से एक वर्ष बाद तुम रोम में होगे। ग्रौर मैं सच कहता हूं कि मुझे यही ग्रच्छा लगेगा कि मैं उस समय ग्रलबुक़र्क में ही ग्रपनी जनता के साथ रहूं लेकिन क्लेरमोंट? वहां का ख्याल ग्राने पर मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है कि मैं ग्रपने पहाड़ों को देखूं। कम-से-कम तुम तो मेरे परिवार के सभी लोगों से मिलोगे ग्रौर संदेश ले ग्राग्रोगे ग्रौर तुम मेरे वे सब पादरियों वाले कपड़े भी ला सकोगे, जिन्हें मेरी बहन फ़िलोमीन ग्रौर उनकी भिक्षुणियां तीन वर्ष से मेरे लिये बना रही हैं। मैं उन्हें पाकर कितना खुश होऊंगा।" वे उठ खड़े हुए ग्रौर उन्होंने एक मोमबत्ती उठा ली। "ग्रौर जीन, जब तूम क्लेरमोंट से विदा होने लगो, तो मेरे लिये ग्रपने जेब में कुछ ग्रखरोट रख लेना।"

२

कंजूस

फरवरी मास में बिशप लातूर एक बार फिर घोड़े की पीठ पर सवार सांता फे की सड़क पर थे; इस बार रोम उनका लक्ष्य था। वे लगभग एक वर्ष तक अनुपस्थित रहे, और जब वापस लौटे, तो अपने साथ अपने मोंटफेरांड के शिक्षालय से चार नवयुवक पादरी तथा फादर तलाद्रिद नामक एक स्पेनिश पादरी, जो उन्हें रोम में मिला था, लाये। तलाद्रिद तुरन्त ही ताम्रोस भेज दिया गया। बिशप के कहने पर पादरी मार्टिनेज़ ने अपने पद से औपचारिक रूप से त्यागपत्र दे दिया, परन्तु इस शर्त के साथ कि विशेष त्यौहारों के अवसरों पर 'मास' आदि समारोह उन्हीं के नेतृत्व में होंगे। उसने न केवल इस विशेष सुविधा का ही उपयोग किया, अपितु विवाह, मृत्यु के बाद संस्कार आदि और इलाक़े के निवासियों का जीवन-निर्देश अब भी वही करता रहा। शीघ्र ही उसमें तथा फादर तलाद्रिद में खुलमखुल्ला संघर्ष हो गया।

जब बिशप उनके मतभेदों को नहीं दूर करा सके और नये पादरी का पक्ष लेने लगे, तो फादर मार्टिनेज़ और उसके मित्र अरोंयो होंडो के फादर लुसेरो ने विद्रोह कर दिया, अधीनता मानने से स्पष्ट इनकार कर दिया और अपना एक अलग गिरजा संगठित कर लिया। उन्होंने घोषित किया कि यही मेक्सिको का पुराना कैथोलिक गिरजा है और बिशप का गिरजा तो एक अमेरिकन संस्था है। दोनों ही स्थानों की अधिकांश जनता इस नये गिरजा में चली गयी, यद्यपि कुछ धार्मिक मेक्सिकन, बड़ी घबराहट में, दोनों ही गिरजाओं की सार्वजनिक पूजा (मास) में भाग लेने लगे। फादर मार्टिनेज ने एक लम्बा और जोशीला घोषणा-पत्र छपवाया (जिसे उसके इलाक़े के बहुत कम लोग पढ़ सकते थे), जिसमें उसने अपने अलग होने के कार्य को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर न्यायोचित सिद्ध करने का प्रयत्न किया था तथा पादरी के लिये कुंवारा-व्रत रखना अनावश्यक

बतलाया था। चूँकि उसकी तथा फादर लुसेरो की अवस्था अब काफी हो चुकी थी, घोषणा-पत्र की इस विशेष बात का लाभ उनके संगठन में त्रिनिदाद के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं था। नया संगठन स्थापित करने के बाद दोनों वृद्ध पादरियों का पहला धार्मिक कार्य यह हुआ कि उन्होंने फादर लुसेरो के भतीजे को पादरी का पद प्रदान किया और वह कभी ताओस में और कभी अरोंयो होंडो में रह कर दोनों के सहायक का कार्य करने लगा।

विद्रोही गिरजा ने कम से कम यह किया कि दोनों विद्रोही पादरियों में पुनः यौवन आ गया और काफ़ी दूर-दूर के लोगों का अनुराग उन दोनों में पुनरुज्जीवित हो उठा—यद्यपि उनके कृत्य ऐसे थे कि पहले भी लोग उनके सम्बन्ध में काफ़ी बातें किया करते थे। पड़ोसी इलाक़ों में रहने के नाते, नौजवानी की अवस्था से ही वे दोनों आपस में मित्र थे, जिगरी दोस्त थे, प्रतिद्वंद्वी थे, और कभी-कभी घोर शत्रु भी थे। परन्तु इन झगड़ों के कारण वे बहुत दिन तक अलग नहीं रह सकते थे।

वृद्ध मेरिनो लुसेरो एक बात में भी मार्टिनेज़ से नहीं मिलता-जुलता था, सिवा इसके कि दोनों ही अधिकार-लोलुप थे। बचपन से ही वह कंजूस था और संसार के इस प्रच्छन्न भाग अरोंयो होंडो में अत्यंत ग़रीबी से रहता था, यद्यपि लोग उसे बड़ा धनी समझते थे। वह कहा करता था कि उसका मकान गधे के अस्तबल जैसा सादा था। घर में केवल उसकी चारपाई, कूश तथा एकाध अन्य सामान थे, कुर्सी-मेज आदि कुछ नहीं। उसके पास एक मरे से खच्चर के अतिरिक्त अन्य कोई मवेशी नहीं थे। इसी खच्चर पर चढ़ कर वह अपने मित्र मार्टिनेज़ से झगड़ा करने या भूख लगने पर उससे तगड़ा भोजन पाने ताओस आया करता था। उसके लिये सभी दिन शुक्रवार का दिन था। इस दिन ईसाई माँस नहीं खाते। हाँ, कभी-कभी कोई पड़ोसिन उस पर तरस खाकर उसके लिये मुर्गे का माँस पकाकर उसे दे जाती थी, क्योंकि उसके इलाक़े के लोग उसे पसन्द करते थे। वह सभी

चीज़ें हड़पना चाहता था, परन्तु अत्याचार से नहीं। वह अरोंयो सेको और क्वेस्टा गाँवों से अपने निजी गाँव की अपेक्षा अधिक पैसे वसूल करता था। मितव्ययिता मेक्सिकनों में एक ऐसा अनोखा गुण है कि वे उससे बड़ा मनोरंजन प्राप्त करते हैं। उसके इलाक़े के लोग यह कहने में बड़ा आनन्द लेते थे कि वह कभी कोई वस्तु नहीं खरीदता, और जब गृहिणियाँ अपना झाड़ू पुराना समझ कर फेंक दें, तो वह उन्हें बीन कर रख लेता था, और वह पादरी मार्टिनेज़ के उतारे हुए कपड़े पहनता था, यद्यपि वे उसे बहुत बड़े होते थे। दोनों पादरियों के बीच एक बार भयंकर झगड़ा इस बात पर हुआ था कि मार्टिनेज़ ने अपने कुछ पुराने कपड़े लुसेरो को न देकर मेक्सिको के एक भिक्षु को दे दिया था, जो उसके ही घर में रह कर विद्याध्ययन कर रहा था और जिसके पास जाड़ा आने पर अपना तन ढँकने के लिये कोई कपड़ा नहीं था।

दोनों पादरी एक दूसरे के सम्बन्ध में निर्लज्जतापूर्ण ढंग से बातें किया करते थे। मार्टिनेज़ की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ लुसेरो के सम्बन्ध में होती थीं और लुसेरो की मार्टिनेज़ के सम्बन्ध में।

"देखो, बात यह है," पादरी लुसेरो किसी विवाहोत्सव के अवसर पर नौजवानों से कहता, "मेरा तरीक़ा उस बुड्ढे जोज़ मार्टिनेज़ से अच्छा है। उसकी नाक तो अब ठुड्डी से मिल रही है, और अब कोई पेटीकोट उसके लिये बेकार है। परन्तु मैं, अब भी डालर देख कर सीधे खड़ा हो जाता हूँ। पैसा हाथ में पाकर मैं कितना हर्षित हो जाता हूँ और वह किसी सुन्दर युवती को देख कर सिवा हाथ मल कर रह जाने के अतिरिक्त क्या कर सकता है?"

वह उन्हें विश्वास दिलाता था कि लालच वृद्धावस्था में बढ़ जाती है और बड़ी सुहावनी भी हो जाती है। उसे पैसे की लालच थी और मार्टिनेज़ अपने काम की तृप्ति के लिये बेचैन रहता था। अपने-अपने उद्देश्यों की पूर्ति में वे एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं थे। पादरी का पद प्राप्त कर लेने के

बाद जब त्रिनिदाद अपने चाचा के साथ रहने लगा, फ़ादर लुसेरो हमेशा शिकायत किया करता था कि मार्टिनेज़ के साथ रहते-रहते उसने फ़ज़ूलखर्ची की आदतें सीख ली हैं और वह उसे बरबाद कर रहा है। फ़ादर मार्टिनेज़ यह कह कर बड़ा आनन्द लेता था कि त्रिनिदाद अरोंयो होंडो के पादरी-इलाक़े को चूस रहा है और हरदम खाने के लिये कुछ न कुछ ढूंढ़ता रहता है।

जब बिशप विद्रोह की अधिक दिनों तक उपेक्षा नहीं कर सके, तो उन्होंने फादर वेलेंट को ताओस भेजकर यह चेतावनी घोषित करायी कि तीन सप्ताह में दोनों पादरी अपना पाखण्ड छोड़ दें। चौथे रविवार को फादर जोसेफ ने, जिन्हें इस बात से शिकायत थी कि हमेशा उन्हें ही "बिल्ली को कोड़े लगाने के लिये" भेजा जाता है, वह घोषणा-पत्र पढ़ा, जिसमें बिशप ने फादर मार्टिनेज़ से पादरी पद के सभी अधिकार छीन लिये थे। उसी दिन, तीसरे पहर, वे अठारह मील दूर अरोंयो होंडो गये और वैसा ही पत्र फादर लुसेरो के विरुद्ध भी पढ़ा।

फादर मार्टिनेज़ अपने पाखण्डी गिरजा के प्रधान के रूप में बने रहे और कुछ दिन बाद अल्प बीमारी में ही वे मर गये और विद्रोही गिरजाघर के अन्तर्गत ही फादर लुसेरो द्वारा दफनाये गये। इसके थोड़े ही दिन बाद फादर लुसेरो स्वयं भी बीमार पड़ गये और बहुत दुर्बल हो गये। परन्तु बीमारी में भी उन्होंने एक ऐसा असाधारण काम कर दिखाया, जो अड़ोस-पड़ोस में एक क़िस्सा बन गया,—उन्होंने अर्द्धरात्रि को एक हाथापाई में एक चोर को मार डाला।

एक रेल कर्मचारी, जो मालगाड़ियों पर काम काम करता था, किसी चोरी के अपराध में बर्खास्त कर दिया गया था और अब वह ताओस में रहकर किसी प्रकार जीविकोपार्जन कर रहा था। वहाँ उसने फादर लुसेरो के गड़े हुए खजाने के सम्बन्ध में सुना। वह बुड्ढे के यहाँ चोरी करने अरोंयो होंडो आया। फादर लुसेरो श्वान-निद्रा में सोने वाले व्यक्ति थे,

और रात के सन्नाटे में पैरों की आहट सुन कर, वे गद्दे के नीचे छिपा कर रखा हुआ छुरा लेकर आगन्तुक पर झपट पड़े। दोनों अंधेरे ही में लड़ने लगे, और यद्यपि, चोर नौजवान आदमी था और हथियार से लैस था, बुड्ढे पादरी ने छुरा भोंक कर उसे मार डाला और फिर खून से लथपथ बाहर आकर चिल्लाकर लोगों को जगाया। पड़ोसियों ने जाकर देखा कि पादरी का कमरा क़साईखाना जैसा हो रहा है और चोर सेंध के पास मरा पड़ा है। बुड्ढे के इस साहसपूर्ण कार्य को देखकर लोग हैरत में पड़ गये।

परन्तु इस घटना से जो मानसिक आघात लगा, उससे फादर लुसेरो फिर नहीं सम्भल सके। उनकी हालत इतनी तेजी से बिगड़ने लगी कि लोगों ने उनकी चिकित्सा के लिये ताओस से मवेशियों के ही डाक्टर को बुलवा लिया। यह डाक्टर एक अमेरिकन था, जो मनुष्यों तथा घोड़ों दोनों की चिकित्सा करता था। पर उसने फादर लुसेरो को देख कर कहा कि मैं उनके लिये कुछ नहीं कर सकता। उसके अनुसार फादर लुसेरो के पेट में कोई फोड़ा या कैंसर हो गया था।

पादरी लुसेरो मरते समय अपने कर्मों पर पछताने लगे और फादर वेलेंट ने ही, जिन्होंने उन्हें पद-च्युत किया था, उन्हें पुनः कैथोलिक धर्म में विधिवत ले लिया। बिशप के किसी काम से वे ताओस आये हुए थे और कारसन तथा उसकी पत्नी के साथ ठहरे हुए थे। एक दिन संध्या समय, जब जोर की वर्षा हो रही थी और तेज हवा चल रही थी और वे सब भोजन करने बैठे थे, तभी एक घुड़सवार मकान के फाटक पर आकर रुका। कारसन ने जाकर उसकी अगवानी की। जिस अतिथि को वह अन्दर लाया, वह त्रिदिनाद लुसेरो था। उसने अपना रबड़ का कोट उतार दिया और आर्रोयो होंडो का बना हुआ लबादा पहने हुए, गले में एक क्रूश लटकाये, अपने भारी भरकम शरीर एवं महत्ता से सारे कमरे को आच्छादित करता हुआ, खड़ा रहा। कारसन की पत्नी को झुक कर सलाम करने के बाद उसने फादर वेलेंट से टूटी-फूटी अंग्रेजी भाषा में

(शुद्ध अंग्रेजी वह बोल ही नहीं पाता था) धीरे-धीरे मोटी आवाज में बोला।

"मैं पादरी लुसेरो का एकमात्र भतीजा हूँ। मेरे चाचा बहुत बीमार हैं और शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो सकती है। वे खून की क़ै कर रहे हैं।" इतना कह कर उसने अपनी आँखें नीची कर लीं।

"अपनी भाषा में बात करो, भले आदमी!" फ़ादर वेलेंट ने कुछ उत्तेजित हो कर कहा। "जितना तुम अंग्रेजी जानते हो, उससे अधिक मैं स्पेनिश भाषा जानता हूँ। अच्छा, अब कहो, तुम अपने चाचा की हालत के बारे में क्या कहना चाहते हो?"

त्रिनिदाद ने अपने चाचा की हालत का वर्णन किया और बीच-बीच में दुहराता जाता था कि "उन्हें खून की क़ै हुई।" इस कहने को वह बड़ा महत्त्वपूर्ण समझता था। उसके चाचा फ़ादर वेलेंट के लिये बेचैन हो रहे थे और चाहते थे कि वे आकर उन्हें पुनः कैथोलिक धर्म में संस्कार के साथ ले लें।

कारसन ने विकार से प्रातःकाल तक रुकने का आग्रह किया, क्योंकि होंडो की सड़क वर्षा के कारण बिलकुल नष्ट हो गयी होगी और अंधेरे में उस पर जाना खतरनाक है। परन्तु फ़ादर वेलेंट ने उत्तर दिया कि यदि सड़क खराब होगी, तो वे पैदल जायेंगे। कारसन की पत्नी से छुट्टी लेते हुए वे अपने कमरे में घुड़सवारी के कपड़े तथा अपना झोला आदि लेने चले गये। त्रिनिदाद कहने पर फ़ादर वेलेंट के रिक्त स्थान पर बैठ गया और खूब जम कर भोजन किया। कारसन ने फ़ादर वेलेंट का खच्चर कस कर तैयार किया, और विकार त्रिनिदाद को रास्ता दिखाने के लिये साथ लेकर रवाना हो गये।

यह बात नहीं थी कि अरोंयो होंडो जाने के लिये उन्हें कोई रास्ता दिखाने वाला चाहिये ही था; उन्हें यह स्थान विशेषतौर से प्रिय था, और वे वहाँ जाने के लिये कोई-न-कोई बहाना ढूंढ़ते रहते थे। वे बहुधा ही ग्रीष्म

ऋतु में, जब मौसम अच्छा रहता था, या बसंत के प्रारम्भ में जब बनस्पतियों में हरे पत्ते नहीं निकले रहते थे और सारा प्रदेश लाल (लाल कोपलों से) और नीला और पीला (फूलों और पीली पत्तियों से), एक रंगीन मानचित्र की भाँति होता था, जाया करते थे।

अर्रोयो होंडो जाते समय पहले छोटी-छोटी खुशबूदार झाड़ियों से भरा मैदान मिलता था, जो लगातार और समतल दूरस्थ पर्वतों तक फैला हुआ था; फिर अचानक ही दो सौ फुट से भी अधिक गहरे ज़मीन में कटे किसी दरार का कगारा मिल जाता था। दरार का यह कगारा खड़े टीले के रूप में था, परन्तु चट्टानी टीला नहीं, अपितु मिट्टी का ही टीला। कगारे पर पहुँच कर अगर आप नीचे झाँकें, तो आप इस विशाल खाई की गहराई में नीचे हरे खेतों और बगीचों तथा लाल-लाल मकानों की बस्ती की यह एक नयी दुनियाँ ही देखेंगे। यही होंडो की बस्ती थी। नीचे, इधर-उधर खेत जोतते हुए, आदमी, जानवर, खच्चर आदि बच्चों के खिलौनों जैसे दीख पड़ते थे। बस्ती के बीचो-बीच खेतों और चरागाहों में से होता हुआ एक तेज़ नाला बहता था, जो ऊँचे पहाड़ों से निकल कर आता था। इसका उद्गम वास्तव में इतनी ऊँचाई पर था कि मेक्सिकन लोग कभी-कभी एक लकड़ी का बन्द विशाल नालीनुमा होदा दरार के आर पर रख कर, उसमें से नाले का पानी सैकड़ों फुट दूर एक खुली खाई में ले जाते थे। फादर वेलेंट यहाँ बहुधा ही खड़े होकर उस बंद पानी को ठीक उस स्थान पर, जहाँ से नीचे बस्ती के लिये ढालू पगडंडी आरम्भ होती थी, जीवित वस्तु की भाँति अंधेरे से बाहर, प्रकाश में, फुफकार कर निकलते हुए, देखा करते थे। इस प्रकार फेरा हुआ पानी मुख्य सोते की एक पतली सी शाखा मात्र थी; मुख्य सोता नीचे बस्ती में श्वेत पत्थरों वाली सतह पर बहता था। उसके किनारे लचीले लकड़ी के हरे-हरे वृक्ष तथा बड़ी-बड़ी घासें और रंग-बिरंगे जंगली फूलों के पौधे थे। उन जंगली घासों के बीच कुछ फूलों के पौधे तथा कुछ अन्य वृक्ष फूलों से लदे काफ़ी बड़े हो गये थे।

यह पहला अवसर था कि फ़ादर वेलेंट सूर्यास्त के बाद अँधेरे में नीचे बस्ती में उतरने के लिये पहुँचे थे। अतः कगारे पर खड़े होकर उन्होंने निर्णय किया कि वे कंटेंटो की इतनी कड़ी परीक्षा नहीं ले सकते। "जा तो वह सकता है," त्रिनिदाद से उन्होंने कहा, "परन्तु मैं ही उस पर चढ़ कर नहीं जाऊँगा।" वे उतर गये और पैदल ही टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी से नीचे उतरे।

वे लोग आधी रात के पहले ही फादर लुसेरो के घर पहुँचे। मालूम होता था कि बस्ती की आधी आबादी उनकी सेवा शुश्रुषा में डटी है और वहाँ इतनी अधिक बत्तियाँ जल रही थीं, मानो कोई त्योहार मनाया जा रहा हो। बीमार बुड्ढे के कमरे में बहुत सी मेक्सिकन स्त्रियाँ थीं। वे फ़र्श पर बैठी, अपनी काली शालें ओढ़े, सामने जली हुई मोमबत्तियाँ रखे, प्रार्थना कर रही थीं। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि मोमबत्ती के स्थान तक पहुँचना किसी के लिए भी कठिन था।

फादर वेलेंट ने कंसेप्शन गोंजालिस नामक एक स्त्री को, जिसे वे भली-भाँति जानते थे, अपनी ओर संकेत से बुलाया और उससे पूछा कि इस सब का अर्थ क्या है। उसने धीरे से कान में कहा कि मरणासन्न पादरी की यही इच्छा है। उसकी दृष्टि मन्द पड़ती जा रही थी, और वह अधिकाधिक रोशनी की माँग करता जा रहा था। कंसेप्शन ने आह भर कर बताया कि वह जिन्दगी भर मोमबत्तियाँ बचाता रहा और अधिकांश अवसरों पर रात में वह लकड़ी के किसी नुकीले पतले टुकड़े को जला कर ही काम चला लेता था।

कोने में चारपाई पर फ़ादर लुसेरो कराह रहा था और उलट-पलट रहा था; एक आदमी उसका पांव सहला रहा था, और दूसरा गरम पानी में कपड़ा डुबो कर, फिर उसे निचोड़ कर उसके पेट पर रख रहा था, जिससे पीड़ा में कुछ कमी हो। सिनोरा गोंजालिस ने धीरे से बताया कि बुड्ढा पीड़ा में चादरें चबा रहा था; वह स्वयं अपनी सर्वश्रेष्ठ चादरें ले

आयी थी, और मुँह से चबा-चबा कर उसने उनके किनारों को गोटेदार बना दिया था।

फ़ादर वेलेंट चारपाई के समीप पहुँचे और स्त्रियों से बोले, "चारपाई से थोड़ी दूर हटो, देवियो! तुम लोग दीवार के पास जाओ, तुम्हारी मोमबत्तियाँ तो मेरी दृष्टि को चकाचौंध कर रही हैं।"

परन्तु जैसे ही वे अपनी-अपनी मोमबत्तियाँ फर्श पर से उठाकर खड़ी होने लगीं, बुड्ढे ने चिल्लाकर कहा, "नहीं, नहीं, बत्तियाँ न उठाओ! कोई चोर आ जायगा और फिर मेरा कुछ भी नहीं बचेगा।"

स्त्रियाँ झिझक गयीं, उन्होंने फ़ादर वेलेंट की ओर भर्त्सना भरी निगाहों से देखा, और पुनः बैठ गयीं।

पादरी लुसेरो क्षीण होकर कंकालमात्र रह गया था। उसके गाल धँस गये थे, उसकी टेढ़ी नाक मिट्टी के रंग की और चिकनी हो रही थी। उसकी आँखों से ज्वर के कारण शोले निकल रहे थे। इन जलती आँखों से उसने फादर जोसेफ़ की ओर देखा,—बड़ी-बड़ी, काली, चमकदार एवं अविश्वास भरी आँखें। आज अपनी विदाई की इस रात, बुड्ढा मेक्सिकन की अपेक्षा स्पेनियार्ड अधिक लगता था। उसने आश्चर्यजनक मजबूती से फ़ादर जोसेफ़ का हाथ जकड़ लिया और उस आदमी की छाती में, जो उसका पाँव सहला रहा था, कस कर एक लात मारी।

"पाँव दबाना बन्द करो, और इन गीले कपड़ों को यहाँ से हटाओ। अब चूँकि विकार साहब आ गये हैं, मुझे इनसे कुछ कहना है और मैं चाहता हूँ कि तुम सब लोग भी सुनो।" फ़ादर लुसेरो की आवाज़ हमेशा से ही पतली और तेज़ थी; उनके इलाक़े के लोग कहा करते थे कि वह ऐसी थी, जैसे कोई घोड़ा बात कर रहा हो। "सीन्योर विकारियो, आपको पादरी मार्टिनेज़ की याद है न? अवश्य होगी क्योंकि आपने उसके साथ भी वही दुर्व्यवहार किया, जो मेरे साथ। अच्छा, अब सुनिये।"

फ़ादर लुसेरो ने बताया कि मार्टिनेज़ मरने के पहले उन्हें कुछ धन

सौंप गया था, जो उसकी आत्मा की शान्ति के लिये पूजा-समारोह आदि में खर्च किया जाने को था, और वह पूजा उसके जन्म-स्थान अबीक़ी के गिरजा में की जाने को थी। लुसेरो ने यह रक़म वादे के अनुसार खर्च नहीं की थी, अपितु उसे अपने कमरे में, उधर की दीवार पर टंगे विशाल क्रूश के ठीक नीचे, ज़मीन में गाड़ दी थी।

इसी समय फ़ादर वेलेंट ने पुनः स्त्रियों को चले जाने के लिये संकेत किया, परन्तु ज्योंही उन्होंने अपनी बत्तियाँ उठायीं, फ़ादर लुसेरो उठ बैठे (उस समय वे अपनी सोते समय पहनने वाली कमीज़ पहने थे) और चिल्लाकर बोले, "बैठी रहो तुम लोग। क्या तुम लोग मुझे एक अजनबी के साथ छोड़कर भाग जाना चाहती हो? जैसे मैं तुम लोगों पर विश्वास नहीं करता, वैसे ही इन पर भी नहीं करता! ओह, ईश्वर ने ऐसी कोई युक्ति क्यों नहीं बतायी ताकि मनुष्य मृत्यु के बाद भी अपने धन-दौलत की रक्षा कर सके! जीते जी तो मैं अपनी छुरे के बल पर उसकी रक्षा कर सकता हूँ, यद्यपि मैं बुड्ढा हूँ। परन्तु मरने—?"

सिनोरा गोंज़ालिस ने फ़ादर लुसेरो को शान्त किया, उन्हें समझा-बुझाकर पुनः तकिये पर लेटाया और कहा कि वे जो कुछ कहना चाहते थे, कहें। लुसेरो ने कहा कि इस पैसे को, जो मार्टिनिज़ से धरोहर के रूप में लिया गया था, अबीकी भेजना चाहिये और जिस ढंग से पादरी ने खर्च करने को कहा था, वैसे ही खर्च करना चाहिये। क्रूश के नीचे तथा उनकी चारपाई के नीचे ज़मीन में गड़ा हुआ उनका अपना धन है। उनके इस धन-राशि का एक तिहाई भाग त्रिनिदाद के लिये है। शेष उनकी आत्मा की शान्ति के लिये सार्वजनिक पूजा-समारोह आदि में खर्च किया जाना चाहिये, और ये समारोह सांता फ़े में सेन मिगुएल के गिरजाघर में मनाये जाने चाहिये।

फ़ादर वेलेंट ने उसे विश्वास दिलाया कि उनकी सभी इच्छाएं बड़ी ईमानदारी से पूरी की जायेंगी और अब इस समय उन्हें संसार के माया-

जाल को भूल जाना चाहिये और अब उन्हें दीक्षा-संस्कार के लिये अपने मन को तैयार करना चाहिये।

"सभी कुछ समय आने पर होता है। परन्तु आसानी से कोई इस संसार के माया-मोह को नहीं छोड़ सकता। कंसेप्शन गोंज़ालिस कहाँ है? यहाँ आओ, बेटी। देखना, मेरे इस कमरे से बाहर निकाले जाने के पहले ही, इसके पहले ही कि मेरा शरीर बिलकुल ठंडा हो जाय, पैसा ज़मीन खोद कर निकाल लिया जाय, और इन सभी औरतों की मौजूदगी में गिन लिया जाय तथा रक़म की तादाद कहीं लिख ली जाय।" इतना कहते-कहते बुड्ढे को जैसे कोई नयी बात याद आ गयी और उसने बड़े आवेश से कहा, "हाँ, क्रिस्टोबाल, वह आदमी ठीक है। क्रिस्टोबाल कारसन, वह गिनने तथा रखने के लिये अवश्य रहे। वह बड़ा ईमानदार आदमी है। अरे मूर्ख, त्रिनिदाद, तू क्रिस्टोवाल को अपने साथ क्यों नहीं लिवा आया?"

फ़ादर वेलेंट क्षुब्ध हो उठे। "यदि आप शान्त नहीं हो जाते, फादर लुसेरो, और ईश्वर में अपना ध्यान नहीं लगाते, तो मैं संस्कार करने से इनकार कर दूँगा। आपकी वर्तमान् मानसिक स्थिति में ऐसा करना अधार्मिक एवं अपवित्र कार्य होगा।"

बुड्ढा हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगा और विकार की बात मानते हुए आँखें बन्द कर लीं। फ़ादर वेलेंट बगल वाले कमरे में गये और अपना लबादा आदि पहन लिया, और उनकी अनुपस्थिति में कंसेप्शन गोंज़ालिस ने पादरी की चारपाई के पास एक छोटी मेज पर अपना एक रूमाल बिछा दिया और उस पर दो मोमबत्तियाँ तथा विकार का हाथ धोने के लिये एक प्याला पानी रख दिया। फादर वेलेंट अपना लबादा आदि पादरियों का औपचारिक वस्त्र पहने तथा संस्कार आदि के कार्यों में प्रयुक्त होने वाले पवित्र जल, बिस्कुट आदि के रखने के बर्त्तन लिये वापस आये और चारपाई तथा वहाँ एकत्र लोगों पर पानी छिड़कने लगे और किसी मंत्र का उच्चारण

करने लगे। स्त्रियाँ फ़र्श पर अपनी बत्तियाँ छोड़कर वहाँ से खिसक गयीं। फ़ादर लुसेरो ने अपने धार्मिक विश्वास को दुहराया, पापों को स्वीकार किया और आत्म-उन्नति एवं पश्चात्ताप प्रकट करते हुए अपने पाखण्ड को तिलांजलि दी; इसके बाद संस्कार पूर्ण हुआ और वे पुनः कैथोलिक बन गये।

संस्कार के बाद उनका उद्विग्न मन शान्त हुआ और वे हाथ छाती पर रखे चुपचाप पड़े रहे। स्त्रियाँ वापस आ गयीं और प्रार्थना गुनगुनाते हुए पहले की तरह बैठ गयीं। वर्षा की धार खिड़कियों के शीशों से टकरा रही थी, ऊपर से, तलहटी में आती हुई हवा सूँ-सूँ की आवाज़ कर रही थी। कमरे में एकत्र लोगों में से कुछ लोग थकावट एवं नींद के मारे ऊँघने लगे, परन्तु वहाँ से जाने की किसी ने इच्छा नहीं प्रकट की। मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए किसी को बैठकर देखते रहना उनके लिये कोई कठिनाई की बात नहीं थी, अपितु वह उनके लिये वह एक गौरव की बात थी,—और किसी मरते पादरी को देखना तो एक असाधारण गौरव की बात थी।

उन दिनों यूरोपीय देशों में भी मृत्यु का धार्मिक रूप से एक सामाजिक महत्त्व था। उसे केवल वह क्षण नहीं मानते थे, जब शरीर के अंग काम करने से जवाब दे देते थे, अपितु उसे जीवन रूपी नाटक के अंतिम अंक का चरम विन्दु मानते थे, वह क्षण, जब आत्मा शरीर छोड़ कर किसी दूसरे लोक में प्रवेश करती थी और पूर्णतः सचेत अवस्था में एक छोटे से दरवाजे से गुज़रती हुई एक अकल्पनीय दृश्य में पहुँच जाती थी। पास बैठे हुए लोग हमेशा यह आशा लगाये रहते थे कि मरने वाला व्यक्ति किसी ऐसे रहस्य का उद्घाटन करेगा, केवल वह उस समय देख सकता है, तथा यदि उसका मुँह नहीं, तो चेहरा अवश्य कुछ-न-कुछ बोलेगा और उसके चेहरे पर अदृष्ट से कोई प्रकाश या छाया अवश्य पड़ेगी। महान पुरुषों के, नेपोलियन के, लार्ड बाइरन के, 'अन्तिम शब्द' अब भी भेंट की पुस्तकों में छपे थे तथा प्रत्येक सामान्य पुरुष या स्त्री के मरने के

समय की बुदबुदाहट को उनके पड़ोसी एवं सम्बन्धी बड़े गौर से सुनते थे और फिर उसे सुरक्षित रखते थे। इन शब्दों को, चाहे वे बिलकुल ही महत्त्वपूर्ण न हों, देववाणी समझा जाता था और लोग उन पर विचार करते थे, जिन्हें भी एक दिन उसी राह जाना होगा।

मृत्यु-कक्ष की वह भयावह निस्तब्धता अचानक ही भंग हो गयी। बात यह हुई कि त्रिनिदाद लुसेरो दीवार पर टंगे क्रूश के समक्ष घुटनों के बल बैठकर सिर झुका कर प्रार्थना करने लगा, और उसका चाचा, जिसे लोग समझ रहे थे कि सो रहा है, अचानक उलटने-पलटने लगा और चिल्ला पड़ा, "चोर, चोर ! पकड़ो, बचाओ !" त्रिनिदाद वहाँ से फ़ौरन हट गया, परन्तु इसके बाद बुड्ढा एक आंख खोल कर ही पड़ा रहा और किसी को क्रूश के निकट जाने का साहस नहीं हुआ।

सुबह होने के लगभग एक घंटा पहले पादरी को साँस लेने में इतना कष्ट होने लगा कि दो आदमी उसके पीछे जाकर उसका तकिया ऊँचा कर दिये। स्त्रियाँ कानाफूसी करने लगीं कि उसके चेहरे में परिवर्तन हो रहा है और वे अपनी बत्तियाँ नज़दीक ले आयीं और उसकी चारपाई के बिलकुल निकट घुटनों के बल बैठ गयीं। उसकी आँखों में चेतनता थी और उसकी दृष्टि-शक्ति अभी नष्ट नहीं हुई थी। उसने अपना सिर एक ओर घुमा लिया और मोमबत्ती की लौ को एकटक, बिना पलक झपाये, देखने लगा और उसका चेहरा उत्तेजित होने लगा। उसके ओठ काँपने लगे और लगा जैसे वह कुछ बोलना चाहता है। बैठे हुए लोग अपनी साँसें रोक लिये और उन्हें निश्चय हो गया कि मरने के पहले वह अवश्य बोलेगा,—और सचमुच वह बोला। चेहरे में एक अजीब ऐंठन उत्पन्न हुई, जो व्यंग्यपूर्ण हँसी की तरह थी, उसके मुँह में तीव्र श्वास की एक ध्वनि सुनाई पड़ी और फिर उनका पादरी अन्तिम बार घोड़े की तरह बोला।

"खूब भोगो, मार्टिनेज़ खूब भोगो !" और सद्यः छटपटाता हुआ वह मर गया।

सुबह होने पर त्रिनिदाद यह कहता फिरा (और मेक्सिकन स्त्रियों ने उसकी पुष्टि की) कि मृत्यु के समय फ़ादर लुसेरो की दृष्टि दूसरे लोक में पहुँच गयी थी, और उन्होंने पादरी मार्टिनेज़ को भयंकर यंत्रणा में देखा था। जब तक उसकी मृत्यु-शय्या के पास बैठे क्रिश्चियन जीवित रहे, यह कहानी अर्रोयो होंडो में प्रचलित रही।

पादरी के अन्तिम आदेशों के अनुसार, जब उसके कमरे की ज़मीन खोदी गयी, तो ताओस, सांता क्रुज़ एवं मोरा के भी लोग यह देखने आये कि ज़मीन के अंदर से सोने और चाँदी के सिक्कों से भरे चमड़े के थैले निकले। उनमें स्पेनिश सिक्के थे, फ्रांसीसी सिक्के थे, अमेरिकन सिक्के थे, अंग्रेज़ी सिक्के थे, जिनमें कुछ तो बहुत पुराने थे। जब उन्हें सरकारी टकसाल में भेजकर उनका मूल्यांकन कराया गया, तो पता चला कि अमेरिकन सिक्के में उनका मूल्य बीस हज़ार डालर के बराबर था। निश्चय ही, पर्वत की दो सौ फुट गहरी खाई के नीचे बसे गाँव के एक वृद्ध पादरी के लिये इतनी बड़ी रक़म एकत्र करना असाधारण बात थी।

अध्याय ६

डोना इज़ाबेला

१

डॉन एंटोनियो

बिशप लातूर की एक बड़ी भारी आकांक्षा थी। वे सांता फ़े में एक ऐसा गिरजाघर बनाना चाहते थे, जो वहाँ के सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों के अनुरूप हो। अपनी इस इच्छा पर अधिकाधिक विचार करने के पश्चात्, अन्त में वे यह सोचने लगे कि इस प्रकार की इमारत स्वयं उनके तथा उनके उद्देश्यों का एक क्रमबद्ध प्रसार ही तो होगी, जो उनके लोप हो जाने के बाद भी आकांक्षाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं के प्रतीक के रूप में खड़ी रहेगी। अपने प्रशासन काल के आरम्भ से ही वे अपने अल्प साधनों से गिरजा-कोष के लिये धन-संचय करने लग गये। इस काम में उन्हें कुछ धनिक मेक्सिकन कृषकों से सहायता मिली, परन्तु जितनी सहायता डॉन एंटोनियो ओलिवारिस ने की, उतनी अन्य किसी ने नहीं।

एंटोनियो ओलिवारिस कई भाइयों एवं चचेरे भाइयों के एक विशाल परिवार का सबसे अधिक बुद्धिमान् और समृद्ध सदस्य था और उस समय एवं स्थान के लिहाज़ से बहुत ही अनुभवी एवं सांसारिक मनुष्य था। उसने अपने जीवन का अधिकतर भाग न्यू ऑर्लियंस तथा अल पासो डेल

नोर्लें में बिताया था, परन्तु वह बिशप लातूर के सांता फ़े में आने के कई वर्ष बाद वह सांता फ़े में ही रहने के लिये वापस आ गया। वह अपने साथ अपनी अमेरिकन पत्नी तथा एक गाड़ी भर कर कुर्सी-मेज़ आदि लाया और नगर से सटे ही पूरब की ओर उसी पुराने मकान में जीवन के शेष दिन बिताने के लिये विस्थापित हो गया, जहाँ वह पैदा हुआ था तथा जहाँ उसने शैशव के दिन बिताये थे। उस समय उसकी अवस्था साठ वर्ष की थी। नौजवानी में ही उसकी पहली पत्नी का देहान्त हो चुका था और न्यू ऑर्लियंस जाने पर उसने पुनःविवाह किया। उसकी यह पत्नी केंटकी राज्य की रहने वाली थी, जो अपने कुछ सम्बन्धियों के साथ रह कर लुज़ियाना राज्य में बड़ी हुई थी। वह सुन्दर तथा गुणवती थी, उसने किसी फ्रांसीसी कनवेंट स्कूल में शिक्षा पायी थी और अपने पति को यूरोपीय सभ्यता में ढालने के लिये उसने काफ़ी प्रयास किया था। उसके पति के सुन्दर कपड़े और शिष्ट व्यवहार आदि तथा ठाट-बाट से रहने के ढंग उसके भाइयों एवं मित्रों में उसके प्रति घृणा-मिश्रित ईर्ष्या की भावना जाग्रत कर दिये थे।

ओलिवारिस की पत्नी डोना इज़ाबेला एक पक्की कैथोलिक थी और उसके घर में फ्रांसीसी पादरियों का हमेशा ही स्वागत तथा अच्छा सत्कार होता था। इज़ाबेला ने उस असम्बद्ध रूप में व्यस्थित कच्ची ईंटों के मकान को, जिसमें बड़ा भारी आंगन था तथा फाटक था, नक्काशीदार धरनियाँ तथा बल्लियाँ थीं, ऊँची-नीची छतें थीं और आग जलाने के सुरक्षित स्थान थे, सुन्दर बना लिया था। वह बड़ी विशाल-हृदया थी, और यद्यपि अब उसकी अवस्था काफ़ी हो चुकी थी, वह देखने में आकर्षक थी। दुबली-पतली स्त्री, बड़ी चटपट, उत्साही, रंग बिलकुल श्वेत, जिसे उसने बुरी-से-बुरी जलवायु में बिगड़ने नहीं दिया था, और भूरे रंग के काफ़ी अच्छे बाल, जिनमें उसके चेहरे के अनुसार आवश्यकता से अधिक गुच्छे और घूंघर थे। वह फ्रांसीसी भाषा अच्छा बोल लेती थी, थोड़ा-थोड़ा

स्पैनिश भी बोलती थी, वीणा बजा लेती थी और मजे का अच्छा गा लेती थी।

निश्चय ही फ़ादर लातूर तथा फ़ादर वेलेंट के लिये, जिन्हें मजदूरों, रेड इण्डियनों तथा उजड्ड सीमानिवासी अमेरिकनों के साथ ही अधिकतर रहना पड़ता था, यह बड़े भाग्य की बात थी कि वे कभी-कभी एक सभ्य महिला के साथ बैठकर अपनी मातृ-भाषा में बात कर सकते थे तथा उस सत्कारपूर्ण वातावरण में आग के पास, पुराने बड़े-बड़े शीशों और खुदे हुए चित्रों, गद्दीदार कुर्सियों, साफ़ परदेदार खिड़कियों, और प्लेटों तथा बेल्जियन शीशे के बने हुए बर्तनों से भरी आलमारियों से युक्त कमरे में कुछ देर मन बहला सकते थे। इस जोड़ी के साथ, जो इस बात में भी अनुराग रखती थी कि बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है, शाम को बैठकर गप्प लड़ाना, बढ़िया भोजन करना, बढ़िया शराब पीना तथा अच्छा संगीत सुनना बड़ा आनन्दप्रद होता था। फ़ादर जोसेफ़, जो असंगतियों के भण्डार थे, उच्च सुन्दर स्वर में गा भी लेते थे। ओलिवारिस की पत्नी उनके साथ पुराने फ्रांसीसी गाने गाना पसन्द करती थी। परन्तु इतना अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि गाने को लेकर वह थोड़ी घमण्डी थी और यदि कभी वह गाती भी थी, तो ज़िद करती थी कि तीन भाषाओं में गाया जाय, तथा अपने पति के प्रिय गानों को गाना कभी नहीं भूलती थी। स्टीफ़ेन फ़ोस्टर के नीग्रो राग नदियों के किनारे वाले क्षेत्र में प्रचलित होते-होते अब इस सीमावर्ती प्रदेशों में भी पहुँच चुके थे; परन्तु पुस्तक के रूप में मुद्रित होकर नहीं, अपितु इस प्रकार कि किसी एक गायक ने दूसरे को सिखाया, दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को।

डॉन एंटोनियो भारी-भरकम शरीर का मनुष्य था, पेट कुछ निकला हुआ, सिर थोड़ा गंजा और वह बोलता था बहुत धीरे-धीरे। परन्तु उसकी आँखें बड़ी जानदार थीं और उनकी पीली चमक उस समय स्पष्ट झलकती थी, जब वह बिलकुल चुपचाप रहता था। भोजन के पश्चात् जब वह न्यू

ऑर्लियंस से लायी हुई एक बड़ी कुर्सी पर बैठा हुआ अपनी लम्बी-लम्बी पीली उँगलियों में सिगार दबाये अपनी पत्नी को वीणा बजाते देख कर मुग्ध हो जाता था, तो उस समय उसे देखते ही बनता था।

उसकी पत्नी के सम्बन्ध में सांता फ़े में अनेक गाथाएं फैली हुई थीं, क्योंकि वह अब भी सुन्दर थी और अब भी उसका पति उसे पूर्ववत् प्रेम करता था। अमेरिकन लोग तथा ओलिवारिस के भाई कहा करते थे कि वह युवतियों जैसे कपड़े पहनती थी, जो कदाचित् सत्य भी था और यह कि न्यू ऑर्लियंस तथा अल पासो डेल नोर्ते में उसके प्रेमी अब भी थे। उसके भांजे तो यहां तक कहते थे कि वह उस मेक्सिकन लड़के पर ही मुग्ध थी, जिसे ये लोग सैन एंटोनियो से बेला बजाने के लिये ले आये थे; वे पति-पत्नी दोनों ही संगीत के प्रेमी थे, और यह लड़का, जिसका नाम पैब्लो था, अपने बाजे का तो जादूगर ही था। उसके नौकर अनेक प्रकार की बातें फैलाए हुए थे; डोना इज़ाबेला के कपड़ों से ही एक कमरा भरा हुआ था, और वे इतने सुन्दर थे कि उन्हें वह यहां पहनती ही नहीं थी, वह अपने पति के जेब से पैसे निकाल लेती थी और अपने कमरे में ज़मीन खोदकर गाड़ देती थी, वह अपने पति की वासना बढ़ाने के लिये उसे कुछ दवाएं तथा जड़ी-बूटी की बनी चाय पिलाया करती थी। इस सब गप्पबाज़ी का अर्थ यह नहीं कि उसके नौकर वफ़ादार नहीं थे, उलटे वे ये बातें इस लिए कहते थे कि उन्हें अपनी गृह-स्वामिनी पर नाज़ था।

ओलिवारिस, जो समाचार पत्र आदि पढ़ता था, यद्यपि वे उसे एक सप्ताह बाद मिलते थे, जो सिगरेटों की अपेक्षा सिगार और ह्विस्की की अपेक्षा फ्रेंच शराब अधिक पसन्द करता था, अपने छोटे भाइयों से बिलकुल भिन्न था। अपने पुराने मित्र मैनुएल शावेज़ के बाद सांता फ़े में यही दो फ्रांसीसी पादरी ऐसे व्यक्ति थे, जिनके साथ उठने-बैठने में उसे बड़ा आनन्द आता था और वह अपनी इस भावना को उन पर व्यक्त भी कर देता था। वह अपने मित्रों के लिये बेचैन रहता था। वह बिशप के घर उन्हें उनके

फल के बगीचे के सम्बन्ध में सलाह देने या फ़ादर जोसेफ़ के लिये घर की बनी हुई ब्रांडी देने जाया करता था। ओलिवारिस ने ही फ़ादर लातूर को चाँदी का बना हाथ धोने का एक बर्त्तन और एक घड़ा तथा नहाने के अन्य सामान दिये थे, जिन्हें पाकर वे जीवन भर बहुत प्रसन्न रहे। सांता फ़े के मेक्सिकनों में आभूषण बनाने वाले कुछ अच्छे कारीगर थे और डॉन एंटोनियो ने अपने मित्र के लिये अपने ही नहाने के सेट की नकल चाँदी देकर गढ़वा ली थी। डोना इज़ाबेला ने एक बार कहा था कि उसका पति फ़ादर वेलेंट को हमेशा ही कोई खाने की वस्तु देता था और फ़ादर लातूर को ऐसी कोई वस्तु, जो देखने में अच्छी हो।

ओलिवारिस दम्पति के एक कन्या थी, जिसका नाम सिनोरिटा इनेज़ था, और जो बहुत पहले पैदा हुई थी, तथा अब तक अविवाहित थी। सच तो यह है कि यह समझा जाने लगा था कि अब वह विवाह करेगी ही नहीं। यद्यपि वह भिक्षुणियों के वस्त्र नहीं पहनती थी, उसका जीवन भिक्षुणी के जीवन ही जैसा था। वह बड़े सादे ढँग से रहती थी और उसमें अपनी माँ का ठाट-बाट वाला कोई व्यसन नहीं था; परन्तु उसका गला बड़ा सुरीला था। वह न्यू ऑर्लियंस में, गिरजाघर में प्रार्थना आदि गाया करती थी और वहाँ के किसी कनवेंट स्कूल में संगीत सिखाती थी। जब से उसके माता-पिता सांता फ़े में रहने लगे तब से वह उनके पास केवल एक बार आयी थी और वह इस आमोद-प्रमोद वाले वातावरण में कुछ उदास-सी लगती थी। डोना इज़ाबेला उसे बहुत प्यार करती थी, परन्तु उसे अप्रसन्न करने से डरती थी। जब इनेज़ घर में रहती थी, तो वह बहुत सादे कपड़े पहनती थी, अपने घुँघराले बालों को, पिन लगा कर कान के पीछे किये रहती थी और दोनों औरतें साथ-साथ दिन भर गिरजाघर में रहती थीं।

बिशप के गिरजा बनवाने की अभिलाषा में एंटोनियो ओलिवारिस की बड़ी अनुरक्ति थी। उसने यह देख लिया कि फ़ादर लातूर उसे बनवाने पर तुले हुए हैं और ओलिवारिस इस प्रकृति का आदमी था कि अपने मित्र

की हार्दिक इच्छा पूरी करने में पूरा योग देना चाहता था। इसके अतिरिक्त उसे अपने जन्म स्थान के प्रति बड़ा प्रेम था; वह अनेक नगरों में गया था और सभी जगह उसने बहुत से अच्छे गिरजाघर देखे थे और उसकी भी इच्छा थी कि किसी दिन सांता फ़े में भी एक गिरजाघर बन जाय। कितनी बार रात को आग के पास बैठकर वह और फ़ादर लातूर इस सम्बन्ध में बातें किये थे; किस स्थान पर वह बनेगा, डिज़ाइन कैसी होगी, इमारत में पत्थर कैसा लगेगा, उसके बनवाने में खर्च कितना पड़ेगा तथा पैसा एकत्र करने में कठिनाई क्या थी, आदि। बिशप को आशा थी कि इमारत का काम सन् १८६० ई० में प्रारम्भ हो जायगा; उस समय उन्हें बिशप नियुक्त हुए दस वर्ष बीत चुके होंगे। एक दिन, रात को अपने मकान पर नये वर्ष की उस चिरस्मरणीय पार्टी के अवसर पर, ओलिवारिस ने अपने मेहमानों की मौजूदगी में घोषित किया कि नया वर्ष समाप्त होने के पहले ही मैं गिरजा-कोष में इतना पर्याप्त धन दे दूंगा कि फ़ादर लातूर अपना उद्देश्य पूरा कर सकेंगे।

ओलिवारिस की पार्टी इस घोषणा के कारण ही स्मरणीय रही और इसलिये भी कि उसी समय कुछ पुराने मित्रों का विछोह भी हो रहा था। डोना इज़ाबेला ने सीमावर्ती चौकी के अधिकारियों को, जिसमें से दो को सांता फ़े छोड़ने का आदेश हुआ था, इस पार्टी में आमंत्रित किया था। चौकी का लोकप्रिय कमांडेंट वाशिंगटन वापस बुला लिया गया था और घुड़सवारों वाली फ़ौज की टुकड़ी का नवयुवक लेफ्टिनेंट, जो एक आयरिश कैथोलिक था और जिसने हाल ही में विवाह किया था तथा फ़ादर लातूर को बड़ा प्रिय था, और भी पश्चिम भेजा जा रहा था। (अगला नया वर्ष आने के पहले ही, वह अरिज़ोना राज्य में रेड-इण्डियनों के साथ हुए किसी संघर्ष में मार डाला गया।)

परन्तु उस रात भविष्य को लेकर कोई चिन्तित नहीं था। मकान प्रकाश से जगमगा रहा था, संगीत की ध्वनि गूंज रही थी, उस सीमा-क्षेत्र

के सादे अतिथ्य-सत्कार से, जहाँ लोग अपने सम्बन्धियों से दूर एक प्रकार से निर्वासित की तरह रहते हैं, तथा जहाँ लोग काफ़ी कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं और यदा-कदा ही आपस में मन-बहलाव के लिये मिलते हैं, सारा वातावरण आनन्दमय था। किट कारसन भी, जो मैडम ओलिवारिस का बड़ा प्रशंसक था, ताओस से दो दिन की यात्रा करके उस रात वहाँ उपस्थित हुआ था। वह अपने साथ अपनी बेटी को भी लाया था, जो सेंट लूई के किसी कनवेंट स्कूल से अभी हाल ही में वापस आयी थी। इस अवसर पर कारसन एक सुन्दर चमड़े का कोट पहने हुए था, जिसमें चाँदी के तारों से कढ़ाई की हुई थी तथा जिसके कॉलर और कफ़ मख़मली थे। फ़ोर्ट के अधिकारी अपनी सैनिक पोशाक पहने हुए थे और ओलिवारिस सदा की भाँति एक चौड़े कपड़े का फ्रॉक कोट पहने हुए था। उसकी पत्नी एक 'हूप-स्कर्ट' पहने हुए थी, जो एक फ्रांसीसी पहनावा है तथा जिसे वह न्यू ऑर्लियंस से लायी थी। इस पोशाक पर लाल रंग के साटन के गुलाब के फूल बने हुए थे। सैनिक अधिकारियों की पत्नियाँ ओलिवारिस के घर एक सैनिक गाड़ी में आयी थीं, जिससे उनके साटन के जूते कीचड़, मिट्टी आदि से नष्ट न हों। बिशप अपना बैंगनी रंग का 'वेस्ट' पहने हुए थे, जिसे वे बहुत कम पहनते थे, और फ़ादर वेलेंट एक नया चोंगा पहने हुए थे, जिसे उनकी प्रिय बहन फ़िलोमीन ने रियोम में उनके लिये बनाया था।

फ़ादर लातूर को यह सोच कर बड़ा संकोच होता था कि जोसेफ़ अपनी बहन और उसकी भिक्षुणियों को अपने लिये कपड़े बनवाने में व्यस्त रखते थे; परन्तु पिछली बार जब वे फ्रांस में थे, तो उन्हें ये बातें बिलकुल भिन्न रूप में दिखलायी पड़ीं। 'मदर' फ़िलोमीन के कनवेंट में एक अपेक्षाकृत कम उम्र वाली 'सिस्टर' ने उन्हें बताया था कि इस प्रकार कार्यमुक्त जीवन में दूरस्थ मिशनों के लिये काम करने से उन्हें कितनी प्रेरणा मिलती है। उसने उन्हें यह भी बताया कि उनके लिये फ़ादर वेलेंट के लम्बे पत्र

कितने मूल्यवान् थे, वे पत्र, जिनमें, वे अपनी बहन को, उस देश, रेड-इण्डियनों, धार्मिक मेक्सिकन महिलाओं, पहले के स्पेनिश शहीदों आदि के सम्बन्ध में बहुत सी बातें बतलाते थे। उसने बतलाया कि 'मदर' फ़िलोमीन संध्या समय इन पत्रों को हमें पढ़कर सुनाती हैं। वह 'सिस्टर' फ़ादर लातूर को एक खिड़की के पास ले गयी और उसमें से बाहर सड़क के उस भाग की ओर हाथ से संकेत किया, जहाँ से वह एकाएक एक ओर को मुड़ जाती थी, और उसके आगे का भाग बिलकुल नहीं दिखलायी पड़ता था। "देखिये," उसने कहा, " 'मदर' जब अपने भाई का कोई पत्र पढ़कर सुनाती हैं, तो मैं इस खिड़की पर आकर बैठ जाती हूँ और एकाकी बत्ती वाली अपनी इस छोटी सी सड़क की ओर देखती हूँ, और सोचती हूँ कि मोड़ के उस पार न्यू मेक्सिको है, वहीं पर उनके द्वारा बताये गये वे लाल मरुस्थल हैं, नीले पर्वत हैं, विशाल मैदान हैं, जंगली भैसों के झुंड हैं और वे संकरे और गहरे पहाड़ी दर्रे हैं, जो यहाँ के किसी भी दर्रे से अधिक गहरे हैं। मैं अनुभव करती हूँ कि मैं सचमुच वहीं पहुँच गयी हूँ, मेरा दिल जोरों से धड़कने लगता है और एक ही क्षण ऐसा रहता है, तभी सोने की घण्टी बजती है और मेरा स्वप्न समाप्त हो जाता है।" इसके बाद बिशप यही सोचकर वहाँ से वापस लौटे कि यह अच्छा ही है कि ये सिस्टरें फ़ादर जोसेफ़ के लिये इस प्रकार काम करती हैं।

आज रात, जब ओलिवारिस की पत्नी फ़ादर वेलेंट के पॉपलीन और मखमली कपड़ों की चमक की प्रशंसा कर रही थी, तभी न जाने क्यों फ़ादर लातूर को उस क्षण की याद आ गयी जब वे उस भिक्षुणी के साथ उस खिड़की के पास खड़े थे; उसका श्वेत चेहरा और जलती हुई आँखें उन्हें याद आ गयीं और उन्होंने एक आह भरी।

भोजन तथा मदिरा-पान आदि के पश्चात् पैब्लो नामक लड़का बुलाया गया कि जब तक अतिथि लोग सिगार आदि पियें, वह 'बैन्जों' (बेला जैसा एक बाजा) बजावे। फ़ादर लातूर इस वादन को कभी पसन्द न कर सके

और वे इसे जंगलियों का बाजा समझते थे। परन्तु जब यह विचित्र पीत रङ्ग का लड़का उसे बजाने लगा, तो उसके तारों की झंकार में एक अद्भुत मधुरता एवं शिथिलता थी। इसके अतिरिक्त उसमें एक प्रकार का पागलपन भी था, एक प्रकार की उद्दण्डता थी, जंगली प्रदेशों की वह पुकार थी, जिसका इन सभी लोगों ने किसी न किसी रूप में अनुभव और अनुसरण किया था। सिगार के धुएँ से आच्छादित उस कमरे में, अतिथि रूप में आये हुये कारसन और सैनिक मेक्सिकन कृषक और पादरीगण चुपचाप बैठे बैंजों बजाने वाले उस लड़के के झुके हुए सिर और कन्धों को देख रहे थे, द्रुत गति से ऊपर-नीचे, घूमने वाले उसके पीले हाथ को देख रहे थे, जो कभी-कभी आकृति-हीन हो जाता था और भयंकर चक्कर में घूमते हुए किसी जड़ पदार्थ के ही रूप में दीखता था, जैसे किसी बवंडर का एक अंश कमरे में आ गया हो।

उन्हें इस प्रकार चुपचाप विचार-मुद्रा में बैठे देखकर, फ़ादर लातूर सोच रहे थे कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी जीवन-गाथा को स्पष्ट कह रहा है। कारसन की वे उत्सुक, दूरदर्शी नीली आँखें किसी स्काउट एवं बीहड़ रास्तों पर चलने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसकी हो सकती थीं? वहाँ बैठे हुए लोगों में सबसे सुन्दर व्यक्ति डॉन मैनुएल शावेज़ को, जिसके चेहरे की गढ़न बड़ी सुन्दर थी परन्तु देखने में जो अवज्ञापूर्ण लगता था, उन सुन्दर मखमली कपड़ों में केवल कमरे को पार करते हुए देख लीजिये, या भोजन के समय उसकी बगल में बैठ जाइये, तुरन्त आपको उसकी गम्भीर एवं शान्त मुद्रा के आवरण में ढंके हुए उसके उत्तेजनापूर्ण स्वभाव का, जीवन के अनुभवों से उत्पन्न कटुता की उग्रता का एवं खतरों से खेलने की व्याकुलता का आभास मिल जायगा।

शावेज़ बड़े गर्व से बतलाता था कि वह उन दो स्पेनिश सरदारों के परिवार का था, जिन्होंने शावेज़ नगर को सन् ११६० ई० में मुअरों से आजाद किया था। पेकोस तथा सैन मेटियो पर्वत के अंचल में उसकी

ज़मीन-जायदाद थी तथा सांता फ़े में उसका एक मकान था जहाँ वह अपने सुन्दर उद्यान एवं वृक्षों के बीच आनन्द में रहता था। वह अपने प्रदेश की प्राकृतिक सुन्दरता के प्रति दीवाना रहता था और उन अमेरिकनों से घृणा करता था, जो इस सुन्दरता की सरहाना न करते थे। वह कारसन की रेड इण्डियनों से लड़ने से सम्बन्धित ख्याति के प्रति ईर्ष्यालु था, और कहता था कि बीस वर्ष की अवस्था तक में ही रेड इण्डियनों से जितनी लड़ाइयां उसने देखी हैं, उतनी कारसन जीवन भर में नहीं देखेगा। पिस्तौल चलाने में निश्चय ही वह कारसन का प्रतिद्वन्द्वी था। तीर चलाने में तो उसका अपना कोई सानी नहीं था। इस कला में वह कभी भी पराजित नहीं हुआ था। शावेज़ जितनी दूर तीर चला लेता था उतनी दूर कभी किसी रेड इण्डियन ने भी नहीं चलाया था। प्रत्येक वर्ष रेड इण्डियन लोग उसके घर बाज़ी पर तीर चलाने आया करते थे। उसका मकान तथा अस्तबल जीते हुए पदकों एवं ट्राफ़ियों से भरा था। रेड इण्डियनों से बाज़ी में लगाये हुए उनके घोड़ों, पैसों या कम्बलों तथा अन्य वस्तुओं को जीतने में उसे बड़ा आनन्द आता था। रेड इण्डियनों के अस्त्रों में अपनी प्रवीणता पर उसे बड़ा नाज़ था, यह कला उसने काफ़ी परिश्रम के बाद सीखी थी।

जब शावेज़ सोलह वर्ष का था, तो मेक्सिकन छोकरों के एक दल के साथ वह नवाजों का पीछा करने गया था। उन दिनों, अमेरिका द्वारा अधिकृत किये जाने के पहले, नवाजों का पीछा करने के लिये किसी बहाने की आवश्यकता नहीं थी। वह भी एक प्रकार का 'शिकार' समझा जाता था। मेक्सिकन घुड़सवारों का एक दल पश्चिम की ओर नवाजो प्रदेश में पहुँच जाता था, भेंड़ों के दो-चार बाड़ों पर आक्रमण करता था और अपने साथ कुछ भेंड़ें, टट्टू, तथा कुछ बन्दी ले आता था। प्रत्येक बन्दी के लिये मेक्सिकन सरकार से भारी पुरस्कार मिलता था। ऐसे ही एक आक्रमणकारी दल के साथ सोलह वर्ष की अवस्था में शावेज़ लूट-पाट के लिये गया था।

नौजवान मेक्सिकनों का यह दल जिस स्थान पर ग्राक्रमण करना चाहता था, वहाँ जब उन्हें नवाज़ो कबीले का कोई रेड इण्डियन नहीं दिखलाई पड़ा तो वे ग्रागे बढ़ गये। वे यह नहीं जानते थे कि यह वह समय था, जब नवाजों के सभी कबीले कैनियन डि चेली नामक पहाड़ी दर्रे में अपने धार्मिक अनुष्ठानों के लिये एकत्र होते हैं। अतः वे जोश में ग्रागे बढ़ते गये ग्रौर उस रहस्यपूर्ण एवं भयानक दर्रे के बिलकुल किनारे पर पहुँच गये, जहाँ उस समय रेड इण्डियनों का भारी समूह एकत्र था। तुरन्त ही वे घेर लिये गये ग्रौर भाग निकलना ग्रसम्भव हो गया। वे दर्रे के ऊपर वनस्पति-हीन चट्टानों पर लड़ने लगे। मैनुएल का बड़ा भाई डॉन जोफ़ शावेज़ दल का कप्तान था ग्रौर पहले वही मारा गया। दल के सभी पचास व्यक्ति क़त्ल कर दिये गये। मैनुएल इक्यावनवाँ व्यक्ति था ग्रौर वह बच गया। उसके शरीर में तीर के सात घाव लगे थे ग्रौर एक भाला शरीर के ग्रारपार हो गया था ग्रौर उसे मरा हुग्रा समझ कर लाशों के ढ़ेर में छोड़ दिया गया था।

रात को जब नवाजो लोग अपनी विजय पर ग्रानन्द मना रहे थे, वह बेचारा चट्टानों पर खिसकता हुग्रा ग्रागे बढ़ा ग्रौर जब उसके ग्रौर शत्रु के बीच बड़े-बड़े टीले ग्रा गये, तो वह खड़ा होकर पूरब की ग्रोर पैदल चल पड़ा। गरमी का महीना था ग्रौर उस लाल चट्टानों वाले प्रदेश में तो भयानक गरमी पड़ती है। उसके घाव बहुत कष्ट दे रहे थे, परन्तु उसमें नौजवानी की अद्भुत शक्ति थी। वह दो दिन ग्रौर दो रात एक बूंद पानी पिये बिना चलता रहा, ग्रौर कभी मैदान पार करता हुग्रा ग्रौर कभी पहाड़ों को लाँघता हुग्रा लगभग साठ मील की दूरी पार करने के बाद, ग्रन्त में वह उस पार उस विख्यात सोते के पास पहुँचा, जहाँ बाद को 'फोर्ट डिफायेंस' नामक किला बनाया गया। वहाँ पहुँच कर उसने पानी पिया, अपने घाव धोये ग्रौर सो गया। लड़ाई के दिन के प्रातःकाल से ही उसने कुछ खाया नहीं था; सोते के समीप उसने नागफनी के कुछ

बड़े-बड़े पौधे देखे और अपने शिकारी चाकू से उन्हें काट कर तथा उन्हें ऊपर से छील कर उनके रसदार गूदे से अपना पेट भरा।

यहाँ से वह फिर आगे बढ़ा और अब भी रास्ते में उसे कोई मनुष्य नहीं मिला। आगे बढ़ते-बढ़ते वह लगूना के उत्तर सैन मैटियो पहाड़ के समीप पहुँचा। पर्वत की एक घाटी में उसे मेक्सिकन गड़ेरियों का एक शिविर मिला, जहाँ वह अचेत होकर गिर पड़ा। गड़रियों ने पेड़ की टहनियों तथा भेड़ों की खाल के अपने कोटों से एक डोली-सी तैयार की और उसे सेबोलेत्ता नामक गाँव में ले गये, जहाँ वह कई दिन तक अचेतावस्था में बड़बड़ाता हुआ पड़ा रहा। वर्षों पश्चात्, जब वह अपने माता-पिता के मरने के बाद अपनी सम्पत्ति का मालिक हुआ, तो उसने सैन मैटियो पर्वत की उस सुन्दर घाटी के उस भूमि-खण्ड को खरीद लिया, जहाँ वह दो चीड़ के वृक्षों के नीचे अचेत होकर गिरा था। उसने उन दोनों वृक्षों के बीच एक मकान बनाया और वहाँ एक सुन्दर जागीर खड़ी कर दी।

चूँकि शावेज़ ने अमेरिकन शासन कभी भी स्वीकार नहीं किया था, अतः जब तक वह सांता फ़े में होता तो बिलकुल एकान्त में रहता। दूर या नज़दीक किसी भी रेड इण्डियन दंगे की बात सुनते ही वह चल पड़ता था और अपने रेकार्ड में कुछ और हत्याएं जोड़ लेता था। वह नये बिशप का अविश्वास करता था, क्योंकि रेड इडिएयनों तथा अमेरिकनों के प्रति उनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। इसके अतिरिक्त वह मार्टिनेज़ पादरी का आदमी था। आज रात वह यहाँ ओलिवारिस की पत्नी के आग्रह पर आया था। वह शाम का अपना समय अमेरिकनों की पोशाक पहने हुए लोगों के बीच बिताना नहीं पसन्द करता था।

बेला बजाने वाला लड़का जब थक गया तो फ़ादर जोसेफ़ ने कहा कि मैं कोई अन्य संगीत सुनना चाहता हूं। अतः वे ओलिवारिस की पत्नी को उसकी वीणा के पास लिवा गये। वह वीणा बजाते समय बड़ी सुन्दर

लगती थी। बैठने की उस मुद्रा में उसका एक ओर को झुका हुआ चमकदार पीला चेहरा, उसका छोटा सा पाँव तथा उसकी श्वेत बाहें बड़ी मनोहर लगती थीं।

यह अन्तिम बार था कि बिशप ने उसे अपने सराहनाशील पति के समक्ष, जिसकी आँखें नींद भरी होने पर भी मानो उसकी ओर मुस्करा रही हों, 'ला पलोमा' (एक प्रकार का राग) गाते सुना।

ओलिवारिस की मृत्यु महात्मा ईसा के नाम पर होने वाले चालीस दिवसीय वार्षिक अनशन आरम्भ होने के तीन सप्ताह पहले रविवार के दिन हो गयी। वह उस दिन रात्रि के भोजन के पश्चात् मोमबत्तियाँ जलाते समय अचानक अपनी अंगीठी के पास गिर गया और बेला बजाने वाला लड़का बिशप को लिवा आने के लिये दौड़ाया गया। आधी रात के पहले ही ओलिवारिस के दो भाई, शराब के नशे में चूर, किसी अमेरिकन वकील से बातें करने सांता फ़े से अलबुक़र्क के लिये घोड़े पर रवाना हो गये।

२

पत्नी

एंटोनियो ओलिवारिस का अंत्येष्टि संस्कार जिस धार्मिकता एवं ठाट-बाट से मनाया गया, वैसा सांता फ़े में पहले कभी नहीं देखा गया था, परन्तु फ़ादर वेलेंट उस समय वहाँ नहीं मौजूद थे। वे दक्षिण की ओर अपनी किसी लम्बी मिशनरी यात्रा पर गये हुए थे, और मैडम ओलिवारिस के विधवा होने के कई सप्ताह पश्चात् घर वापस पहुँचे। अभी वे अपने घुड़सवारों वाले कपड़े भी न उतार पाये थे कि उन्हें उसके वकील से मिलने के लिये फ़ादर लातूर के अध्ययन-कक्ष में बुलाया गया।

ओलिवारिस ने अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था ब्रायड ओ रेली नामक एक नौजवान आयरिश कैथोलिक के मत्थे छोड़ दी थी, जो वकालत करने बोस्टन से न्यू मेक्सिको आया था। उस समय सांता फ़े में लोहे की तिजोरियाँ न थीं, परन्तु ओ रेली ने ओलिवारिस की वसीयत अपनी खास मज़बूत सन्दूक में रख छोड़ी थी। वसीयत बहुत सूक्ष्म एवं स्पष्ट थी। एंटोनियो की जायदाद को मालियत लगभग दो लाख डालर के थी (उस समय यह काफ़ी बड़ी सम्पत्ति समझी जाती थी)। उससे होने वाली आय उसकी पत्नी इज़ाबेला ओलिवारिस तथा उसकी कन्या इनेज़ ओलिवारिस अपनी ज़िंदगी भर भोगेंगी, और उनकी मृत्यु के पश्चात् यह सम्पत्ति गिरजा संस्थान, ईसाई धर्म-प्रचार सभा को चली जाने को थी। फ़ादर लातूर के गिरजा-कोष में कुछ रक़म दिये जाने की बात दुर्भाग्य से वसीयत में न जोड़ी जा सकी थी।

इस वकील ने फ़ादर वेलेंट को बतलाया कि ओलिवारिस के भाइयों ने अलबुक़र्क की एक अग्रणी कानूनी फ़र्म को अपने कानूनी सलाहकार के रूप में नियुक्त कर लिया था, और वे वसीयत का प्रतिवाद करने जा रहे हैं। दावे में उनकी मुख्य दलील यह थी कि सीन्योरिटा इनेज़ की अवस्था इतनी अधिक थी कि वह सिनोरा ओलिवारिस की पुत्री नहीं हो सकती थी। डान एंटोनियो अपनी युवावस्था में बिना सोचे समझे लड़कियों से प्रेम कर बैठता था, और उसके भाइयों का यह कहना था कि इनेज़ किसी क्षणिक वासनापूर्ण प्रेम के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न हुई थी और डोना इज़ाबेला ने उसे गोद ले लिया था। ओ रेली ने ओलिवारिस जोड़ी के विवाह-सम्बन्धी काग़ज़ात की प्रामाणिक नकल तथा सीन्योरिटा इनेज़ के जन्म-सम्बन्धी प्रमाण-पत्र के लिये न्यू ऑर्लियंस आदमी भेजा था। परन्तु केंटकी राज्य में, जहाँ सिनोरा पैदा हुई थी, कोई जन्म-सम्बन्धी कागज़ात रखे ही नहीं जाते थे; इज़ाबेला ओलिवारिस की आयु सिद्ध करने के लिये कोई काग़ज़ी सबूत नहीं था और वह अपनी सच्ची आयु स्वीकार करने के

लिये तैयार ही नहीं होती थी। सांता फ़े में यह आम धारणा थी कि उसकी अवस्था अभी चालीस के ही आस-पास थी (यही दो एक वर्ष अधिक), जिसका अर्थ यह हुआ, कि इनेज़ के जन्म के समय उसकी अवस्था सात या आठ वर्ष से अधिक न थी। वास्तव में उसकी अवस्था पचास वर्ष से भी अधिक थी, परन्तु जब ओ रेली ने उसे यह समझाना चाहा कि वह इसे अदालत में स्वीकार कर ले, तो उसने उनकी बात मानने से स्पष्ट इनकार कर दिया। अतः ओ रेली ने बिशप और विकार से कहा कि इसे मनवाने के लिये वे लोग उस पर दबाव डालें।

फ़ादर लातूर ने इतने नाजुक मामले में हस्तक्षेप करना न चाहा। परन्तु फ़ादर वेलेंट ने तुरन्त यह निर्णय किया कि दोनों स्त्रियों की रक्षा करना उन लोगों का परम कर्तव्य है और साथ ही धर्म-प्रचार सभा के अधिकारों की भी रक्षा करना आवश्यक था। अतः बिना कुछ अधिक सोचे-विचारे उन्होंने अपना पुराना लबादा ओढ़ा और तीनों व्यक्ति नगर के पूरब पहाड़ी पर स्थित ओलिवारिस के मकान के लिये रवाना हो गये।

नये वर्ष की पार्टी के दिन से ही फ़ादर जोसेफ़ ओलिवारिस के मकान पर अब तक नहीं गये थे, और वहाँ पहुँचने पर उन्होंने ठण्डी सांस ली। स्थान लापरवाही के कारण अभी से काफ़ी बदल गया था। उसका विशाल फाटक एक बांस के सहारे खुली हुई हालत में रखा गया था, क्योंकि लोहे का हुक टूट कर निकल गया था, आँगन में कूड़ा तथा खाये हुए मांस की हड्डियाँ बिखरीं पड़ी थीं, जिन्हें कुत्ते वहाँ ले आये थे, और किसी ने उन्हें वहाँ से फेंका नहीं था। पोर्टिको में टँगा हुआ तोते का बड़ा पिंजड़ा बीट से भरा हुआ था, और चिड़ियाँ चीख रही थीं। ओ रेली द्वारा बाहरी फ़ाटक पर घण्टी बजाने पर बेला बजाने वाला लड़का पैब्लो बिखरे बाल लिये, गन्दी कमीज पहने, उन्हें अन्दर लिवा जाने के लिये दौड़ा हुआ आया। वह उन्हें बैठने के बड़े कमरे में ले गया, जो बिलकुल खाली और ठण्डा था, आग जलाने के स्थान में बिलकुल अँधेरा था और चूल्हे के पास झाड़ू तक

नहीं लगा था। कुर्सियों तथा खिड़कियों पर लाल धूल की परत जमी हुई थी, दरवाज़ों एवं खिड़कियों के शीशे गन्दे हो रहे थे और उन पर लकीरें बनी हुई थीं, जैसे उन पर आँसू की बूंदे गिर कर बही हों। लिखने की मेज़ पर खाली बोतल, गन्दी गिलासें तथा सिगार के जले हुए टुकड़े पड़े थे। एक कोने में वीणा अपनी हरी खोली में बन्द रखी हुई थी।

पैब्लो ने उन लोगों को बैठाया। उसने बताया कि मालकिन बिस्तर पर पड़ी हुई हैं, रसोइये ने अपना हाथ जला लिया है तथा अन्य नौकरानियाँ काहिल हैं। थोड़ी सी लकड़ी लाकर उसने वहाँ आग जलायी।

थोड़ी देर बाद डोना इज़ाबेला कमरे में आयी। वह काले शोक-वस्त्र पहने हुए थी और काले कपड़ों की विषमता में उसका चेहरा बहुत श्वेत लग रहा था। उसकी आँखें लाल हो रही थीं और कान और गर्दन के पास उसके घुँघराले बाल रूखे एवं भूरे—विवर्ण हो रहे थे।

फ़ादर वेलेंट द्वारा अभिवादन एवं संवेदना प्रकाशन के पश्चात् वकील उसे एक बार फिर अपनी कठिनाइयाँ समझाने लगा और यह बताने लगा कि उन्हें ओलिवारिस के भाइयों को उनकी चालों में विफल करने के लिये क्या करना चाहिये। वह अपनी आँखों एवं नाक को अपने छोटे से कढ़े हुए रूमाल से पोंछती हुई चुपचाप बैठी रही और स्पष्ट था कि जो कुछ वकील साहब उससे कह रहे थे, उसका एक शब्द भी समझने का वह प्रयत्न नहीं कर रही थी।

फ़ादर जोसेफ़ शीघ्र ही अधीर हो उठे और वे स्वयं ही उस विधवा से बोले, "तुम समझती हो, मेरी बच्ची, कि तुम्हारे पति के भाई लोग, उनकी इच्छाओं को पूरा नहीं होने देना चाहते और वे तुम्हें, तुम्हारी बेटी, तथा गिरजा को छल द्वारा सम्पत्ति से वंचित रखने के लिये कृत-संकल्प हैं। यह बचपने की हठधर्मी का समय नहीं है। तुम्हारे स्वर्गीय पति की स्मृति को अपमानित करने का जो यह प्रयत्न किया जा रहा है, उसे रोकने के लिये, तुम्हें अदालत को यह विश्वास दिलाना ही होगा कि तुम्हारी

अवस्था इनेज़ की माँ बनने के उपयुक्त है। तुम्हें दृढ़ता से अपनी सही अवस्था बतलानी होगी। तिरपन वर्ष है न, वह ?"

डोना इज़ाबेला डर से पीली पड़ गयी। वह मोटे गद्दे वाले विशाल सोफ़ा के एक कोने में सिकुड़ कर बैठ गयी, परन्तु तुरन्त ही बहुत उत्तेजित हो उठी और उसकी नीली आँखें विस्फारित हो कर चमक उठीं, जैसे वह अपने अन्तिम आश्रय पर पहुँच कर सबका सामना करने को तैयार हो गयी हो।

"तिरपन वर्ष !" उसने भय एवं आश्चर्य से कहा। "ऐसा कहना घोर अपमानजनक है। इसी साल में बयालीस वर्ष की हुई हूँ। गत चार दिसम्बर को मैंने अपनी बयालीसवीं वर्षगाँठ मनायी थी। मेरे पति यदि जीवित होते तो वे भी आपको यही बताते। और फ़ादर जोसेफ़, उन्होंने आपको मुझे न तो गाली दी होती और न तो मुझसे सम्पत्ति जायदाद सम्बन्धी ऐसी कोई बात करने दिया होता। वे किसी को भी मुझसे ऐसी बात नहीं करने देते थे।" इतना कहकर वह अपने रूमाल से मुँह ढँक कर रोने लगी।

फ़ादर लातूर ने अपने अधीर एवं उतावले विकार को रोका और सोफ़ा पर मैडम ओलिवारिस के समीप बैठकर उसके प्रति शोक प्रकट करने लगे और बड़ी नरमी से बोले—"मैडम ओलिवारिस आप अपने मित्रों एवं सारी दुनिया के लिये बयालीस ही वर्ष की हैं। हृदय से और अपनी शकल-सूरत के लिहाज़ से तो आप उससे भी कम हैं। परन्तु कानून एवं धर्म के समक्ष तो सच्ची बात ही स्वीकार करनी चाहिये। अदालत में एक औपचारिक वक्तव्य आपको अपने मित्रों की दृष्टि में अधिक अवस्था की तो बना नहीं देगा; उससे आपके चेहरे में एक झुर्री भी तो नहीं पड़ेगी। आप तो जानती हैं कि औरत की वही अवस्था होती है, जितनी वह देखने में लगती है।"

"ऐसा कहना आपकी बड़ी कृपा है; बिशप लातूर," उसने काँपते

हुए स्वर में आँसू भरे नेत्रों से उनकी ओर देखते हुए कहा। "परन्तु ऐसा वक्तव्य दे देने पर फिर मैं अपना सिर नहीं उठा सकूँगी। ले जाने दीजिये मेरे पति के भाइयों को सारी सम्पत्ति। मुझे वह नहीं चाहिये।"

फ़ादर वेलेंट आवेग से उठ खड़े हुए और उन्होंने उसकी ओर घूर कर इस प्रकार देखा, जैसे वे अपनी टकटकी से ही उसके मस्तिष्क में समझदारी की बात भर देना चाहते हों। "चार लाख पेसोज़ (मेक्सिकन सिक्का) का मामला है, सीन्योरा इज़ाबेला!" चिल्ला कर वे बोले। "इससे आपका और आपकी लड़की का शेष जीवन बड़े ठाट से कट सकता है। क्या आप अपनी लड़की को भिखारी बना देना चाहती हैं? जानती हैं न, ओलिवारिस के भाई सभी कुछ हड़प लेंगे।"

"इनेज़ के लिये तो मैं यों भी कुछ नहीं कर सकती!" उसने विनय भरे स्वर में कहा। "इनेज़ तो कनवेंट का ही जीवन बिताना चाहती है। और रही मैं, सो मुझे भी उस सम्पत्ति की परवाह नहीं है। मैं बूढ़ी और धनी होने की अपेक्षाकृत कम अवस्था की और गरीब बनी रहना अधिक पसन्द करूँगी।"

फ़ादर जोसेफ़ ने उसका बर्फ़ जैसा ठण्डा हाथ पकड़ लिया। "और क्या आपको अपनी सम्पत्ति के उस भाग से गिरजा को वंचित करने का अधिकार है, जो वसीयत के अनुसार उसे मिलना चाहिये? क्या आपने सोचा है कि इस प्रकार गिरजा के साथ दग़ा करने का परिणाम क्या होगा?"

फ़ादर लातूर ने बड़ी कड़ी दृष्टि से अपने विकार की ओर देखा। "बहुत हो चुका," उन्होंने धीरे से कहा। उन्होंने इज़ाबेला का हाथ पकड़ते हुए, जिसे फ़ादर जोसेफ़ ने अब तक छोड़ दिया था, उसे बड़े सम्मान से चूमा। "हमें अब आगे और नहीं कहना चाहिये। हमें इसे मैडम ओलिवारिस के ही निर्णय पर छोड़ देना चाहिये। उनकी आत्मा जैसी गवाही दे, वैसा वे करें। मेरी बच्ची, मेरा विश्वास है कि यदि तुम अपनी

इस हठधर्मी को छोड़ दो, तो तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिलेगी। मामले को यदि क्षण भर के लिये केवल सांसारिक दृष्टि से ही सोचा जाय, तो भी यह कहना होगा कि गरीबी बर्दाश्त करना तुम्हरे लिये कठिन हो जायगा। तुम्हें अपने पति के भाइयों का मुहताज रहना पड़ेगा है न ठीक ? और मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो। मेरा तो इसमें अपना निजी स्वार्थ है; मैं चाहता हूं कि तुम हमेशा ही सुन्दर बनी रहो और यहां हम लोगों के जीवन को थोड़ा सरस बनाये रहो। यों तो हम दोनों का जीवन कितना नीरस है।"

मैडम ओलिवारिस ने रोना बन्द कर दिया। वह अपना मुंह ऊपर उठा कर आंसू पोछने लगीं। अचानक वह बिशप के चोगे का एक बटन पकड़कर कांपती उंगलियों से उसे ऐंठने लगी।

"फ़ादर," उसने धीरे से कहा, "इनेज़ की मां कहलाने के लिये मुझे कम से कम कितनी अवस्था का बनना पड़ेगा ?"

बिशप इसका उत्तर न दे सके; वे ज़रा हिचकिचाये, कुछ संकुचित हुए, और फिर हाथों से ओ रेली को संकेत किया कि वे ही इसका उत्तर दें।

"बावन वर्ष, सीन्योरा ओलिवारिस," उसने सम्मान-सूचक ध्वनि में कहा। "यदि आप इसे स्वीकार कर लें और उसी पर दृढ़ रहें तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम मुक़दमा जीत जायेंगे।"

"अच्छी बात है, ओ रेली साहब," कहकर उसने अपना सिर झुका लिया। उसके अतिथि उठ गये और वह फ़र्श पर पड़े धूल भरे कालीन को एकटक देखने लगी। "सबके सामने कहना पड़ेगा!" वह अपने-आप बुदबुदायी।

घर वापस जाते समय रास्ते में फ़ादर वेलेंट ने कहा कि मैं एक समूचे गांव के रेड इण्डियनों के अन्ध-विश्वासों का सामना आसानी से कर सकता हूं, लेकिन किसी श्वेत महिला की हठधर्मी का नहीं।

"और मैं चाहे अन्य कुछ भी कर लूँ, लेकिन फिर जीवन में आज जैसे दृश्य का सामना नहीं कर सकता," बिशप ने खिन्न होकर कहा। मेरा ख्याल है कि मैंने ऐसे निर्दय काम में पहले कभी नहीं हाथ बँटाया था।

ब्वायड ओ रेली ने ओलिवारिस के भाइयों को पराजित करके मुकदमा जीत लिया। बिशप मुकदमे की सुनवाई के दिन न्यायालय में नहीं गये थे, परन्तु फादर वेलेंट वहाँ मौजूद थे। दुर्गंधपूर्ण भीड़ के बीच वे भी खड़े थे (न्यायालय के कमरे में कुर्सियाँ न थीं), और उस समय उनका पैर काँपने लगा, जब उस नौजवान वकील ने डर के कारण उत्पन्न प्रचण्डता से अपने मुवक्किल की ओर उँगली उठाते हुए उससे पूछा—

"सीन्योरा ओलिवारिस, आपकी अवस्था बावन वर्ष की है न?"

मैडम ओलिवारिस शोक में सनी हुई थी और उसका चेहरा काली ओढ़नी के बीच से यों दीख रहा था जैसे वह उसी की श्वेत धारी हो।

"जी, हाँ।" इतना ही शब्द मुश्किल से उसके मुँह से निकला।

फैसले के दूसरे दिन रात के समय मैनुएल शावेज़ एंटोनियो के अन्य पुराने मित्रों के साथ मैडम ओलिवारिस को बधाई देने उसके घर गया। वे लोग उसके घर जाने वाले हैं, यह बात सारे नगर में फैल गयी थी और अन्य लोग भी उसके घर जो इतने दिनों तक अतिथियों के लिये बन्द था, जाने की तैयारी में लग गये थे। अतः उस रात वहाँ काफ़ी लोग एकत्र हुए, जिनमें कुछ सैनिक अधिकारी तथा ओलिवारिस के भाइयों के पुश्तैनी शत्रु भी थे।

बैठने के बड़े कमरे में एक बार पुनः इतने लोगों को एकत्र देखकर बावर्ची भी उत्साहित हो उठा और उसने बड़ी तत्परता से सुन्दर भोजन तैयार किया। पैब्लो ने एक सफ़ेद कमीज़ तथा मखमली जैकेट पहना, और अपने स्वर्गीय मालिक की अलमारी से सर्वश्रेष्ठ ह्विस्की, शेरी तथा शैंपेन

(शराब की क़िस्में) निकाल कर मेज़ पर लगाने लगा। (मेक्सिकन लोग इस प्रकार की शरावों के बड़े शौकीन होते हैं। इस घटना के कुछ ही वर्ष पहले की बात है कि एक अमेरिकन व्यापारी का सांता फ़े के मेक्सिकन सैनिक अधिकारियों से गहरा राजनीतिक मतभेद हो गया था जिसके कारण वह भयंकर संकट में पड़ गया था। उसने उनके पास एक गाड़ी भर शैंपेन की बोतलें भेज कर पुनः उनका विश्वास एवं मैत्री प्राप्त कर ली थी। गाड़ी में तीन हज़ार तीन सौ बानवे बोतलें थी!)

घर में आमोद-प्रमोद का यह वातावरण अचानक ही उत्पन्न हुआ। पहले से कोई तैयारी नहीं हुई थी। शराब पीने के गिलास गन्दे हो रहे थे, परन्तु पैब्लो ने उन्हें झट अभी उतारी हुई कमीज़ से झाड़ पोंछ डाला और बिना किसी से कहे ही शराब से भरे गिलासों को ट्रे में रखकर लोगों के पास पहुँचाने लगा। इन गिलासों को बाद में वह वहाँ रखी मेज़ के पास खड़े होकर दराज़ों में से शराब निकाल-निकाल कर भरता रहा। यहाँ तक कि डोना इज़ाबेला ने भी थोड़ी शैंपेन पी; जार्जिया के कप्तान के साथ एक गिलास पी चुकने के बाद भी वह अपने समीपतम पड़ोसी, फर्डिनेंड सांचेज़ के साथ भी, जो हमेशा ही उसके पति का सच्चा मित्र था, एक और गिलास पीने से इनकार न कर सकी। वहाँ पर उपस्थित सभी लोग नौकर एवं अतिथि, आनन्द-विभोर थे। प्रत्येक वस्तु सुहानी लग रही थी, जैसे वर्षा के बाद कोई उपवन।

फ़ादर लातूर एवं फ़ादर वेलेंट को मित्रों की इस अचानक पार्टी का कोई ज्ञान नहीं था। वे लोग उस बहादुर विधवा को बधाई देने अपने घर से आठ बजे रवाना हुए। उसके घर के बाहरी आंगन में प्रवेश करते ही अन्दर से संगीत की ध्वनि सुन कर तथा पोर्टिको के पीछे खिड़कियों की क़तार से चमकती हुई रोशनी देखकर, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। बिना घण्टी बजाये ही, उन्होंने बड़े कमरे का दरवाज़ा खोल कर अन्दर प्रवेश किया। कमरे में बहुत सी मोमबत्तियाँ जल रही थीं। पुरुष लोग लम्बे-लम्बे फ्रॉक

कोट पहने खड़े थे । ओ रेली तथा फोर्ट के अधिकारी मेज़ को घेरे हुए खड़े थे, जहाँ पैब्लो अपनी कलाई में एक सफेद रङ्ग का रूमाल लपेटे शैंपेन ढाल रहा था । कमरे के दूसरे कोने से वीणा की झंकार तथा डोना इज़ाबेला के संगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी ।

"कोयल का संदेश सुनो,
बुलबुल का संगीत सुनो ।"

पादरी लोग गाना समाप्त होने तक दरवाज़े ही पर खड़े रहे, फिर इज़ाबेला का अभिवादन करने आगे बढ़े । वह श्वेत वस्त्र पहने हुए थी और उसके घुँघराले बाल पुनः पहले की भाँति कढ़े हुए थे । तीन घूँघर दाहिने कान के पास लटक रहे थे, एक-एक घूँघर दोनों कनपटियों पर, और गर्दन के पीछे अनेक घूंघरों की एक छोटी-सी क़तार ही थी । काले कपड़े पहने हुए दोनों पादरियों को अपनी ओर आते देख कर उसने वीणा बजाना बन्द कर दिया, और वह दोनों हाथ फैला कर उनका स्वागत करने के लिये आगे बढ़ी । उसकी आँखें चमक रही थीं और उसके चेहरे में अपने धर्म-पिताओं के लिये श्रद्धा की स्पष्ट झलक थी । परन्तु अभिवादन में उसने हँसते हुए एक मीठी-सी चुटकी ली, जिसे उसने इतने ऊँचे स्वर में कहा कि लोगों की बातचीत के बावजूद वह स्पष्ट सुनाई पड़ी ।

"फादर जोसेफ़ आपको मैं इसके लिये कभी भी क्षमा नहीं कर सकती, और बिशप लातूर न आपको ही कि आपने मुझे भरी अदालत में अपनी अवस्था के सम्बन्ध में ऐसी भयानक झूठ बोलने के लिये बाध्य किया !"

इस पर लोग ठहाका मार कर हँस पड़े और दोनों पादरियों ने अभिवादन में सिर झुका लिये ।

अध्याय ७

विशाल इलाक़ा

१

देवी मेरी का मास

वाह्य घटनाओं से बिशप के काम में कभी-कभी तो सहायता मिलती थी, परन्तु अधिकतर उनसे बाधा ही पहुँचती थी।

'गैड्स्डेन क्रय' के अन्तर्गत, जो फ़ादर लातूर के सांता फ़े आने के तीन वर्ष बाद संपन्न हुआ, अमेरिका को मेक्सिको से एक विशाल राज्यक्षेत्र मिला, जो अब न्यू मेक्सिको एवं अरिज़ोना राज्यों का दक्षिणी भाग है। रोम स्थित अधिकारियों ने फ़ादर लातूर को सूचित किया कि यह नया राज्य-क्षेत्र उनके इलाक़े में मिला लिया जाय; परन्तु चूँकि राष्ट्रीय सीमा रेखाएं बहुधा ही गिरजा अधिकार-क्षेत्रों को विभाजित कर दिया करती थीं, उन्हें यह भी सूचित किया गया कि वे धार्मिक अधिकार-क्षेत्र की बात चिहुआहुआ और सोनोरा के मेक्सिकन विशपों से मिलकर तय कर लें। इस प्रकार के सम्मेलनों में लगभग चार हजार मील की यात्रा करनी पड़ती थी, फ़ादर वेलेंट ने ठीक ही कहा कि रोम के अधिकारी यह नहीं समझ पाते थे कि दो मिशनरियों के लिये घोड़े पर सवार होकर इतिहास के साथ पग मिलाये रहना आसान काम नहीं है।

अतः यह प्रश्न कई वर्षों तक टलता रहा। पत्रों का इतना अधिक आदान-प्रदान हुआ कि उनका एक पोथा तैयार हो गया। अन्त में, सन् १८५८ ई० में, फ़ादर वेलेंट को मेक्सिकन बिशपों से विवादग्रस्त सीमाओं का मामला हल करने के लिये भेजा गया। वे शरद् ऋतु में रवाना हुए और सारा जाड़ा रास्ते ही में कटा। पहले वे अल पास्तो डेल नोर्ते से पश्चिम टक्सान गये, वहाँ से सांता मेगडलेना और 'गल्फ़ ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया' के एक बन्दरगाह गायमास गये तथा घर की ओर लौटने के पहले प्रशान्त महासागर में कुछ छोटी-मोटी यात्राएँ कीं।

वापस आते समय वे दोषयुक्त पानी पीने तथा खुले में सोने के कारण मलेरिया के शिकार हो गये और अरिज़ोना के एक मरुस्थल में (वहाँ नागफनी के पौधे बहुत थे) काफ़ी सख़्त बीमार हो गये। एक रेड इण्डियन दूत ने उनकी बीमारी का समाचार सांता फ़े पहुँचाया, और फ़ादर लातूर तथा जेसिंटो न्यू मेक्सिको और अरिज़ोना राज्य का भी आधा भाग पार करने के बाद फ़ादर वेलेंट के पास पहुँचे और रास्ते में अनेक स्थान पर पड़ाव डालते हुए वे उन्हें घर वापस ले आये।

बिशप के घर में वे दो महीने तक बीमार पड़े रहे। यह पहला वसन्त था कि वे और फ़ादर लातूर दोनों साथ वहाँ रहे और उस बाटिका का आनन्द ले सके, जिसे उन्होंने सांता फ़े पहुँचने के तुरन्त ही बाद लगाया था।

मई का महीना था। इसी महीने में देवी मेरी की पूजा-आराधना का विशेष उत्सव भी होने को था। फ़ादर वेलेंट बगीचे में अंगूर-कुञ्ज के नीचे कम्बल ओढ़े खाट पर पड़े थे। उनकी दृष्टि बिशप तथा उनके माली पर, जो तरकारियों की क्यारी में काम कर रहे थे, लगी हुई थी। सेब के वृक्ष फूलों से लदे हुए थे, बेर के फूल झड़ चुके थे। वसन्त ऋतु की गरम हवा के झोंकों में धरती एवं आसमान एक दूसरे में अन्तर्व्याप्त हो रहे थे। मिट्टी के

कण-कण में सूर्य की गरमी व्याप्त थी और सूर्य के प्रकाश में लाल रज कण वायुमण्डल में तैरते दीख रहे थे। हवा में मिट्टी की सोंघी बास थी और पाँव के नीचे घास में नील गगन का प्रतिविम्व था।

यह बगीचा छः वर्ष पहले लगाया गया था, जब बिशप सेंट लूई से लोरेट्टो की 'सिस्टरों' के साथ, जो देवी मेरी के विद्यालय की स्थापना के लिये आयी थीं, गाड़ियों में भरकर पेड़ के पौधे (उस समय ये पौधे सूखे डंठल मात्र थे) ले आये थे। विद्यालय अब भली-भाँति जम चुका था, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों ही मत के लोग उसे जनता के लिये लाभकारी मानने लगे थे, और वृक्षों में अब फल लगने लगे थे। उनसे ली गयी क़लमें अनेक मेक्सिकन बगीचों में लगायी गयी थीं और उनमें पहले ही फल लगने लगे थे। जिस समय बिशप बाल्टीमोर की अपनी प्रथम यात्रा पर गये हुए थे, फ़ादर जोसेफ ने, अपने पद से सम्बन्धित सभी कार्यों को करते हुए भी, घर का प्रबन्ध करने वाली मेक्सिकन औरत फ़क्टोसा को भोजन बनाने की शिक्षा देने का समय निकाल लिया था। इसके बाद फ़ादर लातूर ने फ़क्टोसा के पति ट्रैंक्विलिनो को माली का काम सिखलाया। उन्होंने भविष्य के लिये अच्छी योजना बनायी थी। गिरजा के पीछे वाली ज़मीन में, जो बिशप के घर और विद्यालय के बीच पड़ती थी, उन्होंने फलों का एक लम्बा-चौड़ा बाग़ तथा तरकारियों की क्यारियाँ तैयार कर ली थी। तभी से बिशप उस पर बड़ा परिश्रम करते थे, पौधे लगाना, उनकी काँट-छाँट करना आदि। उनके मनोरञ्जन का यही एक मात्र साधन था।

गिरजा के आँगन से लेकर विद्यालय तक छोटे-छोटे वृक्षों की क़तार थी। दक्षिण तरफ कच्ची दीवार से सटी एक अन्य वृक्षों की क़तार थी, जो उनके वहाँ आने के पहले से ही लगी थीं। ये भाऊ के वृक्ष बहुत पुराने थे और उनके तने ऐंठे हुए थे। उनकी किसी ने परवाह नहीं की थी; धूप में सूखी तथा गधों के पैरों से रौंदी हुई ज़मीन कड़ी हो गयी थी और उसी में वे किसी तरह खड़े थे। उनके तने बड़े कठोर हो गये थे। वस्तुतः वे

बहुत पुरानी पकी हुई वल्लियों की तरह चिकने लगते थे, परन्तु उनमें अब भी नरम-नरम कोपलें एवं फूल फूट पड़ते थे तथा लाल-लाल कलियों से वे भर जाते थे।

फ़ादर जोसेफ़ इस झाऊ के वृक्ष को सब वृक्षों से अधिक पसन्द करते थे। यात्रा में वह उनका साथी था। न्यू मेक्सिको एवं अरिज़ोना राज्यों के रेगिस्तानी प्रदेश में उनकी यात्रा के समय बराबर ही उन्हें मेक्सिकन बस्तियों की कड़ी ज़मीन में, कच्ची दीवारों के आस-पास यह झाऊ का वृक्ष अपनी नीली-हरी पत्तियों से लदा लहराता दिखलाई पड़ जाता था। घर का पालतू गधा उसके तने से बँधा रहता था, मुर्गियाँ उसके नीचे उछलती-कूदती रहती थीं, कुत्ते उसकी छाया में सोते थे और धुले हुए कपड़े सूखने के लिये उसकी डालों पर फैलाये जाते थे। फ़ादर लातूर बहुधा ही कहा करते थे कि इस वृक्ष की आकृति एवं रंग कच्चे घरों वाले गाँव के लिये विशेषकर उपयुक्त था। उसके फूल मकानों की लाल रङ्ग की दीवारों के रंग के थे और उसका रेशेदार तना कहीं सुनहरे रङ्ग का और कहीं हलके नीले रङ्ग का था। फ़ादर जोसेफ़ बिशप की इस तुलना की बड़ी क़द्र करते थे, परन्तु वे स्वयं इसलिये बहुत पसन्द करते थे कि वह जन-साधारण का वृक्ष था तथा प्रत्येक मेक्सिकन परिवार में वह एक प्राणी की तरह था।

इस वर्ष देवी मेरी का महीना फ़ादर वेलेंट के लिये बड़े हर्ष का महीना था। वर्षों से वे इस महीने को उचित ढङ्ग से नहीं मना सके थे, जिसे उन्होंने अपने बचपन में वर्ष का पवित्र महीना चुन रखा था और वे देवी मेरी के ध्यान आदि में ही बिता देते थे। अपने भूतपूर्व मिशनरी जीवन में, 'ग्रेट लेक्स' के किनारे वे वर्ष के इस समय एकान्तवास में चले जाते थे। परन्तु यहाँ यह सब करने के लिये समय ही नहीं मिलता था। गत वर्ष, मई के महीने में वे होपी रेड इण्डियनों के इलाक़े का दौरा कर रहे थे; उन्हें प्रति दिन विवाह-संस्कार पूरा कराते हुए, बच्चों को दीक्षा देते हुए

कितने लोगों को विधिवत ईसाई धर्म में लेते हुए तीस-तीस मील घोड़े की यात्रा करनी पड़ी थी। रात को वे छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच ही कहीं डेरा डाल देते थे। इन्हीं कारणों से उपासना-पूजा आदि के कार्यों में बराबर ही व्यतिक्रम होता रहा।

परन्तु इस वर्ष, अपनी बीमारी के कारण देवी मेरी के महीने में वे अपना सारा समय देवी की पूजा-आराधना ही में लगा सके थे। वे अपने घूमने का भी समय उनकी सेवा में ही अर्पित कर दिये थे। रात को वे इस आश्वस्त भावना से सोते थे कि देवी उनकी रक्षा कर रही हैं। प्रातःकाल जब वे सो कर उठते थे, तो आँख खोलने के पहले ही उन्हें वायुमण्डल में एक विशेष मिठास का अनुभव होता था—देवी मेरी तथा मई का महीना। माँ देवी रक्षा कर रही हैं। एक बार पुनः वे नये धर्म भिक्षु के उत्साह से, जिसके लिये धर्म एक व्यक्तिगत पूजा की वस्तु है तथा केवल औचित्य के ही ख्याल से नहीं, और मिशनरी के कामों की चिन्ता से पूर्णतः मुक्त होकर, पूजा आदि कर सके थे। एक बार पुनः यह महीना उनका अपना महीना हो गया था, देवी ने पुनः यह महीना उन्हें दे दिया था, जिसका उनके धार्मिक जीवन में बराबर ही अत्यधिक महत्त्व रहा था।

वे एक बहुत पुरानी बात का स्मरण करके मुस्करा पड़े। जब वे फ्रांस के किसी नगर के एक गिरजा में पादरी के सहायक थे, तो उन्होंने एक बार किस प्रकार मई मास में देवी मेरी की विशेष उपासना-पूजा की योजना बनाई थी और किस प्रकार उस बुड्ढे पादरी ने उसे स्पष्ट अस्वीकार करके उनकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था। बुड्ढा उस आतंक के ज़माने से गुज़रा था और उसे उन दिनों की कठोरता की ही शिक्षा मिली थी, जब पादरियों को बात-बात पर तंग किया जाता था, और वह भी वाइप्रेस के बिशप जानसेन के मतों से अछूता नहीं रह गया था। नवयुवक फ़ादर जोसेफ़ ने उसकी झिड़कियों को चुपचाप सहन कर लिया था और उदास होकर वे अपने कमरे में चले गये थे। वहाँ वे अपनी माला लेकर

दिन भर प्रार्थना करते रहे। "मेरी इच्छा की पूर्ति के लिये नहीं, परन्तु यदि यह तेरी इच्छा हो, माँ मेरी, तो तू मेरी यह माँग अवश्य पूरी कर दे।" उसी दिन संध्या समय बुड्ढे पादरी ने उन्हें बुलाया था और बिना कहे ही, उसने उनकी उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया था, जिसे प्रातःकाल उसने इतनी रुखाई से इनकार कर दिया था। कितना प्रसन्न होकर फ़ादर जोसेफ़ ने ये सारी बातें अपनी बहन फिलोमीन को लिखी थी, जो उस समय उनके जन्म-स्थान रियोम नगर की भिक्षुणियों की शिष्या थीं, और उनसे आग्रह किया था कि वे मई मास के विशेष पूजा-अवसर के लिये वेदी पर अर्पणार्थ कुछ बनावटी फूल तैयार कर दें। उनकी बहन ने कितनी तत्परता से उनकी बात मान कर कितनी प्रचुर मात्रा में फूल तैयार किये थे। उन्हें इस बात पर फ़ादर जोसेफ़ से कम प्रसन्नता नहीं हुई थी कि उनके इस विशेष समारोह में इतने अधिक लोग आये थे, विशेषकर उस पादरी इलाक़े के अल्पवयस्क लोग, जिनमें धार्मिक भावना की वृद्धि स्पष्ट थी। फ़ादर वेलेंट का परिवार बड़ा संयुक्त परिवार था। बचपन में ही माँ का निधन हो जाने के कारण सभी भाई-बहन एक-दूसरे से बहुत अनुरक्त हो गये थे और फ़ादर जोसेफ़ की यह बहन फिलोमीन उनकी सारी आशाओं, महत्त्वाकांक्षाओं एवं उनके घोर धार्मिक जीवन की भी सहचरी थीं।

तभी से उनके जीवन की सभी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ इसी पवित्र मास में घटी थीं, जब यह पापी एवं कलंकित संसार श्वेत वस्त्र धारण करता है, मानो वह पच्चीस मार्च की स्मृति में (इस तिथि को ईसाई धर्म में 'देवी मेरी दिवस' कहते हैं) उत्सव मना रहा हो, और कुछ देर के लिये वह वास्तव में महात्मा ईसा की पत्नी बनने के उपयुक्त मनोहर हो जाता है। मई मास में ही उन्हें अपने जीवन के सबसे कठिन काम के लिये अपना देश छोड़ने के लिये, अपनी प्रिय बहिन एवं पिता से विलग होने के लिये (किस शोकयुक्त परिस्थिति में!) और नयी दुनिया में जाकर मिशनरी का काम आरम्भ करने के लिये ईश्वरीय आज्ञा हुई थी। वह विछोह-वछोह

न था, वह तो एक प्रकार का पलायन था, एक श्रेष्ठतर विश्वास की खातिर परिवार के साथ विश्वासघात करना था। आज वे उस पर भले ही मुस्करा लें, परन्तु उस समय वह काफ़ी कष्टप्रद जान पड़ा था। बिशप को भी जो थोड़ी दूर बैठे हुए गाजर छील रहे थे, वह बात याद होगी। इस घड़ी में फ़ादर लातूर से जो उन्हें प्रेरणा मिली थी, वास्तव में उसी के कारण फ़ादर जोसेफ़ आज सांता फ़े के इस बगीचे में थे। नये बिशप द्वारा अपने कष्टों को बाँटने का प्रस्ताव किये जाने पर वे अपने प्रिय सैंडस्की को छोड़ने के लिये कदापि न तैयार हुए होते, यदि वे उस समय स्वयं से यह न कहते, "आह, इस समय अब ये उलझन में फँसे हुए हैं। मैं इस समय इनके लिये वही बन जाऊँगा, जो ये मेरे लिये उस दिन बन गये थे, जिस दिन हम सड़क पर खड़े पेरिस जाने के लिये गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे, और मैं अपने संकल्प से विचलित हो गया, और—इन्होंने मुझे बचा लिया।"

उन दिनों की स्मृति फ़ादर वेलेंट के हृदय में इस समय ऐसी चुभ गयी कि उन्हें अपनी आंखें पोंछनी पड़ीं, (सभी बीमार लोगों की भाँति वे बड़ी जल्दी द्रवित हो जाते थे) और उन्होंने अपना चश्मा पोंछ कर पुकारा।

"फ़ादर लातूर, अब थोड़ा विश्राम करो, काफ़ी देर से तुम काम कर रहे हो।"

बिशप चले आये और कुञ्ज के किनारे खड़ी हुई एक हाथगाड़ी पर बैठ गये।

"मैं सोच रहा था कि अब मैं तुम्हारे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थना नहीं करूँगा, जोसेफ़। अपने विकार को समीप रखने का केवल यही तरीक़ा है कि वह बीमार रहे।"

फ़ादर जोसेफ़ मुस्करा पड़े।

"तुम स्वयं भी तो सांता फ़े में बहुत अधिक नहीं रहते, मेरे बिशप।"

"लेकिन इस ग्रीष्म ऋतु में मैं यहीं रहूँगा और तुम्हें भी अपने साथ रखूँगा। इस साल मैं तुम्हें अपने कमल के फूल दिखलाना चाहता हूँ। ट्रैंक्विलिनो आज ही शाम को मेरी 'झील' को पानी से भर देगा।" यह 'झील' बगीचे के बीच में बना हुआ एक छोटा-सा तालाब था, जिसे ट्रैंक्विलिनो ने, जो सभी मेक्सिकनों की भाँति पानी को नालियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने की कला में निपुण था, पास ही से बहने वाली सांता फ़े की एक छोटी नदी से पानी काट कर भर दिया था। "गत वर्ष गर्मियों में, जब तुम यहाँ नहीं थे," बिशप ने आगे कहा, "मेरी इस 'झील' में सौ से भी अधिक कमल के फूल लगे थे। और कमल का यह वन उन पाँच गाँठों से ही इतना फैल गया, जिन्हें मैं रोम से अपने झोले में रख कर ले आया था।"

"ये फूल कब लगते हैं?"

"फूलों का लगना तो जून में ही आरम्भ हो जाता है; परन्तु जुलाई मास में वे अपनी जवानी पर पहुँचते हैं।"

"फिर तो तुम्हें उनके साथ थोड़ी शीघ्रता करनी होगी, क्योंकि मैं अपने बिशप की आज्ञा लेकर जुलाई में चला गया रहूँगा।"

"इतनी जल्दी! आखिर क्यों!

फ़ादर वेलेंट ने बिस्तर पर एक करवट ली। "उन धर्मच्युत कैथोलिकों के पुनरुद्धार के लिये, जीन! टकसान की ओर, तुम्हारे नये क्षेत्र के इन पूर्णतः धर्म-भ्रष्ट कैथोलिकों के लिये। वहाँ सैकड़ों ऐसे ग़रीब परिवार हैं; जिन्होंने कभी किसी पादरी को देखा तक नहीं है। मैं इस बार प्रत्येक बस्ती के घर-घर में जाना चाहता हूँ। वे बड़े धर्मिष्ठ एवं आस्था वाले हैं, परन्तु उनकी यह निष्ठा अंध-विश्वासों तक ही सीमित है, क्योंकि वहाँ अन्य कुछ है ही नहीं। वे अपनी सारी प्रार्थनाएँ अशुद्ध रूप में याद किये हुए हैं। वे पढ़ तो सकते नहीं, और चूँकि उन्हें सिखलाने वाला कोई नहीं है, वे अपना सुधार कैसे कर सकते हैं? वे उन बीजों की भाँति हैं, जिनमें अंकुर तो

बहुत हैं, परन्तु उनके प्रस्फुटित होने के लिये आवश्यक नमी नहीं है। थोड़ा सम्पर्क करने से ही, वे हमारे ईसाई सम्प्रदाय के जीते जागते अंग बन सकते हैं। जितना ही अधिक मैं मेक्सिकनों के साथ काम करता हूँ, उतनी ही मेरी यह भावना दृढ़तर होती जाती है कि महात्मा ईसा ने ऐसे ही लोगों को दृष्टि में रख कर यह कहा था 'जब तक तुम बच्चों की भाँति नहीं बन जाते।' उन्होंने ऐसे ही लोगों की कल्पना की थी, जो सांसारिक बातों में बहुत चतुर नहीं होते, जो हर समय लाभ तथा सांसारिक उन्नति की ही बात नहीं सोचते। ये ग़रीब ईसाई हमारे देश के ग्रामीणों की भाँति कंजूस नहीं होते; सम्पत्ति के प्रति उन्हें कोई स्पृहा नहीं होती तथा भौतिक लाभ-हानि क्या है, इसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं होता। मैं किसी गाँव में कुछ घण्टों के लिये ठहरता हूँ, दीक्षा, संस्कार आदि पूरा कराता हूँ, प्रत्येक घर में कोई छोटा-मोटा चिह्न छोड़ता हूँ, जैसे कोई माला या धार्मिक चित्र, और फिर इस भावना से वहाँ से रवाना होता हूँ कि मैंने इन्हें कितना प्रसन्न कर दिया तथा इन धर्मभीरु आत्माओं को उन्मुक्त कर दिया है जो उपेक्षा के कारण ईश्वर से दूर कर दी गयी थीं।

"टकसान के समीप एक धर्मान्तरित पीमा रेड इण्डियन ने एक बार मुझसे अपने साथ रेगिस्तान में चलने को कहा, क्योंकि वहाँ वह मुझे कुछ दिखाना चाहता था। वह मुझे एक ऐसे बीहड़ स्थान में ले गया कि ऐसी बातों से कम अभ्यस्त व्यक्ति को आशंका होने लगती और वह अपनी जान के लिये डरने लगता। हम लोग काली चट्टानों के एक भयंकर दर्रे में नीचे उतरे और वहाँ एक गुफ़ा में उसने मुझे एक सोने का पात्र, पादरियों के वस्त्र, अन्य पवित्र बर्तन, तात्पर्य यह कि 'मास' बनाने की सभी आवश्यक वस्तुएँ दिखायीं। अपाचे लोगों ने मिशन पर जब एक बार आक्रमण करके उसे लूटा था तो उसके पूर्वजों ने इन पवित्र वस्तुओं को छिपा कर रख दिया था; उसे यह नहीं मालूम था कि यह कितनी पीढ़ी पहले की बात है। यह रहस्य केवल उसके परिवार वालों को ही मालूम था, और मैं पहला

पादरी था, जो ईश्वर को उसकी अपनी वस्तुएं वापस करने के लिये वहाँ पहुँचा था। मेरे लिये तो वह कर्तव्य निर्धारण के लिये उदाहरण बन गया। उस बीहड़ सीमावर्ती प्रदेश में धर्म एक गड़ा हुआ खजाना है; वे उस खज़ाने की रक्षा तो करते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि अपनी आत्मा की मुक्ति के लिये उसका उपयोग कैसे किया जाय। थोड़ी-सी धार्मिक शिक्षा, एकाध प्रार्थना, कुछ उपासना से ही उनकी आत्माएं बन्धन से मुक्त हो सकती हैं। मैं मानता हूं कि मैं यह काम पूरा कराने के लिये लालायित हो रहा हूं। मैं चाहता हूं कि मैं ही ईश्वर के इन भटके हुए बच्चों को उसके मार्ग में प्रेरित करूं। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी होगी।"

बिशप ने उनके इस आग्रह का तुरन्त उत्तर नहीं दिया। कुछ देर बाद उन्होंने गम्भीरता से कहा, "फ़ादर जोसेफ़, तुम्हें यह भी तो सोचना चाहिये कि मुझे यहाँ तुम्हारी आवश्यकता है। मेरा काम एक व्यक्ति के लिये बहुत अधिक है।"

"परन्तु तुम्हें मेरी उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी उन्हें !" फ़ादर जोसेफ़ अपना कम्बल फेंक कर उठ बैठे और अपने पाँव खाट पर से नीचे ज़मीन पर रख दिये। "मांटफ़ेरांड के फ्रांसीसी पादरियों में से कोई भी अच्छा पादरी यहाँ पर तुम्हारा काम कर सकता है। यहाँ का काम तो बुद्धि से किया जा सकता है, परन्तु वहाँ सहृदयता की आवश्यकता है, एक विशेष प्रकार की सहानुभूति की आवश्यकता है, और हमारे ये नये पादरी उन बेचारों के स्वभाव को वैसा नहीं समझते, जैसा मैं समझता हूं। मैं तो क़रीब-क़रीब मेक्सिकन ही बन गया हूं। मैं उनका भोजन पसन्द करने लग गया हूं। उनकी मूर्खतापूर्ण बातों से अब मुझे कोई क्षोभ नहीं होता; उनके दोष ही मुझे प्रिय हो गये हैं। मैं 'उनका ही आदमी' हो गया हूं !"

"वह तो ठीक है, बिल्कुल ठीक है ! परन्तु मैं फिर भी यही कहूंगा कि फिलहाल तो तुम कुछ दिनों तक लेटे ही रहो।"

फ़ादर वेलेंट तमतमा गये और उत्तेजित हुए, अपने तकियों पर पुनः

धम्म से लेट गये, और बिशप बगीचे में टहलने लगे। वे झाऊ के वृक्षों की क़तार तक गये और वापस आये। वे धीरे-धीरे, नपे-तुले एवं निश्चित क़दमों से, बिना ज़रा भी झुके हुए, परन्तु लाठी-डण्डे की तरह सीधे नहीं, तथा गर्दन को इस अन्दाज़ से उठाये हुए चल रहे थे जिसे देख कर हमेशा यही लगता था कि स्थिति पूर्णतः उनके क़ाबू में है। उन्हें इस समय देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि उनके हृदय में एक भयंकर संघर्ष चल रहा है। फ़ादर जोसेफ़ के मर्मस्पर्शी अनुरोध ने एक संजोयी हुई योजना रद्द कर दी थी और फ़ादर लातूर को व्यक्तिगत रूप से मर्मान्तिक निराशा हुई थी। अब तो एक ही काम करना था,—और झाऊ के वृक्षों के पास पहुँचने के पहले ही वे उसे कर चुके। उन्होंने सूखे हलके नीले रङ्ग के फूलों से भरी एक टहनी तोड़ ली, मानो उनका यह कार्य उनके आत्म-त्याग की पुष्टि कर रहा हो। वे उसी प्रकार स्थिर क़दमों से वापस आये और उस सैनिक चारपाई के पास मुस्कराते हुए खड़े हो गये।

"जोसेफ़, इस मामले में तुम अपनी आत्मा की ही पुकार पर चलो। मैं तुम्हारे मार्ग में बाधा नहीं डालूंगा। हाँ, यह मैं अब भी कहूँगा कि तुम अपने स्वास्थ्य की चिन्ता अवश्य करो, परन्तु जब तुम पूर्णतः स्वस्थ हो जाओ तो तुम वही करो, जिसे तुम्हारी आत्मा सर्वप्रथम करने को कहे।"

कुछ क्षणों तक दोनों व्यक्ति मौन रहे। फ़ादर जोसेफ़ ने धूप से बचने के लिये अपनी आँखें बन्द कर लीं और फ़ादर लातूर विचारों में डूबे खड़े रहे और झाऊ के उन फूलों को अपनी पतली और कुछ काँपती हुई उँगलियों के बीच इधर-उधर फेरते रहे। उनके हाथों में एक विचित्र प्रकार की शक्ति थी, परन्तु उनमें वह निश्चलता नहीं थी जो पादरियों के हाथों में आमतौर पर होती है; ऐसा लगता था जैसे वे प्रत्येक क्षण किसी जाँच-पड़ताल में लगे हों, और पक्के निर्णय कर रहे हों।

चिड़ियों के पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट से दोनों मित्र अपने विचारों से जगे। कबूतरों का एक झुण्ड उनके ऊपर से उड़ता हुआ बगीचे के उस

ओर गया, जहाँ स्कूल के मैदान में खुलने वाले फाटक से एक औरत उसी समय अन्दर प्रवेश कर रही थी। वह मैगडलेना थी जो प्रति दिन कबूतरों को खिलाने तथा फूल चुनने वहाँ आया करती थी। 'सिस्टरों' ने उसे इस महीने स्कूल के गिरजा की वेदी सजाने का काम दे रखा था, और वह बिशप के सेव तथा लिली के फूल लेने आया करती थी। वह चमकते हुए डैनों के एक बवण्डर में से होकर आगे बढ़ी और ट्रैंक्विलिनो उसे इतने ध्यान से देखने लगा कि फावड़ा उसके हाथ से गिर गया। एक क्षण तो चिड़ियों के समूचे झुण्ड पर प्रकाश इस प्रकार पड़ा कि वे सभी सद्यः अदृश्य सी हो गयीं, मानो प्रकाश में ही वे घुल कर लुप्त हो गयीं, जैसे पानी में नमक घुल जाता है। दूसरे ही क्षण वे सूर्य के विपरीत दिशा में काले एवं श्वेत रङ्ग में चमक उठीं। वे मैगडलेना की बाहों एवं कंधों पर बैठ गयीं और उसके हाथ से खाने लगीं। उसने रोटी का एक छिलका अपने मुँह में दबा लिया तो दो चिड़ियाँ अपने पंख फड़फड़ाती उसके चेहरे के ऊपर हवा में लटकी हुई उस टुकड़े को नोचने लगीं। वह अब एक सुन्दर महिला बन गयी थी; उसका शरीर सुगठित हो गया था और उसके सुनहरे बादामी रङ्ग के गालों के नीचे लाली आ गयी थी।

"उसे इस समय देख कर यह कौन कह सकता है कि हम उसे एक ऐसे स्थान से ले आये थे, जहाँ निर्दयता एवं वासना का ही राज्य था!" फ़ादर वेलेंट ने धीरे से कहा। "ईसाई धर्म के आदि काल से ही हमारा धर्म-सम्प्रदाय अब तक ऐसा कुछ नहीं कर सका है जो वह यहाँ कर सकता है।"

"उसकी अवस्था सत्ताईस-अठाईस वर्ष ही होगी। कदाचित् उसे पुनः विवाह भी कर लेना चाहिये," बिशप ने विचार में डूबे हुए कहा। "यद्यपि वह बहुत सन्तुष्ट दीखती है, मैंने कभी-कभी अचानक ही उसकी आँखों में वेदना की एक मलिन छाया देखी है। तुम्हें याद है उसकी आँखों में भरी वह हृदय विदारक करुणा जो प्रथम बार उससे मिलने पर हमने देखी थी?"

"क्या मैं उसे कभी भूल सकता हूँ ? परन्तु उसका सारा शरीर अब बदल गया है। उस समय वह निर्जीव एवं भयातुर प्राणी थी। मैंने तो उसे सनकी समझा था। नहीं, नहीं! उसे जीवन के दुःखों का पर्याप्त अनुभव हो चुका है। यहाँ वह निरापद एवं सुखी है।" फ़ादर वेलेंट उठ कर बैठ गये और उसे पुकारा। "मैगडलेना, मैगडलेना, मेरी बच्ची, यहाँ आओ हमसे कुछ देर बैठ कर बातें करो। दो मनुष्य जब एक दूसरे से अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं देखते तो अकेलापन अनुभव करने लगते हैं।"

२

दिसम्बर की रात

फ़ादर वेलेंट ग्रीष्म ऋतु के मध्य से ही अरिज़ोना राज्य में थे, और अब दिसम्बर का महीना था। बिशप लातूर इस समय उस शुष्क एवं संदिग्ध मनःस्थिति के काल से गुजर रहे थे जो बचपन से ही कभी-कभी उनके हृदय पर छा जाती थी और जिसके कारण वे जहाँ भी रहते थे स्वयं को परदेशी अनुभव करने लगते थे। वे अपने पत्रों आदि का उत्तर अवश्य दे रहे थे, पादरियों के इलाकों का दौरा अवश्य कर रहे थे, पादरी-हीन मिशनों पर सार्वजनिक पूजा आदि भी करा रहे थे, 'सिस्टरों' के विद्यालय की नयी इमारत के निर्माण-कार्य का अधीक्षण भी कर रहे थे, परन्तु उनका मन खोया-खोया सा रहता था।

क्रिसमस से तीन सप्ताह पूर्व एक दिन रात को वे बिस्तर पर पड़े-पड़े करवटें बदल रहे थे। नींद नहीं आ रही थी और असफलता की भावना उनके हृदय को दबोचे जा रही थी। उनकी प्रार्थनाएँ अर्थहीन थीं और उनसे उन्हें कोई नयी प्रेरणा नहीं मिल रही थी। उनकी आत्मा उजाड़ भूमि बन गयी थी उनके पास अपने पादरियों एवं जनता को देने के लिये

अब कुछ नहीं रह गया था। उनका कार्य तत्वहीन, बालू की भीत जैसा लग रहा था। उनका विशाल इलाक़ा अब भी असभ्यों एवं अधार्मिकों का प्रदेश था। रेड इण्डियन लोग अब भी भय एवं अज्ञान की अपनी पुरानी लीकों पर, पुराने अंध-विश्वासों एवं अपशकुनों आदि से लड़ते-झगड़ते चल रहे थे। मेक्सिकन लोग अब भी बच्चों की भाँति धर्म के साथ खेलवाड़ कर रहे थे।

ज्यों-ज्यों रात बीतती जाती थी, बिशप का बिस्तर उनके लिये काँटों की सेज बनता गया, यहाँ तक कि अब वे उसे बर्दाश्त नहीं कर सके। अन्धेरे ही में वे उठे और खिड़की के बाहर झाँककर देखा। उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बर्फ़ पड़ रही है, और ज़मीन पर एक हलकी सी सतह जम चुकी है। पूर्णमासी का चन्द्रमा बादलों के आवरण में छिपा हुआ आसमान में पीला प्रकाश छिटका रहा था, और आकाश की इस रुपहली पृष्ठभूमि में गिरजाघर की मीनारें काली दीख रही थीं। फ़ादर लातूर की इच्छा हुई कि वे गिरजाघर में जाकर प्रार्थना करें, परन्तु वे कम्बल ओढ़कर पुनः लेट गये। फिर, यह सोचकर कि वे तो गिरजाघर की ठण्डक से डर रहे हैं, उन्हें स्वयं से घृणा हुई और वे पुनः उठ गये, जल्दी से कपड़े बदले और अपना वही पुराना लबादा डालते हुए, जो फ़ादर वेलेंट के लबादे की जोड़ी थी, गिरजाघर के आंगन में पहुँच गये।

उन्होंने इन लबादों का कपड़ा बहुत समय पहले पेरिस में खरीदा था, जब वे नवयुवक थे और बाक की सड़क पर स्थित विदेशी मिशनों के धर्म शिक्षालय में ठहरे हुए थे और नयी दुनिया की अपनी प्रथम यात्रा की तैयारी कर रहे थे। इस कपड़े से ओहियो के एक दर्जी ने उनके लिये घुड़सवारों वाला लबादा बना दिया था, जिसके कंधे के भाग पर अलग से कपड़ा जोड़ा हुआ था और उसका अस्तर लोमड़ी की खाल का था। इसके कई वर्ष पश्चात्, जब फ़ादर लातूर अपने इलाक़े की प्रथम यात्रा पर रवाना होने को थे, इन लबादों को खोलकर पुनः सिलाई की थी और उनके

अस्तर में गिलहरी की खाल लगा दी थी, जो मध्यम जलवायु के लिये अधिक उपयुक्त था। यह तथा अन्य बहुत सी पुरानी बातें बिशप को लबादा ओढ़ते-ओढ़ते तथा आंगन से पवित्र बर्तन आदि रखे जानेवाले घर के पास पहुँचते-पहुँचते स्मरण हो आयीं। लोहे की बड़ी चाबी उनके हाथ में थी।

आंगन गिरी हुई बर्फ़ से सफ़ेद हो रहा था और उसमें दीवारों तथा इमारतों की छाया बादलों से ढके चंद्रमा के धुंधले प्रकाश में स्पष्ट पड़ रही थी। पवित्र बर्तन आदि वाले घर के दरवाज़े के रास्ते में उन्होंने किसी को झुक कर बैठा हुआ देखा; अरे, यह तो एक स्त्री है और रो रही है। वे उसे उठा कर अंदर लिवा गये। मोमबत्ती जलाते ही, उन्होंने उसे पहचान लिया, और उन्हें उसके आने के प्रयोजन का अनुमान भी लग गया।

वह एक बूढ़ी अमेरिकन औरत थी, जिसका नाम साडा था, और जो किसी अमेरिकन परिवार में गुलाम थी। यह परिवार 'प्रोटेस्टेंट' परिवार था, जो रोमन कैथोलिकों के बहुत ही विरुद्ध था, और वे लोग इस बूढ़ी को न तो 'मास' (सार्वजनिक-पूजा) में सम्मिलित होने देते और न किसी पादरी का उसे स्वागत करने देते। घर में उस पर कड़ी निगाह रखी जाती थी; परन्तु जाड़े की ऋतु में जब घर के सभी प्राणी गरम कमरों में सोते थे, उसे बाहर एक लकड़ी के गोदाम में सोने को कहा जाता था। आज रात, कड़ी सर्दी के कारण सो न सकने की वजह से उसने साहस करके यह क़दम उठाया था और अस्तबल वाले दरवाज़े से चुपके से बाहर खिसक आयी थी और एक गली में से दौड़ती हुई ईश्वर के घर प्रार्थना करने चली आयी थी। गिरजा घर के बाहरी दरवाज़े को बन्द पाकर, वह बिशप के बगीचे में प्रवेश कर गयी थी, और वहाँ से घूमकर पवित्र बर्तन आदि रखने वाले घर के समीप पहुँच गयी थी; परन्तु यहाँ आकर उसने देखा कि उसका भी दरवाज़ा बन्द है।

बिशप मोमबत्ती लिये हुए उसके चेहरे को चुपचाप देख रहे थे और वह कुछ कह रही थी। उसका चेहरा स्याह हो गया था और जीवन के

संघर्षों एवं विपदाओं के कारण सूख गया था, उसमें हड्डियाँ उभड़ आयी थीं। बिशप को ऐसा लगा कि उन्होंने किसी मानव चेहरे में ऐसी विशुद्ध सरलता पहले कभी नहीं देखी थी, जैसी उसके चेहरे से टपक रही थी। उन्होंने देखा कि उसने बिना मोज़े के ही जूता पहन रखा है, और जूते भी उसके मालिक के पुराने, फेंके हुए, कच्चे चमड़े के जूते थे। फटी हुई काली शाल के नीचे उसने सूती कपड़े की बनी कोई पतली सी पोशाक पहन रखी थी, जिसमें कई जगह पैबन्द लगे हुए थे। ठण्डक के मारे वह काँप रही थी और उसके दांत बजे रहे थे। अपने खाली हाथ से बिशप ने रोयेंदार अस्तर वाला अपना लबादा कंधे पर से उतार लिया और उसे उसके ऊपर डाल दिया। इससे वह डर गयी। डर के मारे सिकुड़ते हुए शिकायत भरे अस्फुट स्वर में कहा, "ओह, नहीं, नहीं, फ़ादर।"

"तुम्हें अपने फ़ादर की आज्ञा माननी चाहिये, मेरी बेटी। ओढ़ लो यह लबादा अच्छी तरह; फिर चलो गिरजा घर में प्रार्थना करने चलें।"

गिरजाघर में बेदी की बत्ती के लाल प्रकाश के अतिरिक्त बिलकुल अंधेरा था। उसका हाथ पकड़े हुए तथा अपने आगे मोमबत्ती दिखाते हुए, वे उसे संगीत कक्ष के उस पार देवी मेरी की मूर्त्ति के समीप लिवा गये। वहाँ वे देवी के सामने रखी हुई बत्तियाँ जलाने लगे। बूढ़ी साडा घुटनों के बल बैठकर फ़र्श चूमने लगी। उसने देवी माँ के पाँव चूमें, वह चबूतरा चूमा, जिस पर उनकी मूर्ति खड़ी थी। यह सब करते हुए वह बराबर रो रही थी। परन्तु उसके चेहरे की भाव-भंगिमा देखकर, उस पर होने वाले स्पंदन को देखकर, वे समझ गये कि ये हर्षातिरेक के आँसू हैं।

"उन्नीस वर्ष हो गये, फ़ादर, उन्नीस वर्ष से मैंने वेदी की ये पवित्र-वस्तुएँ नहीं देखी थीं।"

"अब तो वह सब बीत गया, साडा। तुमने पवित्र भावनाएँ तो हृदय में सुरक्षित रख छोड़ी हैं। आओ, अब प्रार्थना करें।"

बिशप भी उसके बगल घुटनों के बल बैठ गये, और प्रार्थना आरम्भ किया, 'ओ देवी मेरी, देवी माँ............ .. '

इस वृद्धा बंदी के विषय में फ़ादर वेलेंट ने कई बार बिशप से चर्चा की थी। इलाक़े की धर्म-भीरु स्त्रियों में उसकी दयनीय स्थिति के सम्बन्ध में काफ़ी कानाफूसी होती थी। स्मिथ परिवार के लोग, जिनके साथ वह रहती थी, जॉर्जिय राज्य के निवासी थे। वे कभी एक बार अल पासो डेल नोर्ते में भी रहे थे, और वहीं से वे उसे अपने जन्म-स्थान वाले राज्य में वापस जाते समय साथ ले गये थे। थोड़े ही दिन पहले जॉर्जिया में इस परिवार पर कोई मुसीबत आ गयी थी, और वे अपने सभी नीग्रो गुलामों को बेचकर राज्य छोड़कर भागने को बाध्य हुए थे। वे इस मेक्सिकन औरत को नहीं बेच सके, क्योंकि उनका उस पर कोई कानूनी अधिकार नहीं था; उसकी स्थिति अनियमित थी। अब, चूँकि स्मिथ परिवार वाले एक मेक्सिकन प्रदेश में वापस आ गये थे, उन्हें भय था कि उनकी यह गुलाम नौकरानी कहीं उनके यहाँ से भाग न जाय और अपने प्रदेश के लोगों के यहाँ शरण न ले-ले। इसलिये वे उस पर कड़ी निगरानी रखते थे। वे उसे अपने घर की चहारदीवारी से बाहर नहीं जाने देते थे, यहाँ तक कि वह अपनी मालकिन के साथ बाज़ार भी नहीं जा सकती थी।

गिरजाघर की दो सेविकाएं साहस करके साडा से बात करने, स्मिथ के घर के आंगन में पीछे से प्रवेश कर गयी थीं। उस समय वह कपड़े धो रही थी। परन्तु वे घर की मालकिन द्वारा बड़ी अभद्रता से भगा दी गयी थीं। श्रीमती स्मिथ बिना अच्छी तरह कपड़े पहने ही दौड़ी हुई आंगन में निकल आयी थीं और उनसे बोली थीं कि यदि उनका इस घर से कोई काम है, तो वे सामने वाले दरवाज़े से अन्दर आ सकती हैं। यह क्या कि वे लुक-छिपकर अस्तबल वाले रास्ते से आती है और इस बेचारी (साडा) को डराती हैं। जब उन्होंने उनसे (श्रीमती स्मिथ से) यह कहा कि वे साडा को सार्वजनिक पूजा में लिवा जाने के लिये आयी हैं, तो उन्होंने उत्तर

दिया कि मैंने इस बेचारी को बड़ी मुश्किल से पादरियों के पंजे से एक बार छुड़ाया है, और अब पुनः उनके हाथ में इसे नहीं पड़ने दूँगी।

इस फटकार एवं झिड़की के बाद भी, एक बड़ी ही धार्मिक पड़ोसी औरत ने एक बार अस्तबल के दरवाजे के पास, जो गली में खुलता था, साडा से, जो इस समय एक गधे पर से लकड़ियाँ उतार रही थी, कुछ कहने आयी थी। परन्तु इस बुड्ढी नौकरानी ने अपने मुँह पर उँगली रख कर तथा अपने पीछे की ओर देख कर इतने भय से संकेत किया था कि आगन्तुक यह सोचकर फौरन भाग गयी थी कि यदि साडा किसी बाहरी व्यक्ति से बात करती हुई पकड़ी गयी, तो उसकी खूब मरम्मत की जायगी। उस भली औरत ने फ़ौरन ही फ़ादर वेलेंट के पास जाकर उनसे यह बात बतायी थी और उन्होंने बिशप से इस सम्बन्ध में सलाह किया था, और कहा था कि इस गुलाम औरत को धर्म का आश्रय प्रदान करने के लिये कुछ अवश्य करना चाहिये। बिशप ने उत्तर दिया था कि अभी उपयुक्त समय नहीं है। इस समय इन लोगों की शत्रुता मोल लेना उचित नहीं। स्मिथ परिवार निम्न कोटि के 'प्रोटेस्टेंटों' के एक छोटे से दल के अगुआ थे, जो कैथोलिकों को परेशान करने का अवसर ढूँढ़ते रहते थे। वे पर्वों के दिन गिरजाघर के फाटक के पास एकत्र हो जाते थे और वहाँ जोर-जोर से हँस कर कैथोलिकों का मज़ाक उड़ाते थे, सड़क पर भिक्षुणियों से अभद्रतापूर्ण बातें करते थे, और जब 'कार्पस क्रिस्टी' वाले रविवार (ईस्टर के बाद आठवाँ रविवार) के दिन कैथोलिकों का जुलूस निकलता था, ये लोग उस पर छींटाकशी करते थे। स्मिथ परिवार में पाँच बेटे थे, जो बुरी आदतों के थे, और गालियाँ बकते थे। यहाँ तक कि दो छोटे लड़के भी जो अभी बच्चे ही थे, बुरी प्रवृत्तियों के थे। ट्रैंक्विलिनो ने इन दो लड़कों को कई बार बिशप के बगीचे से भगाया था, जहाँ वे अपने लंपट साथियों के साथ नाशपाती तोड़ने या पादरियों को गाली देने आते थे।

उठकर खड़े होने पर फ़ादर लातूर ने साडा से कहा कि मुझे

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि तुम्हें प्रार्थनाएं इतनी अच्छी तरह याद हैं।

"आह, फ़ादर, रोज़ रात को मैं देवी माँ के नाम पर माला जपकर ही सोती हूँ।" उस बुढ़िया ने फ़ादर के मुँह की ओर देखते हुए तथा अपने दोनों हाथों के पंजों को एक दूसरे से जकड़ कर अपनी छाती पर रखते हुए बड़ी गम्भीरता से कहा।

जब उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसका माला इस समय उसके पास है, तो वह कुछ घबरा सी गयी। वह उसे कपड़ों के नीचे अपनी कमर में बाँधे रहती थी, क्योंकि इसी ढंग से वह उसे छिपा सकती थी।

बिशप उसे ढाढ़स देते हुए बोले, "याद रखो साडा, आने वाले वर्ष में तथा क्रिसमस से पूर्व नौ दिन के सार्वजनिक पूजा-समारोह में, मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना कहीं भूलूँगा। अब तुम निश्चित हो जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें वेदी के समक्ष मौन प्रार्थना के समय तुम्हें भी याद करूँगा, जिस प्रकार मैं अपनी बहनों एवं भतीजियों को याद करता हूँ।"

उन्होंने बाद को फ़ादर वेलेंट को बताया कि उन्हें धर्म के नैसर्गिक आनन्द का ऐसा गहरा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था, जैसा उस दिसम्बर की धुँधली रात को। देवी के समक्ष उसके बगल में झुक कर बैठे हुए उन्होंने अनुभव किया था कि गिरिजाघर की सारी वस्तुएं उसके लिये जिसके पास अपनी कहने को कोई वस्तु नहीं थी, कितनी अधिक मूल्यवान् थीं : वहाँ की बत्तियाँ, देवी मेरी की मूर्ति, अन्य संतों की मूर्तियाँ, वह क्रूश, जो कष्ट के प्रति अनुचित तिरस्कार की भावना को समाप्त कर देता था तथा दुःख एवं दरिद्रता को महात्मा ईसा तक पहुंचने का साधन बना देता था। उस दुःख की मारी गुलाम औरत के बगल में झुके हुए, उन्हें उन देवी रहस्यों का अनुभव हुआ, जिनका उन्हें युवावस्था में हुआ था। उन्हें यह भली-भाँति अनुभव हुआ कि इस औरत के लिये यह जानना कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि यद्यपि धरती पर इतनी निर्दय स्त्रियाँ हैं, स्वर्ग में एक

अत्यंत दयालु स्त्री है। वृद्ध लोगों को; जो संघर्ष एवं विपदाओं में ही जीवन काटे रहते हैं तथा जिन्हें संसार की निर्दयता के कटु अनुभव हुए रहते हैं, बच्चों से भी अधिक स्त्री के स्नेह की आवश्यकता रहती है। स्त्री को कितने कष्ट सहन करने पड़ सकते हैं, इसे कोई देवी स्त्री ही समझ सकती है।

सचमुच, जीन मेरी लातूर सृष्टि की समस्त दया की स्रोत देवी मेरी के वास्तविक स्वरूप पहचानने के इतने समीप कदाचित् पहले कभी नहीं पहुँचे थे, जितना उस रात गिरजाघर में देवी की मूर्ति के समक्ष। उन्हें अनुभव हुआ कि देवी दया की मूर्ति ही हैं, तभी तो स्त्री के गर्भ से पैदा हुआ कोई मनुष्य दयाहीन हो ही नहीं सकता, यह दया हत्यारे के लिये भी फ़ाँसी के तख्ते पर चढ़ते समय व्यक्त हो उठती है, जिस प्रकार वह मरते हुये सैनिक के लिये अथवा यंत्रणा पाने वाले शहीद के लिये व्यक्त होती है। देवी मेरी के सम्बन्ध में यह सुहावनी कल्पना विशप के हृदय में तीर की तरह चुभ गयी।

"ओ देवी मेरी!" वह उनके बगल में झुके हुए बुदबुदायी, और उन्हें अनुभव हुआ कि वह नाम ही उसके लिये खाना-कपड़ा बन गया, मित्र और माँ बन गया। उन्होंने उसके हृदय में उत्पन्न चमत्कार को अपने हृदय में ग्रहण किया, उसकी आँखों से इसे देखा और उन्हें यह ज्ञान हुआ कि उसकी भी ग़रीबी उतनी ही भयानक है, जितनी उसकी। जब स्वर्ग का राज्य इस संसार में प्रथम बार उतरा था, यंत्रणा एवं गुलामों और मालिकों वाले इस क्रूर संसार में उतरा था, तो उसने जिसने इसे धरती पर उतारा था, कहा था, "आह, तुममें से जो सबसे तुच्छ है, वही स्वर्ग राज्य में श्रेष्ठतम समझा जायगा।" यह गिरजा साडा का घर था, और वे उसमें एक नौकर थे।

विशप ने बुढ़िया के धार्मिक विश्वास की स्वीकारोक्ति सुनी। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रख दिये। जब वे उसे गिरजा के मुख्य भाग से लिवा कर बाहर निकलने लगे, तो साडा

अपने कंधे से वह लबादा उतारने लगी। वे उसे यह कह कर मना करने लगे कि वह उसे अपने लिये रख ले और रात को वही ओढ़ कर आराम से सोये। परन्तु उसने जल्दी से उसे उतार दिया; उसे अपने पास रखने की कल्पना ही उसके लिये भयावह थी। "नहीं, नहीं, फ़ादर ! यदि वे लोग इसे देख लेंगे, तो !" इससे अधिक वह अपने अत्याचारियों के विरुद्ध कुछ न बोली। परन्तु उसे उतारते समय उसने उसे पुराने लबादे को सहलाया और थपथपाया, जैसे वह कोई चेतन वस्तु हो, जिसने उसके साथ इतनी दया दिखायी थी।

संयोग से फ़ादर लातूर को उस रजत पदक की याद आ गयी, जिसपर देवी मेरी का चित्र खुदा हुआ था और जो इस समय उनकी जेब में था। उन्होंने उसे निकाल कर उसे दे दिया और कहा कि वह स्वयं पोप का प्रसाद है। यह तो उसके लिये एक निधि बन गया, जिसे वह छिपा कर तथा बहुत सम्भाल कर रखेगी, और जब उस पर निगाह रखने वाले सो जायेंगे, तो वह उसकी पूजा करेगी। आह, उन्होंने सोचा, उसके लिये, जो न पढ़ सकती है और न सोच सकती है, यह चित्र, प्रेम का स्थूल रूप, कितना मूल्यवान् है।

उन्होंने विशाल चाबी ताले में लगायी, दरवाजा लकड़ी के कब्ज़ों पर धीरे से खिसक कर खुला। बाहर की निस्तब्धता उनकी आंतरिक शान्ति का ही एक रूप जान पड़ने लगी। बर्फ़ का गिरना बन्द हो गया था, झीने बादल, जो पहले आकाश में बिखरे हुए थे, अब सैंग्रे डि क्रिस्टो पर्वत पर श्वेत कुहरे के रूप में एकत्र हो गये थे। पूर्णमासी का चन्द्रमा, स्वच्छ नीले आकाश में काफ़ी ऊपर उठ कर, भव्य एवं सुहावना, अकेला ही चमक रहा था। बिशप अपने गिरजाघर के दरवाज़े के पास विचारों में निमग्न खड़े थे, तथा उन काले पद-चिह्नों की रेखा को देख रहे थे, जिन्हें उनके अतिथि ने जाते समय बर्फ़ की भीगी सतह पर छोड़ा था।

१
नवाजो प्रदेश में वसन्त

फ़ादर वेलेंट जाड़े भर अरिज़ोना राज्य में रहे। वसंत ऋतु के प्रथम आगमन के साथ ही बिशप और जेसिंटो घोड़े की एक लम्बी यात्रा पर न्यू मेक्सिको राज्य के पार 'पेंटेड डेज़र्ट' एवं होपी नामक गाँवों के लिये रवाना हो गये। ओरेबी गाँव से विदा होने के बाद बिशप एक नवाजो मित्र से मिलने के लिये कई दिन तक दक्षिण की ओर चलते रहे। इस मित्र का एक मात्र लड़का अभी हाल में ही मर गया था और उसने इसकी सूचना बिशप के पास सांता फ़े में भेजी थी।

फ़ादर लातूर इस मित्र यूज़ावियो को बहुत पहले से जानते थे, और अपने नये इलाक़े में आने के फ़ौरन बाद ही उससे मिले थे। यह नवाजो मित्र उस समय सांता फ़े में था, और वह वहाँ अपने तथा होपी गाँव के लोगों के बीच अनवरत चलने वाले झगड़े को शान्त करने में सैनिक अधिकारियों की सहायता कर रहा था। तभी से बिशप तथा इस रेड इण्डियन सरदार के मन में एक दूसरे के प्रति बड़ा सम्मान था। यूज़ावियो बिशप से दीक्षा दिलाने अपने बेटे को सांता फ़े तक लाया था,—उसी प्रिय बेटे को, जिसकी इसी जाड़े में मृत्यु हुई थी।

यद्यपि यूज़ावियो फ़ादर लातूर से अवस्था में दस वर्ष कम था, नवाजो सम्प्रदाय में उसका बड़ा प्रभाव था और उसके पास बहुत सी भेड़ें तथा घोड़े थे। सांता फ़े तथा अबुलक़र्क में उसकी बुद्धिमानी एवं रोब की धाक़ थी, लोग उसके आकर्षक व्यक्तित्व की प्रशंसा करते थे। उसका क़द बहुत ही लम्बा था, यद्यपि नवाजो लोग अमूमन लम्बे होते थे और उसका चेहरा रिपब्लिक युग के किसी रोमन जनरल की तरह था। वह हमेशा से बड़े अच्छे कपड़े पहनता था, मखमल एवं मृगछाला के बने वस्त्र, जिनमें गुरियों एवं पक्षी के पर के गोटे लगे रहते थे। वह उनके ऊपर चांदी की पेटी बाँधता

या तथा अच्छे-से-अच्छे ऊन का बना बढ़िया डिज़ाइन का कम्बल ओढ़ता था। वह कमीज़ की ढीली आस्तीन के नीचे अपनी बाहों पर चाँदी के बाज़ूबन्द पहने रहता था और गले में कौड़ियों, नील मणियों तथा मूंगे की बनी एक पुरानी माला लटकाये रहता था। ये मूंगे भूमध्य सागरीय मूंगे थे और इस नवाजो प्रदेश में कारोनेडो के कप्तानों द्वारा पहुँचे थे, जब वे होपी गाँव एवं 'ग्रैंड कैनीयन' का पता लगाने इस प्रदेश से गुज़रे थे।

यूज़ाबियो अपने सम्बन्धियों एवं आश्रितों के साथ कोलोरैडो चिकिटो पर्वत के समीप छोटे-छोटे मकानों की एक बस्ती में रहाता था; पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर में उसके परिवार के लोग उसके विशाल भेंड़ों के झुण्ड चराते थे।

फ़ादर लातूर और जेसिंटो बाड़ा जैसे बने इन सटे-सटे मकानों की बस्ती में जिस समय पहुँचे, उस समय एक ज़ोर की आँधी आयी हुई थी, जिसकी धूलि से वे तथा उनके खच्चर बिलकुल ढँक गये और उनके लिये आगे रास्ता देखना कठिन हो रहा था। नवाजो अपने मकान से बाहर निकल आया और ऐंजेलिका की लगाम थाम कर बिशप को नीचे उतारा। पहले तो वह कुछ नहीं बोला, केवल फ़ादर लातूर के बिलकुल श्वेत हाथों को अपने साँवले हाथों से पकड़े खड़ा रहा और आँखों में शोक एवं विराग का सन्देशा लिये उनके मुँह की ओर देखता रहा। उसके चेहरे पर भावनाओं का एक तूफ़ान सा आया और फिर वह धीरे से बोला।

"मेरे मित्र, तुम आ ही गये!"

उसने इससे आगे कुछ नहीं कहा, परन्तु उतना ही कहने में सब कुछ व्यक्त हो गया; स्वागत, विश्वास, सराहना।

बिशप के रहने के लिये, बस्ती से दूर एकान्त स्थान में एक बाड़ा दिया गया। यूजाबियो ने उसमें फौरन अपने अच्छे-से-अच्छे मृगछाले तथा कम्बल, कालीन आदि बिछवा दिये और अपने अतिथि से कहा कि वे यहाँ कुछ दिन रहें और विश्राम करें। उनके खच्चर भी थक गये थे, उसने

कहा, और स्वयं फ़ादर भी तो थके हुए थे, और सांता फ़े अभी बहुत दूर था।

बिशप ने उसे धन्यवाद दिया और कहा कि वे तीन दिन ठहरेंगे, क्योंकि एकान्त में रहकर उन्हें कुछ ध्यान आदि भी करना है। घर छोड़ने के बाद से ही उनका मस्तिष्क सांसारिक समस्याओं में उलझा हुआ था। यह एक ऐसा स्थान जान पड़ता है, जहां आदमी शान्ति से कुछ सोच विचार सकता है। वहां की नदी जो बसन्त आते-आते केवल नाले के ही रूप में रह गयी थी, मिट्टी के विशाल टीलों एवं स्तूपों के बीच से गुजरती थी। वसंत की तेज हवा के कारण इन टीलों की मिट्टी से वायुमण्डल भरा रहता था। जिस बाड़े में बिशप रहने के लिये आये, उसके पास ही एक टीला था। बाड़े की दीवारें लकड़ी की बनी हुई थीं और उन पर मिट्टी का लेप चढ़ा था। उसकी दरारों से छन कर हवा से उड़ायी हुई मिट्टी अन्दर भी पहुँचती थी।

नदी के किनारे एक प्रकार के ऊंचे-ऊंचे वृक्षों का एक बाग था। ये वृक्ष बहुत ही पुराने और आकार में बहुत बड़े थे, इतने बड़े कि लगता था कि वे पूर्व युग के हैं। वे दूर-दूर उगे हुए थे, और उनकी विभिन्न ऐंठी हुई आकृति जान पड़ता है उस अनवरत हवा के ही कारण हो गयी थी, जिसने उन्हें पूरब की ओर झुका दिया था और मिट्टी से रगड़-रगड़ कर उन्हें चिकना एवं चमकीला बना दिया था। उनकी इस आकृति का कारण यह भी था कि उन्हें पानी बहुत कम मिलता था, क्योंकि इस स्थान पर नदी लगभग वर्ष भर सूखी ही रहती थी। ये पेड़ जमीन से तिरछे निकले हुए थे और चालीस, पचास फुट की ऊँचाई पर ये सभी सफ़ेद एवं सूखे तने अपनी दिशा बदल दिये थे और पुनः अपनी जड़ की ओर घूम पड़े थे। कुछ वृक्षों में बड़ी-बड़ी शाखाएं निकल गयी थीं, जो नीचे की ओर झुक कर लगभग जमीन तक पहुँच गयी थीं; कुछ में कोई शाखा नहीं निकली थी, परन्तु तना एकाएक नीचे की ओर झुक गया था, जैसे धनुष की

प्रत्यंचा से झुका दिया जाता है; और कुछ के शिखर पर घने चमकदार पत्ते थे जैसे कोई टेढ़ा ताड़ का वृक्ष हो। वे सभी हरे वृक्ष थे, परन्तु वे बहुत पुराने, मृतक, एवं सूखे हुए लगते थे और उनमें पत्तियां बहुत कम थीं। शाखाओं में बहुत ऊंचाई पर या किसी बहुत ही लम्बी पतली डाली के सिरे पर मुलायम हरी पत्तियों का एक हलका सा गुच्छा दिखलायी पड़ जाता था, जो उन लम्बे जीर्ण, श्वेत तनों और शाखाओं से बिलकुल बेमेल लगता था। यह बाग़ विशाल वृक्षों वाले जाड़े की ऋतु का जंगल-सा दीखता था, ऐसे वृक्ष, जिनकी पत्तीहीन डालियों में परवृक्षाश्रयी पौधों के गुच्छे लगे हुए हों।

नवाजो लोग आतिथ्य-सत्कार में अनधिकार हस्तक्षेप नहीं करते। यूज़ावियों ने बिशप पर केवल यह स्पष्ट कर दिया कि उसे उनके आने से बड़ी प्रसन्नता हुई है, अन्यथा उसने उन्हें पूर्णतः अपनी सुविधानुसार रहने के लिये छोड़ दिया। फ़ादर लातूर वहां तीन दिन तक लगभग अनवरत आंधी ही में रहे और वे धूलि की उन चलती-फिरती दीवारों तथा पर्दों के कारण अपने दूरस्थ छोटे से रेड इण्डियन शिविर से भी बिलकुल बिलग रहे। या तो वे अपने बाड़े में बैठे हवा की सनसनाहट सुनते रहते थे, या एक रेड इण्डियन कम्बल ओढ़े जिससे वे अपना मुंह और नाक भी ढंके रखते थे, उन प्राचीन एवं हवा से टेढ़े हुए वृक्षों के नीचे टहलते रहते थे। यहां आने के बाद से ही वे यह निर्णय करने में लगे हुए थे कि क्या फ़ादर वेलेंट को टकसान से वापस बुलाना उनके लिये न्याय-संगत होगा। विकार के पत्रों से, जिन्हें यात्री उनके पास तक पहुँचाते थे, यह जान पड़ता था कि वे जहां थे, वहां पूर्णतः संतुष्ट थे, और सेंट जेवियर डेल बाक के पुराने मिशन गिरजा का जीर्णोद्धार करने में लगे हुए थे, जिसे वे इस महाद्वीप का सबसे अधिक सुन्दर गिरजाघर कहते थे, यद्यपि लगभग दो सौ वर्षों से उसकी उपेक्षा कर दी गयी थी।

फ़ादर वेलेंट के जाने के बाद से बिशप की जिम्मेदारियां उत्तरोत्तर

बढ़ती गयीं। श्रावर्ने से आये हुए सभी नये पादरी बड़े अच्छे लोग थे; वे बड़े वफ़ादार थे तथा बिशप की सभी इच्छाएँ बड़ी तत्परता से पूरी करते थे; परन्तु फिर भी वे इस देश के लिये अजनबी थे, स्वयं कोई निर्णय लेने में हिचकते थे और अपनी प्रत्येक कठिनाई बिशप से कहते थे। फ़ादर लातूर को अपने विकार की आवश्यकता थी, जो यहाँ के निवासियों से इतनी चतुराई से पेश आते थे, उनके दोषों के प्रति इतनी सहानुभूति दिखाते थे। साथ रहने पर तो बिशप फादर वेलेंट के आशावादी उतावलेपन को हरदम नियंत्रण में रखते थे, परन्तु अकेला हो जाने पर उन्हें इसी गुण की सबसे अधिक कमी खटकती थी। और यह मान लिया जाय कि सबसे अधिक तो उन्हें फ़ादर वेलेंट के साथ की कमी खटकती थी?

यद्यपि जीन मेरी लातूर और जोसेफ़ वेलेंट फ्रांस में पाय दे डोम नामक नगर के पड़ोसी इलाकों में पैदा हुए थे, बचपन में वे एक-दूसरे को नहीं जानते थे। लातूर का परिवार विद्वानों एवं शिक्षकों का पुराना परिवार था, जब कि वेलेंट का परिवार उस प्रांत में अपेक्षाकृत निम्नकोटि का परिवार था। इसके अतिरिक्त बचपन में जोसेफ़ अधिकतर घर से दूर ही रहे। वे अपने बाबा के साथ वोल्विक पर्वतीय प्रदेश में उनके फ़ार्म पर रहे, जहाँ की जलवायु विशेषरूप से अच्छी थी तथा वह प्रदेश चिड़चिड़े प्रकृति के बच्चे के लिये बड़ा शान्त एवं स्वास्थ्यप्रद था। दोनों लड़कों का प्रथम साथ क्लेरमोंट के मोंटफेरांड के धार्मिक शिक्षालय में ही हुआ।

जब जीन मेरी शिक्षालय के अपने दूसरे वर्ष में थे, तो एक दिन, वर्ष के आरम्भ में, वे खेल के मैदान में खड़े हुए थे और नये आये हुए लड़कों को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। उन्हीं लड़कों में उन्हें एक खास ही सुस्त एवं भद्दी आकृति वाला लड़का दिखलायी पड़ा; उसकी अवस्था उन्नीस वर्ष की थी, वह नाटे क़द का था, बहुत ही पीला, चेहरा बहुत ही सरल, ठुड्डी पर एक मसा तथा बाल बहुत ही भूरे थे, जिसके कारण देखने में वह

जर्मन लगता था। इस लड़के ने लातूर को अपनी ओर ताकते हुए देख लिया और फौरन ही उनके पास चला आया, जैसे वह बुलाया गया हो। स्पष्ट था कि वह अपने सादेपन के प्रति अनभिज्ञ था, बिलकुल शर्मीला नहीं था, परन्तु अपने आस-पास की वस्तुओं के प्रति वह बड़ा जिज्ञासु था। उसने जीन लातूर से उनका नाम पूछा, उनका घर कहाँ है, तथा उनके बाप क्या करते हैं। फिर बड़ी सरलता से उसने कहा—

"मेरे पिता जी बेकर (पाव रोटी आदि बनाने तथा बेचने वाले) हैं। रीयोम के वे सर्वश्रेष्ठ बेकर हैं। वस्तुतः वे असाधारण प्रकार के बेकर हैं।"

युवक लातूर यह सुनकर हँस पड़ा था, परन्तु उसने जोसेफ़ की अपने पिता के प्रति इस श्रद्धा-भावना की सराहना की थी। उस विचित्र लड़के ने उन्हें अपने भाई, चाची एवं अपनी सयानी छोटी बहन फ़िलोमीन के सम्बन्ध में भी बताया। उसने पूछा कि लातूर शिक्षालय में कितने दिन से हैं।

"क्या तुमने पहले से ही पादरी बनने का सोच लिया है? मैंने भी यही सोचा है, लेकिन मैं तो सेना में भरती होते-होते बचा।"

उससे एक वर्ष पहले, अल्जियर्स के आत्मसमर्पण के पश्चात्, क्लरेमोंट नगर में सैनिक पर्यवेक्षण हुआ था, सैनिक पोशाकों एवं बाजों का भारी प्रदर्शन हुआ, तथा फ्रांसीसी सेना की महानता के सम्बन्ध में बड़े-बड़े जोशीले भाषण हुए थे। युवक जोसेफ़ वेलेंट भी उसी जोश में बह गया था और बिना अपने पिता से पूछे ही स्वयंसेवक के रूप में भर्ती होने के लिये अपना नाम लिखा दिया था। उसने लातूर को अपनी देशभक्ति की भावना का अपने पिता की अप्रसन्नता का तथा बाद के अपने पश्चात्ताप का पूरा विवरण दिया। उसकी माँ की इच्छा थी कि वह पादरी बने। जब वह तेरह वर्ष का था, तभी उनकी मृत्यु हो गयी, और तभी से उसने इरादा कर लिया था कि वह अपनी स्वर्गीया माँ की इच्छा पूरी करेगा।

ग्रौर ग्रपना जीवन देवी माँ की सेवा में ग्रर्पित कर देगा । परन्तु ठीक उस दिन, उस बाजे ग्रौर सैनिक पोशाकों के जोशपूर्ण वातावरण में वह सब कुछ भूल गया था ग्रौर उसकी केवल यह इच्छा रह गयी थी कि वह फ्रांस की सेवा करे ।

ग्रचानक युवक वेलेंट, यह कहते हुए कि घण्टा समाप्त होने के पहले ही मुझे एक पत्र लिखना है, ग्रपना गाउन ऊपर उठाते हुए वड़ी तेजी से भाग गया था । लातूर उसे खड़ा देखता रह गया; तभी उसने ग्रपने मन में पक्का इरादा कर लिया कि वह इस नये लड़के को ग्रपने संरक्षण में लेगा। इस बेकर के पुत्र में कोई ऐसी बात थी, जिसने उनके इस मिलन को कौतूहल-युक्त ग्रनुभव का रूप दे दिया था । लातूर इस मिलन को दुहराने के लिये उत्सुक हो गये । प्रथम मिलन में ही उन्होंने इस चंचल एवं बदसूरत लड़के को ग्रपना मित्र चुन लिया । यह निर्णय तत्काल हो गया । लातूर स्वयं तो बड़ा शान्त चित्त एवं छान-बीन करने वाले मिजाज का था, जिसे प्रसन्न करना कठिन था; वह कुछ उदास प्रकृति का भी था ।

शिक्षालय में वह पढ़ाई-लिखाई में ग्रपने मित्र से कहीं ग्रागे था, परन्तु वह यह बराबर ग्रनुभव करता था कि जोसेफ़ धार्मिक उत्साह में उसकी ग्रपेक्षा बहुत ग्रागे है । मिशनरी बन जाने के बाद जोसेफ़ ने उनकी ग्रपेक्षा ग्रंग्रेजी भाषा, ग्रौर बाद को स्पेनिश भी बोलना ग्रधिक ग्रासानी से सीख लिया था । ग्रारम्भ में तो वह दोनों भाषाग्रों को बहुत ग़लत ही बोलता था, परन्तु वह झूठ-मूठ का दिखावा नहीं करता था कि उसे व्याकरण या ग्रच्छे मुहावरों का भी ज्ञान है । चपरासियों से बातचीत करने में वह चपरासियों की ही तरह बोलने के लिये हमेशा तैयार रहता था ।

यद्यपि बिशप को फ़ादर जोसेफ़ के साथ काम करते हुए पच्चीस वर्ष बीत चुके थे, वे उनके स्वभाव के परस्पर-विरोधी पहलुग्रों में संगति नहीं ला सके । उन्होंने उन्हें महज स्वीकार कर लिया था, ग्रौर जब जोसेफ़ काफ़ी दिनों के लिये उनसे दूर हो जाते थे, तो वे ग्रनुभव करते थे कि उन्हें ये

सभी पहलू बहुत प्रिय हैं। उनके विकार जैसा सच्चा धार्मिक मनुष्य उन्हें कोई नहीं मिला था, यद्यपि अनेक सांसारिक वस्तुओं के प्रति उनके (विकार) मन में स्पृहा भी बहुत थी। यद्यपि वे अच्छे भोजन एवं अच्छी शराब के बड़े प्रेमी थे, वे न केवल सभी शास्त्र विहित व्रतों का कड़ाई से पालन करते थे, अपितु वे अपनी लम्बी-लम्बी मिशनरी यात्राओं की कठिनाइयों एवं कम भोजन आदि की कोई शिकायत भी नहीं करते थे। अच्छी शराबों के प्रति फ़ादर जोसेफ़ की रुचि अन्य किसी व्यक्ति में दोष समझी जा सकती थी। परन्तु चूंकि वे शरीर से कमज़ोर थे, ऐसा लगता था कि उन्हें हर समय किसी ऐसी स्फूर्तिदायक वस्तु की आवश्यकता रहती थी कि जो उनके उद्देश्यों एवं कल्पना की अचानक उड़ानों को सहायता प्रदान कर सके। बिशप ने कितनी बार देखा था कि कोई अच्छा भोजन तथा अच्छी शराब का बोतल उनकी आंखों के सामने देखते-देखते मानसिक स्फूर्ति में परिवर्तित हो गया। किसी अच्छे भोजन के पश्चात्, जो सामान्यतया लोगों को सुस्त बना देता है और लोग थोड़ा आराम करना चाहते हैं, फ़ादर वेलेंट ताज़े होकर उठ खड़े होते और दस या बारह घण्टे तक उस उत्साह एवं लगन से काम करते जिसके परिणाम स्थायी होते।

बिशप बहुधा ही इस बात से संकुचित हो जाते थे कि उनके विकार अपने इलाके के लिये, गिरजा-कोष के लिये तथा दूरस्थ मिशनों के लिये बराबर ही लोगों से चन्दा आदि मांगते रहते हैं। परन्तु, अपने लिये वे इतनी भी चीजें नहीं रखते थे कि क़ायदे से रह सकें। संसार में उनकी अपनी कही जाने वाली वस्तु खच्चर कंटेंटो के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं थी। यद्यपि रीयोम में रहने वाली अपनी बहन से उन्हें अच्छे-अच्छे वस्त्र प्राप्त हुआ करते थे, उनके रोज़ के पहनने के कपड़े बिलकुल साधारण एवं गन्दे ही रहते थे। बिशप के पास तो कम से कम पुस्तकों का एक विशाल एवं अमूल्य संग्रह था, तथा घर में आराम की अन्य कई वस्तुएं भी थीं। उनके पास अच्छे-अच्छे मृगछाले थे, कम्बल थे, जो उन्हें भेंट रूप में

यूज़ाबियो तथा अन्य रेड इण्डियन मित्रों से प्राप्त हुई थीं। मेक्सिकन औरतें जो कढ़ाई-बुनाई तथा गोटे लगाने के काम में बड़ी निपुण थीं, उन्हें पहनने के लिये, बिछाने-ओढ़ने के लिये तथा मेज़ के लिये कपड़े भेंट दिया करती थीं। उनके पास चाँदी की तश्तरियाँ थीं, जो उन्हें ओलिवारिस तथा इलाक़े के अन्य धनी व्यक्तियों से मिली थीं। परन्तु फ़ादर वेलेंट प्रारम्भिक काल के ईसाई सन्तों की भाँति थे, जिनके पास अपनी कहने को कोई भी वस्तु नहीं होती थी।

अपने युवाकाल में जोसेफ़ अकेले में रहकर एकान्त साधना कर जीवन बिताना चाहते थे; परन्तु सच तो यह था कि वे बिना मानव समागम के प्रसन्न ही नहीं रह सकते थे। और वे लगभग सभी प्राणी को पसन्द करते थे। ओहियो में, जब ये दोनों व्यक्ति घोड़ा गाड़ियों में यात्राएँ किया करते थे, फ़ादर लातूर ने यह देखा था कि जब कभी कोई नया यात्री उनकी गाड़ी में, जो पहले ही से ठसाठस भरी रहती थी, घुसे तो फ़ादर जोसेफ़ उसे देखकर खुश हो जाते थे, जैसे उसका आना बड़ा अच्छा हुआ, जब कि वे स्वयं बहुत चिढ़ जाते थे, यद्यपि वे अपनी इस भावना को प्रकट नहीं होने देते थे। ओहियो के जीवन की बुरी परिस्थितियों से जोसेफ़ कभी नहीं घबराते थे। वहाँ के घृणास्पद मकान और गिरजाघर, बिना मरम्मत वाले फ़ार्म एवं बगीचे, नगरों एवं देहातों की गन्दगी फ़ादर लातूर को हमेशा ही खिन्न बनाये रहती थी, परन्तु जोसेफ़ तो जैसे इन बातों को देखते ही न थे। तो शायद यह कहा जा सकता है कि सौन्दर्य एवं शोभा के लिये उनके मन में कोई स्थान ही नहीं था। परन्तु संगीत के वे अत्यधिक प्रेमी थे। सैंडस्की में वे कितनी शामें अपने गिरजा के गायकों के जर्मन अगुआ के साथ नवयुवकों को 'बाच' का संगीत सिखाने में बितायी थीं।

फ़ादर वेलेंट के व्यक्तित्व की प्रशंसा शब्दों में नहीं की जा सकती थी। यह मनुष्य अपने गुणों से समूचे योग से अधिक बड़ा था। उन्हें किसी भी प्रकार के मानव-समाज में छोड़ दिया जाय, उसमें वे चार चाँद लगा देते

थे। नवाजों का कोई बाड़ा हो, छोटी-छोटी गन्दी मेक्सिकन झोपड़ियों का समूह हो, रोम में विशिष्ट पादरियों और कार्डिनलों की कोई सभा आदि हो, सभी जगह बात वही रहती थी।

पिछली बार जब बिशप रोम में थे, तो उन्होंने विशिष्ट पादरी माजुक्ची से, जो उस समय सोलहवें ग्रेगोरी के सेक्रेटरी थे, जिस समय फ़ादर वेलेंट अपने ओहियो मिशन से प्रथम बार रोम गये थे, एक बड़ी मजेदार कहानी सुनी थी।

जोसेफ़ रोम में तीन महीने तक ठहरे थे। उनका दैनिक खर्च चालीस सेंट था और वे वहाँ की सभी वस्तुएँ घूम-घूम कर देख रहे थे। कई बार उन्होंने माजुक्ची से कहा कि वे पोप से उनसे अकेले मिलने का प्रबन्ध कर दें। सेक्रेटरी'साहब ओहियो के इस मिशनरी को बहुत पसन्द करते थे, उसमें एक प्रकार की उद्विग्नता, चंचलता एवं सादापन था, एक ऐसी ताज़गी थी, जो रोम में एकत्र होने वाले पादरियों में बहुधा नहीं देखने को मिलती थी। अतः उन्होंने पोप से एक ऐसी भेंट का प्रबन्ध किया, जिसमें केवल पोप, फ़ादर वेलेंट और माजुक्ची ही मौजूद थे।

मिशनरी जोसेफ़ पोप के एक निजी नौकर के साथ, जो प्रथा के विरुद्ध एक थैले के बजाय दो बड़े-बड़े काले थैले, जिनमें आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये बहुत सी वस्तुएँ थीं, लिये हुए था, अन्दर आये। अपने स्वागत के पश्चात् फ़ादर जोसेफ़ अपने मिशन तथा तत्सम्बन्धी अन्य मिशनों का इतना विस्तृत विवरण देने लगे कि पोप और उनके सेक्रेटरी समय देखना भूल गये और इस प्रकार की भेंट में जितना समय लगता था उससे तिगुना समय बीत गया। सोलहवें ग्रेगोरी ने जो बड़े ही शानदार एवं स्वेच्छाचारी पोप थे, और जो यूरोपीय राजनीति में बराबर ही कमज़ोर पक्ष में थे और स्वतन्त्र इटली के शत्रु थे, संसार के दूर-दूर भागों में ईसाई धर्म-प्रचार के लिये जितना किया था, उतना उनके किसी पूर्वाधिकारी ने नहीं किया था। और आज उन्हें अपने मन का एक मिशनरी

मिल गया था। फ़ादर वेलेंट ने अपने लिये, अपने साथी पादरियों के लिये अपने मिशनों के लिये तथा अपने बिशप के लिये आशीर्वाद माँगा। उन्होंने फ़ेरी करने वालों के थैलों की शक्ल के अपने थैले खोले, जिनमें बहुत से क्रूश, जपने की मालाएँ, प्रार्थना की पुस्तकें, पदक, तथा विशेप-पूजा की पुस्तकें थीं, जिनके सम्बन्ध में वे विशेष आशीर्वाद चाहते थे। आश्चर्यचकित सेवक इतनी देर में कई बार वहाँ आया था और फिर बाहर चला गया था, और अन्त में मजुक्ची ने पोप को याद दिलायी कि उन्हें अन्य कई काम भी हैं। फ़ादर वेलेंट ने स्वयं ही अपने दोनों थैले उठा लिये, क्योंकि उस समय, वह सेवक वहाँ नहीं था, और इस प्रकार उन्हें लादे हुए, वे सिर आगे झुकाये, जाने के लिये पोप के पास से पीछे हटने लगे। तभी पोप अपनी कुर्सी पर से उठ खड़े हुए और अपने हाथ उठा लिये, आशीर्वाद देने के रूप में नहीं, अपितु अभिवादन के रूप में, और विदा हो रहे मिशनरी को ऐसे पुकारा जैसे कोई साधारण व्यक्ति किसी अन्य साधारण व्यक्ति को पुकारता है, और कहा, "साहस रखो, अमेरिकन !"

बिशप लातूर को नवाजो वाला अपना बाड़ा विचार के लिये, पुरानी बातों को याद करने तथा भविष्य की योजना बनाने के लिये, बड़ा अनुकूल सिद्ध हुआ। उन्होंने अपने भाई तथा फ्रांस में अपने पुराने मित्रों को लम्बे-लम्बे पत्र लिखे। वह बाड़ा इस प्रकार एकान्त वातावरण में था, जैसे महासागर में चलने वाले किसी जहाज का केबिन हो, जिसमें चारों ओर से तूफ़ानी हवा की आवाज़ सुनाई पड़ रही हो। दरवाजे के अतिरिक्त उसमें अन्य कोई खिड़की आदि नहीं थी, और वह हमेशा ही खुला रहता था और बाहर का वायुमण्डल आँधी के कारण धुंधले पीले रङ्ग का हो रहा था। दिन भर दीवारों की दरारों से धूल अन्दर आती रहती थी और कच्ची फ़र्श पर उसकी परत जम जाती थी। वृक्षों की डालियों से बने हुए छत की सूखी पत्तियों पर वह ओले की तरह तड़तड़ाती थी। यह मकान

इतना कमज़ोर आश्रय था कि उसमें बैठने पर यह लगता था, जैसे कोई धूलिमय मिट्टी एवं बहती हुई हवा के बने संसार के बीच बैठा हुआ हो।

४

यूज़ाबियो

यूज़ाबियो के यहां पहुँचने के तीसरे दिन बिशप ने विकार को बुलाने के लिये एक औपचारिक सा पत्र लिखा और फिर वे प्रति दिन की भाँति रेगिस्तान में टहलने चले गये। वे सूर्यास्त तक बाहर ही रहे। उस समय हवा बन्द हो गयी और वायुमण्डल बिलकुल साफ़ हो गया। वापस आते समय जब वे नदी के किनारे, घर से अभी एक मील से भी दूर थे, उन्हें कहीं ढोल बजने की आवाज़ सुनायी पड़ी। उन्होंने अनुमान लगाया कि यह आवाज़ यूज़ाबियो के मकान से आ रही है, और उनका मित्र घर पर है।

गाँव में पहुँचने पर फ़ादर लातूर ने देखा कि यूज़ाबियो अपने दरवाज़े के पास बैठा हुआ है और नवाजो भाषा में कोई गाना गा रहा है तथा अपने लम्बे ढोल के एक ओर को हलके हाथ से ठोंक रहा है। उसके सामने दो छोटे-छोटे रेड इण्डियन बालक, जिनकी अवस्था चार और पाँच वर्ष की रही होगी, संगीत की ताल के अनुसार उस सख्त भूमि पर नाच रहे हैं। दो औरतें, यूज़ाबियो की पत्नी और बहन, झोपड़ी के अँधेरे में बैठी उन्हें देख रही थीं।

छोटे बच्चों को इस अजनबी के आने का आभास नहीं हुआ। वे अपने काम में बिलकुल तल्लीन थे, उनके चेहरे बड़े गम्भीर थे तथा उनकी भूरी आँखें अर्द्ध-निमीलित थीं। बिशप उनके छोटे-छोटे हाथों की निश्चित एवं शिथिल गतियों को, उनके छोटे-छोटे पावों को, जिनमें मृगचर्म के जूते थे और जो रेशम वाले वृक्ष के पत्तों से बड़े नहीं थे, तालों को, जो बिना

बताये ही अनियमित तथा अद्भुत राग वाले संगीत का अनुसरण कर रहे थे, खड़े-खड़े देखते रहे। स्वयं यूज़ाबियो की भी मुद्रा धार्मिक रूप से गम्भीर थी। वह ढोल को घुटनों के बीच दबाये, हाथों को झुकाये तथा अपने सिर के काले बालों को रोकने के लिये माथे पर एक लाल फ़ीता बाँधे हुए बैठा था। ढोल को वह एक छोटी सी लकड़ी से और कभी-कभी अपनी उँगलियों से ही धीरे-धीरे पीट रहा था। हाथ को इस प्रकार चलाने में उसकी साँवली बाहों में पहना हुआ चाँदी का बाजूबन्द चमक रहा था। गाना समाप्त करके वह उठा और दोनों बच्चों का, जो उसके भतीजे थे और जिनके रेड इण्डियन नाम 'ईगिल फेदर' (चील का पंख) तथा 'मेडिसिन माउंटेन' (औषधि पर्वत) थे, उसने बिशप से परिचय कराया और फिर उन्हें वहाँ से चले जाने का संकेत किया। वे घर के अन्दर भाग गये। यूज़ाबियो ने ढोल अपनी पत्नी को थमाया और अपने मेहमान के साथ वहाँ से चल दिया।

"यूज़ाबियो, "बिशप ने कहा, "मैं फ़ादर वेलेंट के पास टकसान में एक पत्र भेजना चाहता हूँ। पत्र लेकर मैं जैसिंटो को वहाँ भेजना चाहता हूँ, बशर्ते सांता फ़े जाने के लिये तुम अपना कोई आदमी मेरे साथ कर दो।"

"मैं स्वयं ही 'विला' तक आपके साथ घोड़े पर चलूँगा।" यूज़ाबियो ने उत्तर दिया। नवाजो लोग अब भी राजधानी का पुराना ही नाम (विला) लेते थे।

अतः दूसरे ही दिन प्रातःकाल जैसिंटो को तो दक्षिण की ओर रवाना किया गया और फ़ादर लातूर तथा यूज़ाबियो अपने खच्चरों पर सवार हो कर पूरब की ओर चले।

सांता फ़े की वापसी यात्रा चार सौ मील से कुछ कम थी। मौसम बदलता रहता था, कभी भयानक आँधियां और कभी सूर्य का प्रखर प्रकाश। आकाश उतनी ही गतिमय एवं परिवर्तनशील था, जितना नीचे का मरुस्थल एकरस एवं निस्तब्ध,—और अन्तरिक्ष का विस्तार यहाँ इतना

अधिक था कि उतना विस्तार न तो सागर में रहने पर दिखायी पड़ता है और न संसार में अन्य कहीं भी। मैदान तो आपके पांव के तले था, परन्तु ऊपर दृष्टि दौड़ाने पर तीर की तरह चुभने वाली हवा एवं उड़ते बादलों वाला दीप्तिमान् नीला अपार गगन-मण्डल दिखलायी पड़ता था। उसके नीचे पर्वत भी चींटियों के ढूह ही जैसे लगते थे। और जगह तो आकाश धरती की छत जैसा लगता है; परन्तु यहाँ धरती आकाश रूपी अट्टालिका की फ़र्श सी दीख पड़ती थी। आप किसी दूरस्थ स्थान में पहुँच जाइये और किसी विशाल मैदान में पहुँचने के लिये व्याकुल हो उठिये, तो वह मैदान भी यह आकाश ही था, आपके चारों ओर का वायुमण्डल भी यह आकाश ही था, यहाँ तक कि जिस दुनिया में आप वस्तुतः रहते हैं, वह दुनिया भी यह आकाश ही था, तात्पर्य यह, कि सब कुछ यहाँ आकाश ही था।

यूज़ाबियो के साथ यात्रा करना ऐसा था, जैसे उस मैदान ही ने मानव रूप धारण कर लिया है, और आप उसी के साथ यात्रा कर रहे हों। वह संयोग एवं मौसम को वैसे ही स्वीकार कर रहा था, जैसे वहाँ, का वह प्रदेश, एक प्रकार का अव्यक्त आनन्द लेते हुए। वह बोलता कम था, खाता कम था, कहीं सो जाता था, मुद्रा सरल एवं स्नेहपूर्ण बनाये रखता था और जैसिंटो की भाँति उसके व्यवहार शिष्ट थे। बिशप को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वह रास्ते में फूल तोड़ने बहुधा ही रुक जाया करता था। एक दिन प्रातःकाल वह खच्चरों के साथ, हाथ में लाल फूलों का एक गुच्छा लिये हुए आया। ये फूल लम्बे तथा घण्टियों के आकार के थे और पत्ती-हीन डंठलों से एक ओर लटके हुए थे तथा हवा के कारण काँपते रहते थे।

"रेड इण्डियन लोग इसे इन्द्रधनुष फूल कहते हैं," उसने उन्हें हाथ में ऊपर उठाते हुए और उन लाल नलियों को हिलाते हुए कहा। "इनके लिये अभी जल्दी है।"

जहाँ कहीं भी वे रात बिताते थे, चाहे वह कोई चट्टान हो, या किसी वृक्ष की साया हो या कोई मिट्टी का टीला, वहाँ से चलने के पहले नवाजो (यूज़ाबियो) वहाँ से अस्थायी निवास के सभी चिह्न बिलकुल नष्ट कर देता था। वह जली हुई लकड़ी के टुकड़े आदि, खाने की बची खुची चीजें ज़मीन में गाड़ देता था, यदि कुछ पत्थर के टुकड़े आदि एकत्र किये रहता था, तो उन्हें बिखेर देता था, जमीन में अगर कोई गड्ढा खोदे रहता था, तो उसे बन्द कर देता था। चूँकि जैसिंटो भी ठीक यही करता था, फ़ादर लातूर ने अनुमान लगाया कि जिस प्रकार किसी श्वेत व्यक्ति का यह तरीका होता है कि जिस प्रदेश में वह पहुँच जाय, उसमें वह अपना अधिकार दिखाने लगता है, उसमें परिवर्तन करता है और उसमें हेर-फेर कर देता है (जिससे कम-से-कम उसकी यात्रा का कोई यादगार तो रह जाय), उसी प्रकार रेड इण्डियन का यह तरीक़ा होता है कि वह किसी प्रदेश से, बिना उसमें कोई परिवर्तन किये ही, गुज़र जाता है; उसे पार कर जाता है और उसमें अपना कोई चिह्न नहीं छोड़ता जैसे मछली पानी में और चिड़िया हवा में कोई निशानी नहीं छोड़ती।

रेड इण्डियन तरीक़ा यह था कि मैदान में लुप्त हो जाय, न कि उसमें दृश्यमान रूप में स्थित रहे। समतल पर्वत-खण्डों पर बसे हुए होपी गाँवों के मकान आदि इस प्रकार बनाये गये थे कि वे भी उसी पर्वत-खण्ड की ही भाँति लगते थे और दूर से वे अलग दिखायी ही नहीं पड़ते थे। नवाजों के वे बाड़े जो मिट्टी तथा झाड़ियों वाले प्रदेश में थे, मिट्टी तथा इन वृक्षों की लकड़ियों आदि से बने भी थे। उस समय किसी भी बस्ती में कोई व्यक्ति अपने मकान में शीशे की खिड़कियाँ नहीं लगाता था। उन्हें शीशे पर धूप का चमकना भद्दा और अप्राकृतिक, यहाँ तक कि खतरनाक भी समझा जाता था। इसके अतिरिक्त ये रेड इण्डियन लोग नवीनता एवं परिवर्तन को नापसन्द करते थे। वे अपने पहाड़ों में अपने पूर्वजों के पावों द्वारा बनाये गये मार्गों से ही आते-जाते थे, पर्वत-खण्ड पर बसे हुए

गाँवों एवं बाज़ारों में जाने के लिये प्राकृतिक रूप से बनी पत्थर की सीढ़ियों से ही ऊपर चढ़ते थे, श्वेत वर्ग वालों द्वारा कुएं खोदे जाने पर भी उन्हीं पुराने चश्मों से ही पानी भरते थे।

चाँदी पर खुदाई करने या कौड़ियों और माले की गुरियों में छेद करने में रेड इण्डियन लोग अथाह धैर्य का प्रदर्शन करते थे, वे अपने कम्बलों, पेटियों तथा त्योहारों आदि पर पहने जाने वाले वस्त्रों आदि को तैयार करने में अपना सारा हुनर लगा देते थे और बहुत परिश्रम करते थे। परन्तु सजावट की उनकी धारणा सीमित थी और वह मैदानों, पर्वतों आदि तक नहीं पहुँचती थी। उनमें यूरोपियनों की प्रकृति पर विजय प्राप्त करने, उसे अपने अनुकूल बनाने तथा पुनः सर्जन की कोई भी इच्छा नहीं थी। वे अपनी प्रतिभा का उपयोग अन्य दिशा में करते थे; अर्थात् जिस स्थिति में वे स्वयं को पाते थे, उसी के अनुकूल स्वयं को बना लेने में उसका उपयोग करते थे। बिशप ने अनुमान लगाया कि इसका कारण उनका ढीलापन उतना नहीं था जितना पुश्तैनी सतर्कता एवं सम्मान की उनकी भावना। ऐसा लगता था, जैसे वह विशाल प्रदेश सो रहा हो और वे उसे बिना जगाये ही अपना जीवन बिता देना चाहते हों; या जैसे क्षिति, जल एवं वायु सब देवता हों और उन्हें रुष्ट करना और उत्तेजित करना ठीक नहीं। शिकार करने में भी वे उसी विवेक एवं विचारशीलता से काम लेते थे; रेड इण्डियन का शिकार निरीह जीवों की हत्या नहीं था वे नदियों या जंगलों का विध्वंस नहीं करते थे, और यदि वे सिंचाई करते थे, तो नदियों से उतना ही पानी लेते थे, जितने से उनका काम किसी प्रकार चल जाय। जमीन या उस पर उगने वाली किसी वस्तु का वे बड़ा लिहाज़ रखते थे; यदि वे उसकी उन्नति करने का प्रयास नहीं करते थे, तो कम-से-कम वे उसे दूषित भी नहीं करते थे।

फ़ादर लातूर और यूज़बियो जब अलबुकर्क के समीप पहुँचने को हुए तो उन्हें अब अन्य लोगों का साथ भी मिलने लगा, मैदान के आर-पार

जाने वाले लम्बे टेढ़े-मेढ़े मार्गों पर इधर-उधर या उन्हीं मार्गों से सैंडिया पर्वतों पर जाने वाले रेड इण्डियन लोग मिल जाते थे। वे सभी उसी शान्त ढंग से चलते थे चाहे उनकी चाल तीव्र हो या मन्द; तथा वही विनीत आचरण भी उनका रहता था। कोई रेड इण्डियन अपना चमकदार कम्बल ओढ़े, अपने खच्चर पर बैठा या उसके साथ चलता हुआ, नयी-नयी पत्तियों से लदी झाड़ियों के बीच से, तथा रेतीले मैदान के टेढ़े-मेढ़े रास्ते से, इस प्रकार गुज़रता दीख पड़ता था, जैसे वह यही चाहता हो कि उस प्रदेश में, जिसमें बसन्त की बहार आयी हुई थी, न तो कोई उसे देखे और न तो कोई उसकी सुने।

लगूना से उत्तर पहुँचने पर, जूनी के दो हरकारे उनके पास से दौड़ते हुए गुज़र गये। वे किसी 'रेड इण्डियन काम' से जा रहे थे। उन्होंने अपनी खुली हथेलियों के संकेत से यूज़ावियो को सलाम किया, परन्तु वे रुके नहीं। वे रेत पर हिरन की तेज़ी से दौड़ रहे थे, और बालुकास्तूपों के बीच कभी अदृश्य हो जाते थे, और कभी प्रकट हो जाते थे, जैसे वे मंथर गति से उड़ने वाली चीलों की परछाइयाँ हों।

अध्याय ८

पर्वत पर सोना

१

गिरजाघर

फ़ादर वेलेंट को सांता फ़े आये तीन सप्ताह हो गये थे, और अब तक उन्हें यह बिलकुल नहीं बतलाया गया था कि बिशप ने उन्हें टकसान से क्यों वापस बुला लिया था। एक दिन प्रातःकाल फ्रक्टोसा ने बगीचे में आकर उन्हें बताया कि आज दोपहर का भोजन कुछ जल्दी होगा, क्योंकि तीसरे पहर बिशप कहीं जाना चाहते हैं। आधे घण्टे बाद वे भोजन वाले कमरे में पहुँच गये, जहाँ उनके वरिष्ठ अधिकारी पहले से ही मौजूद थे।

ऐसा अवसर बहुत कम आता था कि बिशप दोपहर का भोजन अकेले करें। उसी समय वे दूरस्थ किसी इलाक़े के पादरी से, किसी सैनिक अधिकारी से, किसी अमेरिकन व्यापारी से, ओल्ड मेक्सिको या कैलिफ़ोर्निया राज्य से आये हुए किसी मिलने वाले से, बड़ी सुविधा से भेंट मुलाक़ात कर सकते थे। उनके पास कोई बैठका तो था नहीं, अतः वे खाने के कमरे से ही बैठका का काम लेते थे। खाने का कमरा काफ़ी लम्बा और ठण्डा था, उसमें खिड़कियाँ, केवल पश्चिम की ही ओर थीं, जो बगीचे में खुलती थीं। हरे रंग की झिलमिलियों से रोशनी छन कर आती थी। प्रकाश की

किरणें श्वेत दीवारों पर नाचती रहती थीं और अलमारी में लगे शीशे तथा उसके कुण्डे आदि पर पड़कर चमकती रहती थीं। जब ओलिवारिस की पत्नी न्यू ऑर्लियंस में रहने के लिये सांता फ़े छोड़कर जाने के पहले अपना सारा समान नीलाम कर रही थी, तो फ़ादर लातूर ने उसकी यह अलमारी तथा खाना खाने वाली वह मेज, जिसके पास मित्र बहुधा ही एकत्र हुआ करते थे, खरीद ली थी। डोना इज़ाबेला ने उन्हें स्मृति-चिह्न के रूप में चाँदी का बना अपना कॉफ़ी का सेट तथा दीपदानी दे दी थी। उस सादे एवं अँधेरे से कमरे में सजावट की केवल ये ही वस्तुएँ थीं।

जब फ़ादर जोसेफ़ ने कमरे में प्रवेश किया, तो बिशप वहां पहले ही से बैठे मिले। "फ्रक्टोसा ने तुम्हें बताया है कि हम जल्दी खाना क्यों खा रहे हैं? आज तीसरे पहर हमें घोड़े पर चढ़कर एक जगह चलना है। मैं तुम्हें एक चीज दिखाऊँगा।"

"बहुत अच्छा। तुमने शायद वह देखा भी हो कि मैं थोड़ा बेचैन हो रहा हूँ। इसके पहले शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि दो सप्ताह तक मैंने घुड़सवारी न की हो। अस्तबल में कंटेंटो को देखने जाता हूँ, तो वह मेरी ओर क्रोध से देखता है। बैठे-बैठे वह बहुत मोटा हो जायगा।"

बिशप यह सुनकर कुछ व्यंग्य-मिश्रित हँसी हँस पड़े। वे अपने जोसेफ़ को भलीभाँति जानते थे। "ठीक है," उन्होंने लापरवाही से कहा, "टकसान से छः सौ मील की यात्रा करने के पश्चात् थोड़ा विश्राम उसे नुक़सान नहीं करेगा। आज तीसरे पहर तुम उसे बाहर निकालो और मैं अपना ऐंजोलिका निकालूंगा।"

दोनों पादरी दोपहर के थोड़ी ही देर बाद सांता फ़े से पश्चिम की ओर रवाना हो गये। बिशप ने अपना उद्देश्य नहीं प्रकट किया और न तो विकार ने कोई प्रश्न ही किया। शीघ्र ही उन्होंने गाड़ी चलने वाली सड़क छोड़ दी और एक पगडंडी पकड़ ली, जो एक जंगली ढालवाँ मैदान से होकर वनस्पति-हीन नीले सैंडिया पर्वत की ओर सीधे दक्षिण दिशा में जाती थी।

लगभग चार बजे वे रायो ग्रांड घाटी की एक ऊँची पर्वत श्रेणी पर पहुँचे। इस स्थान पर रास्ता एकाएक नीचे उतरता था और सैंडिया पर्वत की तलहटी में टेढ़ा-मेढ़ा घूमता हुआ लगभग साठ मील दूर अलबुक़र्क तक जाता था। इस पर्वत श्रेणी पर नुकीले आकार की छोटी-छोटी चट्टानी पहाड़ियों की, जिन पर यत्र-तत्र चन्दन के वृक्ष थे और वहाँ की चट्टानें अनोखे हरे रंग की थी; ऐसा हरा रंग, जो सागर के रंग एवं जैतून के रंग के बीच का था। वहाँ की कंकरीली मिट्टी भी, जो वर्षा, धूप आदि के कारण चूर्ण हुई चट्टान ही थी, उसी रंग की थी। फ़ादर लातूर एक सबसे पृथक् पहाड़ी के पास पहुँचे, जो उस पर्वत-रेखा के ठीक पश्चिमी छोर पर ढाल के ठीक ऊपर निकली हुई थी, और ठीक उसी स्थान से रास्ता नीचे उतरता था। यह पहाडी काफ़ी ऊँची और बिलकुल अकेली थी, और वह अस्ताचल की ओर जाने वाले सूर्य की किरणों तथा नीले सैंडिया पर्वत के ठीक सामने पड़ती थी। उसके समीप पहुँचने पर फ़ादर वेलेंट ने देखा कि पश्चिम की ओर कुछ दूर तक खोदायी की गयी है, जिससे चट्टानों की एक दीवार दिखलाई पड़ रही थी और ये चट्टानें आस-पास की पहाड़ियों की भाँति हरे रंग की नहीं थीं, अपितु वे पीले रंग की थीं, गाढ़े सुनहरे रंग की मिट्टी की तरह और बहुत कुछ सूर्य की स्वर्णिम किरणों की रंग की थीं, जो उस समय उस पर पड़ रही थीं। कुदालियाँ तथा लोहे के मोटे छड़ आदि तथा ताजे तोड़े हुए पत्थर के टुकड़े वहाँ पड़े थे।

"यह कुछ विचित्र बात है न, कि इन हरी पहाड़ियों के बीच यहाँ एक पीले रंग की भी पहाड़ी है?" बिशप ने पत्थर का एक टुकड़ा उठाने के लिये झुकते हुए कहा। "मैं इस पर्वत श्रेणी पर चारों ओर घूमा हूँ, परन्तु यहाँ इस रंग की यही एक पहाड़ी है।" वे पत्थर के उस टुकड़े को हाथ में लिये, देखते हुए खड़े रह गये। जिस प्रकार प्रत्येक पवित्र वस्तु को देखने, छूने आदि का उनका एक विशेष ढंग था, उसी प्रकार उन वस्तुओं को भी वे उसी ढंग से देखते थे, जिन्हें वे सुन्दर समझते थे। एक

क्षण तक चुप रहने के पश्चात् उन्होंने उस कठोर दीवार की ओर, अपने ऊपर चकमते हुए उस सोने की ओर देखा। ब्लांचेट, यही पहाड़ी मेरा गिरजाघर है।"

फ़ादर जोसेफ़ ने आँख मिचकाते हुए अपने विशप की ओर देखा, और फिर उस पहाड़ी की ओर देखा। "सचमुच ? पत्थर काफ़ी सख्त है ? रंग तो निश्चय ही बहुत अच्छा है; सेंट पीटर्स गिरजाघर के खंभों की तरह बहुत कुछ।"

बिशप अपने अँगूठे से पत्थर के टुकड़े को सहलाते रहे। "उससे भी ज्यादा यह घर की तरह है—मेरा तात्पर्य क्लेरमोंट की तरह है। जब मैं इस चट्टान को देखता हूँ, तो लगता है जैसे रहोन मेरे पीछे हो है।"

"आह, तुम्हारा मतलब अविग्नॉन के 'पैलेस ऑव पोप्स' से है! तुम ठीक कहते हो, यह उससे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। दिन के इस समय तो यह वैसा ही लगता है।"

बिशप अब भी पहाड़ी की ओर देखते हुए, पत्थर के एक टीले पर बैठ गये। "इसी पत्थर की तलाश में मैं हमेशा से ही था, और अचानक ही मैं इसे पा गया। मैं इज़्लेटा से वापस आ रहा था। वहा मैं बुड्ढे पादरी जेसस को देखने गया था, जो उस समय मर रहा था। इस रास्ते से मैं पहले कभी नहीं आया था, परन्तु जब मैं सेंटो डोमिंगो पहुँचा, तो मैंने देखा कि सड़क मूसलाधार वर्षा के कारण पानी में डूब गयी है और मैं घूम पड़ा और इस रास्ते से घर पहुँचने की कोशिश करने लगा। मैं पश्चिम की ओर से चढ़ कर इस स्थान पर दिन के तीसरे पहर पहुँचा; सामने यह पहाड़ी खड़ी दिखलायी पड़ी, जैसे यह आज हम लोगों को दिखलायी पड़ रही है, और फ़ौरन ही मेरे मन में विचार आया कि यही तो मेरा गिरजाघर है।"

"ओह, ऐसी घटनाएँ अकस्मात् ही नहीं घटतीं, जीन। परन्तु अभी

बहुत दिनों तक तो तुम गिरजाघर के निर्माण की बात ही नहीं सोच सकते।"

"बहुत दिन नहीं लगेंगे, ऐसी मेरी आशा है! मरने के पहले मैं इसे पूरा कर देना चाहता हूँ, यदि ईश्वर ने चाहा तो। मैं भाग्य या अमेरिकनों की इच्छा पर कुछ नहीं छोड़ना चाहता। ओहियो राज्य के नगरों में आजकल जैसी भद्दी इमारतें लोग बना रहे हैं, वैसी इमारत बनवाने से तो अच्छा है, कि हमारा यही पुराना ईंटों वाला गिरजा ही बना रहे। मैं सादा गिरजाघर अवश्य चाहता हूँ, परन्तु साथ ही उसे अच्छा भी चाहता हूँ। मैं लाल ईंटों की अंग्रेज़ी गाड़ीखाने की तरह भद्दी इमारत बनाने में कभी हाथ नहीं लगाऊँगा। अपने 'मिदी रोमानेस्क' की डिज़ाइन ही इस देश के लिये उपयुक्त डिज़ाइन है।"

फ़ादर वेलेंट ने नाक सिकोड़ कर अपना चश्मा उतार लिया और उसे पोंछने लगे। "अगर तुम कारीगरों और डिज़ाइनों की बात सोचने लगोगे, जीन; तब तो हो चुका! यदि उन्हें अमेरिकन कारीगर न मिले, तो क्या करोगे?"

"तुलोस में मेरा एक पुराना मित्र है, जो बड़ा अच्छा कारीगर है। जब मैं पिछली बार घर गया था, तो इस सम्बन्ध में मैंने उससे बातें की थीं। वह स्वयं तो यहाँ नहीं आ सकता; वह लम्बी समुद्री यात्रा से डरता है तथा घुड़सवारी का वह आदी नहीं है। परन्तु उसका एक बेटा है, जो अभी पढ़ ही रहा है और जो इस काम के लिये बड़ा उत्सुक है। सच तो यह है कि उसके बाप ने लिखा है कि उसके बेटे की यह बड़ी भारी इच्छा है कि नयी दुनिया में 'रमानेस्क' के ढंग का प्रथम गिरजाघर वही बनाए। वह सही नमूनों का अध्ययन किये रहेगा; उसके विचार से मिदी के हमारे गिरजाघर फ्रांस के सबसे सुन्दर गिरजाघर है। जब हम अपनी ओर से तैयार हो जायंगे, तो यहाँ आ जायगा और अपने साथ दो फ्रांसीसी पत्थर गढ़ने वालों को भी लायेगा। निश्चय ही वे सेंट लूई के मजदूरों से मँहगे

नहीं पड़ेंगे। अब चूँकि मुझे मेरे मन का पत्थर मिल गया है, मुझे लगता है कि मेरे गिरजाघर का निर्माण आरम्भ हो चुका है। यह पहाड़ी सांता फ़े से लगभग पन्द्रह ही मील तो है। चढ़ाई अवश्य है, परन्तु एकाएक चढ़ाई नहीं है, धीरे-धीरे वह बढ़ती है, पत्थर का ढोना मेरी आशा से भी अधिक आसान होगा।"

"तुम तो बहुत आगे की योजना बनाते हो," फ़ादर वेलेंट ने अपने मित्र की ओर अचम्भे से देखते हुए कहा। "ख़ैर, हर बिशप को करना भी यही चाहिये। रही मेरी बात, सो मैं तो सामने जो बात रहती है, उसी को देखता हूँ। लेकिन, मुझे यह ख्याल नहीं था कि तुम इतनी अच्छी इमारत बनाने के चक्कर में हो, जबकि हम लोगों की सभी बातें इतनी साधारण हैं; यहाँ तक कि हम स्वयं ही इतने ग़रीब हैं।

"परन्तु गिरजाघर तो हम लोगों के लिये नहीं बन रहा है, फ़ादर जोसेफ़। हम तो उसे भविष्य के लिये बनवा रहे हैं; जब तक हम ऐसा न कर सकें, अच्छा होगा कि हम एक पत्थर भी न जोड़ें। हमारे धार्मिक शिक्षालय से, जो फ्रांस की एक बेजोड़ इमारत है, निकलने वाले किसी व्यक्ति के लिये यह कितने लज्जा की बात होगी कि वह इस महाद्वीप पर आकर एक भद्दा सा गिरजाघर बनवाये, जहाँ भद्दे गिरजाघरों की पहले ही से भरमार है।"

"तुम शायद ठीक ही कहते हो। मैंने यह नहीं सोचा था। यह मुझे कभी सूझा ही नहीं कि हमें यहाँ ओहियो के ढंग के गिरजाघर तो नहीं बनवाना चाहिये, चाहे अन्य किसी भी ढंग का बनवा लें। मुझे याद है कि तुम्हारे पूर्वजों ने ही क्लेरमोंट का गिरजाघर बनवाया था; वे तेरहवीं शताब्दी में ला तूर के इमारत बनवाने में प्रवीण दो बिशप थे। निस्सन्देह, समय सब कुछ पूरा करा देता है। मुझे यह ख्याल नहीं था कि तुम इन सब बातों को इतनी गम्भीरता से सोच रहे हो।"

फ़ादर लातूर हँस पड़े। "तो क्या गिरजाघर भी हँसी-खेल की वस्तु है।"

"नहीं, नहीं, कभी नहीं।" फ़ादर वेलेंट कुछ अचकचा कर अपने कंधे हिलाने लगे। वे स्वयं यह नहीं समझ पा रहे थे कि वे इसमें क्यों पीछे पड़े रहे।

जिस पहाड़ी के सामने वे खड़े थे, उसकी ज़मीन से सटे भाग में अब छाया पड़ने लगी थी; अतः अब उसका रंग गाढ़ी पीली मिट्टी के रंग का हो रहा था, परन्तु उसका ऊपरी भाग अब भी पिघले हुए सोने के रंग की तरह झलक रहा था—यह ठीक वैसा रंग था, जैसा कि अस्त होते हुए सूर्य की किरणों का रंग होता है। बिशप अन्त में संतोष की गहरी साँस लेकर घूम पड़े। "ठीक है," उन्होंने धीरे से कहा, "यह पत्थर बिलकुल ठीक होगा। लेकिन चलो अब घर चलें। प्रत्येक बार यहाँ आने पर यह पत्थर मुझे अधिकाधिक पसन्द आता है। मुझे यह आशा नहीं थी कि ईश्वर मेरी इस व्यक्तिगत रुचि को, अथवा यों कहो कि मेरी इस अहंकारपूर्ण अभिलाषा को, पूरा कर सकेगा। मैं सच कहता हूँ, ब्लांचेट, कि मुझे दान देने के लिये बहुत बड़ी धनराशि पाकर भी वह प्रसन्नता न होती, जितनी इस पीले पत्थर वाली पहाड़ी को पाकर हुई है। अनेक कारणों से गिरजाघर मेरे हृदय में समा गया है। मेरा ख्याल है कि तुम मुझे बहुत दुनियादार नहीं समझते।"

चाँदनी में रुपहले रंग की चमकवाली झाड़ियों के बीच से वापस होते हुए, फ़ादर वेलेंट अब भी सोच रहे थे कि वे अरिज़ोना राज्य से, जहाँ वे कितनी आत्माओं का कल्याण कर रहे थे, क्यों बुला लिये गये थे और यह भी सोच रहे थे कि एक गरीब मिशनरी बिशप किसी इमारत के सम्बन्ध में इतनी चिन्ता क्यों करे। वे स्वयं भी चाहते थे कि गिरजाघर का निर्माण प्रारम्भ हो जाय; परन्तु उसकी डिज़ाइन चाहे मिदी रोमानेस्क की हो या ओहियो जर्मन, इसका उनके मन में कोई महत्त्व नहीं जान पड़ता था।

२

लॉवेनवर्थ से पत्र

जिस दिन बिशप और विकार पीली पहाड़ी पर गये थे, उसके दूसरे दिन सांता फ़े में साप्ताहिक डाक पहुँची। बिशप के कई पत्र आये और वे सुबह से दोपहर तक अपने लिखने-पढ़ने वाले कमरे में बन्द उन्हीं को पढ़ते रहे। दोपहर के भोजन के समय उन्होंने फ़ादर वेलेंट से कहा कि शाम को उन्हें (फ़ादर वेलेंट को) उनके (बिशप के) साथ बैठ कर लीवेनवर्थ के बिशप के यहाँ से आये हुए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र पर विचार करना है।

कई पृष्ठ का यह पत्र कोलोरैडो राज्य में, राकी पर्वत के एक अज्ञात भाग में होने वाली अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में था। यद्यपि वह सांता फ़े से कुछ सौ मील ही दूर था, उस क्षेत्र से संचार-साधन इतना कम था कि यूरोप से सांता फे तक समाचार जितनी जल्दी पहुँच जाता था, उतनी जल्दी पर्वत के 'पाइक' नामक शिखर से नहीं। उस शिखर के नीचे ज़मीन के अन्दर खनिज सोने के भारी भण्डार का पिछले वर्ष पता चला था, परन्तु फ़ादर वेलेंट को उसके सम्बन्ध में प्रथम ज्ञान फ्रांस से आये हुए एक पत्र द्वारा ही हुआ था। इसकी खबर अटलांटिक तट पर पहुँचकर, वहाँ से यूरोप पहुँची और फिर वहाँ से वापस आकर जितने समय में अमेरिका के इस दक्षिण-पश्चिम भाग में पहुँच गयी थी, उतने समय में शायद वह 'चेरी क्रीक' और सांता फ़े के बीच कुछ सौ मील के बीहड़ पर्वतों एवं घाटियों वाले प्रदेश से होकर पहुँच नहीं सकती थी। जब फ़ादर वेलेंट टकसान में थे, तो उन्हें आवर्ने से अपने भाई मेरिअस का एक पत्र मिला था, जिसे पढ़कर उन्हें इस बात से बड़ा दुःख हुआ था कि उस पत्र में कोलोरैडो राज्य के इस स्वर्ण-भण्डार के सम्बन्ध में तो अनेक बातें पूछी गयी थीं, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने कुछ नहीं सुना था, परन्तु इटली में होने

वाले युद्ध के सम्बन्ध में उनके भाई ने कुछ भी नहीं लिखा था जब कि वह अपेक्षाकृत अधिक समीप और बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण था।

पाइक शिखर के आस-पास की वह राकी पर्वत-श्रेणी इस समय महाद्वीप का एक शून्य स्थान था। व्योमिंग राज्य से ताओस को आने वाले लोमड़ी आदि रोयेंदार जानवरों को पकड़ने वाले भी इस कूबड़नुमा पथरीली पर्वत श्रेणी पर नहीं जाते थे। अभी कुछ ही वर्ष पहले फ्रेमोंट ने कोलोरैडो के राकी पर्वत को पार करने का प्रयास किया था, और अन्त में उसका दल भोजन आदि के कष्ट से घबरा कर, अधिकांश अपने खच्चरों को खा जाने के बाद ताओस में वापस चला आया था। परन्तु बारह महीने के अन्दर ही सब कुछ बदल गया था। घूम-घूमकर खोजने वाले स्वर्ण-अन्वेषकों ने शेरी नामक झील के आप-पास काफी सोना पाया था, और इन पर्वत श्रेणियों पर जो एक वर्ष पहले बिलकुल निर्जन थीं, अब आदमियों की भीड़ थी। मिसूरी नदी से सटे हुए वृक्षहीन मैदान के पार पश्चिम की ओर मालगाड़ियां दौड़ रही थीं।

लीवेनवर्थ के बिशप ने फ़ादर लातूर को लिखा था कि वे स्वयं ही अभी हाल में कोलोरैडो की यात्रा से वापस हुए थे। उन्होंने देखा था कि पाइक शिखर के चारों ओर ढाल पर बहुत से तम्बू तने थे, घाटियों एवं दर्रों में खनिकों की भीड़ थी, हज़ारों आदमी तम्बुओं और झोपड़ियों में रह रहे थे; डनेवर नगर में अनेक सराएँ एवं जुआ खेलने के अड्डे खुल गये थे; और इन घुमक्कड़ों एवं खानाबदोशों के बीच बहुत से ईमानदार आदमी तथा सैकड़ों सज्जन कैथोलिक भी रहे हैं, परन्तु वहाँ पादरी एक भी नहीं है। वहाँ के सभी नौजवान कानून-विहीन समाज में बिना किसी आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन के मारे-मारे फिर रहे हैं। बूढ़े लोग ठंड एवं पर्वतीय निमोनिया से मर रहे हैं, और उन्हें धार्मिक रीति से दफनाने वाला भी वहाँ कोई नहीं है।

कंसास के बिशप ने लिखा था कि पहला काम यह करना था कि यह

नयी और घनी आबादी वाली बस्ती सद्यः फादर लातूर के अधिकार-क्षेत्र में मिला ली जाय। उनके विशाल इलाक़े में, जिसके क्षेत्रफल में दक्षिण और पश्चिम में हज़ारों वर्ग मील की वृद्धि पहले ही से हुई थी, अब उत्तर की ओर का भी कोलोरैडो राकी पर्वत का यह अनिश्चित परन्तु अचानक ख्याति-प्राप्त क्षेत्र शामिल कर लिया जाना चाहिये। लीवेनवर्थ के बिशप ने उनसे प्रार्थना की थी कि वे वहाँ किसी पादरी को शीघ्रातिशीघ्र भेज दें जो न केवल धर्मिष्ठ हो, अपितु सभी प्रकार योग्य हो, अर्थात् साधन-सम्पन्न हो, बुद्धिमान् हो, तथा जो सभी प्रकार के व्यक्तियों से बड़ी चतुराई से निभा सके। आते समय पादरी अपना बिस्तर, शिविर में रहने के लिये आवश्यक सभी वस्तुएँ, दवाएँ, खाने-पीने की सामग्री तथा कड़े जाड़े के लिये कपड़े लेता आवे। कैंप डेनवर में तम्बाकू (सिगरेट आदि) तथा ह्विस्की शराब के अतिरिक्त अन्य कोई चीज़ नहीं मिलती। वहाँ भोजन वाली औरतें नहीं हैं और न तो स्टोव आदि ही मिलते हैं। खनिक लोग कच्ची-पक्की रोटी खाकर तथा शराब पीकर रहते हैं। वे पहाड़ का पानी भी शुद्ध नहीं रखते थे; अतः वे ज्वर-पीड़ित होकर मर रहे थे। वहाँ की सारी रहन-सहन ही घृणास्पद थी।

रात को भोजन के पश्चात, फ़ादर लातूर ने अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में फ़ादर वेलेंट को यह पत्र पढ़ कर सुनाया। पढ़ने के बाद घने अक्षरों में लिखे हुए पत्र को उन्होंने रख दिया।

"तुम शिकायत कर रहे थे कि तुम्हारे पास काम नहीं है। फ़ादर जोसेफ; लो, तुम्हारे लिये अब अवसर आ गया है।"

फादर जोसेफ ने, जो पत्र सुनते समय अधीर हो रहे थे, केवल यह कहा, "तो अब मुझे फिर से अंग्रेजी बोलना आरम्भ कर देना चाहिये! तुम कहो तो मैं कल रवाना हो सकता हूँ।"

बिशप ने अपना सिर हिलाया। "इतनी जल्दी नहीं। इस यात्रा के बाद वहाँ तुम्हारा आतिथ्य-सत्कार करने के लिये मेक्सिकन लोग थोड़े ही

हैं। तुम्हें अपने साथ आवश्यकता की सभी वस्तुएँ ले जानी होंगी। तुम्हें अपने लिये एक गाड़ी तैयार करनी होगी, सोच-समझकर यह तय करना होगा कि तुम्हें क्या-क्या सामान ले जाना चाहिये। ट्रैंक्विलिनो का भाई, सैबिनो, तुम्हारा कोचवान रहेगा। मेरा अनुमान है कि आज तक तुमने जितने काम उठाये हैं; उनमें कहीं यह सबसे अधिक कठिन न सिद्ध हो।

दोनों पादरी रात में बहुत देर तक बातें करते रहे। अरिज़ोना राज्य के भी सम्बन्ध में कुछ करना था; किसी ऐसे आदमी को ढूँढ़ना ही था, जो फ़ादर वेलेंट द्वारा आरम्भ किये गये वहाँ के काम को चालू रख सके। जितने प्रदेशों को फ़ादर वेलेंट जानते थे, उनमें अरिज़ोना राज्य का वह मरुस्थल तथा वहाँ के पीले रंग के लोग उन्हें सर्वाधिक प्रिय थे। परन्तु लोगों से नाता तोड़ना तो उनके जीवन का नियम बन गया था; लोगों से विदा हो जाना और फिर अज्ञात की ओर आगे बढ़ जाना, यही तो अब तक होता रहा है।

उस रात सोने के पहले फ़ादर जोसेफ़ ने अपने बूटों पर पालिश लगायी और अपने पाँव पर पड़े घट्ठों को एक पुराने उस्तरे से काट कर ठीक किया। ट्रूकास पर्वत के अंचल में बसे हुए चिमायो नामक मेक्सिकन गाँव के भले लोग अपने गिरजाघर में रखी हुई संत सैंटियागो की घोड़े पर सवार एक मूर्ति की विशेष रूप से पूजा करते थे, और वे लोग उनके लिये (संत के लिये) प्रत्येक दो-चार महीने बाद एक जोड़ी जूता तैयार कर देते थे और यह कहते थे कि वे रात को जब बाहर जाते हैं, तो चाहे घोड़े पर भी सवार होकर जायँ, वे उन्हीं का जूता पहनकर बाहर जाते हैं। फ़ादर जोसेफ़ जब वहाँ रहते थे, तो वे उनसे कहा करते थे कि यदि भगवान् ने मिशनरियों के हाथों को पवित्र करने के साथ-साथ उनके पांवों के लिये भी कोई विशेष वरदान दे दिया होता, तो क्या ही अच्छा हुआ होता।

वे चिमायो के संत सैंटियागो के सम्बन्ध में एक घटना याद करके पुलकित हो उठे। कुछ वर्ष पहले फ़ादर जोसेफ़ से चिमायो के निवासी एक

हत्यारे को सांता फ़े के बंदीगृह में देखने जाने के लिये कहा गया। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि बन्दी एक बीस वर्षीय युवक है, जो देखने में बड़ा सज्जन जान पड़ता था। उसका नाम रैमोन अर्माजिलो था। वह मुर्ग़ा लड़ाने का बड़ा शौकीन था और उसका यही शौक़ उसे ले डूबा। उसके पास एक ऐसा मुर्ग़ा था, जो कभी किसी लड़ाई में हारा ही नहीं था और आस-पास के सभी क़स्बों के नामी मुर्ग़ों को लड़ाई में मार चुका था। अन्त में रैमोन अपने मुर्गे को सांता फ़े के एक विख्यात मुर्गे से लड़ाने ले गया और उसके साथ चिमायो के आधे दर्जन लड़के भी गये, जिन्होंने रैमोन के मुर्गे पर अपना सब कुछ बाज़ी में लगा दिया। दोनों ओर से गहरी बाज़ी लगी थी और दर्शकों से टिकट में आया हुआ पैसा भी जीतने वाले ही को मिलता था। लड़ाई के प्रारम्भ में तो रैमोन का मुर्ग़ा कुछ दबा रहा, परन्तु इसके बाद उसने बड़ी सफ़ाई से अपने प्रतिद्वन्द्वी के गले को फाड़ डाला; परन्तु हारे हुए मुर्गे का मालिक, इसके पहले कि उसे कोई रोक सके, अखाड़े में कूद पड़ा और उसने विजयी मुर्गे का गला ऐंठ कर उसे मार डाला। इसके पहले कि वह उस मुर्गे की लाश को फेंके, रैमोन का छुरा उसकी पसलियों में घुस गया। यह सब कुछ क्षण भर में ही हो गया—यहाँ तक कि देखने वालों में कुछ लोगों ने यह कहा कि मुर्गे तथा उस आदमी की मृत्यु साथ-साथ हुई। यह तो सभी कहते थे कि उस आदमी द्वारा कलाई घुमाने तथा छुरे के चमकने के बीच किसी को सांस लेने का भी समय नहीं था। दुर्भाग्य से अमेरिकन जज बड़ा मूर्ख व्यक्ति था, जो मेक्सिकनों से घृणा करता था और मुर्गा लड़ाने की प्रथा को ही समाप्त करना चाहता था। उसने मरे हुए व्यक्ति के मित्रों के इस बयान को सही मान लिया कि रैमोन ने कई बार उसे मार डालने की धमकी दी थी।

जब फ़ादर वेलेंट फाँसी से पहले उस लड़के से उसकी कोठरी में मिलने गये, तो उन्होंने देखा कि वह मृगचर्म का एक बहुत छोटा-सा बूट बना रहा था, मानो वह किसी गुड़िया के लिये हो, और रैमोन ने उन्हें

बताया कि वह उसके गाँव के गिरजाघर के संत सैंटियागो के लिये है। जब फांसी के दिन उसके घर के लोग सांता फ़े आयेंगे, तो वे इस बूट को चिमायो ले जायेंगे, ग्रौर सम्भव है संत उसे ग्राशीर्वाद दें।

मोमबत्ती के प्रकाश में अपने बूट में तेल लगाते हुए, फ़ादर वेलेंट ने एक ठंडी सांस ली। उन्होंने सोचा, जिन अपराधियों से उन्हें कोलोरैडो में वास्ता पड़ेगा, वे शायद ही रैमोन की तरह हों।

३
देवी मेरी रक्षा करें

फ़ादर वेलेंट की गाड़ी बनने में एक महीना लग गया। यह एक विशेष प्रकार की गाड़ी बन रही थी, जिसमें सामान तो बहुत लद सके, लेकिन वह हलकी एवं बहुत चौड़ी न हो, ताकि वह बस्ती से बाहर संकरे पर्वतीय मार्गों से ग्रासानी से गुज़र सके। वहाँ सड़कें तो थीं नहीं, केवल संकरी पहाड़ी दर्रे थे, जो उन नदियों द्वारा कटे हुए थे, जो बसंत में तो पूरे वेग से बहती हैं, ग्रौर अब शरद् में सूख गयी होंगी। जब फ़ादर की गाड़ी बन रही थी, उस समय वे अपनी चीजें तथा एक छोटे से गिरजाघर के सभी साज-सामान जुटाने में व्यस्त थे। वे कैंप डेनवर पहुँचते ही किरमिच ग्रौर पेड़ की टहनियों से एक छोटा गिरजाघर खड़ा कर देना चाहते थे। इसके ग्रतिरिक्त उनके थैले थे, जिनमें पदक, क्रूश, पाठ की पुस्तकें, जप की मालाएँ, रंगीन चित्र तथा धार्मिक पुस्तिकाएँ थीं। अपने लिये तो उन्हें सिवा अपनी पाठ-पुस्तक के अन्य किसी वस्तु की ग्रावश्यकता नहीं थी।

बिशप के ग्राँगन में उन्होंने अपना सारा सामान एकत्र किया ग्रौर उसमें से छाँटने, चुनने का काम कई बार किया, जिससे अपेक्षाकृत अधिक ग्रावश्यक वस्तु की खातिर कोई अनावश्यक वस्तु को वह छोड़ सकें। फ्रक्टोसा तथा मैगडलेना उनकी सहायता के लिये कई बार बुलायी गयीं, ग्रौर जब कोई संदूक ग्रंतिम रूप से बंद कर दिया जाता, तो फ्रक्टोसा उसे

उठवा कर लकड़ी के घर में भेज देती। उसने देखा था कि बिशप ने इन बक्सों एवं बड़ी-बड़ी पेटियों को भोजन के कमरे में या बरामदे में देखकर अपनी भौंहें सिकोड़ लिया था। बिस्तर तथा अन्य सभी कपड़े बछड़े के सिझाये हुए कपड़ों के बने बड़े-बड़े थैलों में जिन्हें सैबिनो वहाँ के पुराने मेक्सिकन निवासियों से माँग कर लाया था, भर कर बाँधे गये। इनका अब फैशन नहीं रह गया था, परन्तु पहले ज़माने में ये ही थैले ग़रीबों के संदूक थे।

बिशप लातूर भी इस समय क्लेरमोंट से आये हुए एक नये पादरी को प्रशिक्षित करने में व्यस्त थे। वे उन्हें लिवाकर दूरस्थ पादरी-इलाकों में जाते थे और कोशिश करते थे कि वे वहाँ के लोगों को समझ जांय। बिशप की हैसियत से तो उन्हें फ़ादर वेलेंट की शीघ्रता से रवाना हो जाने की उत्सुकता एवं इस नये प्रकार के कठिन जीवन में प्रवेश करने के उत्साह का अनुमोदन ही करना था। परन्तु मनुष्य की हैसियत से उन्हें यह सोचकर थोड़ा दुःख हो रहा था कि उनका साथी तनिक भी खेद प्रकट किये बिना ही उनसे अलग हो रहा है। ऐसा लगता था कि उन्हें मालूम है, (जैसे उन्हें यह दैवी प्रेरणा हुई हो) कि यह उनका अन्तिम विछोह होगा, उनकी जीवन-धाराएँ सदैव के लिये अलग हो रही हैं और पुनः वे एक साथ काम न कर सकेंगे। मकान में तैयारी का हंगामा उनके लिये दुःखप्रद था; अतः वहाँ से दूर पादरी-इलाकों में रहने में उन्हें प्रसन्नता थी।

एक दिन बिशप अभी अलबुक़र्क से वापस ही हुए थे कि फ़ादर वेलेंट बड़े प्रसन्नचित्त, उनके साथ दोपहर का भोजन करने आये। वे अपनी नयी गाड़ी में बैठकर कहीं घूमने गये थे, और अन्त में यह घोषित किये थे कि वह सन्तोषजनक है। सैबिनो तैयार था और उनका ख्याल था कि वे परसों रवाना हो सकेंगे। मेज़पोश पर ही उन्होंने अपने मार्ग का चित्र बना डाला और अपने सामानों की सूची को एक बार पुनः देखा। बिशप थके

हुए थे और उन्होंने कुछ भी नहीं खाया। परन्तु फ़ादर जोसेफ़ ने खूब जमकर खाया, जैसा कि वे हमेशा ही किसी नयी योजना के उमंग में खाते थे।

फ़क्टोसा कॉफ़ी ले आयी और फ़ादर वेलेंट अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते हुए बड़े उत्फुल्ल चेहरे से अपने मित्र की ओर घूम गये। "मैं सोचता हूँ, जीन, कि जब तुमने मुझे टक्सान से यहाँ बुलाया था, तो तुम ईश्वर के हाथ में अनजाने में ही एक निमित्त बन गये। मुझे लगता था कि मैं वहाँ अपने जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा हूँ, और तुमने मुझे जाहिरन बिना किसी कारण ही बुला लिया। न तुम्हीं जानते थे कि तुमने मुझे क्यों बुलाया और न मैं ही जानता था। हम दोनों ही अज्ञात प्रेरणा से काम कर रहे थे। परन्तु भगवान् तो जानता था कि 'चेरी क्रीक' में क्या हो रहा है, और उसने हमें शतरंज के मोहरों की तरह आगे बढ़ा दिया। जब पुकार हुई, तो उसका उत्तर देने मैं यहाँ पहुँच गया—वास्तव में चमत्कार द्वारा ही मैं यहाँ पहुँचा।"

फ़ादर लातूर ने चाँदी का बना अपना कॉफ़ी का प्याला रख दिया। "चमत्कार तो होते ही हैं, जोसेफ़, परन्तु इसमें मुझे कोई चमत्कार नहीं दीखता। मैंने तुम्हें इसलिये बुलाया कि मुझे तुम्हारे साथ की आवश्यकता महसूस हुई। अपनी निजी इच्छा पूरी करने के लिये ही मैंने अपने बिशप के अधिकार का प्रयोग किया। उसे तुम चाहो, तो स्वार्थपरता कह सकते हो, परन्तु वह निश्चय ही स्वाभाविक था। हम लोग एक ही देश के रहने वाले हैं और जीवन के प्रारम्भिक काल की स्मृतियों की डोर में एक-दूसरे से बँधे हुए हैं। और यह भी स्वाभाविक है कि दो मित्र, जो जीवन भर साथ-साथ रहते चले आये हों, विलग हो जायें और भिन्न-भिन्न मार्ग पर चले जायें। मैं तो नहीं समझता कि मेरे इस कार्य को समझने के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता है।"

फ़ादर वेलेंट स्वर्ण-खानों के पास शिविरों में रहने वाले लोगों की

आत्माओं के उद्धार की तैयारी में बिलकुल डूबे हुए थे; उन्हें अन्य किसी बात की सुध ही नहीं थी। अब अचानक उनकी समझ में आया कि बिशप आजकल अपने कार्यकलाप से विमुख हो गये हैं; फ़ादर लातूर को उन्हें वहां से जाने देना बड़ा कठिन मालूम हो रहा है तथा उनका एकाकीपन अब उन्हें खलने लगा है।

अपने कमरे में चुपचाप जाते हुए उन्होंने सोचा कि यह बिलकुल सच है कि उन दोनों व्यक्तियों के स्वभावों में भारी अन्तर है। वे जहां भी जाते थे, शीघ्र ही वहां पर उनके बहुत से मित्र बन जाते थे और वह स्थान अपना घर तथा मित्रगण अपने परिवार के लोगों जैसे बन जाते थे। परन्तु जीन, जो किसी भी समाज में स्वयं को खपा लेते थे और विनय की मूर्ति थे, जल्दी से नये सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते थे। यह बात हमेशा से ही थी। लड़कपन में भी वे वैसे ही थे, सभी के प्रति विनयशील, परन्तु बहुत कम लोगों से परिचित। मानव की साधारण बुद्धि को यही उचित जान पड़ता कि यदि फ़ादर लातूर जैसा असाधारण गुणों वाला पादरी विश्व के किसी भाग में रहता, जहां विद्वता, सुन्दर व्यक्तित्व तथा सूक्ष्म दृष्टि प्रभावकारी होती, तो अधिक अच्छा हुआ होता; और न्यू मेक्सिको के प्रथम बिशप के रूप में भगवान् की सेवा करने के लिये अपेक्षाकृत अधिक कठोर व्यक्ति ही उपयुक्त हुआ होता। यह तो निश्चित था कि बिशप लातूर के उत्तराधिकारी भिन्न प्रकार के व्यक्ति होंगे। परन्तु फ़ादर जोसेफ़ का यह अडिग विश्वास था कि ऐसा करने में जगन्नियंता का विशेष मन्तव्य छिपा हुआ था। कदाचित् भगवान् की यही इच्छा थी कि एक नये विशाल इलाके में नये युग के पदार्पण के समय वहां एक सुन्दर व्यक्तित्व का मनुष्य पहुंचे। और यह भी तो हो सकता है कि आने वाले वर्षों में वहां अपनी कोई बात—कोई आदर्श या कोई स्मृति या कोई लोक-गाथा—छोड़ जायं।

दूसरे दिन मध्याह्न में फ़ादर वेलेंट की गाड़ी लदी तैयार आंगन में खड़ी थी और वे बिशप के डेस्क पर झुके हुए फ्रांस भेजने के लिये कई पत्र

लिख रहे थे; एक छोटा-सा पत्र उन्होंने मेरियस को लिखा, तथा एक बड़ा पत्र अपनी प्रिय बहन फ़िलोमीन को लिखा, जिसमें उन्होंने उन्हें अपने अज्ञात में कूदने की सूचना दी थी और उनसे विनती की थी कि वे सोने के लिये पागल हुए लोगों की दुनिया में उनकी सफलता के लिये भगवान् से प्रार्थना करें। वे जल्दी-जल्दी और झटके से लिख रहे थे, और उँगलियों के साथ-साथ उनके होंठ भी हिल रहे थे। जब बिशप कमरे में आये, तो वे लिखे हुए पन्नों को हाथ में लेकर खड़े हो गये।

"मैं तुम्हारे काम में बाधा नहीं पहुँचाना चाहता, जोसेफ़, लेकिन मैं यह पूछने आया हूँ कि क्या तुम अपने साथ कंटेंटो को भी कोलोरैडो ले जा रहे हो?"

फ़ादर जोसेफ़ की पलकें गिर गयीं। "क्यों, इरादा तो यही था कि मैं उसी पर चढ़कर जाऊँ। परन्तु यदि तुम्हें उसकी यहाँ आवश्यकता हो तो—"

"नहीं, नहीं। मुझे उसकी क्या आवश्यकता हो सकती है। परन्तु यदि तुम कंटेंटो को ले ही जा रहे हो, तो मैं यह कहूँगा कि तुम ऐंजेलिका को भी लेते जाओ। उनमें आपस में एक दूसरे के प्रति बहुत प्यार है, उन्हें अनिश्चित काल के लिये एक दूसरे से क्यों अलग किया जाय? और उन्हें तो यह बात समझायी नहीं जा सकती। वे इतनी लम्बी अवधि से साथ ही रहे हैं।"

फ़ादर वेलेंट ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे अपने पत्र के पन्नों पर एकटक दृष्टि गड़ाये खड़े रह गये। बिशप ने देखा कि बैंगनी रंग की लिखावट पर एक बूँद आँसू गिरा और वह फैल गया। वे शीघ्रता से घूम पड़े और मेहराबदार दरवाज़े से बाहर निकल गये।

दूसरे दिन सूर्योदय होते ही फ़ादर वेलेंट रवाना हो गये। सैबिनो उनकी गाड़ी हाँक रहा था, उसका सबसे बड़ा लड़का ऐंजेलिका पर सवार

था श्रौर स्वयं फ़ादर जोसेफ़ कंटेंटो पर सवार थे। वे उत्तर-पूरब की श्रोर जाने वाली पुरानी सड़क पर नुकीली लाल पहाड़ियों के बीच से होकर, जिन पर यत्र-तत्र सदाबहार की झाड़ियां थीं, जा रहे थे; श्रौर बिशप ने उनका साथ उस मोड़ तक दिया, जहां सड़क एक ऐसी पहाड़ी के शिखर पर से घूम कर दूसरी श्रोर चली जाती थी जहां से विदा होने वाले यात्री को सांता फ़े की श्रन्तिम झलक मिलती थी। वहां पहुँच कर फ़ादर जोसेफ़ ने घोड़ा रोक दिया श्रौर उस क़स्बे की श्रोर घूम कर देखा, जो प्रभात की स्वर्णिम किरणों में सो रहा था, पीछे पर्वत खड़ा था श्रौर पास की दो पहाड़ियां दो बाहुपाशों जैसी दीख रही थीं।

"देवी मेरी रक्षा करें!" वे बुदबुदाने लगे श्रौर इन सुपरिचित वस्तुश्रों से मुंह फेर कर श्रागे चल पड़े।

बिशप श्रपने एकाकीपन में घर वापस श्राये। उनकी श्रवस्था इस समय सैंतालीस वर्ष की थी, श्रौर नयी दुनिया में वे बीस वर्ष से मिशनरी का काम कर रहे थे—जिसमें से बाद के दस वर्ष न्यू मेक्सिको में बीते थे। यदि वे श्रपने देश में किसी इलाक़े के पादरी रहे होते, तो उनके भतीजे उनसे लेटिन भाषा सीखने या जेब-खर्च के लिये कुछ पैसे मांगने उनके पास श्राते; भतीजियां उनके बगीचे में दौड़ती रहतीं श्रौर श्रपना सिलाई का काम नहीं करतीं तथा उनके घर-गृहस्थी पर भी नज़र रखतीं। घर वापस होते समय रास्ते में वे ऐसी ही बातें सोचते रहे, जैसा कि पचास के समीप पहुँचने वाला कोई भी श्रविवाहित व्यक्ति सोचता।

परन्तु जब उन्होंने श्रपने लिखने-पढ़ने के कमरे में प्रवेश किया, तो उन्हें लगा कि वे पुनः वास्तविकता में वापस श्रा गये हैं; उन्हें एक ऐसी शक्ति की उपस्थिति का श्राभास सा हुश्रा, जो उनकी प्रतीक्षा कर रही हो। मेहराबदार दरवाज़े पर लगे परदे को हटा कर कमरे के श्रन्दर प्रवेश करते ही एकाकीपन की उनकी भावना समाप्त हो गयी श्रौर कुछ खोने की भावना के स्थान पर पुनर्लाभ की भावना श्रा गयी। वे श्रपनी डेस्क के

पास गहरे विचार में डूबे हुए बैठ गये। प्रेम के इस एकाकीपन में ही किसी पादरी का जीवन उसके प्रभु के जीवन की तरह हो सकता है। यह एकाकीपन क्षयकारी नहीं था और न तो आत्म-निषेध का ही एकाकीपन था, अपितु निरन्तर विकास करने वाला एकाकीपन। यह आवश्यक नहीं कि पादरी का जीवन सांसारिक अर्थ में शुष्क एवं सौन्दर्यविहीन हो, बशर्ते वह देवी की कृपा से प्लावित हो रहा हो, वह देवी जो सम्पूर्ण सौन्दर्य की निधि है; कन्या रूप में देवी, माता रूप में देवी, सर्व-साधारण की अबोध बालिका तथा स्वर्ग की साम्राज्ञी—उस सिंहासन की सर्वोच्च अधिष्ठात्री। सरलता में बच्चों की कहानी भी उसकी समानता नहीं कर सकती और पांडित्य की गहराई में विद्वान् से विद्वान् धर्मशास्त्रज्ञ भी उसके समीप नहीं पहुँच सकते।

यहाँ सांता फ़े में उनके अपने गिरजाघर में बालिका देवी की एक ऐसी ही मूर्ति थी, लकड़ी की बनी एक छोटी सी मूर्ति, जो बहुत पुरानी थी तथा वहाँ के लोगों को बहुत प्रिय थी। दे वर्गाज़ ने दो सौ वर्ष पहले जब स्पेन की ओर से इस नगर पर अधिकार किया था, तो उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि हर वर्ष वह उसके (देवी के) सम्मान में एक जुलूस निकालेगा, और अब भी वह सांता फ़े में ईसाइयों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना समझी जाती थी। देवी की लकड़ी की बनी यह मूर्ति लगभग तीन् फुट ऊँची थी, बड़ी ही दिव्य तथा स्पेनिश चेहरा बड़ा ही सुन्दर परन्तु गम्भीर बना हुआ था। उनके साज-शृंगार के सामान से एक अलमारी ही भरी हुई थी। उसमें अनेक प्रकार के वस्त्र, गोटे तथा सोने-चांदी के मुकुट आदि भरे हुए थे। औरतों को उनके लिये कपड़े बनाने में आनन्द आता था और आभूषण बनाने वाले उनके लिये जंजीरें, पिन आदि बड़े चाव से बनाते थे। उनके वस्त्र, आभूषण आदि रखने वालों को जब फ़ादर लातूर ने यह बतलाया कि इंगलैण्ड की महारानी या फ्रांस की सम्राज्ञी के पास भी शायद इतने कपड़े, पोशाक आदि न हों, तो वे बड़े

खुश हुए थे। वे उनकी गुड़िया थीं, उनकी सम्राज्ञी थीं, जिनसे लाड़-प्यार भी किया जा सके तथा जिनकी पूजा भी की जा सके, जैसे कि देवी मेरी के पुत्र (महात्मा ईसा) उनके (अपनी माँ के) लिये रहे होंगे।

फ़ादर लातूर ने सोचा कि उनके प्रति इस सरल ढंग से भक्ति एवं श्रद्धा का प्रदर्शन करने वाले ये ग़रीब मेक्सिकन ही पहले लोग नहीं थे। रैफेल और टिटियन ने भी अपने समय में उनके लिये कपड़े आदि बनवाये थे, तथा महान् संगीतज्ञों ने उनके पूजा-गान के लिये रागों एवं लयों की रचना की थी और महान् कारीगरों ने उनके लिये गिरजाघरों का निर्माण किया था। संसार में उनके अवतरण के बहुत पहले ही, बाबा आदम और हौवा के पतन तथा देवी द्वारा मानव के पुनरुद्धार के बीच की लम्बी अंधकारपूर्ण अवधि में मूर्ति पूजा में विश्वास करने वाले शिल्पी किसी ऐसी देवी की मूर्ति बनाने का अनवरत प्रयत्न कर रहे थे, जो स्त्री के रूप में अवतार ले।

बिशप लातूर की आशंका सही थी—फ़ादर वेलेंट न्यू मेक्सिको में उनके काम में हाथ बँटाने पुनः वापस नहीं आये। वहाँ वे आते अवश्य थे, परन्तु व्यस्त जीवन से फ़ुरसत पाने पर पुराने मित्रों आदि से मिलने। परन्तु उनके लक्ष्य की पूर्ति शीत एवं दुर्भेद्य कोलोरेडो राकी पर्वत के अंचल में हो रही थी इस पर्वत को उन्होंने इतना कभी नहीं पसन्द किया, जितना दक्षिण के उन नीले पर्वतों को। वे बीमारियों एवं दुर्घटनाओं के पश्चात्, जो लगातार ही घटती रहती थीं, स्वास्थ्य-लाभ के लिये सांता फ़े आया करते थे, उस समय पोप के दूत के साथ भी सांता फ़े आये, जब बिशप लातूर आर्चबिशप बनाये गये; परन्तु उनका कार्यपूर्ण जीवन उस मुक्त पर्वत पर तथा कष्टपूर्ण खनिक शिविरों में, पथभ्रष्ट असहाय प्राणियों को देख-भाल करने में बीतता था।

क्रीड में, डुरेंगो में, सिलवर सिटी में, सेन्ट्रल सिटी में, ऊटा राज्य की

विभाजन रेखा के उस पार भी, अर्थात् उस सारे बीहड़ पर्वतीय प्रदेश में, उनकी वह विचित्र गाड़ी सुपरिचित हो गयी थी।

वह एक ढँकी हुई गाड़ी थी, जिसका ऊपरी भाग पहियों के धुरे पर स्प्रिंग के आधार पर जड़ा हुआ था। वह लम्बी इतनी थी कि रात को वे उसमें लेट कर सो सकते थे—फ़ादर जोसेफ़ क़द में बहुत छोटे थे। गाड़ी के पीछे सामान रखने का सन्दूकनुमा स्थान बना हुआ था, जिससे वे खुले में किसी चीड़ वृक्ष के नीचे सार्वजनिक पूजा करने के समय वेदी का भी काम ले लेते थे। वे कहा करते थे कि पर्वतीय नदियों ने ही यहाँ प्रथम बार सड़कों का निर्माण किया था और उन्होंने अपने लिये जहाँ रास्ता ढूँढ़ लिया था, वहीं वे भी अपने लिये रास्ता ढूंढ़ सकते थे। वे एक नहीं, अनेक कोचवानों को थका मारते थे, और उनकी गाड़ी की इतनी बार तथा इतनी अधिक मरम्मत हुई कि उसका परित्याग करने के बहुत पहले ही, उसका पहले वाला कोई भी पुर्ज़ा नहीं रह गया था।

गाड़ी का साज़ और पट्टे टूटे हुए हैं, पहियाँ ख़राब हो रही हैं तथा धुरा घिस गया है, इन बातों को वे बिलकुल साधारण और महत्त्वहीन समझते थे। दो बार पूरी गाड़ी ही पहाड़ी सड़क पर से फिसल कर नीचे गड्ढे में चली गयी और फ़ादर वेलेंट उस समय उसमें बैठे थे। पहली दुर्घटना में तो वे बच गये और उन्हें साधारण मोच ही सी आयी और उन्होंने बिशप लातूर को लिखा कि आर्चेंजेल रैफेल की ही कृपा से वे बच गये, जिनकी उस दिन प्रातःकाल उन्होंने असाधारण भक्ति से पूजा की थी। दूसरी बार वे सेंट्रल सिटी के समीप एक गहरी खाई में लुढ़क कर चले गये थे, उनकी जाँघ की हड्डी टूट गयी थी। धीरे-धीरे वह जुड़ तो गयी थी, परन्तु जीवन भर के लिये वे लँगड़े हो गये और फिर घोड़े की सवारी कभी नहीं कर सके।

परन्तु इस दुर्घटना के पहले वे एक बार काफी दिनों के लिये, अपने मित्रों आदि से मिलने सांता फ़े एवं अलबुकर्क आये थे और अपने पुराने

सम्बन्धों को ताज़ा कर रहे थे। यह यात्रा उनके जीवन में उतनी ही सुखद थी जितनी रेड इरिडयनों की ग्रीष्म ऋतु। डेनवर से रवाना होते समय उन्होंने कहा था कि मैं मेक्सिकनों के पास पैसा माँगने जा रहा हूँ। डेनवर के गिरजाघर की छत तो तैयार थी, परन्तु खिड़कियाँ महीनों से लकड़ी के तख्तों से बन्द कर दी गयी थीं, क्योंकि उनके लिये शीशा ख़रीदने वाला कोई नहीं था। डेनवर में रहने वाले लोगों में ऐसे भी लोग थे, जिनके पास खानें तथा लकड़ी चीरने की मिलें थीं और उनके व्यवसाय काफ़ी उन्नतिशील थे, परन्तु उन्हें अपने इन व्यवसायों को आगे बढ़ाने के लिये पैसों की आवश्यकता थी। परन्तु मेक्सिकनों से, जिनके पास कच्चे मकान तथा एक गधे के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था, उन्हें हमेशा पैसा मिल जाया करता था। उनके पास जो कुछ भी रहता था, उसे देने के लिये वे हमेशा तैयार रहते थे।

वे अपनी इस यात्रा को निःसंकोच भिक्षा-अभियान कहते थे और वे वहाँ से जो कुछ भी एकत्र कर सकते थे, उसे ले आने अपनी गाड़ी पर रवाना हो गये। ताम्रोस तक पहुँचते-पहुँचते उनके आयरिश ड्राइवर ने विद्रोह कर दिया। उसने कहा कि इन सड़कों पर अब मैं एक मील भी आगे नहीं जाऊँगा। वह अपने इस इलाक़े को भली-भाँति जानता था, परन्तु यहाँ उसने अपनी तथा पादरी साहब की ज़िन्दगी जोखिम में डालने से इनकार कर दिया। उस समय ताम्रोस से सांता फ़े तक कोई सड़क नहीं थी। लगभग एक पखवारे के पश्चात् उन्हें एक ऐसा व्यक्ति मिला, जो उन्हें उस पर्वतीय प्रदेश से पार करा सके। एक बुड्ढा सा ड्राइवर जिसे मालगाड़ियों पर चलने का अनुभव था, चलने को तैयार हुआ; और कुल्हाड़ी, कुदाली तथा फावड़े आदि की सहायता से वह फ़ादर वेलेंट की गाड़ी सकुशल सांता फ़े तक ले गया और बिशप के आंगन में पहुँचा दिया।

एक बार अपने लोगों के बीच पहुँचकर, (वे उन्हें अब भी अपना ही

कहते थे), फ़ादर जोसेफ़ ने अपना अभियान आरम्भ कर दिया और गरीब मेक्सिकन अपनी कमीज़ों और बूटों में से डालर निकाल कर (इन्हीं स्थानों पर वे अपने पैसे रखते थे) डेनवर के गिरजाघर की खिड़कियों के लिये देने लगे। उनकी माँग खिड़कियों के लिये ही पैसे पर नहीं समाप्त हो गयी—वह तो उससे शुरू हुई। उन्होंने सांता फ़े और अलबुकर्क की हमदर्द औरतों से डेनवर के अपने जीवन की सभी मूर्खतापूर्ण एवं अनावश्यक कठिनाइयों के सम्बन्ध में बतलाया—–ऐसी कठिनाइयाँ जो अनुचित एवं अशोभन भी थीं। 'वाइल्ड वेस्ट' (अमेरिका के पश्चिमी बीहड़ वन-प्रदेश का नाम) के लोगों के जीवन का दृष्टिकोण ही सभी अच्छी वस्तुओं से विरक्त होने का था। फ़ादर जोसेफ़ ने उनसे कहा कि अच्छे मेक्सिकन बिस्तरों पर एक बार पुनः सोने का अवसर पाकर उन्हें कितनी प्रसन्नता हुई है। डेनवर में वे ऐसे गद्दों पर सोते थे, जिनमें पुआल आदि भरा होता था; उनके आये हुए एक फ्रांसीसी पादरी ने फटे गद्दे के एक छेद से पुआल का एक लम्बा टुकड़ा, जो बाहर निकला हुआ था, खींच लिया था और कहा था कि यह तो किसी अमेरिकन चिड़िया का पर है। उनके खाने की मेज़ पायों पर लकड़ी का तख्ता जड़ कर बनायी गयी थी, जिसके ऊपर मोमजामा लगा हुआ था। उनके पास बिछाने आदि के लिये कोई कपड़ा नहीं था, न तो चद्दरें थीं, और न मेज़पोश और मुँह पोंछने का काम वे अपनी पुरानी कमीज़ों से लेते थे। मेक्सिकन औरतें ये बातें आगे सुनना भी नहीं चाहती थीं। फ़ादर वेलेंट ने बतलाया कि कोलोरैडो में कोई बगीचा तो लगाता ही नहीं; कोई भी आदमी सोने के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के लिये ज़मीन खोदना ही नहीं चाहता। न तो वहाँ मक्खन मिलता था, न दूध, न अंडे और न फल। वे सड़े हुए आटे की रोटी तथा सुअर का सुखाया हुआ माँस ही खाकर रहते थे।

यहाँ आने के कुछ सप्ताहों के अन्दर ही, फ़ादर वेलेंट के लिये चिड़ियों के परों से भरे छः गद्दे बिशप के घर पहुँचा दिये गये, दर्ज़नों चद्दरें, कढ़े

हुए तकिया के गिलाफ़, मेज़पोश तथा छोटे अंगोछे पहुँचे, तार में पिरोयी हुई लाल मिर्चें, बक्सों में भरे हुए बीन के दाने तथा सूखे फल भी पहुँचे। छोटे चिमायो गाँव ने अपने यहाँ के सर्वश्रेष्ठ कम्बलों का एक बण्डल ही भेज दिया।

फ़ादर जोसेफ़ ने इन वस्तुओं को लकड़ी वाले घर में रखवाया, क्योंकि वे भली-भाँति जानते थे कि बिशप को इस बात से कष्ट होता था कि वे (फ़ादर वेलेंट) हर समय भेंट आदि स्वीकार करने के लिये तत्पर रहते हैं। परन्तु एक दिन सुबह ही टहलते-टहलते फ़ादर लातूर लकड़ी के घर में पहुँच गये और उन्होंने स्वयं ही सब चीज़ें देख लीं।

"फ़ादर जोसेफ़", उन्होंने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा, "तुम इन सब वस्तुओं को डेनवर तक ले तो जा नहीं सकते; क्योंकि इनको ढोने के लिये एक बैलगाड़ी की आवश्यकता है।"

"ठीक तो है", फ़ादर जोसेफ़ ने उत्तर दिया, "भगवान मेरे लिये एक बैलगाड़ी भी भेज देगा।"

और वास्तव में उसने भेज दिया। साथ में एक ड्राइवर भी आया, जो उस गाड़ी को प्यूब्लो नामक स्थान तक ले जाने को तैयार था।

जिस दिन फ़ादर वेलेंट डेनवर के लिये रवाना होने वाले थे, उस दिन सुबह उनकी गाड़ी तिरपाल से ढंकी; तैयार खड़ी थी, बैल जुते हुए थे और फ़ादर वेलेंट जो सूर्योदय से ही हर काम में जल्दी लगा रहे थे, अचानक चिंतित हो उठे। वे बिशप के लिखने-पढ़ने के कमरे में गये और बैठकर उनसे बिलकुल महत्त्वहीन विषयों पर बातें करने लगे और इस प्रकार जानबूझ कर देरी करने लगे, जैसे अभी कुछ करना शेष हो।

"हम लोग अब बूढ़े हो रहे हैं, जीन", उन्होंने अचानक ही, कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद कहा।

बिशप मुस्करा पड़े। "हाँ, अब हम जवान नहीं रह गये हैं। आज जैसी ही कोई विदाई शीघ्र ही अंतिम बिदाई हो जायगी।"

फ़ादर वेलेंट ने सिर हिलाया। "ईश्वर जब चाहे तब मुझे बुला सकता है। मैं तो तैयार हूँ।" वे उठ खड़े हुए और कमरे में टहलते हुए, अपने मित्र की ओर बिना देखे ही उनसे कुछ कहने लगे। "परन्तु जीवन हमारा कोई बहुत बुरा नहीं रहा, जीन! हमने वे काम कर लिये हैं, जिनके करने की योजना हमने बहुत पहले, जब धर्म-शिक्षालय में विद्यार्थी थे, बनायी थी, कम से कम उनमें से कुछ काम तो कर ही लिये हैं। बचपन के स्वप्नों का पूरा हो जाना ही मनुष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ बात है। कोई भी सांसारिक सफलता उसका स्थान नहीं ले सकती।"

"ब्लांचेट", बिशप ने उठते हुए कहा, "तुम मुझसे अच्छे आदमी हो। तुमने कितनी आत्माओं का उद्धार किया है और वह भी बिना किसी गर्व के या बिना किसी लज्जा के—और मैं तो हमेशा ही शुष्क रहा हूँ—कठोर नियमवादी रहा हूँ, जैसा कि तुम कहा करते थे। यदि मृत्यु के पश्चात् पुरस्कार में हमें तारे मिलें, तो तुम्हें स्थिर तारक-पुंज मिलेगा। मुझे अपना आशीर्वाद दो।"

वे घुटने के बल झुक गये, और फ़ादर वेलेंट उन्हें आशीर्वाद देने के बाद स्वयं झुक गये और उन्हें भी आशीर्वाद मिला। उन्होंने एक दूसरे को छाती से लगाया—विगत दिनों की याद में, भविष्य के उपलक्ष्य में।

अध्याय ६

आर्चबिशप की मृत्यु

१

जब उस धार्मिक महिला, मदर सुपीरियर फ़िलोमीन की, लम्बी आयु में, अपने जन्म स्थान रियोम में मृत्यु हुई, तो उनके काग़ज़ात में आर्चबिशप लातूर के अनेक पत्र भी मिले। उनमें एक पत्र सन् १८८८ ई० के दिसम्बर मास में, उनकी मृत्यु के कुछ ही महीने पहले लिखा गया था। "जब से आपके भाई ने अपनी इहलीला समाप्त की," उन्होंने लिखा था, "मैं स्वयं को पहले की अपेक्षा उनके अधिक निकट पाता हूँ। कर्तव्य ने अनेक वर्षों तक हमें एक दूसरे से अलग रखा, परन्तु मृत्यु ने हमें साथ कर दिया है। वह समय अब दूर नहीं है, जब मैं भी उनके पास पहुँच जाऊँगा। इस बीच, मैं मनन-ध्यान के इस समय का, जो कार्य-रत जीवन का श्रेष्ठतम अन्तिम अध्याय होता है, पूर्ण आनन्द ले रहा हूँ।"

आर्चबिशप ने मनन-ध्यान का यह समय अपने गाँव वाले मकान पर बिताया जो सांता फ़े से लगभग चार मील दूर उत्तर की ओर था। अपने पद के कार्यों से अवकाश ग्रहण करने के बहुत पहले ही फ़ादर लातूर ने टेसूक गाँव के समीप लाल टीलों वाले पर्वतीय प्रदेश में थोड़ी सी ज़मीन ख़रीद ली थी, और एक बाग़ लगा दिया था, ताकि कार्य-काल से मुक्त होने

के समय उसके वृक्षों में फल लगने आरम्भ हो गये रहें। उन्होंने सदाबहार की झाड़ियों वाली इन लाल पहाड़ियों का इलाक़ा अपने मित्रों की सलाह के विरुद्ध चुना था, क्योंकि उनका विश्वास था कि फल वाले वृक्ष उगाने के लिये यह स्थान सर्वोत्तम सिद्ध होगा।

एक बार घोड़े पर टेसूक मिशन की यात्रा करते समय वे किसी नदी के किनारे-किनारे इस स्थान पर पहुँच गये थे, जहाँ उन्होंने एक छोटा सा मेक्सिकन मकान तथा एक बग़ीचा देखा। बग़ीचे में लुकाट का एक इतना बड़ा वृक्ष था जितना बड़ा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। उसके दो तने थे, और दोनों हीं मनुष्य के शरीर से मोटे थे, यद्यपि स्पष्टतया वह बहुत प्राचीन था, फलों से वह लदा था। लुकाट काफ़ी बड़े थे, देखने में बड़े सुन्दर रंग के और खाने में बहुत ही सुस्वाद। चूँकि यह वृक्ष पर्वतीय प्रदेश में उगा था, विशप इस परिणाम पर पहुँचे कि यहाँ की जलवायु फलों के लिये बहुत ही उपयुक्त होगी। उन्होंने अनुमान लगाया कि सूर्य की गरमी चट्टानी पहाड़ी से परावर्तित होकर वृक्ष पर पड़ती है और वही फलों को सम तापमान पर रखती है, गरमी दो ओर से पहुँचती है, जैसे फ्रांस में शफ़तालू के फल ऐसी ही गरमी में पकते हैं।

वहाँ रहने वाले बूढ़े मेक्सिकन ने बतलाया कि वृक्ष दो सौ वर्ष पुराना है, उसके बाबा के बचपन में भी वह ऐसा ही था और हमेशा से ही उसमें ऐसे स्वादिष्ट फल लगते रहे हैं। विशप को पता चला कि बूढ़ा चाहता है कि वह अपने इस स्थान को बेच कर सांता फ़े चला जाय। अतः उन्होंने कुछ सप्ताह पश्चात् उसे खरीद लिया। वसंत में उन्होंने उसमें फलों का अपना बग़ीचा लगाया और बबूल जाति के एक वृक्ष की भी कुछ क़तारें लगायीं। कुछ वर्षों के पश्चात् वहाँ उन्होंने पहाड़ी की ऊँचाई पर कच्ची ईंटों का एक छोटा सा मकान तथा एक छोटा सा गिरजाघर भी बना लिया। मकान के ठीक सामने ही, नीचे बगीचा था। वहाँ वे विश्राम करने तथा विशेष पूजा-अवसरों पर जाया करते थे। कार्यमुक्त होने के बाद वे वहाँ रहने के लिये

चले गये, यद्यपि उन्होंने अपना अध्ययन-कक्ष पहले की भाँति उसी मकान में रखा, जिसमें अब नये आर्चबिशप रहते थे।

अपने अवकाश-ग्रहण के काल में फ़ादर लातूर का मुख्य काम फ्रांस से आये हुए नये पादरियों को प्रशिक्षित करना था। उनके उत्तराधिकारी, द्वितीय आर्चबिशप, भी आवार्न से ही, फ़ादर लातूर के ही कालेज से शिक्षित होकर, आये थे और उत्तरी न्यू मेक्सिको का पादरी-वर्ग मुख्यतः फ्रांसीसी ही बना रहा। जब भी नये पादरियों का कोई दल सांता फ़े पहुँचता (वे अकेले कभी नहीं आते थे), तो आर्चबिशप स········उन्हें कुछ महीनों के लिये फ़ादर लातूर के पास भेज देते थे, ताकि वे उनसे स्पेनिश भाषा, वहाँ के स्थानीय भूगोल तथा विभिन्न बस्तियों की विशेषताओं एवं परम्पराओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकें।

फ़ादर लातूर के मन-बहलाव का साधन उनका बग़ीचा था। उसमें उन्होंने ऐसे फलों के वृक्ष लगाये थे, जो कैलिफ़ोर्निया के प्राचीन बग़ीचों में भी नहीं मिल सकते थे, लाल बेरों के वृक्ष, लुकाट के वृक्ष, सेव, विही तथा फ्रांस के अद्वितीय नाशपाती के वृक्ष और वे सभी नाज़ुक से नाज़ुक जाति के। वे नये पादरियों से कहा करते थे कि वे जहाँ कहीं भी जायँ फलों के वृक्ष अवश्य लगावें और मेक्सिकनों को इस बात के लिये प्रोत्साहित करें कि वे अपने स्टार्च-प्रधान भोजन में फल भी जोड़ें। जहाँ भी कोई फ्रांसीसी पादरी रहे, वहाँ फलों, तरकारियों तथा फूलों का एक बगीचा अवश्य होना चाहिये। वे अपने विद्यार्थियों को आवर्न के ही रहने वाले पैस्कल के सुविदित कथन को कहकर सुनाया करते थे 'मनुष्य का पतन हो गया था और किसी बगीचे ही में उसका पुनरुद्धार हुआ।'

उन्होंने वहाँ के स्थानीय जंगली फूल भी लगाये और यत्न से उनका विस्तार किया। उन्होंने पहाड़ी के एक भाग को सुगन्धयुक्त पत्तियों वाले उन छोटे-छोटे बैंगनी पौधों ही से भर दिया, जो न्यू मेक्सिको की पहाड़ियों पर यत्र-तत्र बिखरे रहते हैं। वह एक विशाल बैंगनी रंग के

मखमली लबादे की तरह था, जो सूखने के लिये धूप में फैला दिया गया हो। उसमें वे सभी बारीक रंग मिल जाते थे, जिनके लिये इटली और फ्रांस के सभी रंगसाज़ और बुनकर शताब्दियों से प्रयत्न कर रहे थे; ऐसा बैंगनी रंग, जिसमें गुलाबी रंग तो पूरा रहता है, फिर भी वह हलके नीले रंग का नहीं होता है। ऐसा नीला होता है जो करीब-करीब हलकी लाली लिये आ जाता है और फिर सागर की तरह बैंगनी बन जाता है—बिशप के वस्त्रों का सच्चा रंग तथा उसके अनेक चढ़ाव-उतार।

सन् १८८५ ई० में, न्यू मेक्सिको में एक युवक पादरी आया, जो अभी धर्म-शिक्षालय में विद्यार्थी ही था। उसका नाम बर्नार्ड डुक्रोट था। वह फ़ादर लातूर का बेटा सा बन गया। बूढ़े आर्चबिशप की जीवन-गाथा ने, जो मोंट फेरांड के शिक्षालयों एवं मठों में बहुधा ही कही जाती थी, इस लड़के को बहुत प्रभावित किया था और वह बहुत दिनों से यहाँ आने के अवसर की ताक में था। बर्नार्ड देखने में बड़ा सुन्दर था; वह असाधारण स्वभाव का मनुष्य था। उसमें अपने पूज्य गुरु के सभी गुणों के प्रति श्रद्धालु बने रहने की सभी बातें विद्यमान थीं। वह फ़ादर लातूर की प्रत्येक इच्छा को फ़ौरन समझ जाता था, उनके मनन-ध्यान में हाथ बँटाता था तथा उनके संस्मरणों को अपने हृदय में संजों कर रखता था।

"निश्चय ही," बिशप अपने पादरियों से कहा करते थे, "ईश्वर ने स्वयं ही इस लड़के को मेरे पास भेज दिया है, जिससे जीवन के अन्तिम दिनों में वह मेरी सहायता कर सके।"

२

सन् १८८८ ई० की सारी शरद् ऋतु में बिशप का स्वास्थ्य अच्छा रहा। उनके घर में पांच फ्रांसीसी पादरी थे, और बिशप अब भी उनके साथ समीपस्थ मिशनों की यात्रा घोड़े पर चढ़कर किया करते थे। क्रिसमस से एक दिन पूर्व संध्या समय उन्होंने सांता फ़े के गिरजाघर में मध्य

रात्रि की सार्वजनिक आराधना सम्पन्न करायी। जनवरी में वे बर्नार्ड के साथ सांता क्रुज़ के बीमार आवासिक पादरी को देखने गये। घर वापस आते समय रास्ते ही में मौसम में अचानक परिवर्तन हुआ और भयानक आंधी एवं वर्षा आरम्भ हो गयी। वे एक खुली घोड़ा गाड़ी में थे और इसके पहले कि वे किसी मेक्सिकन घर में शरण ले सकें, बिलकुल भीग गये।

घर पहुँचने पर फ़ादर लातूर फ़ौरन सोने चले गये। रात में वे अच्छी तरह सो नहीं सके और उन्हें कुछ ज्वर मालूम होने लगा। उन्होंने घर में किसी को बुलाया नहीं और रोज़ की तरह सूर्योदय से पहले ही उठे और गिरजाघर में अपनी दैनिक पूजा-आराधना के लिये चले गये। प्रार्थना करते समय उन्हें अचानक ठण्ड मालूम होने लगी और वे कांपने लगे। किसी तरह रसोईघर में पहुँचे और उनकी रसोई पकाने वाली वही पुरानी औरत फ्रक्टोसा उन्हें देखकर घबरा सी गयी और उसने उन्हें बिस्तर पर लिटा कर थोड़ी सी ब्रांडी पिलायी। इस ठण्ड से उन्हें ज्वर हो आया और फिर धीरे-धीरे बड़ी कष्टप्रद खांसी आने लगी।

कुछ दिन तक चुपचाप बिस्तर पर पड़े रहने के बाद एक दिन प्रातः काल उन्होंने बर्नार्ड को अपने पास बुलाया और कहा—

"बर्नार्ड, आज तुम सांता फ़े चले जाओ और मेरी ओर से आर्चविशप से मिलो। उनसे पूछो कि यदि मैं उनके मकान में, अपने अध्ययन कक्ष में, कुछ समय के लिये आ जाऊँ, तो उन्हें कोई असुविधा तो न होगी। मैं सांता फ़े में ही मरना चाहता हूँ।"

"मैं फ़ौरन ही जाता हूँ, फ़ादर। परन्तु आप अधीर न होइये, सर्दी जुकाम से कहीं कोई मरता है?"

बूढ़े बिशप मुस्करा पड़े। "मैं सर्दी से नहीं मरूंगा, मेरे बच्चे। मैं तो इसलिये मरूंगा कि अब मैं बहुत जी चुका।"

उस क्षण से वे अपने पास रहने वाले सभी लोगों से फ्रांसीसी भाषा

ही में बात करने लगे और घर के लोग उनके इस अचानक नियम-परिवर्तन से उनकी हालत के सम्बन्ध में जितना घबराये उतना अन्य किसी बात से नहीं। जब कोई पादरी अपने घर से कोई बुरा समाचार सुनता या वह बीमार रहता, तो उस समय फ़ादर लातूर उससे अपनी ही भाषा (फ्रांसीसी) में बात करते थे, परन्तु अन्य अवसरों पर वे यही चाहते थे कि उनके घर में सभी बातें स्पेनिश या अंग्रेजी भाषा ही में हों।

बर्नार्ड उसी दिन तीसरे पहर वापस आ गया और उसने बताया कि आर्चबिशप को इससे बड़ी प्रसन्नता होगी कि फ़ादर लातूर जाड़े भर उनके साथ ही रहें। मैगडलेना ने उनके अध्ययन-कक्ष को खोल दिया है और वह उसकी सफ़ाई आदि करने लग गयी है और वह उनके निवास काल के समय विशेष रूप से उन्हीं की शुश्रुषा में रहेगी। आर्चबिशप उन्हें लिवा आने के लिये अपनी नयी गाड़ी भेज देंगे, क्योंकि फ़ादर लातूर के पास तो एक खुली गाड़ी ही है।

"आज नहीं, मेरे बेटे", बिशप ने कहा। "हम किसी ऐसे दिन चलेंगे, जिस दिन मेरी तबियत कुछ ठीक रहेगी, जिस दिन मौसम भी अच्छा होगा, बादल आदि नहीं रहेंगे, और हम अपनी ही खुली गाड़ी में चल सकेंगे और तुम उसे हाँकोगे। मैं तीसरे पहर यहाँ से चलना चाहता हूँ, लगभग सूर्यास्त के समय।"

बर्नार्ड समझ गया। वह जानता था कि एक बार, बहुत समय पहले, दिन के उसी समय, एक नौजवान बिशप अलबुकर्क की सड़क पर घुड़सवारी करके सांता फ़े पहुँचा था और प्रथम बार उसे देखा था······और बहुधा ही, जब वे एक साथ उस नगर में गाड़ी पर बैठकर जाते, तो बिशप बर्नार्ड के साथ उस पहाड़ी पर क्षण भर के लिये रुक जाते, जहाँ से फ़ादर वेलेंट ने कोलोरैडो में नया काम आरम्भ करने जाते समय सांता फ़े की ओर घूम कर देखा था। उनका (फ़ादर वेलेंट का) यही काम उनके शेष जीवन भर चलता रहा और यही करते-करते अन्त में वे भी बिशप बन गये थे।

फ़ादर लातूर ठण्डी आह भर कर बर्नार्ड को बतलाया करते थे कि उन् दिनों नगर देखने में अपेक्षाकृत अच्छा लगता था। उन दिनों उसकी अपनी एक विशिष्टता थी, अपना एक ढंग था। कच्ची ईंटों के मकानों का, भूरे रङ्ग का छोटा सा नगर, जिसमें बहुत थोड़े से हरे वृक्ष थे, और जो अर्द्ध-चंद्राकार रूप में लाल पहाड़ियों के बीच बसा हुआ था; बस इससे अधिक कुछ नहीं। परन्तु सन् १८८० ई० में अमेरिकनों द्वारा बेमेल मकानों के बनने का श्रीगणेश यहाँ भी हो गया। इस समय स्थिति यह थी कि बीच के मैदान के चारों ओर का आधा भाग तो अब भी कच्ची ईंटों के मकानों का था और आधे भाग में कमज़ोर लकड़ी के मकान थे, जिनमें दो-दो बरसातियाँ थीं, चक्करदार बेल बूटे थे, व्यर्थ के खम्भे आदि थे, जिन पर सफेदी की हुई थी। फ़ादर लातूर कहा करते थे कि इन लकड़ी के मकानों ने, जिन्हें वे ओहियो में देखकर चिढ़ जाते थे, यहाँ भी उनका पीछा किया। यह सब उस गिरजाघर के उपयुक्त नहीं था, जिसे उन्होंने इतने वर्षों में बनाया था, वह गिरजाघर, जिसने उनके जीवन में मृत्यु के पश्चात् फ़ादर वेलेंट जैसे अद्भुत मनुष्य का स्थान ले लिया था।

फ़ादर लातूर ने सांता फ़े में अन्तिम बार प्रवेश फ़रवरी मास में एक दिन तीसरे पहर, जब आसमान बिलकुल साफ़ था, किया। बर्नार्ड ने नगर की एक लम्बी सड़क के किनारे उस स्थान पर, जहाँ वह नगर में प्रवेश करती थी, घोड़ों को रोक दिया और सूर्यास्त की प्रतीक्षा करने लगा।

रेड इण्डियन ढंग का कम्बल ओढ़े, बूढ़े आर्चबिशप अपने गिरजाघर के खुले एवं सुनहरे अगवाड़े को देखते हुए बहुत देर तक बैठे रह गये। उनके फ्रांसीसी कारीगर, नवयुवक मोल्नी ने उसे ठीक वैसा ही बनाया था, जैसा वे चाहते थे। उसमें कोई खास बात नहीं थी, महज सादी सी इमारत थी परन्तु पत्थरों की अच्छी कटाई हुई थी। मिदी रोमानेस्क की सादी-से-सादी डिजाइन की अच्छी नकल थी। और इस समय जाड़े में भी, जब दरवाज़े के सामने लगे बबूल के वृक्षों में पत्तियाँ नहीं थीं, वह ठीक दक्षिण

प्रदेश का गिरजाघर लगता था; उसे देख कर ही दक्षिण का आभास मिल जाता था।

मोल्नी और बिशप के अतिरिक्त शायद अन्य किसी ने भी उस इमारत की भव्यता की इतनी प्रशंसा न की होगी—शायद कोई कभी करेगा भी नहीं। परन्तु इन दो व्यक्तियों ने घण्टों खड़े रह कर उसकी सराहना की थी। लाल रंग की ढालुवाँ पहाड़ियाँ गिरजाघर के पीछे इतने निकट थीं कि उस ढाल पर यत्र-तत्र उगे चीड़ के सभी वृक्ष स्पष्ट दीखते थे। सड़क के किनारे जिस स्थान पर बिशप की गाड़ी खड़ी थी, वहाँ से देखने पर लगता था, कि भूरे रंग का गिरजा उन गुलाबी रंग की पहाड़ियों से ही अचानक निकल पड़ा है,—और वह भी इतने निश्चित प्रयोजन से, कि लगता था कि वह चल कर आया है। इतनी दूर से देखने पर लगता था कि यत्र-तत्र बिखरे चीड़ के वृक्षों वाले ढाल के सामने खड़ा गिरजाघर किसी परदे के सामने खड़ा है। बर्नार्ड ने ज्यों-ज्यों धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़ाई, ज्यों-ज्यों वह समीप आता गया, पहाड़ी का ऊपरी भाग गिरजा की आड़ में नीचे होता गया और उसकी मीनारें नीले आसमान में स्पष्ट उभर आयीं, परन्तु उसके निचले भाग की पृष्ठभूमि में अब भी पहाड़ी दिखलायी पड़ रही थी।

वह युवक कारीगर बिशप से कहा करता था कि केवल इटली में, या नाटकीय दृश्यों ही में, गिरजाघर इस प्रकार पर्वतों एवं काले चीड़ के वृक्षों के बीच खड़े दिखलायी पड़ते थे। कितनी बार ऐसा हुआ था कि कोई आँधी आने पर मोल्नी ने बिशप को उनके अध्ययन-कक्ष से बुलाकर अधूरी इमारत को दिखाया था। इस समय पर्वतों के ऊपर आकाश काला हो जाता, लाल रंग की पहाड़ियाँ गाढ़े नीले रंग की हो जातीं, उन पर उगे सभी चीड़ के वृक्ष गाढ़े बैंगनी रंग की लकीरों जैसे हो जाते, पहाड़ियाँ और भी निकट मालूम होने लगती, सारा पृष्ठ-प्रदेश ही भयानक खतरे के रूप में आगे बढ़ता हुआ सा लगता था।

मोल्नी फ़ादर लातूर से कहा करता था; "संयोग से ही उपयुक्त दृश्य

एवं स्थान मिल जाता है। कोई इमारत या तो अपने स्थान का एक अंग बन ही जाती है, या फिर नहीं ही बनती। एक बार वह अंग बन गयी और दोनों में सम्बन्ध स्थापित हो गया, फिर तो ज्यों-ज्यों समय बीतता है, वह दृढ़तर ही होता जाता है।"

बिशप मोल्नी के इसी कथन का स्मरण कर रहे थे, तभी कोई आवाज़ उनके कान में पड़ी, जिससे वे पुनः वर्तमान् में आ गये। आवाज बर्नार्ड की थी।

"कितना सुहावना सूर्यास्त है फ़ादर! देखिये, पर्वत किस प्रकार अधिकाधिक लाल होते जा रहे हैं; सांग्रे दि क्रिस्टो के रंग के।"

हाँ, सांग्रे दि क्रिस्टो का रंग; परन्तु सूर्यास्त चाहे कितना ही चटकीला लाल हो, ये पहाड़ियाँ कभी भी सिन्दूरी रंग की नहीं होतीं, उलटे वे अधिकाधिक गुलाबी और धुँधले लाल रंग की होती हैं; और बिशप बहुधा ही यों सोचा करते थे कि यह रंग ताज़े खून के रंग का नहीं होता, अपितु संतों एवं शहीदों के सूखे हुए खून के रंग का होता जाता है, जो रोम के गिरजाघरों में सुरक्षित रखा रहता है और विशेष अवसरों पर पिघल कर द्रव बन जाता है।

२

दूसरे दिन प्रातःकाल बिशप प्रसन्नता की इस भावना के साथ जागे कि वे गिरजाघर के समीप हैं, वह गिरजाघर, जो उनकी क़ब्र भी बनेगा। वे स्वयं को उसकी छत्र-छाया में सुरक्षित महसूस करने लगे; जैसे कोई जहाज़ बन्दरगाह के अपने प्रकोष्ठ में पहुँच जाने पर सुरक्षित समझा जाता है। वे अपने पुराने अध्ययन-कक्ष में थे, 'सिस्टरों' ने विद्यालय से उनके लिये लोहे की एक चारपाई भेज दी थी; उन्होंने अपनी सर्वोत्तम चद्दरें तथा कम्बल आदि भी भेज दिया था। वे इस स्थान पहुँच कर, जहाँ वे एक युवक के रूप में आये थे और जहाँ उन्होंने अपना काम आरम्भ किया था, बड़े

सन्तोष का अनुभव कर रहे थे। कमरे में शायद ही कोई परिवर्तन हुआ हो; फ़र्श पर वे ही पुराने क़ालीन और मृग-चर्म बिछे थे, वही डेस्क, जिस पर उनकी मोमबत्तियाँ रखी जाती थीं, वे ही मोटी एवं असम श्वेत दीवारें भी थीं, जो किसी प्रकार की आवाज़ अन्दर नहीं पहुँचने देती थीं, और बाहरी दुनिया का आभास भी नहीं होने देती थीं, तथा जिनके आड़ में रह कर आत्मा को शान्ति मिलती थी।

प्रभात के आगमन के साथ ही अंधकार का नाश हुआ, और वे गिरजा घर के घण्टों की आवाज़ सुनने लगे,—और भी एक आवाज़ के लिये वे उत्सुक हो उठे, जिसे सुनकर उन्हें हमेशा ही बड़ी प्रसन्नता होती थी; 'वह थी किसी रेलगाड़ी के इंजन की सीटी। वे जब यहाँ प्रथम बार आये थे, तो भैसों पर ही सामान आदि ढोने का काम होता था और उनके देखते-देखते सांता फ़े में रेलगाड़ियाँ दौड़ने लगी थीं। वे यहाँ पूरा एक ऐतिहासिक काल बिता चुके थे।

घर पर उनके सभी सम्बन्धियों तथा न्यू मेक्सिको के उनके सभी मित्रों ने यही आशा की थी कि बूढ़े आर्चबिशप अपने अन्तिम दिन फ्रांस में, सम्भवतः क्लेरमोंट में बितायेंगे, जहाँ वे अपने पुराने कालेज में किसी पद पर सुशोभित हो सकेंगे। यही करना स्वाभाविक जान पड़ता था और उन्होंने इस पर गम्भीरता से विचार भी किया था। यहाँ तक कि जब वे अपने आर्चबिशप के पद से अवकाश ग्रहण करने के ठीक पहले, पिछली बार आवार्न गये थे, तो उन्हें भी थोड़ी यह आशा थी कि वे ऐसी कोई व्यवस्था कर लेंगे। परन्तु 'पुरानी दुनिया' में उन्हें 'नयी दुनिया' की याद सताने लगी। इस भावना को वे किसी को समझा नहीं सकते थे, यह कुछ इस प्रकार की भावना थी कि न्यू मेक्सिको में बुढ़ापा उतना नहीं खलता जितना पाय-दे-डोम में।

उन्हें अपने देश के पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियाँ, गांवों की शोभा,

देहाती क्षेत्र की सफ़ाई, अपने कालेज की सुन्दर इमारतें, मठ आदि बहुत प्रिय थे। क्लेरमोंट सुन्दर अवश्य था,—परन्तु वे वहाँ स्वयं को उदास पाते थे; उनका हृदय पत्थर की भाँति, स्पंद-हीन जान पड़ता था। कारण कदाचित यह था कि विगत की स्मृतियाँ बहुत अधिक थीं. . . .ग्रीष्म-ऋतु की हवा जब यहाँ के बगीचों में लगे नीले फूल वाले उन वृक्षों को झकझोर देती थीं, और अखरोट जाति के उन अन्य वृक्षों के फूलों को धरती पर बिखेर देती थी, तो उन्हें देखकर कभी-कभी वे अपनी आँखें बन्द कर लेते थे और उस गर्जनकारी संगीत का ध्यान करने लगते थे, जिसे नवाजो के जंगलों में सीधे और नंगे चीड़ के वृक्षों को झकझोर कर हवा गाया करती थी।

दिन में उनकी घर की विरह-वेदना कम होने लगती थी और रात के भोजन का समय आते-आते वह बिलकुल समाप्त हो जाती थी। उन्हें अपने भोजन में, शराब में तथा सभ्य एवं सुसंस्कृत व्यक्तियों के साथ में बड़ा आनन्द आता था और सोने जाने के समय वे अमूमन प्रसन्नचित्त ही रहते थे। प्रात:काल ही वे हृदय में टीस का अनुभव करते थे। कदाचित् उसका सम्बन्ध बड़े सुबह जागने ही से था। उन्हें लगता था कि धुँधला प्रभात यहाँ बहुत देर तक बना रहता है, और काफ़ी देर के पश्चात् देश जागृतावस्था में आता है। बाग़ और खेत नम बने रहते थे, घाटी में गाढ़ा कुहरा छाया रहता था, जिसके कारण पर्वत दृष्टि से ओझल रहते थे, घण्टों बीत जाते थे, तब कहीं जाकर सूर्य इस कुहरे को समाप्त करके गावों के वायुमण्डल को गरम एवं पवित्र कर पाता था।

न्यू मेक्सिको में प्रात:काल जागने पर वे स्वयं को जवान अनुभव करते थे; जब तक कि वे बिस्तर से उठ नहीं जाते थे और हजामत नहीं बनाने लग जाते थे, वे यह अनुभव ही नहीं करते थे कि वे अब बूढ़े हो रहे हैं। प्रथम वस्तु वे यह अनुभव करते थे कि शुष्क एवं मन्द बयार खिड़कियों से अन्दर आ रही है, और उसके साथ ही सूर्य की प्रखर किरणों एवं झाड़ी के पुष्पों तथा चारे के काम आने वाले पौधों की सुगन्ध भी आती है; यह

ऐसी हवा थी, जो शरीर में स्फूर्ति भर देती थी और हृदय बच्चों की तरह बरबस चिल्ला उठता था , "आज, आज ।"

सुन्दर वातावरण, विद्वानों का समागम, भद्र महिलाओं के आकर्षण तथा कला-कृतियों के सौंदर्य, मरुस्थल के उन सुहावने प्रभातों तथा मनुष्य को पुनः बच्चा बना देने वाली उस मस्त हवा की कमी नहीं पूरा कर सकते थे । उन्होंने यह अनुभव किया कि पिछड़े एवं अविकसित देशों की जलवायु का यह अद्भुत् गुण मनुष्य द्वारा उनका विकास किये जाने पर तथा उनकी भूमि में फसल उगाने पर, लुप्त हो जाता है । टेक्सास तथा कंसास राज्यों के उन भागों में, जिन्हें उन्होंने पहले बीहड़ पर्वतीय एवं वन प्रदेश के रूप में देखा था, अब बड़े जोरों से खेती हो रही थी, और हवा की वह पवित्रता तथा शुष्क सुगन्धि नष्ट हो चुकी थी । जुते हुए खेतों की नमी ने, बीजों की उत्पत्ति, ने फिर पौधों की वृद्धि ने एवं अन्त में उनमें फल लगने आदि के लिये आवश्यक खुराक प्रदान करने की क्रिया ने उस सुगन्धि को बिलकुल नष्ट कर दिया था वह तो अब धरती के सीमावर्ती प्रदेशों, विशाल घास के मैदानों तथा महकदार झाड़ी वाले मरुस्थलों में ही मिल सकती है ।

कालान्तर में चलकर यह हवा कदाचित् सारी धरती से ही लुप्त हो जायगी; परन्तु वह तो उनके अवसान के बहुत दिन बाद होगा । उन्हें यह नहीं मालूम कि कब वह उनके लिये इतनी आवश्यक हो गयी परन्तु उसी के लिये तो वे परदेश में मरने वापस चले आये थे । वह तो कोई ऐसी वस्तु थी, जो कोमल, मुक्त एवं स्वच्छंद थी । कोई ऐसी वस्तु थी, जो चुपके से आकर तकिया पर पड़े कान में कुछ कहती थी, हृदय को पागल बना देती, बहुत धीरे-धीरे ताला हटाती, कुण्डे खोलती, और मनुष्य की बन्दी आत्मा को मुक्त करके उसे वायुमण्डल में, नील गगन के नीचे, स्वर्णिम प्रभात में, हाँ सोने से लदे सुहाने प्रभात में, भेज देती थी ।

४

फ़ादर लातूर ने अपने अन्तिम दिनों के लिये एक दिनचर्या बनायी। नीरोगावस्था में यदि नियम आवश्यक था, तो बीमारी में तो और भी आवश्यक था। सुवह ही सुवह बर्नार्ड गरम पानी लेकर आता था, उनकी हजामत बनाता था और उन्हें नहलवाता था। वे गांव से अपने साथ पहनने के कपड़ों, चद्दरों तथा हाथ धोने के उन चांदी के बर्तनों के अतिरिक्त, जिन्हें ओलिवारिस ने फ़ादर को बहुत पहले ही दिया था, अन्य कोई भी वस्तु नहीं लाये थे। गत तीस वर्षों से वे हाथ से गढ़े हुए उस वर्तन में ही अपने हाथ धोते आ रहे थे। सुबह की प्रार्थना समाप्त हो जाने पर मैगडलेना नाश्ता ले आती, और उठकर वे अपनी आराम कुर्सी पर बैठ जाते थे। इस बीच मैगडलेना उनका बिस्तर तथा कमरे की अन्य वस्तुएँ ठीक-ठाक कर देती थी। तब वे लोगों से मिलने के लिये तैयार रहते थे। आर्चबिशप जब घर पर रहते थे, तो दो-चार मिनट के लिये उनके पास आते थे, मदर सुपीरियर आती थीं, अमेरिकन डाक्टर आता था। दोपहर तक बर्नार्ड कुछ न कुछ पढ़कर उन्हें सुनाता रहता था; संत आगस्टिन की कोई पुस्तक, या मैडम डि सेवीन के पत्र या उनका प्रिय पैस्कल।

कभी-कभी सुबह ही वे अपने युवक शिष्य को अपने इलाक़े के प्राचीन मिशनों के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें लिखाया करते थे; ऐसी बातें जिनका ज्ञान उन्हें संयोगवश ही हुआ था और उन्हें भय था कि कहीं वे भुला न दिये जायँ। उनकी इच्छा तो यह थी कि वे इन्हें सिलसिलेवार रूप में लिख सकें, परन्तु उन्हें अब शक्ति नहीं थी। बीते युग के सम्बन्ध में वे सच्ची बातें और गल्प कालान्तर में चलकर कदाचित् लुप्त हो जाँय; प्राचीन गाथाएँ, रीति-रिवाज तथा अंध-विश्वास आदि अभी से समाप्त होने लगे थे। अब वे सोचने लगे यदि बहुत समय पहले मैंने फ़ुरसत से इन्हें लिखा होता और उन पर लचीली फ्रांसीसी भाषा में प्रकाश डालकर उन्हें मरने से बचा लिया होता, तो क्या ही अच्छा हुआ होता!

सचमुच वर्षों तक वे उन युवक पादरियों को, जिन्हें वे पढ़ाते थे, यह समझाते रहे कि किस साहस एवं लगन से उन प्रथम मिशनरियों ने, स्पेनिश ईसाई भिक्षुओं ने, यहां काम किया था। वे यह भी कहते थे कि जब वे (बिशप) प्रथम बार न्यू मेक्सिको आये थे, तो उनकी (मिशनरियों की) तुलना में उनका स्वयं का जीवन कितने आराम का था। यदि कभी उन्हें सप्ताहों तक अल्प भोजन पर, खुले में सो कर, तथा बिना नहाये-धोये, गन्दा शरीर लिये, बाहर रहना पड़ता था, तो कम-से-कम उन्हें यह तो सन्तोष रहता था कि जहाँ भी वे जाते थे, वे मित्रों के बीच रह रहे हैं और प्रत्येक व्यक्ति के घर में उनका स्वागत होता था।

परन्तु वे स्पेनिश पादरी लोग तो, जो पहले ज़ूनी तक आये, फिर उत्तर में नवाजो तक गये, पश्चिम में होपी तक गये, और पूरब में अलबुक़र्क़ तथा ताओस के बीच बिखरे हुए सभी बस्तियों में गये, वे एक शत्रु-प्रदेश में पहुँचे थे और अपने साथ पाठ-पुस्तक तथा क्रूश के अतिरिक्त बहुत थोड़ी सी सामग्री लेकर चलते थे। जब रेड इण्डियन लोग उनके खच्चर चुरा लेते और यह बहुधा ही होता था, तो वे पैदल ही, बिना कपड़े बदले ही, बिना कुछ खाये-पिये, चल देते थे। कोई यूरोपियन इन कठिनाइयों की कल्पना भी नहीं कर सकता था। प्राचीन देश तो मानव जीवन की आवश्यकताओं के उपयुक्त बन गये थे, मनुष्य के लिये एक अभिषेक बन गये थे, एक प्रकार से उसका दूसरा शरीर ही बन गये थे। वहाँ की जंगली जड़ी-बूटियाँ, जंगली फल तथा जंगलों के कुकुरमुत्ते आदि खाद्य वस्तुएँ बन गयी थीं। नदियों का पानी मीठा था, वृक्ष छाया एवं आश्रय प्रदान करते थे। परन्तु रेह-मिश्रित मिट्टी वाले उन मरुस्थलों में सभी जल-स्रोत विषैले थे और भूखे आदमी को वहाँ की बनस्पतियों से कुछ भी खाने को नहीं मिल सकता था। प्रत्येक वस्तु सूखी, कँटीली एवं तेज थी; स्पेनिश भाले, सदाबहार की झाड़ियाँ, अन्य जंगली वृक्ष, नागफनी के पौधे, छिपकलियाँ,

विषैले साँप,—यहाँ तक कि मनुष्य भी कठोर जीवन विताने के कारण, निर्दय बन गया था। इन प्रारम्भिक मिशनरियों ने स्वयं को, नंगे ही, ऐसे देश के बीहड़ भाग में फेंक दिया था, जो महामानवों के भी धैर्य एवं साहस को समाप्त कर सकता था। वे उसके मरुस्थलों में प्यासे रह जाते थे, पर्वतों पर भूख की ज्वाला सहन करते थे, कंकड़-पत्थर से घायल हुये पाँव लिये भयानक दर्रों में उतरते और चढ़ते थे और लम्बे अनशनों को गन्दे तथा घृणित भोजन से तोड़ते थे। निश्चय ही वे ऐसी भूख, प्यास, सर्दी आतप, वात आदि बर्दाश्त करते थे, जिसकी कल्पना भी सेंट पॉल और उनके साथियों ने न किया होगा। प्रारम्भिक काल के ईसाइयों ने जो कुछ भी कष्ट सहन किया, वह सब उस छोटी एवं सुरक्षित भूमध्य सागरीय दुनिया ही में, पुराने रीति-रिवाजों के बीच पुराने सीमाचिह्नों के दायरे में हुआ। यदि वे शहीद हुए तो कम-से-कम वे अपने बन्धु-बांधवों के बीच मरे। उनके अवशेष बड़ी हिफ़ाज़त से रखे गये थे और उनके नाम सन्तों, महात्माओं आदि की ज़बान पर रहते थे।

आवार्ने के अपने साथियों के साथ उन प्राचीन मिशनों पर पहुँचने पर जहाँ कोई धर्म-प्रचारक कभी शहीद हुआ था, बिशप उनसे कहा करते थे कि कोई भी यह नहीं जान सकता कि वहाँ धर्म की किस प्रकार विजय हुई होगी, जहाँ अकेला श्वेत मनुष्य अनेक नास्तिकों के बीच घोर यन्त्रणा के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुआ होगा, या यह कि उस निर्दयतापूर्ण अन्त का कष्ट हलका करने के लिये ईश्वर ने कौन सा-रहस्योद्घाटन या देवी प्रेरणा प्रदान की होगी।

जब फ़ादर लातूर, यौवनावस्था में, डुरँगो के बिशप से बिशप की अपनी गद्दी माँगने प्रथम बार ओल्ड मेक्सिको गये थे, तो यात्रा ही में उनकी सोनोरा और लोअर कैलिफोर्निया के मिशनों के पादरियों से भेंट हो गयी जिन्होंने, जो उन्हें प्रारम्भिक फ्रांसिस्कन मिशनरियों के अनुभवों की अनेक गाथाएँ सुनाया था। लगता है कि बीहड़ वन-प्रदेशों में भटकते हुए उन्हें

छोटे-मोटे चमत्कार भी देखने को मिले थे। एक बार ऐसा हुआ कि जब सुप्रसिद्ध फ़ादर जुनिपेरो सेरा और उनके दो साथी किसी नदी को खतरनाक स्थान पर पार करने का प्रयत्न कर रहे थे और अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल दिया था, उस समय एक अद्भुत अजनबी आदमी नदी के उस पार कहीं पर्वत पर से ही प्रकट हो गया और उनसे स्पेनिश भाषा में बोलते हुए किनारे के ऐसे स्थान पर उन्हें ले गया, जहाँ नदी में पानी बहुत कम था और वे उसमें हिल कर खड़े-खड़े नदी पार कर गये। उन्होंने जब उस से उसका नाम पूछा तो उसने बहाना बना दिया और अदृश्य हो गया। दूसरी बार यह हुआ कि वे एक विशाल मैदानी प्रदेश को पार कर रहे थे, और प्यास के मारे बिलकुल शिथिल हो गये थे; तभी एक नौजवान घुड़सवार पीछे से उनके पास पहुँचा। उन्हें उसने तीन पके अनार दिये, और फिर सरपट घोड़ा दौड़ा कर निकल गया। इस फल ने न केवल उनकी प्यास बुझायी, वरन् उनके शरीर में इतनी ताज़गी और शक्ति ला दी, जितनी ताज़गी कोई भी पुष्टिकारक भोजन न ले आये होता और फिर वे रञ्चमात्र थकावट महसूस किये बिना ही अपनी यात्रा पूरी कर गये।

डुरैंगो इलाक़े की यात्रा करते समय, एक बार फ़ादर लातूर रात के समय एक गाँव में किसी बड़े कृषक के यहाँ ठहरे, जहाँ का आवासी पादरी पश्चिम के किसी मिशन का था। उस पादरी ने इन्हीं फ़ादर जुनिपेरो के सम्बन्ध में एक कहानी सुनायी, जो उसके मठ में बहुत पहले से ही प्रचलित थी।

उसने बताया कि एक बार फ़ादर जुनिपेरो केवल एक साथी के साथ उसके मठ पर बिना किसी सर-सामान के पैदल ही पहुँचे थे। वहाँ के पादरियों ने आश्चर्यचकित होकर दोनों का स्वागत किया था; उन्हें यह विश्वास ही नहीं होता था कि कोई मनुष्य इस प्रकार बिना किसी भोजन, वस्त्र के इतने विशाल मरुस्थल को पार कर सकता है। बड़े पादरी ने उनसे पूछा कि आप कहाँ से आ रहे हैं, और जान लेने पर कहा कि जिस मिशन से

वे लोग चले हैं, वहाँ के पादरी को उन्हें बिना किसी पथ-प्रदर्शक या रसद आदि के रवाना ही नहीं होने देना चाहिये था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे लोग यहाँ जीवित कैसे पहुँच गये। परन्तु फ़ादर जुनिपेरो ने उत्तर दिया कि मैं तो बड़े आराम से पहुँच गया, और रास्ते में एक ग़रीब मेक्सिकन परिवार ने मुझको बड़े प्रेम से भोजन आदि कराया था। यह सुनकर एक खच्चर हाँकनेवाला, जो उस समय पादरियों के लिये लकड़ी अन्दर ला रहा था, हँस पड़ा और बोला कि वहाँ तो छत्तीस मील की दूरी में कोई मकान ही नहीं है और न तो जिस रेगिस्तान को पार करके आप लोग आये हैं, उसमें कहीं कोई रहता ही है। पादरियों ने भी उसकी इस बात की पुष्टि की।

इस पर फ़ादर जुनिपेरो तथा उसके साथी ने अपनी यात्रा का पूरा वृत्तांत सुनाया। वे लोग केवल एक दिन के लिये भोजन और पानी लेकर रवाना हुए थे। परतु दूसरे दिन वे सुबह से ही नागफनी के पौधों से भरे एक रेगिस्तान में चलते रहे और सूर्यास्त के समय जब वे हिम्मत हारने लगे, तो उन्होंने दूर तीन बड़े-बड़े सेमल के वृक्ष देखे, जो उस धुंधले प्रकाश में बहुत ही ऊँचे दीख रहे थे। वे लोग इन्हीं वृक्षों की ओर बढ़े। पेड़ों के समीप पहुँचने पर उन्होंने देखा कि वे काफ़ी फैले हुए, हरे थे तथा फलों से लदे हैं, जिनसे काफ़ी मात्रा में सेमल धरती पर छिटका हुआ था। पास ही में उन्होंने देखा कि एक सूखे हुए तने से; जो रेत में यों ही निकला हुआ दीखता था, एक गधा बँधा है। गधे के मालिक को ढूँढते हुए वे एक छोटे से मेक्सिकन घर के समीप पहुँचे जिसके दरवाज़े के पास ही एक भट्टी बनी हुई थी तथा तार में पिरोकर दीवार पर मिरचा लटकाया हुआ था। आवाज़ देने पर एक भद्र मेक्सिकन, जो भेंड़ की खाल ओढ़े बाहर आया और उसने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया तथा रात भर वहीं रहने के लिये उनसे आग्रह किया। उसके साथ अन्दर जाकर उन्होंने देखा कि घर बड़ा साफ़-सुथरा तथा सुन्दर है और उसकी पत्नी, जो एक सुन्दर

नौजवान स्त्री थी, आग के पास बैठी हुई दलिया पका रही है। उसका बच्चा, जो अभी शिशु ही था और एक कमीज़ के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं पहने था, उसकी बग़ल में फ़र्श पर ही बैठा एक पालतू भेंड़ से खेल रहा था।

उन्होंने देखा कि ये लोग सज्जन, धर्मात्मा तथा मृदु-भाषी हैं। पति ने बतलाया कि हम गड़रिये हैं। पादरी लोगों ने उन्हीं के साथ बैठकर भोजन किया और फिर रात की अपनी प्रार्थना कही। वे लोग अपने मेज़बान से उस प्रदेश के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न करना चाहते थे; यह पूछना चाहते थे कि वे अपनी ज़िन्दगी कैसे बिताते हैं, वे अपनी भेंड़ों के लिये चारागाह कहाँ पाते हैं, आदि। परन्तु उन्हें बड़ी गहरी तथा मीठी थकान का अनुभव हुआ और दोनों व्यक्ति अपनी-अपनी भेंड़ की खाल ओढ़ कर, जो उन्हें उनके मेज़बान ने दी थी, ज़मीन पर ही लेट गये और सद्यः गहरी निद्रा में सो गये। प्रातःकाल उठ कर उन्होंने देखा कि सब कुछ पूर्ववत है, मेज़ पर खाना भी लगा है, परन्तु पूरा परिवार ग़ायब है, यहाँ तक कि वह पालतू भेंड़ भी नहीं है। पादरियों ने सोचा कि वे लोग अपनी भेंड़ें देखने चले गये होंगे।

मठ के पादरियों ने यह वृत्तांत सुन कर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि रेगिस्तान में उस स्थान पर तीन सेमल के वृक्ष अवश्य हैं और यह मार्ग का काफ़ी सुविदित चिह्न है; परन्तु यदि कोई परिवार इस समय वहाँ रह रहा है, तो निश्चय ही वह हाल ही में वहाँ आया होगा। अतः फ़ादर जुनिपेरो तथा उनके साथी फ़ादर ऐन्ड्रिया मठ के कुछ पादरियों तथा उस गधा हाँकने वाले के साथ, जो मजाक उड़ा रहा था, इस बात को सच सिद्ध करने के लिये उस वीरान स्थान पर वापस गये। उन्हें वहाँ तीनों वृक्ष मिले, जिनसे सेमर गिर रहा था और वह सूखा ठूँठ भी दिखायी पड़ा, जिससे गधा बँधा हुआ था। परन्तु न तो वहाँ गधा था, न कोई मकान था, न दरवाज़े के पास कोई भट्टी। फिर तो दोनों फ़ादर उस

पवित्र स्थान पर घुटने के बल झुक कर बैठ गये और धरती को उन्होंने चूमा, क्योंकि उन्हें अब समझ में आया कि उन्हें आश्रय देने वाला वह कौन सा परिवार था।

फ़ादर जुनिपेरो ने मठ के पादरियों से बतलाया कि किस प्रकार मकान के अन्दर प्रवेश करते ही वे अद्भुत रूप से उस बच्चे की ओर आकर्षित हुए थे और चाहते थे कि वे उसे अपनी गोद में उठा लें, परन्तु चूँकि प्रति क्षण वह अपनी माँ ही के पास था, वे ऐसा न कर सके। जब वे अपनी रात की प्रार्थना पढ़ रहे थे, उस समय बच्चा अपनी माँ के घुटनों के सहारे फ़र्श पर बैठा हुआ था और भेंड़ को अपनी गोद पर बैठाये हुए था। उसे देख कर उस समय फ़ादर को अपनी पाठ-पुस्तक पर दृष्टि जमाये रखना कठिन हो गया। प्रार्थना के पश्चात् जब वे अपनी मेज़बानों से रात्रि की विदाई का नमस्कार कर चुके, तो वास्तव में वे बच्चे के ऊपर झुक गये थे; और बच्चे ने अपना हाथ उठाकर अपनी नन्हीं उँगली से फ़ादर जुनिपेरो के माथे पर क्रूश का चिह्न बना दिया था।

फ़ादर जुनिपेरो के पवित्र परिवार की यह कथा जब बिशप को इस विशाल फ़ार्म पर, जहाँ वे एक रात के लिये मेहमान के रूप में ठहरे थे, आग के पास बैठे, सुनायी गयी थी, तो वे उससे अत्यधिक प्रभावित हुए थे। वस्तुतः यह कथा उन्हें इतनी प्रिय थी कि उन्होंने उसे केवल दो बार अन्य किसी को सुनायी थी; एक बार रियोम में मदर फ़िलोयीन के कनवेंट की भिक्षुणियों को और दूसरी बार रोम में कार्डिनल माजुच्ची द्वारा दिये गये एक भोज के अवसर पर। महानता तुच्छता की ओर वापस आये, इस कल्पना में निस्संदेह एक आकर्षण है—महारानी देहाती लड़कियों के साथ घास काटे, यह कितनी आकर्षक कल्पना है—परन्तु यह विश्वास मनुष्य को ईश्वर के प्रति कितना अधिक श्रद्धालु बनाने वाला है कि वे (महात्मा ईसा का परिवार) शताब्दियों पश्चात्, जिस बीच बराबर उनकी कीर्ति का गान होता रहा, पुनः अपनी लीला करने वापस आये; और वह भी

एक हीन मेक्सिकन परिवार के रूप में, जो तुच्छों में भी तुच्छ तथा दरिद्रों में भी दरिद्र था—और संसार के एक छोर पर एक बीहड़, वीरान मरु-प्रदेश में, जहाँ देवदूत उन्हें पा ही न सकें।

५

दोपहर के भोजन के पश्चात् बूढ़े आर्चबिशप सोने का बहाना करते थे। वे लोगों से कह देते थे कि रात के भोजन के पहले मुझे जगाया न जाय, और एकान्त का यह लम्बा समय उनके लिये अत्यन्त मूल्यवान् था। उनकी चारपाई कमरे के उस किनारे पर थी, जहाँ अपेक्षाकृत अँधेरा रहता था, और छाया से उनकी आँखों को आराम मिलता था। जिस दिन आसमान साफ़ रहता था, उस दिन कमरे का दूसरा किनारा सूर्य के प्रकाश से आलोकित रहता था, और जिस दिन बादल रहते थे, उस दिन कमरे में जलती हुई आग की धुँधली रोशनी असम, श्वेत दीवारों पर नाचती रहती थी। बिशप इतना निश्चल लेटे हुए रहते कि उनका ओढ़ना भी नहीं हिलता था तथा हाथों को बगल में चद्दर पर या अपनी छाती पर आहिस्ता से रखे, अपने विगत जीवन की याद करते रहते थे। यों तो वे गतिहीन रहते थे, परन्तु कभी-कभी उनके दाहिने हाथ का अँगूठा उनकी तर्जनी में पहनी हुई अँगूठी को धीरे-धीरे सहलाता रहता था। अँगूठी में याकूत पत्थर जड़ा हुआ था और उस पर 'देवी मेरी रक्षा करें' खुदा हुआ था,—यह फ़ादर वेलेंट की मुहरदार अँगूठी थी। उसे सहलाते समय उन्हें जोसेफ़ की याद आ जाती, उनके साथ यहाँ, इस कमरे में . . . . ओहिओ में 'ग्रेट लेक्स' के किनारे..... युवकों के रूप में पेरिस में ..बच्चों के रूप में मोंट फ़ेरांड में..... बिताये गये दिनों की याद आ जाती। उनके मिशनरी जीवन रूपी पुस्तक में बहुत से ऐसे अध्याय थे, जिन्हें बार-बार याद करने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था और बहुधा ही और बड़े चाव से वे इस पुस्तक के प्रारम्भिक अध्याय को याद करते थे।

उन लोगों की अवस्था बीस के पार थी और वे अपेक्षाकृत अधिक अवस्था वाले पादरियों के सहायक थे; तभी क्लेरमोंट में ओहिओ से एक बिशप आये, जिनका जन्म-स्थान आवर्ने था। वे पश्चिम में अपने मिशनों के लिये स्वयंसेवकों की तलाश में थे। फ़ादर जीन और फ़ादर जोसेफ़ ने शिक्षालय में उनका भाषण सुना और वे दोनों अकेले में उनसे मिले और बातें कीं। उनके उत्तर दिशा की ओर रवाना होने के पहले ही इन दोनों नवयुवकों ने उनसे (बिशप से) वादा कर लिया कि वे अमुक तारीख़ को उनसे पेरिस में मिलेंगे, और विदेशी मिशनों के कालेज में कुछ सप्ताह रह कर स्वयं को काम के उपयुक्त बनायेंगे और फिर उनके साथ शेरबुर्ग़ के लिये रवाना हो जायंगे।

दोनों नौजवान पादरी जानते थे कि उनके परिवार के लोग उनकी इस योजना का विरोध करेंगे। अतः उन्होंने यह निश्चय किया कि वे इसे किसी से बतायें ही नहीं, कोई औपचारिक विदाई आदि का झंझट न करें, अपितु साधारण नागरिकों के कपड़ों में भेष बदलकर चुपचाप धीरे से खिसक जांय। उन्होंने यह कह कर एक दूसरे को सांत्वना दी कि सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर भी तो, मिशनरी के रूप में भारतवर्ष के लिये रवाना होते समय इसी प्रकार चुपचाप भाग कर निकले थे; "वे तो अपने माता-पिता के मकान के सामने से बिना उन्हें नमस्कार किये ही आगे बढ़ गये थे," जैसा कि उन्होंने स्कूल में पढ़ा था; ये शब्द ही किसी फ्रांसीसी लड़के के लिये कितने कष्टकर थे!

फ़ादर वेलेंट की स्थिति विशेष रूप से शोचनीय थी; उनके पिता बड़े गम्भीर एवं शान्त व्यक्ति थे। वे बहुत दिनों से विधुर थे और अपने बच्चों को अत्यधिक प्यार करते थे; यहां तक कि उनके जीवन से ही उनका जीवन था। जोसेफ़ सबसे बड़ी संतान थे। अतः जिस दिन उन्होंने जाने का निश्चय किया, उस दिन से लेकर जिस दिन वे चले नहीं गये, तब तक का समय उनके लिये भारी संताप का समय था। ज्यों-ज्यों रवाना होने का दिन

निकटतर आता गया, वे अधिकाधिक दुबले और पीले होते गये।

दोनों मित्रों में तय हुआ कि वे निर्धारित दिन को सूर्योदय के समय, रियोम से बाहर एक खेत में मिलेंगे और वहाँ पेरिस जाने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा करेंगे। जीन लातूर एक वार निर्णय एवं वादा कर लेने के बाद फिर आगा-पीछा करना जानते ही न थे। निर्धारित तिथि पर बड़े तड़के ही वे अपनी बहन के घर से चुपके से निकल पड़े और सोते हुए नगर में से उस पर्वत के पास खेत में पहुँच गये, जो अत्यधिक ढालुवाँ होने के कारण शिखर पर एक ओर को झुका हुआ था और जिसकी हरियाली मेघाच्छन्न सूर्योदय के धुँधले प्रकाश में अब दीखने लगी थी। वहाँ उन्होंने अपने साथी को बड़ी बुरी हालत में पाया। जोसेफ़ अपने चरमोद्देश्य के सम्बन्ध में भयानक अंतर्द्वन्द्व लिये, रात से ही इन्हीं खेतों में इधर-उधर भटक रहे थे। रोते-रोते उनकी आँखें सूज आयी थीं। वे ठण्ड के मारे कांप रहे थे और उनके मुँह से ठीक से आवाज़ नहीं निकल रही थी।

"मैं क्या करूँ जीन ? मेरी सहायता करो !" वे चिल्ला पड़े। "मैं अपने पिता का दिल नहीं तोड़ना चाहता और न तो ईश्वर से की हुई प्रतीज्ञा ही तोड़ सकता हूँ। इनमें से कुछ भी करने के बजाय मैं मर जाना अच्छा समझता हूँ। क्या ही अच्छा होता, यदि मैं इस यंत्रणा से अभी, यहीं मर जाता !"

बूढ़े आर्चबिशप को वह दृश्य बिलकुल स्पष्ट याद आया। दोनों युवक, अपने-अपने घरों से चोरी से भागे हुए, इस प्रकार भेष बदले, जैसे वे अपराधी हों, उस धुँधले प्रभात में खेत में खड़े थे। वे यह समझ नहीं सके थे कि अपने मित्र को किस प्रकार ढाढ़स बँधाएँ; उन्हें ऐसा लगा था कि जोसेफ़ को असहनीय वेदना हो रही है, वे वास्तव में महत्वाकांक्षाओं के संघर्ष में पिसे जा रहे थे। वे एक दूसरे का हाथ पकड़े, विचारों में निमग्न इधर-उधर टहल रहे थे कि उन्हें कोई गड़बड़ाहट जैसी आवाज़ सुनायी पड़ी; पेरिस जाने वाली गाड़ी पहाड़ से नीचे उतर रही थी। जोसेफ़ निस्तब्ध

खड़े रह गये और दोनों हाथों से अपना चेहरा ढंक लिये। तभी गाड़ी हाँकने वाले की सीटी बजी।

"चलो, चलें।" जीन ने धीरे से कहा। "यात्रा का आमंत्रण है! तुम मेरे साथ पेरिस तक चलो। हमारे वहाँ पहुँच जाने पर, यदि तुम्हारे पिता तब तक शान्त नहीं हो गये रहेंगे, हम बिशप फ़....से तुम्हें तुम्हारी प्रतिज्ञा से मुक्त करा देंगे, और तुम रिमोय वापस चले आना। यह बिलकुल आसान काम है।"

वे दौड़ कर सड़क पर गये और उन्होंने गाड़ी के ड्राइवर को रुकने का संकेत किया। गाड़ी रुक गयी। क्षणभर बाद ही गाड़ी रवाना हो गयी और जोसेफ़ रात भर जगने के कारण तुरन्त ही अपनी सीट पर सो गये। परन्तु बाद को वे हमेशा कहा करते थे कि यदि जीन लातूर ने उन्हें उस समय हिम्मत न दिलायी होती, तो वे जीवन भर पाय-दे डोम में गिरजा के पादरी बने रहते।

इन दोनों पादरियों में, जो उस वसंत ऋतु के प्रभात में रियोम से रवाना हुए थे, जीन लातूर ही ऐसे जान पड़ते थे, जिनके मिशनरी जीवन में सफल होने की अपेक्षाकृत अधिक सम्भावना थी। वास्तव में वे शरीर और दिमाग़ दोनों ही से स्वस्थ थे। विदेशी मिशनों के कालेज में उनके रहने के समय, वहाँ के अधिकारियों को यह आशंका हुई थी कि जोसेफ़ मिशनरी जीवन की कठिनाइयों के लिये उपयुक्त नहीं हैं। परन्तु आगे चलकर, वर्षों की लम्बी परीक्षा में, उस कृशगात ने ही अधिक कष्ट सहन किया था और काम भी उसी ने अधिक किये थे।

फ़ादर लातूर बहुधा ही कहा करते थे कि उनके इलाक़े में सीमा-रेखाओं के अतिरिक्त कोई परिवर्तन ही नहीं होता था। मेक्सिकन हमेशा मेक्सिकन ही रहते और रेड-इण्डियन रेड-इण्डियन ही। सांता फ़े काफ़ी पिछड़ा हुआ स्थान था, वहाँ कोई प्राकृतिक साधन भी नहीं थे और व्यवसाय की दृष्टि से भी उसका कोई महत्त्व नहीं था। परन्तु फ़ादर

वेलेंट एक महान् औद्योगिक विकास वाले क्षेत्र में फेंक दिये गये थे, जहाँ धूर्तता और चालबाज़ी तथा श्रेष्ठ महत्वाकांक्षाएँ एक दूसरे से लिपटी हुई साथ-साथ चल रही थीं, एक ऐसा क्षेत्र जो अचानक ही बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ा था और फिर उस पर विनाशकारी विपत्तियाँ आ गयी थीं। प्रत्येक वर्ष, पंगु हो जाने के बाद भी, वे वहाँ की सरकारी गाड़ियों से तथा अपनी निजी गाड़ी से हज़ारों मील चलकर उन पहाड़ी नगरों की यात्रा करते थे, जो आज तो धनी हैं, और कल ग़रीब एवं निर्जन तथा परित्यक्त; बोल्डर, गोल्ड हिल, कैरीबी, काशे-अ ला पोड़े, स्पेनिश बार, साउथ पार्क, अर्कास राज्य में काशे क्रीक तथा कैलिफ़ोर्निया गल्च तक।

और फ़ादर वेलेंट को केवल मिशनरी पादरी बने रहने से ही संतोष नहीं हुआ था। वे तो एक उन्नायक भी बन गये थे। उन्होंने देखा कि कोलोरैडो राज्य में धर्म-प्रचार के लिये काफ़ी अच्छी सम्भावनाएँ हैं। वे खुद इतनी ग़रीबी में थे कि वे अपने लिये एक मकान तथा आराम के सामान्य साधन भी नहीं रख सकते थे। किन्तु अब वे धार्मिक संस्थानों की स्थापना के लिये बड़े-बड़े भूखण्ड खरीदने लगे। वे बहुत थोड़े पैसों में काफ़ी अधिक ज़मीन खरीद सके, परन्तु वह थोड़ा पैसा भी बेंकों से अत्यधिक ऊँचे ब्याज पर ऋण के रूप में लेना पड़ा। उन्होंने कनवेंट तथा स्कूलों के निर्माण के लिये ऋण लिया और उसका ब्याज ही उन्हें खा गया। उन्होंने ओहिओ तथा पेंसिल्वेनिया राज्यों एवं कनाडा देश की लम्बी-लम्बी भिक्षा-यात्राएँ की और ब्याज चुकाने के लिये, जो दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जा रहा था, लोगों से चन्दे माँगे। उन्होंने एक भूमि-कम्पनी स्थापित की, वे फ्रांस गये और वहाँ से धन एकत्र करने के लिये लोगों को ऋण पत्र बेचे, और बेइमान दलालों ने उन्हें बदनाम कर दिया।

जब फ़ादर वेलेंट की अवस्था सत्तर वर्ष की थी, और उनका एक पाँव दूसरे से चार इञ्च छोटा था, और उस समय वे कोलोरैडो के प्रथम बिशप थे, उन्हें पोप की अदालत के सामने अपने पैसों का पेचीदा हिसाब-किताब

समझाने के लिये रोम बुलाया गया,—और बड़ी कठिनाई से वे कार्डिनलों को उसके सम्बन्ध में सन्तुष्ट कर सके।

जिस समय सांता फ़े में बिशप वेलेंट की अचानक मृत्यु का समाचार तार द्वारा पहुँचा, फ़ादर लातूर तुरन्त डेनवर के लिये नये रेल-मार्ग से रवाना हो गये। परन्तु उन्हें तार पर विश्वास ही नहीं होता था। उन्हें उनका वही पुराना उपनाम 'मृत्यु को धोखा देने वाला' याद आया और उन्होंने सोचा कि पहले कितनी बार वे पर्वतों एवं रेगिस्तानों को पार करते हुए उनके पास पहुँचे थे, और तब भी रास्ते भर उन्हें यह आशा न रहती थी कि वे अपने मित्र को जीवित पायेंगे।

विचित्र बात थी कि फ़ादर लातूर यह कभी महसूस ही नहीं कर सके कि वे फ़ादर की अंत्येष्टि के समय विद्यमान थे—या यों कहिये कि उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि वहाँ फ़ादर जोसेफ़ का शव है। शवपेटिका में रखा हुआ वह चुचका हुआ छोटा सा बूढ़ा व्यक्ति, जो बन्दर से बड़ा नहीं लगता था—नहीं, नहीं ये फ़ादर वेलेंट नहीं हो सकते। वे जोसेफ़ को स्पष्ट रूप से अपनी आँखों के सामने वैसे ही देख रहे थे, जैसे बर्नार्ड को; परन्तु उनका यह चित्र ठीक वैसा था, जैसे वे उस समय थे, जब वे प्रथम बार न्यू मेक्सिको आये थे। यह कोई भावुकता न थी; उनकी स्मृति फ़ादर जोसेफ़ का केवल वही चित्र प्रस्तुत करती थी, अन्य कोई नहीं। स्वयं अंत्येष्टि को ही वे एक स्वीकृति, एक मान्यता के रूप में याद किया करते थे। अंत्येष्टि संस्कार खुले मैदान में, शामियाने के नीचे हुआ था; डेनवर में, या यों कहो कि सारे सुदूर पश्चिमी अमेरिका में, इतनी बड़ी कोई इमारत ही नहीं थी, जिसमें उनके ब्लांचेट का अन्तिम संस्कार किया जा सकता। दो दिन पहले से ही गाँवों तथा खनिक शिविरों से विशाल जन-समूह एकत्र होने लगा था, वे गाड़ियों में, तम्बुओं में, खलिहानों में रात बिताते हुए आ रहे थे। वहाँ इतनी बड़ी भीड़ एकत्र हुई, जैसे किसी मठ

के विशाल मैदान में राष्ट्रीय सभा हो रही हो और संस्कार के समय एक विचित्र घटना घटी—

फ्रांसीसी पादरी फ़ादर रेवार्डी, जो लगभग बीस वर्ष पहले फ़ादर वेलेंट के साथ सांता फ़े से कोलोरैडो भेजे गये थे, और जो तब से ही उनके सहायक एवं विकार के रूप में काम कर रहे थे अपने बिशप (फ़ादर वेलेंट) द्वारा किसी काम से फ्रांस भेजे गये थे। वहाँ उनके डाक्टर ने उन्हें बताया कि उन्हें कोई असाध्य रोग हो गया है। यह सुनते ही वे जहाज द्वारा तुरन्त घर के लिये रवाना हो गये, ताकि वे अपनी रिपोर्ट बिशप वेलेंट को दे सकें और काम करते-करते ही मर जांय। शिकागो पहुँचते-पहुँचते उनके रोग का एक गहरा दौरा हुआ और वे एक कैथोलिक अस्पताल ले जाये गये, जहाँ वे बीमार पड़े रहे। एक दिन कोई नर्स उनकी चारपाई के पास एक अख़बार छोड़ गयी; उस पर दृष्टि दौड़ाते हुए, फ़ादर रेवार्डी ने कोलोरेडो के बिशप की मृत्यु-सूचना देखी। जब नर्स लौट कर आयी, तो उसने देखा कि वे कपड़े पहने तैयार बैठे हैं। उन्होंने उसे इस बात के लिये तैयार कर लिया कि उन्हें सद्यः रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया जाय। डेनवर पहुँच कर उन्होंने एक घोड़ा-गाड़ी ली और उससे बिशप के अंत्येष्टि संस्कार के स्थल पर चलने को कहा। वे वहाँ उस समय पहुँचे, जब पूजा-पाठ आधा ही समाप्त हुआ था; और इस मरते हुए आदमी के दृश्य को देख कर कोई उसे भुला नहीं सकता था। गाड़ी के ड्राइवर तथा दो पादरियों का सहारा लिये वह भीड़ को चीरता हुआ शव-मंच के पास तक पहुँचा और उसी बगल में घुटनों के बल झुककर बैठ गया। उसके लिये एक कुर्सी मँगायी गयी और संस्कार समाप्त होने तक वह शवपेटिका के छोर पर अपना माथा टेके बैठा रहा। बिशप वेलेंट के अपनी क़ब्र में पहुँचाये जाने के बाद फ़ादर रेवार्डी अस्पताल ले जाये गये, जहाँ वे थोड़े ही दिन बाद मर गये। फ़ादर जोसेफ़ लाल लोगों में (रेड इण्डियन लोग), पीले लोगों में तथा श्वेत लोगों में अपने प्रति बहुधा ही जो

असाधारण श्रद्धा उत्पन्न कर देते थे, और इतनी लम्बी अवधि तक बनाये रखते थे, उसी बात का यह एक और ज्वलन्त उदाहरण था।

६

बिशप अपने जीवन के उन अन्तिम सप्ताहों में मृत्यु के सम्बन्ध में बहुत कम सोचते थे; वे सोचते थे कि वे तो केवल विगत काल को छोड़ रहे हैं। भविष्य स्वयं अपनी चिन्ता करेगा। परन्तु मरने के सम्बन्ध में उन्हें एक मानसिक जिज्ञासा अवश्य थी; उन परिवर्तनों के सम्बन्ध में जिज्ञासा थी, जो मनुष्य के विश्वासों एवं जीवन के आपेक्षिक मूल्यों के सम्बन्ध में होते हैं। अधिकाधिक उन्हें यह लगने लगा कि जीवन आत्मा की अनुभूति है, परन्तु किसी भी अर्थ में वह स्वयं आत्मा नहीं है। वे जानते थे कि उनका यह विश्वास उनके धार्मिक जीवन से एक अलग वस्तु है; यह ज्ञान तो उन्हें मनुष्य के रूप में, साधारण मानव प्राणी होने के नाते, ही प्राप्त हुआ था। और उन्होंने देखा कि अब वे अपने तथा अन्य लोगों के आचरण को एक भिन्न दृष्टिकोण से परखते हैं। उनके जीवन की ग़लतियाँ महत्त्वहीन लगने लगीं, वे दुर्घटनाएँ महत्त्वहीन लगने लगीं, जो यहाँ आते समय रास्ते में घटी थीं, जैसे गैलवेस्टन बन्दरगाह में जहाज़ का डूबना या उस समय गाड़ी का उलटना, जब वे अपने पद पर आसीन होने के लिये प्रथम बार न्यू मेक्सिको आ रहे थे, और जिसमें वे घायल हो गये थे।

उन्होंने यह भी देखा कि अब उनकी स्मृतियों में कोई आनुपातिक स्पष्टता नहीं रह गयी है। उन्हें बचपन के वे दिन जब वे जाड़े में अपने चचेरे भाइयों के साथ भूमध्य सागर के तटवर्ती प्रदेश में रह रहे थे तथा पवित्र नगर (रोम) में विद्यार्थी के रूप में बिताये गये दिन उतना ही स्पष्ट याद थे, जितना मोल्नी का यहाँ आना तथा उनके गिरजाघर का निर्माण। शीघ्र ही वे दिन, सप्ताह, महीना वर्ष आदि सूचित करने वाले

समय की सीमाओं का उल्लंघन कर जायँगे, और अभी से उनके लिये उसका कोई महत्त्व नहीं रह गया था। वे अपनी ही चेतनता के बीच घिरे हुए थे। उनसे मस्तिष्क की कोई भी पूर्व-स्थिति न तो नष्ट हुई थी और न ही वह किसी अन्य स्थिति द्वारा अतिक्रान्त हुई थी। वे सभी उनकी पहुँच में थीं और उन सभी को वे समझ सकते थे।

कभी-कभी ऐसा होता था कि मैगडलेना या बर्नार्ड जब उनके पास आकर उनसे कोई प्रश्न पूछते तो उन्हें अतीत से वर्तमान में आने में कई क्षण लग जाते थे। वे जानते थे कि वे (मैगडलेना आदि) यह समझ रहे हैं कि उनका मस्तिष्क अब जवाब दे रहा है, परन्तु सच तो यह था कि वह (मस्तिष्क) उनके जीवन रूपी महान् नाटक के किसी अन्य दृश्य में असाधारण रूप से व्यस्त था, ऐसा दृश्य, जिसके सम्बन्ध में वे (बर्नार्ड या मैगडलेना) कुछ भी नहीं जानते थे।

आवश्यकता पड़ने पर वे वर्तमान् में आ भी जाते थे; परन्तु अब वर्तमान् में कुछ शेष ही नहीं रह गया था; फ़ादर जोसेफ़ मर चुके थे, ओलिवारिस, पति-पत्नी दोनों ही, मर चुके थे, किट कारसन मर चुका था, उनके जीवन-नाटक के केवल छोटे-छोटे नायक ही तो अब वर्तमान में शेष रह गये थे। बिशप के सांता फ़े वापस आने के कई सप्ताह पश्चात् एक दिन सुबह, उनके गहरे बीते दिनों का एक श्रेष्ठ नायक उनके समक्ष प्रकट हुआ, स्मृति में नहीं अपितु हाड़-मांस के रूप में, और वर्तमान के इस सारहीन प्रकाश में—नवाजो यूज़ावियो। एक चौकी से दूसरी चौकी में पहुँचते-पहुँचते, अन्त में कोलोरेडो चिकिटो में यह समाचार उसे मिला था कि बूढ़े आर्चबिशप की हालत अब ठीक नहीं है, और वह रेड इण्डियन तुरन्त सांता फ़े के लिये चल पड़ा था। वह भी अब बूढ़ा हो गया था। एक वार पुनः दोनों के हाथ मिले। बिशप ने अपनी आँखों से आँसू का एक बूंद पोंछा।

"मैं इस मिलन के लिये कितना बेचैन हो रहा था, मेरे मित्र। मैं तो

तुम्हारे पास आने के लिये सन्देश भेजना चाहता था, परन्तु सोचता था, कि रास्ता बहुत दुर्गम है।"

बूढ़ा नवाजो मुस्करा पड़ा। "अब रास्ता दुर्गम नहीं रह गया है। मैं गाड़ियों से आया हूँ, फ़ादर। मैंने गैलप में गाड़ी पकड़ी, और उसी दिन यहाँ पहुँच गया। वह दिन तो आपको याद होगा, जब हम अपने घर से सांता फ़े आये थे। तब आने में कितना अधिक समय लगा था! लगभग दो सप्ताह! अब यात्राएँ बड़ी तेज होती हैं, परन्तु पता नहीं अपेक्षाकृत तेज यात्रा करके लोग तब से अपेक्षाकृत श्रेष्ठ मार्ग पर जा रहे हैं या नहीं!"

"हमें भविष्य जानने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये, यूजाबियो! अच्छा है कि हम न जानें। और मैनुलिटो कैसा है?"

"मैनुलिटो ठीक है; वह अब भी अपने कबीले का नेता है।"

यूजाबियो वहाँ अधिक देर तक नहीं रुका परन्तु उसने कहा कि मैं कल फिर आऊँगा, क्योंकि सांता फ़े में मेरा कुछ काम है और मैं यहाँ कुछ दिन रहूँगा। वास्तव में उसका कोई काम नहीं था। उसने फ़ादर लातूर की ओर देख कर मन में कहा, "अब अधिक देर नहीं है।"

उसके चले जाने के बाद बिशप ने बर्नार्ड से कहा, "मेरे बेटे, मेरे जीवन-काल में दो भारी अन्याय समाप्त हुए, मैंने नीग्रो जाति के लोगों को गुलाम बनाने की प्रथा का अन्त देखा और मैंने नवाजों को पुनः अपने प्रदेश में पूर्वावस्था में वापस होते देखा।"

अनेक वर्षों तक फ़ादर लातूर वह सोचा करते थे कि क्या एक भी नवाजो या अपाचे के जीवित रहते, रेड इण्डियनों की लड़ाई का कभी खात्मा हो सकेगा। उस लड़ाई से बहुत से व्यापारी तथा उद्योगपति बहुत पैसा कमाते थे; उसे चालू रखने के लिये एक राजनीतिक यन्त्र-जाल तथा अथाह पूंजी का उपयोग किया जा रहा था।

७

बिशप न्यू मैक्सिको में अपने आवास के मध्यकालीन वर्षों में नवाज़ों के सताये जाने तथा अपने ही प्रदेश से निष्कासित किये जाने से बड़े दुःखी हुए थे। यूज़ावियो से मैत्री के कारण वे अपने नये इलाक़े में आते ही नवाज़ों लोगों में दिलचस्पी रखने लगे थे; वे उनकी प्रशंसा करते थे, उनके सम्बन्ध में वे बहुत सी बातें सोचते थे। यद्यपि ये खानाबदोश लोग उन रेड इण्डियनों की अपेक्षा, जो गाँवों में बसकर घरों में रहते थे, श्वेत लोगों के तरीकों को अपनाने में बहुत सुस्त थे और मिशनरियों तथा श्वेत लोगों के धर्म के प्रति अपेक्षाकृत बहुत अधिक उदासीन थे, तथापि फ़ादर लातूर उनमें श्रेष्ठतर शक्ति का अनुभव करते थे। उनके रहस्यपूर्ण मौन के पीछे कोई प्रयोजन, एक विश्वास छिपा हुआ था, जो सक्रिय एवं द्रुत था और जो प्रभावकारी भी था। नवाज़ों का अपने देश से निष्कासन, जो पता नहीं कितने समय से उनके भाग्य में लिखा हुआ था, बिशप को एक ऐसा अन्याय लगता था, जो चिल्ला-चिल्ला कर ईश्वर की भी दुहाई दे रहा था। वे उस भयानक जाड़े को कभी नहीं भूल सकते, जब उनका पीछा किया जा रहा था और हज़ारों की संख्या में उन्हें अपने ही संरक्षित स्थान से तीन सौ मील दूर पेकोस नदी के किनारे बोस्क रेडोंडो नामक स्थान पर खदेड़ा गया था। उनमें से सैकड़ों, पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे, ठण्ड और भूख से रास्ते ही में मर गये; उनकी भेड़ें और घोड़े पहाड़ों को पार करने में थककर चूर हो गये और मर गये। कोई भी खुशी या स्वेच्छा से नहीं भागा था; उन्हें भूख और संगीनों ने मार भगाया था। उन्हें अलग-अलग झुण्ड में बंदी बना लिया जाता था और फिर बड़ी निर्दयता से निर्वासित कर दिया जाता था।

उनका (बिशप का) पथ-भ्रष्ट मित्र किट कारसन ही तो था, जिसने इन नवाज़ों के बचे हुए अन्तिम अविजित दल को परास्त किया था। उसने उनका कैनियन डि चेली नामक पर्वत के ही दर्रे तक पीछा किया था,

जहाँ वे अपने चरागाहों वाले मैदानों तथा चीड़ के जंगलों से भागकर अन्तिम मोर्चा बनाने पहुँचे थे। वे गड़रिये थे, उनके पास अपने जानवरों के अतिरिक्त अन्य कोई सम्पत्ति नहीं थी; ऊपर से स्त्रियों एवं बच्चों का भी बोझ था। उनके पास शस्त्र बहुत थोड़े थे और गोला बारूद भी बहुत कम। परन्तु यह दर्रा अब तक श्वेत सैनिकों के लिये अभेद्य सिद्ध हुआ था। नवाजों का विश्वास था कि उस पर अधिकार नहीं किया जा सकता। उनका विश्वास था कि उनके देवता इसी दर्रे के दुर्ग में रहते हैं; उनके शिपराक (इस नाम का ऊँचा पहाड़) की भाँति वह एक अलंघ्य स्थान था वह उनके जीवन का सर्वस्व था।

कारसन लाल पत्थर वाले ऊँचे-ऊँचे पर्वत-शिखरों के बीच छिपी हुई उस दुनिया में उनका पीछा करता, उनके सामान आदि नष्ट कर देता, उनके अनाज के खेत बरबाद कर देता और शफ़तालू के बगीचे उजाड़ देता। जब नवाजो देखते कि उनकी सभी प्रिय वस्तुएँ बरबाद कर दी गयीं हैं, तो वे हताश हो उठते थे। फिर भी उन्होंने आत्म-समर्पण नहीं किया; महज लड़ना बन्द कर दिया और वे बंदी बना लिये गये। कारसन हुक्म तामील करने वाला सिपाही था और उसने एक सिपाही की भाँति सभी निर्दयतापूर्ण कार्य किये। परन्तु वह सबसे बहादुर नवाजो सरदार को नहीं गिरफ्तार कर सका। मेनुलिटो कैनियन डि चेली में अपने दल की करारी हार के पश्चात् भी अभी फ़रार था। उसी समय यूजाबियो ने सांता फ़े आकर बिशप लातूर से कहा था कि वे मैनुलिटो से जूनी में मिल लें। पादरी की हैसियत से बिशप सोचते थे कि इस बाग़ी सरदार से मिलने के लिये राजी हो जाना बुद्धिमत्ता नहीं है, परन्तु पादरी के अतिरिक्त वे मनुष्य भी तो थे और न्याय के वे बहुत बड़े समर्थक थे और यह प्रार्थना उनसे इस ढंग से की गयी थी कि वे इनकार नहीं कर सके। वे यूजाबियो के साथ चले गये।

यद्यपि सरकार ने मेनुलिटो को जीवित या मृत पकड़ने के लिये भारी

इनाम की घोषणा कर रखी थी, वह अपने स्थान से जूनी तक, दिन दोपहर को गया। उसके साथ उसके एक दर्जन अनुयायी थे, जो सभी दुबले पतले घोड़ों पर सवार होकर गये थे। वह कोलोरैडो चिकिटो में, युजाबियो के इलाक़े में, अब तक छिपा हुआ था।

मैनुलिटो को आशा थी कि बिशप वाशिंगटन जायंगे और वहाँ अधिकारियों से उसके गिरोह के लोगों की ओर से सिफ़ारिश करेंगे कि वे पूर्णतः नष्ट न कर दिये जाँय। उसने फ़ादर लातूर से कहा कि वे अपने धर्म तथा अपने आवास-क्षेत्र के अतिरिक्त जहाँ वे अनादि काल से ही रहते चले आ रहे हैं, सरकार से अन्य कुछ नहीं चाहते। उसने समझाने की कोशिश की कि उनका प्रदेश उनके धर्म का ही एक अंग है; दोनों एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। कैनियन डि चेली को तो पादरी साहब जानते हैं, उसी दर्रे में उसके क़बीले के लोग तब से रहते आ रहे हैं, जब उनका दल बहुत छोटा और कमज़ोर था, उसी दर्रे में पल कर वे बड़े हुए, उसने उनकी रक्षा की; वह उनकी माँ के तुल्य है। इसके अतिरिक्त उनके देवता वहीं रहते हैं—मानव पहुँच के परे उन श्वेत मकानों में, जो ऊँची-ऊँची चट्टानों के बीच बनी गुफाओं में बने है—वे गुफाएं श्वेत लोगों की दुनिया से अपेक्षाकृत प्राचीन हैं, और जिनमें किसी भी मनुष्य ने प्रवेश नहीं किया था। उनके देवी-देवता वहीं है, जिस प्रकार पादरी साहब के देवता गिरजाघर में रहते हैं।

और कैनिडियन चेली के उत्तर शिपराक था, जो एक पतला सा, परन्तु अत्यन्त ऊँचा पहाड़ था और एक समतल मरुस्थल में अकेला खड़ा था। पचास-साठ मील की दूरी से देखने पर वह एक मस्तूल वाले छोटे जहाज की तरह लगता था, जिसका पाल पूरा फैला हुआ हो, और इसी कारण श्वेत लोगों ने उसका नाम 'शिपराक' रख दिया था। परन्तु रेड इण्डियन लोग उसका दूसरा नाम रखे हुए थे। उनका विश्वास था कि यह पर्वत खण्ड कभी हवा में उड़ने वाला जहाज़ था। मैनुलिटो ने बिशप से

बतलाया कि शताब्दियों पहले वह पहाड़ हवा में चलता था। उस समय उसके शिखर पर नवाजो जाति के पूर्वज बैठे हुए थे और वह उन्हें सुदूर उत्तर में उस स्थान से लेकर उड़ा था, जहाँ सभी मनुष्यों का प्रादुर्भाव हुआ था। यह पर्वत जहाँ भी उतरता, वही स्थान उनका आवास-क्षेत्र हो जाता था। वह एक मरु-प्रदेश में उतरा, जहाँ प्राणियों के लिये रहना अत्यन्त कठिन था। परन्तु उन्होंने कैनियन डि चेली को ढूंढ़ निकाला, जहाँ आश्रय स्थान एवं प्रचुर मात्रा में पानी था। वह दर्रा और शिपराक उसकी जाति के लोगों के लिये दयालु माता-पिता की तरह हैं, ये स्थान उनके लिये गिरजाघरों से भी अधिक पवित्र हैं, जितना कोई भी स्थान किसी श्वेत के लिये पवित्र नहीं हो सकता। फिर वे वहाँ से तीन सौ मील दूर एक अनजाने प्रदेश में कैसे रह सकते हैं?

इसके अतिरिक्त, बोस्क रेडोंडो, रायो ग्रांड से बहुत पूरब पैकोस नदी के किनारे था। मैनुलिटो जमीन पर ही एक नक़शा खींच कर बिशप को समझाने लगा कि आदिकाल से ही उसकी जाति के लोगों को यह आदेश था कि वे पूरब में रायो ग्रांड से पार न जाँय, उत्तर में रायो सैन जुआन से पार न जांय और पश्चिम में रायो कोलोरैडो से पार न जांय, और यदि वे ऐसा करेंगे तो उनका कबीला ही नष्ट होकर समाप्त हो जायगा। यदि फ़ादर लातूर जैसा कोई बड़ा पादरी वाशिंगटन जाकर इन सारी बातों को समझाये, तो सरकार कदाचित् मान जाय।

फ़ादर लातूर ने उस रेड इण्डियन को समझाने की कोशिश की कि किसी प्रोटेस्टेंट देश में कोई रोमन पादरी सरकार के मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यही उसकी मजबूरी है। मैनुलिटो ने बड़े धैर्य से इसे सुना, परन्तु बिशप ने देखा कि वह उनके कहने का विश्वास नहीं कर रहा है। उनके कह लेने के बाद नवाजो उठा और बोला —

"आप क्रिस्टोबाल के मित्र हैं, जो हम लोगों का पीछा करता है और हमें पहाड़ों पर खदेड़ता हुआ बोस्क रेडोंडो तक पहुँचा देता है। आप अपने

मित्र से कह दीजिये कि वह मुझे जिन्दा कभी नहीं पकड़ सकता। वह जब भी चाहे, आकर मुझे मार डाल सकता है। दो वर्ष पहले मेरे पास इतनी भेंड़ें थी कि मैं उन्हें गिन नहीं सकता था, और अब मेरे पास केवल बीस भेंड़ें तथा कुछ मरियल घोड़े ही रह गये हैं। मेरे बच्चे वृक्षों की जड़ें खा रहे हैं और मैं अपनी जान की चिन्ता नहीं करता। परन्तु मेरी मां और मेरे देवता पश्चिम में हैं, और मैं रायो ग्रांड को कभी भी नहीं पार कर सकता।"

उसने सचमुच कभी नहीं पार किया। वह अपनी जाति के लोगों की निर्वासन से वापसी तक छिपा ही छिपा घूमता रहा। उनकी वापसी एक अप्रत्याशित बात के कारण हो गयी।

बोस्क रेडोंडो नवाजों के लिये एक अत्यन्त अनुपयुक्त प्रदेश सिद्ध हुआ। सिंचाई आदि करके वहां खेती अवश्य की जा सकती थी, परन्तु वे लोग तो बनजारे गड़रिये थे, कृषक नहीं। उनकी भेंड़ों के लिये वहां कोई चरागाह नहीं था। वहां जलाने के लिये लकड़ी नहीं थी। वे एक प्रकार के वृक्ष की जड़ें खोद-खोद कर निकालते थे और सुखाकर उन्हीं से इंधन का काम लेते थे। वह रेह-प्रधान प्रदेश था और गन्दा एवं अशुद्ध पानी पीने के कारण सैकड़ों रेड इण्डियन मर गये। अन्त में वाशिगटन स्थित सरकार ने अपनी ग़लती महसूस की, यद्यपि सरकारें कदाचित् ही ग़लती स्वीकार करती हैं। पांच वर्ष के निष्कासन के पश्चात् नवाजो क़बीले के बचे-खुचे लोगों को अपने प्रिय एवं पवित्र स्थान पर वापस जाने की अनुमति मिल गयी।

सन् १८७५ ई० में बिशप अपने फ्रांसीसी कारीगर को अरिज़ोना राज्य की यात्रा करने लिवा गये, ताकि फ्रांस वापस होने से पूर्व, वह इस देश की एक झलक पा जाय। वहां वे नवाजो घुड़सवारों को एक बार फिर अपने विशाल मैदानों में स्वच्छंदता से दौड़ते हुए देखकर बड़े प्रसन्न हुए। दोनों फ्रांसीसी व्यक्ति अद्भुत् पहाड़ी खण्डहरों को देखने कैनियन डि चेली तक

गये; ऊँची-ऊँची चट्टानी दीवारों के बीच उस नीची घाटी प्रदेश में एक बार फिर फसलें उग रही थीं, विशाल सेमल के वृक्षों के नीचे भेंड़ें चर रही थीं और मीठे जल वाली नदियों में पानी पी रही थीं, वह रेड इण्डियनों के लिये स्वर्ग था।

आज, जब वे वृद्ध होकर बीमार पड़े हुए थे, बिशप के मस्तिष्क में बीते हुए उन दिनों के अनेक दृश्य, अच्छे और बुरे सभी, नाचने लगे—नवाजों के वे भयानक चेहरे, जब वे देश-निष्कासक के समय नदी से उस पार उतरने के लिये रायो ग्रांड के किनारे नाव की प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे; घर वापस जाते समय बचे हुए लोगों की लम्बी पंक्ति, जो अपने थोड़े से जानवरों को हाँकते हुए तथा बूढ़ों एवं बच्चों को लादे हुए चले जा रहे थे। उन दिनों की स्मृतियाँ उनके मस्तिष्क में आयीं, जब वे यूजाबियों के साथ वसंत के प्रारम्भ में कुछ दिन लिटिल कोलोरैडो में रहे थे। भेड़ों का बच्चा देने का मौसम अभी समाप्त नहीं हुआ था—साँवले रंग के घुड़सवार ऐसे मेमनों को अपनी गोद में लिये चले जा रहे थे, जिनकी माँ मर गयी थीं—एक नौजवान नवाजो औरत ने एक मेमने को तब तक अपना स्तन पिलाया था, जब तक उसके लिये अन्य भेंड़ नहीं ढूंढ़ निकाली गयी थी।

"बर्नार्ड," बूढ़े बिशप बड़बड़ा उठते, "ईश्वर की बड़ी कृपा रही कि उसने मुझे उन अन्यायों का सुन्दर समाधान देखने के लिये जीवित रखा। अब मैं नहीं सोचता कि रेड इण्डियन जाति का कभी अवसान हो जायगा, यद्यपि पहले मैं ऐसा सोचता था। मेरा विश्वास है कि ईश्वर उसे सुरक्षित रखेगा।"

८

अमेरिकन डाक्टर आर्च बिशप स''' तथा मदर सुपीरियर से कह रहा था—"अब तो इनकी बीमारी हृदय की बीमारी है। मैं थोड़ी-थोड़ी खुराक में उन्हें दवा दे रहा था, ताकि वह काम करता रहे, परन्तु अब

दवा का कोई असर नहीं है। मैं दवा की खुराक बढ़ा नहीं सकता, क्योंकि वह तुरन्त ही घातक सिद्ध हो सकती है। और तभी तो आप उनमें यह परिवर्तन देख रहे हैं।"

परिवर्तन यह था कि बूढ़े बिशप ने खाना छोड़ दिया था, और रात-दिन सोते रहते थे या लगता था कि वे सो रहे हैं। उनकी मृत्यु के दिन उनकी दशा का आभास लगभग सभी को लग गया था। दिन भर गिरजाघर लोगों से भरा रहा और लोग उनके लिये प्रार्थना करते रहे; भिक्षुणियाँ तथा बूढ़ी औरतें, युवक एवं युवतियाँ आती-जाती रहीं। बीमार बिशप को बड़े तड़के ही महात्मा ईसा के अन्तिम भोज का स्मारक संस्कार-भोज दिया जा चुका था। टेसूक़ के कुछ रेड इण्डियन, जो गांव में उनके पड़ोसी थे, सांता फ़े आ गये थे और दिन भर आर्चबिशप के आँगन में उनके सम्बन्ध में समाचार जानने के लिये बैठे रहे। उनके साथ नवाजो यूज़ाबियो भी था। उनके पुराने नौकर फ़क्टोसा और ट्रैंक्विलिनो प्रार्थना करने वालों के साथ गिरजाघर में थे।

मदर सुपरियर और मैगडलेना और बर्नार्ड उनकी सेवाशुश्रुषा में लगे हुए थे। वरना वहाँ क्या था, केवल उनको देखते हुए बैठे रहना और प्रार्थना करते रहना। उनकी मुद्रा इतनी शान्त एवं निश्चल थी। कभी-कभी लगता था कि वे सो गये हैं, ऐसा अनुमान लोग उनके निस्पन्द चेहरे को देखकर लगाते थे; दूसरे ही क्षण उनके चेहरे में एक चेष्टा सी आ जाती थी, एक चेतनता आ जाती थी, यद्यपि उनकी आँखें बन्द ही रहती थीं।

दिन समाप्त होते-होते, गोधूलि वेला में, जब बत्तियाँ जल चुकी थीं, बिशप थोड़ा बेचैन से होने लगे; वे थोड़ा हिले और बड़बड़ाने लगे। बड़बड़ाना फ्रांसीसी भाषा में था परन्तु बर्नार्ड कुछ समझ न सका, यद्यपि एकाध शब्द वह स्पष्ट रूप से सुन सका। वह चारपाई के पास झुक गया और बोला—"क्या है, फ़ादर ? मैं यहीं हूँ।"

वे बड़बड़ाते रहे और अपने हाथ धीरे-धीरे हिलाते रहे मैगडलेना ने समझा कि वे कोई चीज़ मांगने की कोशिश कर रहे हैं, या कुछ कहना चाहते हैं। परन्तु वास्तव में बिशप तो वहाँ थे ही नहीं; वे तो फ्रांस में अपने जन्मस्थान के उस पर्वतीय भाग के एक हरे खेत में खड़े थे और एक नवयुवक को, जो वहाँ से चले जाने की प्रबल इच्छा एवं घर पर ही रुकने की घोर आवश्यकता के संघर्ष में उनके समक्ष ही पिसा जा रहा था, सांत्वना देने का प्रयत्न कर रहे थे। वे उस घोर धर्मिष्ठ एवं शिथिल पादरी के मन में एक नयी इच्छाशक्ति उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे थे और अब समय बहुत कम था, क्योंकि पेरिस जाने वाली गाड़ी उधर पहाड़ी मार्ग से नीचे उतरने लगी थी।

अंधेरा होने के ठीक बाद ही गिरजाघर का घण्टा बजने लगा, और सांता फ़े की मेक्सिकन जनता अपने घुटनों के बल धरती पर झुक गयी, और सभी अमेरिकन कैथोलिक भी झुक गये। बहुत से लोगों ने, जो झुके नहीं, मन ही में प्रार्थना की। यूजाबियो तथा टेसूक के लोग अपने यहाँ लोगों को समाचार देने चुपचाप वहाँ से चल दिये। दूसरे दिन प्रातःकाल बूढ़े आर्चबिशप स्वनिर्मित गिरजाघर की उच्च वेदी के समक्ष चिर निन्द्रा में पड़े थे।